भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - ३५

संभोट व्याकरण

के0 अंगरूप लाहुली

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४०   सन्-१९९६

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला-३९

संभोट व्याकरण

के० अंगरूप लाहुली

भोटविद्या संरक्षणम्

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४० सन्-१९९६

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - XXXV

SAMBHOṬA VYĀKARAṆA

(TIBETAN GRAMMAR)

K. Angrup Lahuli

भोट विद्या संस्थानम्

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2540 C.E. 1996

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - XXXV

Chief Editor: *Prof. Samdhong Rinpoche*

1st Edition: 1200 copies, 1961
2nd Edition: 3000 copies, 1963
3rd Edition: 1050 copies, 1996

Price: Hardback
Paperbacl

TIBET BOOKSTORE
Kathmandu
Rs-700. -

© Copyright by Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi -221007, India, 1996. All rights reserved.

Publisher:
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

Printed at Shivam Printers, Varanasi, India.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - ३५

संभोट व्याकरण

के0 अंगरूप लाहुली

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५४० सन्-१९९६

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - ३५

प्रधान सम्पादक : भिक्षु समदोङ् रिनपोछे

प्रथम संस्करण : १२०० प्रतियाँ, १९६१
द्वितीय संस्करण : ३००० प्रतियाँ, १९६३
तृतीय संस्करण : ३००० प्रतियाँ, १९९६

मूल्य
सजिल्द
अजिल्द

TIBET BOOKSTORE
Kathmandu
Rs-700. -

© १९९६, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्था, सारनाथ, वाराणसी
प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित ।

प्रकाशक
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

मुद्रक : शिवम् प्रिंटिंग प्रेस, मलदहिया, वाराणसी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विषय-सूची

पहला अध्याय

(त्रिंशद्)

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
(क)	प्रकाशकीय	xi
(ख)	དཔར་སྐྲུན་པའི་ཆེད་བརྗོད།	xiii
(ग)	इस संस्करण की भूमिका	xv
१.	स्वरवर्ण	3
२.	व्यञ्जन वर्ण	3
३.	वर्णों का उच्चारण स्थान	4
४.	करण	4
५.	प्रयत्न	4
६.	स्वर (मात्रा)	7
७.	स्वरालंकृत व्यञ्जन	7
८.	कुछ सार्थक व्यञ्जन	8
९.	स्वर युक्त व्यञ्जन	8
१०.	दो अक्षरों का शब्द	9
११.	दस पराक्षर	9
१२.	पाँच पूर्वाक्षर	10
१३.	बीस अव्यवहार्य अक्षर	10
१४.	संज्ञामूलक अक्षरों में पराक्षरों का प्रयोग	12
१५.	पराक्षर वाले सस्वर व्यञ्जन	13
१६.	कुछ मिश्रित शब्द	20

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

१७.	परात्पराक्षर ད་ और ས་ दो का प्रयोग	21
१८.	पाँच पूर्वाक्षर और उन के प्रयोग	23
१९.	प्रतिसमाहरण	25
२०.	संयुक्त व्यञ्जन	27
२१.	संज्ञा	37
२२.	क्रिया	40
२३.	क्रिया एवं संज्ञा दोनों में प्रयुक्त कुछ शब्द	43
२४.	होना क्रिया	45
२५.	अकर्मक क्रिया	46
२६.	सकर्मक क्रिया	49
२७.	मुहावरेदार क्रिया	59
२८.	प्रेरणार्थक क्रिया	61
२९.	क्रिया विशेषण	62
३०.	आदर सूचक विधि	64
३१.	གྱི་ གི་ ཀྱི་ का प्रयोग	65
३२.	कारक	66
३३.	कर्म कारक	68
३४.	सम्प्रदान कारक	69
३५.	अधिकरण कारक	70
३६.	तत्त्ववाचक	71
३७.	अवधि वाचक	72
३८.	सम्बन्ध कारक	74
३९.	करण कारक	78
४०.	अलंकार (और) समासक के प्रत्यय	79
४१.	सशेषक प्रत्यय	81

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

४२.	विभाजक (और) संयोजक प्रत्यय	86
४३.	अपादान	89
४४.	आंशिक रूप से अपादान	90
४५.	निर्द्धारण समाहार	92
४६.	सम्बोधन	93
४७.	तो प्रत्यय	94
४८.	और प्रत्यय	96
४९.	वह प्रत्यय	102
५०.	कौन प्रत्यय्य	109
५१.	विशेषण	112
५२.	स्वामित्व सूचक	119
५३.	कृदन्त	123
५४.	लिङ्ग	127
५५.	निषेधात्मक प्रत्यय	132
५६.	आदर (सूचक)	136
५७.	समास	151
५८.	बीस उपसर्ग	154
५९.	निपात	158
६०.	पराक्षरों की आवश्यकता	159
६१.	पराक्षर ज्ञान का प्रयोजन	160
६२.	अर्थ निरूपण	161
६३.	शिक्षण विधि का क्रम	161
६४.	योग्य पात्र को उपदेश देना	163
६५.	आचार्य का कर्तव्य	163
६६.	कुछ उपयोगी संज्ञाएँ	164

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

दूसरा अध्याय

(लिङ्गावतार)

६७.	दस पराक्षर	178
६८.	पाँच पूर्वाक्षर	178
क्रमांक	**विषय**	**पृष्ठ**
६९.	कर्त्ता, कर्म (तथा) क्रिया	185
७०.	ध्वनि का प्रयोग	201
७१.	अर्थ का प्रयोग	207
७२.	धातु रूपावली	219

तीसरा अध्याय

(वार्त्तालाप)

७३.	माता-पुत्र	230
७४.	दो सहपाठी	232
७५.	दो कार्यकर्त्ता	234
७६.	एक चाय की दूकान में	236
७७.	दो पड़ौसी	239
७८.	दो विद्यार्थी	242
७९.	पुष्प वाटिका	244
८०.	कारखाने के दो कर्मचारी	246
८१.	सिपाही और सेनापति	249
८२.	भोट-१	251
८३.	भोट-२	253

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

८४.	भोट–३	255
८५.	नगर तथा गाँव	257
८६.	पासपोर्ट कार्यालय में	259
८७.	वैद्य और रोगी	262
८८.	चर्चा	263
८९.	परदेश में	266
९०.	मेस में	268
९१.	हिमालय	270
९२.	महात्मा गाँधी	273

चौथा अध्याय

(मूलसूत्र)

९३.	ལུང་སྟོན་པ་རྩ་བ་སུམ་ཅུ་པ།	276
९४.	རྟགས་ཀྱི་འཇུག་པ།	280

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्रकाशकीय

बौद्धधर्म और साहित्य के अध्ययन के लिये संभोट-लिपि एवं भाषा का प्रयोग केवल तिब्बत में ही नहीं, अपितु चीन, मंगोल, नेपाल और भारतवर्ष में भी व्यापक रूप से किया जाता है । सिक्किम, भूटान तथा लद्दाख की तो यह मातृभाषा ही है । इन प्रदेशों के पास-पड़ोस में रहने वाली अधिकांश जनता की बोलियों में भी तिब्बती भाषा का तत्त्व विद्यमान रहता है । अतएव धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक क्षेत्रों के अध्ययनार्थ यह भाषा एक अनिवार्य स्रोत है । यही वजह है कि आज विश्व के बुद्धिजीवी वर्ग भोट-भारत की प्राचीन गूढ़ विद्याओं के अध्ययन के लिए तिब्बती भाषा की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं । परिणामस्वरूप इस भाषा को पढ़ने वालों की संख्या भी निरन्तर बढ़ रही है । इसी वज़ह से विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में, विशेष कर भारतीय विश्वविद्यालयों में तिब्बती भाषा के अध्ययन-अध्यापन के लिए अलग से विभाग भी स्थापित किए गए हैं ।

हिन्दी माध्यम से तिब्बती भाषा सीखने के लिए कोई अच्छी, व्यावहारिक पुस्तक होनी चाहिए, परन्तु ऐसी पुस्तकों की कमी है । विशेषकर भोट व्याकरण के नियमों को समझने के लिए हिन्दी माध्यम का कोई प्रामाणिक ग्रन्थ उपलब्ध ही नहीं है । क्योंकि भाषा सीखने के लिए पहले व्याकरण का आश्रय लेना अनिवार्य होता है ।

हिमाचल प्रदेश के लाहुल निवासी प्रो० के० अंगरूप ने वर्षों पहले संभोट-व्याकरण की यह अमूल्य कृति तैयार की थी । १९६१ में प्रथम बार इसकी एक हज़ार प्रतियां प्रकाशित हुई थी और १९६३ में तीन हज़ार प्रतियाँ । परन्तु वे सभी प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गई थीं । इधर वर्षों से इसकी मांग बढ़ रही थी, जो अब तक सामान्यत: बाज़ार में उपलब्ध नहीं होती थी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अत: प्रो० के० अंगरूप ने हमारे संस्थान से सम्पर्क स्थापित कर इसका तृतीय संस्करण छपवाने के लिए आग्रह किया । केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान का उद्देश्य ही तिब्बती भाषा और साहित्य का संवर्द्धन करना है । अत: संस्थान ने पुस्तक की लोकप्रियता को दृष्टि में रखकर इसे प्रकाशित करने का निर्णय लिया । थोन-मी कृत व्याकरणीय सूत्र मूल-त्रिंशत् और लिङ्गावतार पर आधारित तथा उदाहरणों सहित हिन्दी माध्यम से रचित, इस तृतीय संस्करण का संशोधन भी पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से सेवा निवृत्त प्रो० के० अंगरूप ने स्वयं किया है । अतएव पुस्तक की छपाई और सज्जा आदि उत्कृष्ट प्रकार की हो, इस उद्देश्य से इसे कम्प्यूटर में टंकण कर प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई । इस प्रकार संभोट व्याकरण की इस पुस्तक को सुन्दर रूप से प्रकाशित कर सकने की हमें हार्दिक प्रसन्नता है ।

आशा है कि हिन्दी माध्यम से तिब्बती भाषा सीखने की जिज्ञासा रखने वाले छात्रवृन्द लाभान्वित होंगे ।

सारनाथ **समदोङ्‌रिनपोछे**
३-५-१९९६ निदेशक

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དཔར་སྐྲུན་པའི་ཆེད་བརྗོད།

༄༅། །བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་ནི་ཆོས་དང་རིག་གཞུང་གཉིས་ཀའི་འབྱུང་གནས་ཞིག་ཡིན་པས་བོད་ཡུལ་ཙམ་དུ་མ་ཟད། སོག་ཡུལ་དང་། རྒྱ་ནག བལ་ཡུལ། རྒྱ་གར་སོགས་ལའང་དར་ཁྱབ་ཡོད་པ་ཞིག་རེད། ལྷག་པར་དུ་འབྲུག་དང་། འབྲས་ལྗོངས། ལ་དྭགས་བཅས་ཀྱི་སོ་སོའི་ཡུལ་སྐད་ཡིན་པ་སོགས་ཏེ་འཕྲམ་གྱི་མི་རིགས་མང་པོའི་སོ་སོའི་ཁ་སྐད་དངོས་སམ་དེའི་གཞིར་གྱུར་བ་ཞིག་ཡིན་པར་བརྟེན། ཆོས་སྲིད་ལོ་རྒྱུས་གང་ཐད་ནས་ཀྱང་གལ་གནད་ཆེ་བ་ཞིག་ཡིན་པ་མ་ཟད། འཕགས་བོད་ཀྱི་གནའ་བོའི་རིག་གཞུང་རྒྱ་ཆེ་གཏིང་ཟབ་རྣམས་འཛམ་གླིང་གི་ཤེས་ཡོན་ཅན་མང་པོས་བོད་སྐད་ཀྱི་ཁུངས་ལས་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་འདོད་ཅན་ཇེ་མང་དུ་འགྲོ་བཞིན་པ་དང་། དེའི་དབང་གིས་བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་འདོད་ཅན་ཡང་ཇེ་མང་དུ་འགྲོ་བཞིན་པར་མ་ཟད། འཛམ་གླིང་རྒྱལ་ཁབ་མང་པོ་དང་། བྱེ་བྲག་ཏུ་རྒྱ་གར་གྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་དུ་མའི་ནང་བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་སློབ་སྦྱིལ་གྱི་སྡེ་ཚན་ཡོད་པ་དེ་ལྟར་ཡང་། ཉིན་སྐད་བརྒྱུད་བོད་ཡིག་ལ་སློབ་སྦྱོང་ཚད་ལྡན་ཞིག་ཐུབ་པའི་སློབ་དེབ་ཆེས་དགོན་པ་དང་། ལྷག་པར་དུ་བོད་ཀྱི་བརྡ་སྤྲོད་པའི་གཞུང་ལ་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་པའི་མཐུན་རྐྱེན་སློབ་དེབ་ཚད་ལྡན་ཕལ་ཆེར་མེད་པར་སྣང་བ་དང་། བརྡ་སྤྲོད་ཀྱི་གཞུང་ལ་མ་བརྟེན་པར་བོད་ཡིག་ཚད་ལྡན་ཞིག་ཤེས་ཐབས་བྲལ་བས་འདིའི་དགོས་མཁོ་ཧ་ཅང་ཆེ་བ་གདོན་མི་ཟ་བས། ག་ཞ་བ་དངོས་གྲུབ་ལགས་ཀྱིས་རྩོམ་སྒྲིག་མཛད་པའི་བོད་ཀྱི་བརྡ་སྤྲོད་སློབ་དེབ་འདི་ཉིད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཕྱི་ལོ་ ༡༩༧༡ ལོར་དེབ་གྲངས་ཆིག་སྟོང་ལྷག་ཙམ་དང་། ཕྱི་ལོ་ ༡༩༧༣ ལོར་དེབ་གྲངས་གསུམ་སྟོང་བཅས་དཔར་འདེབས་གནང་འདུག་ཀྱང་དེ་རྗེས་དེ་མུར་ལུས་འདུག་པས། བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་ཁྱབ་སྤེལ་གྱི་བྱ་བ་འདི་དག་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་འདིའི་དམིགས་ཡུལ་དང་ཕྱོགས་མཐུན་ལྟར། བར་ལམ་ག་ཞ་བ་དངོས་གྲུབ་ལགས་ནས་འདི་གའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་ལ་དཔར་འདེབས་དགོས་སྐོར་རེ་བསྐུལ་གནང་དོན་ལྟར། ལུང་སྟོན་པ་རྩ་བ་སུམ་ཅུ་པའི་གཞུང་དང་། རྟགས་ཀྱི་འཇུག་པ་གི་གཞུང་འགྲེལ་རྣམས་ལ་གཞིར་བྱས་བོད་སྐད་དང་ཧིནྡིའི་སྐད་གཉིས་ཤན་སྦྱར་དུ་བཀོད་པའི་བརྡ་སྤྲོད་གནད་བསྡུས་དཔེར་བརྗོད་འགྲེལ་བཤད་དང་བཅས་པ་འདི། རྗོམ་སྒྲིག་པ་ཅན་ཊི་ཤར་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་སློབ་དཔོན་ཟུར་པ་ག་ཞ་བ་དངོས་གྲུབ་ལགས་རང་ཉིད་ནས་བསྐྱར་ཞིབ་ལེགས་བཅོས་གྲུབ་པ་ཀཤྱུཏར་ཐོག་དཔར་རྩ་བསྐྲུན་ཏེ་འདི་གའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་ནས་དཔར་བསྐྲུན་ཞུ་ཐུབ་པར་དགའ་སྤྲོ་བརྟས།

འདིས་ཀྱང་ཧིན་སྐད་བརྒྱུད་བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་ལེགས་པར་མཁྱེན་འདོད་ཅན་གྱི་སློབ་གཉེར་བ་རྣམས་ལ་ཕན་ཐོགས་རྒྱ་ཆེ་ཡོང་བའི་སྨོན་འདུན་བཅས། ལྷཱ་ཆ་དབུས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཤཱཀྱའི་དགེ་སློང་ཟམ་གདོང་པ་བློ་བཟང་བསྟན་འཛིན་གྱིས། གནས་བརྟན་སྡེ་པའི་ལུགས་ཀྱི་སྟོན་པ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ནས་ལོ་ ༣༥༨༠ ས་ཟླའི་ཡར་ཚེས་བཅོ་ལྔ། ཕྱི་ལོ་ ༡༩༩༨ ཟླ་ ༥ ཚེས་ ༣ ལ་བྲིས་པ་ཤིས་པར་འགྱུར་ཅིག ། །།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

इस संस्करण की भूमिका

व्याकरण के समुचित ज्ञान के बिना किसी भी भाषा का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं होता । इसीलिए कहा गया है कि व्याकरण भाषा के शुद्ध और अशुद्ध का ज्ञान कराता है ।

भोट भाषा और साहित्य में भारतीय पाठकों की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को देखकर भोट-हिन्दी व्याकरण का अभाव मेरे मन में बराबर खटकता था, परन्तु भोट शब्द-शास्त्र के समस्त नियमों को हिन्दी में अभिव्यक्त करना इतना सहज काम नहीं है, कि जो चाहे लिख ले । परन्तु अध्यापन के कारण भोट-हिन्दी व्याकरण लिखने के लिए मुझे बहुत ही अधिक प्रोत्साहन मिला था । अतः आज से ३४ वर्ष पूर्व इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित करवा दिया गया था । आज पाठकों की निरन्तर मांग को देखते हुए संभोट व्याकरण का यह तृतीय संस्करण परम श्रद्धेय निदेशक भदन्त सम्दोङ रिन-पो-छे जी के सौहार्द से केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी की ओर से प्रकाशित हो रहा है । मैं निदेशक महोदय का कृतज्ञ हूँ । इधर कई वर्षों से यह अप्राप्य था ।

भोट व्याकरण का यह हिन्दी रूपान्तर मैंने आचार्य धर्माकर आदि प्रख्यात भोट व्याकरणाचार्यों के उपलभ्य भाष्य और व्याख्याओं का अनुशीलन करने के पश्चात् तैयार किया था । छात्रों की कठिनाइयों को देखते हुए यद्यपि अपनी ओर से मैंने इस व्याकरण में सरल हिन्दी लाने का पूर्ण प्रयास किया था, तथापि कुछ स्थानों में दुरूहता रह ही गई थी । इसमें मुझे नये-नये पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करना पड़ा था, जो मूल भोट शब्दावली के रूपान्तर हैं ।

इसका प्रथम संस्करण भारत सरकार के वैज्ञानिक अनुसंधान तथा सांस्कृतिक मंत्रालय की ओर से १९६१ में, और इसके दो ही वर्ष पश्चात् १९६३ में, लाहुल के विद्या प्रेमी उपासक बन्धुओं की ओर से प्रकाशित हुआ था ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कहा जाता है कि संभोट व्याकरण का आदि प्रवर्तक आचार्य थोन-मी संभोट तिब्बत के ग्ञङ (उच्चारण 'ञङ') नामक प्रदेश के थोन ग्राम के निवासी थे । ईसवी सन् ६३३ में भोट सम्राट् स्रोङ-चन-गम्पो ने इन्हें विद्या अध्ययन के लिए भारत वर्ष भेजा था । उस समय उनकी अवस्था १५ वर्ष की थी । सात वर्ष तक सतत अध्ययनरत रहने के पश्चात् थोन-मी संभोट ६४० ई0 में स्वदेश लौट गए । ऐसी मान्यता है कि उस समय तिब्बत की अपनी कोई लिपि नहीं थी । थोन-मी ने सम्राट की आज्ञा से तिब्बती लिपि (=वर्ण माला) और व्याकरण का नव निर्माण किया था । जो आठ अवकाशों से संयुक्त था । परन्तु वर्त्तमान में प्रथम अवकाश का पंचम परिवर्त त्रिशंद् (=सुम-चु-पा) और द्वितीय अवकाश का छठा परिवर्त लिङ्गावतार (=तगस्-जुग) नामक दो अवकाशों को छोड़ कर शेष छह लुप्त हैं । उन अवकाशों का नाम तक भी विद्वानों को ज्ञात नहीं है ।

व्याकरणशास्त्र के मुख्य तीन भाग होते हैं—(१) वर्णविचार, (२) शब्द साधन और (३) वाक्य विन्यास । प्रस्तुत ग्रन्थ में चार अध्याय हैं । प्रथम अध्याय मूल त्रिशंद् (=सुम-चु-पा), द्वितीय अध्याय लिङ्गावतार (=तगस्-जुग), तृतीय अध्याय वार्त्तालाप तथा चौथा अध्याय संभोट के मूल सूत्र । प्रथम अध्याय में वर्णों के वर्गीकरण, उच्चारण और शब्दों के आकार-प्रकार का निरूपण है । द्वितीय अध्याय में लिङ्ग निर्णय तथा क्रियाओं की रूपरचना की मीमांसा है । इस प्रकार शब्द-शास्त्र की मोटी-मोटी बातों का इन दो अध्याय में समावेश हो गया है । छात्रों की सुविधा के लिए तीसरे अध्याय में भाषा सीखने के लिए बीस पाठ वार्त्तालाप के दिए गए हैं, जिनके हिन्दी अनुवाद भी साथ-साथ हैं । इसके अतिरिक्त प्रथम अध्याय में भी स्थान-स्थान पर उदाहरण और वाक्य दिए गए हैं, जिससे छात्रों को व्याकरण के नियमों को समझने में कठिनाई अनुभव न हो । इस प्रकार यह ग्रन्थ कोरा व्याकरण ही न होकर पाठ्य पुस्तक का काम भी दे सकेगी । यद्यपि द्वितीय संस्करण के समय आवश्यक संशोधन और परिवर्द्धन करने में मैंने अपनी ओर से भरसक चेष्टा की थी, फिर भी व्याकरण सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ आँख से ओझल होकर रह गई थीं । उन भूलों को इस बार सुधारने का

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्रयत्न किया गया है । परन्तु हिन्दी वाक्यों के अशुद्ध प्रयोग—जैसे, आप किस प्रदेश के हैं ? का आप किस प्रदेश से हैं । मैं माता-पिता से नहीं डरता का मैं माता-पिता को नहीं डरता । उनके पास कलम नहीं है का उनको कलम नहीं है । मैं स्कूल जाता हूं का मैं स्कूल को जाता हूं । चाय में नमक नहीं है का चाय के अन्दर नमक नहीं है । गूंगे के लिए तमाशा क्या ? का गूंगे को तमाशा क्या आदि विभक्ति प्रत्ययों की त्रुटियों को भोट-भाषा की प्रकृति के अनुसार रहने दी गई है । आशा है, इस से यह पुनर्मुद्रित संस्करण विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगा ।

मौर्य निकेतन, कुल्लू
बुद्ध पूर्णिमा, १४ मई, १९९५

के० अंगरूप लाहुली

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पहला अध्याय

སུམ་ཅུ་པ། = त्रिंशद्

༄༅། །བོད་སྐད་དུ།

भोट भाषा में

ལུང་སྟོན་པ་རྩ་བ་སུམ་ཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བ།

རྒྱ་གར་སྐད་དུ།

भारतीय भाषा में ।

व्याकरण मूल त्रिंशत् नाम ।

सूत्र०— ངག་གི་དབང་ཕྱུག་འཇམ་པའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

अनु०— (मैं) वागीश्वर मञ्जुश्री को प्रणाम करता हूँ ।

सूत्र०— གང་ལ་ཡོན་ཏན་མཆོག་མངའ་བའི།།

དཀོན་མཆོག་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

अनु०— जिनमें (रत्नों के सदृश) परमगुण निहित हैं,

उन रत्न (त्रय) को प्रणाम करता हूँ ।

सूत्र०— གང་གིས་སྒྲ་དབྱངས་ཀུན་གསུངས་པའི།།

འཇམ་པའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

अनु०— जिन्होंने समस्त स्वरों और शब्दों को कहा,

(उन) मञ्जुश्री को प्रणाम करता हूँ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सूत्र०— གང་གིས་མིང་གཞི་སྔོན་གསུངས་པ།།
ཏག་ཞི་བ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

अनु०— जिन्होंने संज्ञामूल (=वर्ण) (सर्व) प्रथम कहे,
(उन) सदाशिव को नमस्कार करता हूँ ।

सूत्र०— སྦྱིབ་སྦྱོར་ལེགས་མཛད་མཁས་རྣམས་དང་།
བླ་མ་ལ་ཡང་ཕྱག་འཚལ་ནས།།

अनु०— (शब्दों के) सम्यक् प्रयोजक विद्वज्जन और,
(अपने) गुरु को भी प्रणाम कर ।

सूत्र०— བསླབ་པ་ཀུན་གྱི་གཞི་འཛིན་ཅིང་།།
རིག་བྱེད་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུ།།
མིང་ཚིག་བརྗོད་པ་ཀུན་གྱི་གཞི།།
ཡི་གེའི་སྦྱོར་བ་བཤད་པར་བྱ།།

अनु०— (मैं[1] सभी प्रकार के) शिक्षापदों के आधारभूत,
वेदोक्तियों के (कारणीभूत) हेतु, (तथा)
संज्ञा, पद (और) वाक्यों के मूल,
वर्णों के प्रयोग बताऊँगा ।

सूत्र०— ཡི་གེ་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་གཉིས།།

अनु०— (अन्य भाषाओं की भांति भोट भाषा में भी)
आलि (और) कालि दो वर्ण (माला) हैं ।

---

१. थोनमी संभोट अथवा थुमी संभोट जिन्होंने सर्वप्रथम ६४० ई0 में भोट भाषा की लिपि और व्याकरण को बनाया था ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सूत्र०— ཨཱ་ལི་གསལ་བྱེད་ཨི་སོགས་བཞི།།

अनु०— आलि (अर्थात्, मूल ध्वनियों को) द्योतित करने वाले 'इ' इत्यादि चार (स्वर हैं) ।

ཨཱ་ལི།= **स्वरवर्ण**[1]

ཨི་	ཨུ་	ཨེ་	ཨོ།
इ	उ	ए	ओ

सूत्र०— ཀཱ་ལི་སུམ་ཅུ་ཐམ་པའོ།།

अनु०— कालि (अर्थात् व्यंजन) तीस हैं ।

ཀཱ་ལི།= **व्यञ्जनवर्ण**

ཀ་	ཁ་	ག་	ང་།	ཅ་	ཆ་	ཇ་	ཉ།
क	ख	ग	ङ ।	च	छ	ज	ञ ।
ཏ་	ཐ་	ད་	ན།	པ་	ཕ་	བ་	མ།
त	थ	द	न ।	प	फ	ब	म ।
ཙ་	ཚ་	ཛ་	ཝ།	ཞ་	ཟ་	འ་	ཡ།
च़	छ़	ज़	व ।	ज	ज़	अ	य ।
ར་	ལ་	ཤ་	ས།	ཧ་	ཨ་[2]		
र	ल	श	स ।	ह	अ ।		

१. चारों स्वर ह्रस्व लिखे जाते हैं परन्तु इन का उच्चारण डेढ़ मात्रा के बराबर होता है ।

२. भोट भाषा में འ और ཨ यञ्जन वर्ण में हैं अतः इन के उच्चारण भी डेढ़ मात्रा के बराबर होते हैं । འ के लिये हिन्दी वर्ण 'अ' है परन्तु इसका उच्चारण अ और ह का मध्यवर्ती होता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་གནས། = वर्णों का उच्चारण स्थान[1]

མགྲིན་པ་ = कण्ठ ཀ་ཁ་ག་ང་འ་ཧ་ཨ།

ཀན་ = तालु ཅ་ཆ་ཇ་ཉ་ཙ་ཚ་ཛ་ཞ་ཡ་ཤ་ཨི་ཨེ།

སོ་ = दन्त ཏ་ཐ་ད་ན་ཟ་ལ་ས།

མཆུ་ = ओष्ठ པ་ཕ་བ་མ་ཝ་ཨུ་ཨོ།

སྤྱི་བོ་ = मूर्द्धा ར།

སྣ་ལྡན་ = अनुनासिक (ང་ཉ་ན་མ་)

བྱེད་པ། = करण

जिस साधन के द्वारा ध्वनि उत्पन्न होती है उसे करण कहते हैं । कण्ठ और ओष्ठ से उच्चारण होने वाले वर्णों का करण अर्थात साधन अपने उत्पत्ति स्थान है । तालु से उच्चारण होनेवाले वर्णों का जिह्वाग्र भाग का मध्य करण है । दाँत से निकलने वाले वर्णों का जिह्वाग्र करण हैं तथा ར་ का जिह्वाग्र भाग का ऊपरी हिस्सा करण है ।

རྩོལ་བ། = प्रयत्न

किसी वर्ण के उच्चारण करने में नाभि प्रदेश से वायु जब ऊपर उठती है तो हृदय आदि स्थानों को स्पर्श करती हुई जिह्वा को प्रेरित करती है । तब जिह्वा में एक स्पंदन पैदा होता है । जिस से जिह्वा के अग्र मध्य तथा मूल तालु आदि

---

१. कुछ भोट वैयाकरणों के मतानुसार ཨུ་ ཨོ་ कण्ठ्यौष्ठ्य । ཨི་ ཨེ་ कण्ठ्य तथा ཙ་ ཚ་ ཛ་ ཟ་ ས་ इत्यादि दन्त्यतालव्य है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

स्थानों में स्पर्श होकर जो ध्वनि उत्पन्न होती है उच्चारण की इस विधि को प्रयत्न कहते हैं । प्रयत्न दो तरह के हैं । बाह्य-प्रयत्न तथा आभ्यान्तर-प्रयत्न ।

ཕྱི་རྩོལ། = बाह्य-प्रयत्न

ध्वनि उत्पन्न हो जाने के बाद वागिन्द्रिय की जो क्रिया होती है उसे बाह्य-प्रयत्न कहते हैं । इस के प्रधान चार भेद हैं । घोष । अघोष । महाप्राण तथा अल्पप्राण ।

སྒྲ་ལྡན། = घोष

ག་ ང་ ཇ་ ཉ་ ད་ ན་ བ་ མ་ ཛ་ ཞ་ འ་ ཡ་ ར་ ལ་
ཧ་ ཨ་ ཨི་ ཨུ་ ཨེ་ ཨོ་

घोष वर्ण हैं । इन के उच्चारण में घोष अर्थात नाद् होता है ।

སྒྲ་མེད། = अघोष

ཀ་ ཁ་ ཙ་ ཚ་ ཏ་ ཐ་ པ་ ཕ་ ཙ་ ཚ་ ཤ་ ཟ་ ཤ་ ས་ अघोष वर्ण हैं । इन के उच्चारण में केवल श्वास का प्रयोग होता है कोई घोष अर्थात् नाद नहीं होता है ।

སྲོག་ཆེན། = महाप्राण

ཁ་ ཆ་ ཐ་ ཕ་ ཚ་ ཞ་ ཟ་ ཤ་ ས་ ཧ་ ཨ་ ཨི་ ཨུ་ ཨེ་
ཨོ་ महाप्राण वर्ण हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྒྲག་ཆུང་། = **अल्पप्राण**

बाकी वर्ण अल्पप्राण हैं । उन में से ཞ་ ཟ་ ཤ་ས་ ཧ इत्यादि वर्णों के उच्चारण में घर्षण होता है इस लिये इन्हें ऊष्म (དྲོ་བ་) वर्ण कहते हैं ।

ནང་རྩོལ། = **आभ्यान्तर-प्रयत्न**

वर्णों के ध्वनि उत्पन्न होने से पूर्व वागिन्द्रिय की जो क्रिया होती है उसे आभ्यन्तर-प्रयत्न कहते हैं । इस के चार भेद हैं । विवृत, संवृत, स्पृष्ट तथा ईषत्स्पृष्ट ।

ཕྱེ་བའི་རྩོལ་བ། = **विवृत प्रयत्न**

इन के उच्चारण में वागिन्द्रिय खुली रहती है ।ཨ་ को छोड़ कर महाप्राण के सभी वर्ण विवृत हैं ।

བཙུམ་པའི་རྩོལ་བ། = **संवृत प्रयत्न**

ཨ་ के उच्चारण में वागिन्द्रिय का द्वार बन्द रहता है, इसलिये यह संवृत है ।

ཕྲད་པའི་རྩོལ་བ། = **स्पृष्ट प्रयत्न**

इन के उच्चारण में वागिन्द्रिय कुछ खुली रहती है । ཀྵ་ को छोड़ कर पंचम वर्ग के सभी वर्ण स्पृष्ट हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཚུང་ཟད་ཕྲད་པའི་རྩོལ་བ། = ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न

इन के उच्चारण में वागिन्द्रिय का द्वार कुछ खुला रहने के साथ साथ उत्पत्ति स्थानों में थोड़ा स्पर्श करता है ཡ་ ར་ ལ་ ཤ་ इत्यादि वर्ण ईषत्स्पृष्ट हैं ।

དབྱངས། = स्वर

ཨི་ ཨུ་ ཨེ་ ཨོ་

ཕྱི་མོ་ = मात्रा ི ུ ེ ོ

इन मात्राओं का नाम है क्रमशः གི་གུ། ཞབས་ཀྱུ། འགྲེང་བུ། ན་རོ། किगु । जबस्क्यु । डेंगबु । नरो ।

གསལ་བྱེད་དབྱངས་བརྒྱན། = स्वरालंकृत व्यञ्जन

ཀི་	ཁུ་	གེ་	ངོ།	ཅི་	ཆུ་	ཇེ་	ཉོ།
की	खु	गे	ङो ।	ची	छु	जे	ञो ।
ཏི་	ཐུ་	དེ་	ནོ།	པི་	ཕུ་	བེ་	མོ།
ती	थु	दे	नो ।	पी	फु	बे	मो ।
ཙི་	ཚུ་	ཛེ་	ཝོ།	ཞི་	ཟུ་	འེ་	ཡོ།
च़ी	छु	ज़े	वो ।	जी	ज़ु	अे	यो ।
རི་	ལུ་	ཤེ་	སོ།	ཧི་	ཨུ་	ཧེ་	ཨོ།
री	लु	शे	सो ।	ही	अु	हे	ओ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

स्वर और व्यञ्जनों का उच्चारण डेढ़ मात्रा के बराबर होता है अत: जब इन दोनों का मेल होता है तो व्यञ्जनों का उच्चारण दीर्घ सा किया जाता है । किन्तु जब संस्कृत का कोई शब्द भोट लिपि में लिखना हो जिसमें दीर्घस्वर रहे तो व्यञ्जन के साथ नीचे 'འ' जोड़ दिये जाते हैं । जैसे, की= གཱི नाम= ནཱམ། दूत= དཱུཏ། बीज= བཱིཇ།

ह्रस्वस्वर के लिये जैसे, दिन= དིན། दस= དས། पुल= པུལ། दिल= དིལ། इत्यादि ।

དོན་ལྡན་གསལ་བྱེད་འགའ། = कुछ सार्थक व्यञ्जन

ཁ་	ང་	ཆ་	ཇ་	ཉ་	ད་	ན་	ཕ་
मुँह	मैं	जोड़ा	चाय	मछली	अब	तो	पिता
བ་	མ་	ཝ་	ཡ་	ར་	ལ་	ཤ་	ས་
गाय	माता	लोमड़ी	अयुग्म	बकरी	दर्रा	मांस	भूमि

དབྱངས་ལྡན་གསལ་བྱེད། = स्वर युक्त व्यञ्जन

ཁེ་	ཁོ་	གི་	ངུ་	ངོ་	ཅི་	ཆུ་	ཆེ་
लाभ	वह	की	रोओ	रूप	क्या	पानी	बड़ा
ཇོ་	ཐོ་	དུ་	དེ་	ཕོ་	བེ་	མི་	མུ་
ठाकुर	सूची	में	वह	नर	बछड़ा	मनुष्य	कोना
མེ་	མོ་	ཚེ་	ཚོ་	ཞོ་	ཟོ་	འི་	རི་
आग	मादा	आयु	गण	दही	खाओ	का	पहाड़

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རུ་	རོ་	ལི་	ལོ་	ཤོ་	སི་	སུ་	སོ་
में	मुर्दा	कांसा	वर्ष	जुवा	सीटी	में	दाँत

ཡི་གེ་གཉིས་ཀྱི་ཚིག = **दो अक्षरों का शब्द**

ཀ་བ	ཕ་མ་	ཁ་བ་	ཆ་ག་	ཚ་བ་	ཉ་པ་	ལ་བ་
खम्भा	माता पिता	बरफ	गोट	ताप	मछुआ	कंबल
ར་མ་	ར་བ་	ང་ལ་	ལ་ཆ་	ཉ་ག་	ཏ་ལ་	ཐ་མ་
बकरी	प्राकार	मुझको	लाक्षा	तराजू	ताल	नीचा
ཁ་ཏ་	མ་མ་	ཙ་ན་	ཆ་ཁ་	ཛ་ཡ་	ཀྵ་ཁ་	ཞ་ར་
उपदेश	दाई	समय	निशाना	जय	मेंड़	काणा
ཟ་མ་	ཧ་ལ་	ཨ་མ་	ཆ་ར་	ཐ་བ་	ཀ་ཙ་	ཁ་ཤ་
भोजन	विष	माँ	सेला	कठोर	द्रव्य	हिरण
ད་ར་	ན་ཁ་	ཞ་ལ་	ཤ་བ་	ས་ཡ་	ཀ་ར་	ཉ་མ་
लस्सी	चरागाह	लेप	मृग	दस लाख	चीनी	शिष्या

सू०— དེ་ལ་རྗེས་འཇུག་བཅུ་ཡིན་ཏེ།།

अनु०— उन (तीस व्यञ्जन वर्णों) में परपैठ (=पराक्षर) दस हैं ।

རྗེས་འཇུག་བཅུ། = **दस पराक्षर**

ག་ ང་ ད་ ན་ བ་ མ་ འ་ ར་ ལ་ ས།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सू०— དེ་ལས་ལྔ་ནི་སྔོན་དུའང་འཇུག།
अनु०— उन (पराक्षरों) में से पाँच पूर्व भी योग (होते हैं) ।

སྔོན་འཇུག་ལྔ། = **पाँच पूर्वाक्षर**

ག་ ད་ བ་ མ་ འ།

सू०— མི་འཇུག་པ་ནི་ཉི་ཤུ་བོ།།
अनु०— (पूर्व तथा पर कहीं भी) अव्यवहार्य (संज्ञा मूलक अक्षर) - बीस हैं ।

མི་འཇུག་པའི་ཡི་གེ་ཉི་ཤུ། = **बीस अव्यवहार्य अक्षर**

ཀ་ཁ། ཅ་ཆ་ཇ་ཉ། ཏ་ཐ། པ་ཕ།
ཙ་ཚ་ཛ་ཝ། ཞ་ཟ་ཡ། ཤ། ཧ་ཨ།

सू० ཀཱ་ལི་ཕྱེད་དང་བཅུད་སྡེ་ནི།།
བཞི་བཞི་དག་ཏུ་ཕྱེ་བ་ལས།།
དང་པོ་གསུམ་པ་བཞི་པ་ལ།།
མས་གཉིས་དྲུག་པའི་གསུམ་པ་དང་།།
བདུན་པ་ལས་ནི་ཤ་མ་གཏོགས།།
རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་རུ་འདོད།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु०— कालि (=व्यञ्जन) (जो) अर्ध के साथ आठ वर्ग हैं, (अर्थात साढ़े सात वर्ग हैं) चार चार वर्गों में विभाग करने से प्रथम, तृतीय (ताथा) चतुर्थ (वर्ग) में, पर (अक्षर) दो (दो तथा) षष्ठी (वर्ग) का तृतीय (अक्षर 'འ') और सप्तम (वर्ग) से तो 'ཤ' के अतिरिक्त (ར་ ལ་ ས་ आदि सब) दस परपैठ्य अक्षर (=पराक्षर) में माने जाते हैं ।

སྡེ་པ་ཕྱེད་དང་བརྒྱད། = अर्ध के साथ आठ वर्ग				
	ཡས་ पूर्व		མས་= पर	
१. ཀ་སྡེ་= क वर्ग	ཀ་	ཁ་	ག་	ང་
२. ཅ་སྡེ་ = च ''	ཅ་	ཆ་	ཇ་	ཉ་
३. ཏ་སྡེ་ = त ''	ཏ་	ཐ་	ད	ན་
४. པ་སྡེ་ = प ''	པ་	ཕ་	བ་	མ་
५. ཙ་སྡེ་ = च़ ''	ཙ་	ཚ་	ཛ	ཝ
६. ཞ་སྡེ་ = ज ''	ཞ	ཟ་	འ	ཡ་
७. ར་སྡེ་ = र ''	ར་	ལ་	ཤ	ས་
८. ཧ་སྡེ་ = ह ''	ཧ་	ཨ་		

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མིང་གཞིའི་ཡི་གེ་ལ་རྗེས་འཇུག་གི་སྦྱོར་བ།
संज्ञा मूलक अक्षरों में पराक्षरों का प्रयोग

དཔེར་བརྗོད། = उदाहरण

शब्द	=	དག་	དང་	ཚད་	ཅན་	ལབ་	ལམ་
उच्चारण	=	दग्	दङ्	छ़द्	चन्	लब्	लम्
अर्थ	=	दो	और	प्रमाण	वाला	कहो	मार्ग
		ཁའ་	ཤར་	བལ་	ལས་	ཚང་	ཞལ་
		खअ	शर्	बल्	लस्	छङ्	जल्
		आकाश	पूर्व	ऊन	से	घोंसला	मुँह

བརྗོད་པ། = वाक्य

शब्द	=	ཕ་དང་མ།	མ་མ་ལ་ལབ།	བ་དང་ར་དག
उच्चारण	=	फ दङ् म ।	म म ल लब् ।	ब दङ् र दग् ।
अर्थ	=	पिता और माता ।	दाई को कहो ।	गाय और बकरी दो ।
		ང་ལ་ཉ།	ཁ་ཤ་དང་ཤ་བ་དག་ཆ།	ས་ཐ་བ།
		ङ ल ञ ।	ख श दङ् श व दग् छ ।	स थ व ।
		मुझ को मछली ।	हिरण और मृग दो जोड़ा ।	भूमि कड़ी ।
		ད་ཨ་མ་ལབ།	ཉ་པ་ག་ན།	ཁ་བ་ཆུ།
		द अ म लब् ।	ञ प ग न ।	ख व छु ।
		अब माँ कहो ।	मछुआ कहाँ ।	बरफ पानी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཝ་ལ་ཤ།	ཝ་ཐ་མ།	མི་ལ་ཁེ།
व ल श ।	व थ म ।	मी ल खे ।
लोमड़ी को मांस।	लोमड़ी नीच ।	मनुष्य को लाभ ।
ད་ར་དང་ཀ་ར།	ཤར་ལས་ཚ་བ།	མ་ལ་བལ།
द र दङ् क र ।	शर् लस् छ़ व ।	म ल बल् ।
लस्सी और चीनी ।	पूर्व से ताप ।	माता को ऊन ।
ཟ་མ་ག་ན།	ཞ་ར་ལ་ཟ་མ།	ཀ་ཅ་ས་ཡ།
ज़ म ग न ।	ज र ल ज़ म ।	क च स य ।
भोजन कहाँ ।	काणो को भोजन ।	द्रव्य दस लाखं ।

དབྱངས་ལྡན་གསལ་བྱེད་རྗེས་འཇུག་ཅན།

पराक्षरवाले सस्वर व्यञ्जन

དཔེར་བརྗོད། = उदाहरण

शब्द	=	མིག་	མིང་	རེད་	ཡིན་	ནུབ་	ཡུམ་
उच्चारण	=	मिग्	मिङ्	रेद्	यिन्	नुब्	युम्
अर्थ	=	नेत्र	नाम	है-हूँ-हैं	है-हूँ-हैं	पश्चिम	माँ
		མིའ་	ནོར་	ཡུལ་	ལུས་	ཀུན་	ཆོས་
		मी	नोर्	युल्	लुस्	कुन्	छोस्
		आदमी	धन	देश	काय	सब	धर्म

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བརྗོད་པ།= वाक्य

ར་མ་ལ་མིག	ཇོའི་མིང་ཅི།	དེ་ཕ་མ་རེད།	ང་མི་ཡིན།
बकरी को नेत्र ।	ठाकुर का नाम क्या ।	वह माता पिता हैं ।	मैं आदमी हूँ ।

དེ་ནུབ་རེད།	ཡུམ་དང་མ་མ་རེད།	མིའ་ཞ་ར་རེད།
वह पश्चिम है ।	माँ और दाई हैं ।	आदमी काणा है ।
ནོར་ལ་ངུ།	ཡུལ་ལ་ཆ་བ།	མིའི་ལུས་རེད།
धन को रोओ ।	देश को जाना ।	मनुष्य का शरीर है ।

དཔེར་བརྗོད།= उदाहरण

ནུ་བོ་	ནེ་ཙོ་	ཡི་གེ་	རི་མོ་	ཆུ་བོ་	པོ་ཏི་
भाई	तोता	पत्र	चित्र	नदी	पोथी
ཚོ་ལོ་	ཉེ་དུ་	ཇོ་མོ་	དོ་པོ་	ཙི་ཙི་	ཞི་མི་
जुआ	रिश्तेदार	ठकुरानी	भार	चूहा	बिल्ली
པུ་གུ་	མུ་ཟི་	རི་བོ་	ནུ་མོ་	ལོ་ཐོ་	བུ་མོ་
बच्चा	गंधक	पहाड़	बहिन	पंचांग	लड़की

བརྗོད་པ།= वाक्य

ཙི་ཙི་དང་ཞི་མི།	དེ་པུ་གུའི་ནེ་ཙོ་རེད།	རི་བོ་རུ་མུ་ཟི།
चूहा और बिल्ली ।	वह बच्चे का तोता है ।	पहाड़ में गंधक ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ར་མའི་ནུ་མོ་རེད།	ཇོ་མོ་བུ་མོ་རེད།	ཡི་གེ་ནུ་བོ་ལ་རེད།
बकरी की बहिन है ।	ठकुरानी लड़की है ।	पत्र भाई को है ।
ནེ་ཙོ་དང་ཤ་བ་དག	ཆུ་བོ་རུ་ཆུ།	ཚོ་ལོ་ཧ་ལ་རེད།
तोता और मृग दो ।	नदी में पानी ।	जुवा विष है ।
ངའི་ཉེ་དུའི་ཕྲུ་གུ་རེད།	ང་དང་ནུ་བོ་དག	ནུ་བོ་དང་ནུ་མོ།
मेरे रिश्तेदार का बच्चा है ।	मैं और भाई दो ।	भाई और बहिन ।

དཔེར་བརྗོད།= उदाहरण

ཉི་མ་	ཁུ་ར་	ཁུ་བ་	གོ་ཆ་	ཡུ་ར་	ཟེ་བ་
सूर्य	पूड़ी	रस	कवच	नहर	अयाल
ནུ་མ་	ལོ་མ་	བུ་ཚ་	དུ་བ་	ཕོ་ཉ་	ཏོ་ལ་
स्तन	पत्ता	पुत्र	धुवाँ	दूत	तोला
ཕྲི་བ་	ལུ་མ་	ཟི་ར་	མོ་པ་	ཉོ་ཚ་	ཆུ་པ་
कबूतर	पोखरी	जीरा	ज्योतिषी	सौदा	चोगा

བརྗོད་པ།= वाक्य

དེ་བུ་ཚ་རེད།	དེ་བུ་ཚའི་ཕ་རེད།
वह पुत्र है ।	वह पुत्र का पिता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དེ་བུ་མོ་ཡིན།	དེ་བུ་མོའི་ཨ་མ་རེད།
वह पुत्री है ।	वह पुत्री की माता है ।
དེ་མོ་པ་ཡིན།	དེ་མོ་པའི་ཡི་གེ་རེད།
वह ज्योतिषी है ।	वह ज्योतिषी का पत्र है ।
དེ་ཕོ་ཉ་ཡིན།	དེ་ཕོ་ཉའི་ཕྲུ་གུ་རེད།
वह दूत है ।	वह दूत का बच्चा है ।
དེ་ར་མ་ཡིན།	དེ་ར་མའི་ནུ་མ་ཡིན།
वह बकरी है ।	वह बकरी का स्तन है ।
དེ་མུ་ཟིེ་ཡིན།	དེ་མུ་ཟིའི་རི་བོ་རེད།
वह गंधक है ।	वह गंधक का पहाड़ है ।
དེ་ཡུ་ར་རེད།	དེ་ཡུ་རའི་ཆུ་རེད།
वह नहर है ।	वह नहर का पानी है ।

དཔེར་བརྗོད། = उदाहरण

མེ་ཏོག་	གུ་གུལ་	ཀ་རག་	ཆུ་ལོག་	རི་བོང་
फूल	गूगुल	खड़िया	बाढ़	खरगोश
འོ་ཐུག་	ཆུ་ཤིང་	ཁ་ཆར་	ཆུ་མིག་	ཉོ་ཚོང་
खीर	केला	बारिश	स्रोत	सौदा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཆུ་ཕུམ་	མུ་ཏིག་	ཐོ་ཡིག་	ལ་ཕུག་	བ་ལང་
लोटा	मोती	सूचीपत्र	मूली	गाय
ཕུ་ཐུང་	ཆུ་སེར་	ངུ་ལབ་	ཅ་ལག་	གོ་ལག
आस्तीन	पीब	विलाप	सामान	शस्त्र

བརྗོད་པ།= वाक्य

ཆུ་ཕུམ་དུ་མེ་ཏོག་	རི་བོང་གི་མིག་	མུ་ཏིག་གི་ཡུལ།
लोटे में फूल ।	खरगोश का नेत्र ।	मोती का देश ।
ཆུ་པའི་ཕུ་ཐུང་	ཆུ་བོ་རུ་ཆུ་ལོག	ཆུ་མིག་དང་ཆུ།
चोगे की आस्तीन ।	नदी में बाढ़ ।	स्रोत और पानी ।
དེ་ཐོ་ཡིག་རེད་	ལ་ཕུག་བ་ལང་ལ་རེད།	ཆུ་སེར་ཆུ་རེད།
वह सूचीपत्र है ।	मूली गाय के लिए है ।	पीब पानी है ।

མི་ལ་གོ་ལག་དང་གོ་ཆ་ཡིན།	འོ་ཐུག་གི་ཆུ་ལོག་དང་ཆུ་ཕུམ་གྱི་ཆུ།
आदमी के लिये शस्त्र और कवच है ।	खीर की बाढ़ और लोटे का पानी ।

ཅ་ལག་ང་ལ་རེད།	ཅ་ལག་དང་གོ་ལག་དག	བ་ལང་གི་ངུ་ལབ།
सामान मुझको है ।	सामान और शस्त्र दो ।	गौ का विलाप ।

དཔེར་བརྗོད།= उदाहरण

རོལ་མོ་	ལག་ཆ་	ངང་པ་	བག་མ་	མག་པ།
झाँझ	हथियार	बतख	बधू	वर

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཅོག་ཙེ་	སྒྲུབ་ཆི་	ཐུར་མ་	རིག་པ་	སེན་མོ།
मेज़	बटन	चम्मच	विद्या	नाखून
ཁང་པ་	ཐག་པ་	ནོར་བུ་	ཐོད་པ་	སེང་གེ
घर	रस्सी	मणि	कपाल	सिंह
གང་ག་	ཚེར་མ་	ནུབ་མོ་	ཐོག་ཁ་	ངན་པ།
गंगा	काँटी	रात्री	छत	दुष्ट
ཡག་པོ་	རལ་པ་	མུན་པ་	ཐུབ་པ་	མིག་ཆུ།
अच्छा	जटा	अन्धकार	मुनि	आँसू
ཕུར་བུ་	ཕག་ཟེ་	ཚོད་མ་	ཁུང་བུ་	གད་མོ།
कील	ब्रुश	सब्जी	बिल	हंसी

བརྗོད་པ། = वाक्य

བག་མ་དང་མག་པ་དག	ཐུབ་པའི་སེན་མོ་ཆེ།	ཚོད་མའི་ཁུ་བ་རེད།
बधू और वर दो ।	मुनि का नाखून बड़ा ।	सब्ज़ी का रस है ।
གང་ག་ཆུ་རེད།	ནུབ་མོ་ལ་ཁང་པ།	ཁང་པའི་ཐོག་ཁ་རེད།
गंगा पानी है ।	रात के लिए घर ।	मकान का छत है ।
སེང་གེ་ངན་པ་རེད།	རིག་པ་ཡག་པོ་རེད།	ཙི་ཙི་ཁུང་བུར་མེད།
सिंह दुष्ट है ।	विद्या अच्छी है ।	चूहा बिल में नहीं है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དཔེར་བརྗོད། = उदाहरण

ཤེས་རབ་	གུར་གུམ་	ཅུང་ཟད་	ཤིང་ཏོག་	ཕུག་རོན།
प्रज्ञा	कुमकुम	थोड़ा	फल	कबूतर
ནོར་ཅན་	རེག་ཟིག་	བུད་མེད་	ཡོན་ཆབ་	དུས་ཚོད།
धनी	नोट	औरत	जलदान	समय
ཤིང་བལ་	རིན་ཆེན་	ཟུར་ཆག་	ཐུན་མོང་	ཡིག་ཚང་།
रूई	रत्न	अपभ्रंश	साधारण	पत्रालय

བརྗོད་པ། = वाक्य

ནོར་ཅན་ལ་རིན་ཆེན། ཡིག་ཚང་དུ་ཡི་གེ ཐུབ་པ་ལ་ཡོན་ཆབ་རེད།
धनवान के लिये रत्न । पत्रालय में पत्र । मुनि के लिये जलदान है ।

རི་བོ་དང་ས་ལ་ངང་པ་མེད། བུད་མེད་དེ་ཁོའི་བག་མ་རེད།
पंहाड़ और भूमि पर बतख नहीं है । वह औरत उसकी बधू है ।

ཤིང་ཏོག་ཨ་མ་ལ་ཡིན། ངའི་རེག་ཟིག་ཡིན། དུས་ཚོད་དུ་ཟོ།
फल माता के लिये है । मेरा नोट है । समय में खाओ ।

ཝ་དང་སེང་གེ་དག་གི་ཁུང་བུ་རེད། ཡི་གེ་དེ་ཟུར་ཆག་རེད། རིན་ཆེན་ནོར།
लोमड़ी और सिहं दोनों का बिल है । वह पत्र अपभ्रंश है । रत्न धन ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མེ་ཏོག་གི་གུར་གུམ་རེད། བུད་མེད་རིག་པ་ལས་ནོར་ལ་ངུ།
फूल का कुमकुम है । औरत विद्या से धन को रोती ।

ཤིང་ཏོག་ཅུང་ཟད་མ་ལ་ཡིན། ཡི་གེ་དེ་ཐུན་མོང་བ་རེད།
थोड़ा फल माँ के लिये है । वह पत्र साधारण है ।

བསླད་ཚིག་འགའ། = कुछ मिश्रित शब्द

ཀུ་ཤ་	ཆུང་ངུ་	ནང་	ཆེན་པོ་	དང་པོ་	མིན།
कुश	छोटा	भीतर	बड़ा	प्रथम	नहीं है
ཡོན་ཏན་	གོམ་པ་	ཆད་པ་	ཀོ་རེ་	ཅང་ཏེའུ་	མར་མེ།
गुण	पग	दण्ड	कटोरा	डमरू	दीपक
དོན་མེད་	རིང་པོ་	ཐུང་ངུ་	མེད་	ཁུ་རུ་	ཡོད།
व्यर्थ	लम्बा	छोटा	नहीं है	बोझ	है
མུ་གེ་	ཞིང་ཀ་	འོ་མ་	ལེ་ལོ་	ལག་པ་	སོར་མོ།
दुर्भिक्ष	खेत	दूध	आलस्य	हाथ	अँगुली

བརྗོད་པ། = वाक्य

ཁོ་ལ་ནོར་ཡོད། ནུ་བོ་ལ་ནོར་མེད། རི་ལ་ཀུ་ཤ་རིང་པོ་ཡོད།
उस को धन है । अनुज को धन नहीं है । पहाड़ पर कुश लम्बा है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འོ་མ་ལ་ཧ་ལ་མེད། ནོར་བུ་ལ་ཡོན་ཏན་ཡོད། དེ་ངའི་ཀོ་རེ་མིན།
दूध में विष नहीं है । मणि में गुण है । वह मेरा कटोरा नहीं है ।

ཁུ་རུ་ནུ་བོའི་ཡིན། ཡུལ་ལ་མུ་གེ་མེད། ལག་པའི་སོར་མོ་རེད།
बोझ अनुज का है । देश में दुर्भिक्ष नहीं है । हाथ की अँगुली है ।

མེ་ཏོག་རིང་པོ་མེད། ཆད་པ་ངན་པ་རེད། དེའི་ནུ་བོ་དང་པོ་རེད།
पुष्प लम्बा नहीं है । दण्ड बुरा है । उसका अनुज प्रथम है ।

ནང་ལ་མར་མེ་ཆེན་པོ་ཡོད། མི་ལ་ལག་ཆ་དོན་མེད་ཡིན།
भीतर में बड़ा दीपक है । मनुष्य के लिये हथियार व्यर्थ है ।

ཡང་འཇུག་གི་ཡི་གེ་ད་དང་ས་གཉིས་ཀྱི་སྦྱོར་ཚུལ།

परात्पराक्षर ད་ और ས་ दो का प्रयोग

परात्पराक्षर ད་ पराक्षर ན་ ར་ ལ་ तीन के पश्चात् लगता है ।

जैसे, ཀུནད། ཤརད། རོལད།

परात्पराक्षर ས་ पराक्षर ག་ ང་ བ་ མ་ चार के पश्चात् लगता है ।

རིགས་[1]	ཚིགས་	ལུགས་	ཤགས་	ལེགས་
रिगस्	छ़िगस्	लुगस्	शगस्	लेगस्
जाति	जोड़	विधि	तर्क	अच्छा

---

१. भोट भाषा में अन्त्य परात्पराक्षर 'ས་' के बाद སྦྱར་བསྡུ་ या འབྲེད་སྡུད་ का སོ། སམ། रहे तो उसका पूरा उच्चारण किया जाता है, अन्यथा हलन्त होता है । परात्पराक्षर 'ད་' के पूर्ववर्ती अक्षर को झटके के साथ उच्चारण करना चाहिये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གངས་	ནོངས་	ལིངས་	ཁོངས་	ཕོངས་
गङस्	नोङस्	लिङस्	खोङस्	फोङस्
हिम	दोष	शिकार	अधीन	गुदा
རིམས་	སེམས་	ཚེམས་	ཁམས་	ངོམས་
रिमस्	सेमस्	छेमस्	खमस्	ङोमस्
रोग	मन	वसीयत	धातु	तृप्ति
ཚིབས་	ཐབས་	ཞབས་	ཁེབས་	རབས་
छिबस्	थबस्	जबस्	खेबस्	रबस्
वाहन	उपाय	चरण	जिल्द	नदी में का मार्ग

བརྗོད་པ། = वाक्य

རི་ལ་གངས། ལུས་ལ་ཚིགས། རྗེ་ལ་ཚིབས། མི་ལ་ནོངས།

पहाड़ पर हिम । शरीर में जोड़ । ठाकुर को वाहन । मनुष्य में दोष ।

དེ་ཨ་མའི་ཞབས་རེད། ཆུ་སྤུམ་ལ་ཁེབས་མེད། ཆོས་ཀྱི་ཁམས།

वह माता का चरण है । लोटे पर आवरण नहीं है । धर्म की धातु ।

ཆུ་བོ་ནང་རབས་ཡག་པོ་མེད། དེ་ཁོའི་ཚེམས་ཡིག་རེད།

नदी में मार्ग अच्छा नहीं है । वह उसका वसीयतनामा है ।

सू०— རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་ཉིད་ལས།།
དང་པོ་གསུམ་པ་ལྔ་པ་དྲུག།
བདུན་པ་རྣམས་ནི་སྔོན་དུའང་འཇུག།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु०— दस परपैठ (=पराक्षरों में) से ही, प्रथम, तृतीय, पंचमी, षष्ठी, (तथा) सप्तमी आदि तो (पर की अपेक्षा) पूर्व भी प्रयोग होते हैं ।

ཛེས་འཇུག་བཅུ། = दस पराक्षर

१		३		५	६	७			
ག་	ང་	ད་	ན་	བ་	མ་	འ་	ར་	ལ་	ས་

སྔོན་འཇུག་ལྔ་དང་དེའི་སྦྱོར་ཚུལ
पांच पूर्वाक्षर और उन के प्रयोग

ག་ ད་ བ་ མ་ འ།[1]

शब्द	=གཅིག་	གཉིས་	གསུམ་	གསེར་	གདན་	གདོང་
उच्चारण	=चिग्	ञिस्	सुम्	सेर्	दन्	दोङ्
अर्थ	=एक	दो	तीन	सोना	विछौना	मुखमण्डल
	དབང་	དགུ་	དངུལ་	དཔལ་	དཀར	དབུས་
	वङ्	गु	ङुल्	पल्	कर्	वुस्
	अधिकार	नौ	चांदी	श्री	श्वेत	केन्द्र
	བཀའ་	བཅུ་	བཟང་	བཞིན་	བདུད་	བདག་
	कअ	चु	ज़ङ्	जिन्	दुद्	दग्
	आज्ञा	दस	भद्र	सद्दश	शैतान	मैं

---

१. इन पाँच वर्णों का संज्ञामूलक अक्षरों के पूर्व में आने पर उच्चारण नहीं होता ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མགོ་	མཆུ་	མདའ་	མཚོ་	མདོག་	མདང་
गो	छु	दअ	छो	दोग्	दङ्
सिर	ओंठ	तीर	तालाब	रंग	कल(भूत)

འདམ་	འབུམ་	འབུ་	འདུག་	འདི་	འབོ་
दम्	बुम्	बु	दुग्	दी	वो
कीचड़	लाख	कीड़ा	है-हैं	यह	प्रस्थ

བརྗོད་པ། = वाक्य

མི་གཅིག་ལ་གསེར་དང་དངུལ་འདུག
एक आदमी के पास सोना और चाँदी.है ।

འདམ་ནང་མེ་ཏོག་འདུག
कीचड़ में पुष्प है ।

བདུད་ལ་མགོ་དགུ་འདུག
शैतान के नौ सिर हैं ।

ཉའི་མཆུ་རིང་པོ་འདུག
मछली का ओंठ लम्बा है ।

སོའི་མདོག་མུ་ཏིག་བཞིན་འདུག
दांत का रंग मोती सद्दश है ।

དབུས་སུ་མདའ་གསུམ་འདུག
केन्द्र में तीन तीर हैं ।

ཁོང་གཉིས་ལ་གསེར་འབོ་བཅུ་འདུག
उन दोनों को दस द्रोण सोना है ।

ལུས་ལ་མགོ་གཅིག་འདུག
शरीर पर एक सिर है ।

མཚོའི་ནང་འབུ་འབུམ་གཅིག་འདུག
तालाब के भीतर एक लाख कीड़े हैं ।

བདག་ལ་ཕའི་བཀའ་འདུག
मुझ को पिता की आज्ञा है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सू०— མིང་གཞི་གཉིས་སམ་གསུམ་སྦྲེལ་ལས།།
དེ་ལ་དབྱངས་ཀྱི་བཞི་ལྡན་ཡང་།།
གང་དུའང་འཇུག་མིན་སྦྱོར་བའང་མིན།།

अनु०— (केवल) संज्ञामूलक (=अव्यवहार्य) दो या तीन (वर्णों को आपस में) जोड़ कर (शब्द बनावें तथा) उन पर चार स्वरों(में) की (कोई भी मात्रा) लगावें (तो) भी (इस प्रकार के शब्द भोट भाषा में) कहीं भी उपयुक्त नहीं होते (तथा) प्रयोग भी नहीं किये जाते हैं । (अर्थात् केवल अव्यवहार्य वर्णों के समूह से भोट भाषा में प्रयोग होने वाली कोई सज्ञां, सर्वनाम तथा विशेषण नहीं बनते ।) जैसे-

ཋག། ཏེཐ། ཕུཞ། ཕོཛ། ཛིཕག། ཀྵཏྲེཡ།
ཆུཛཉ ཕིཐཤ། ཙོཚ། ཞུཡ། ཨིནཟ།། इत्यादि

སླར་བསྡུ། = प्रतिसमाहरण

सू०— རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ནི།།
མིང་གང་གི་ནི་མཐར་སྦྱར་བ།།
དེ་ལ་ཨཱ་ལི་བཞི་པ་སྦྱར།།
སླར་བསྡུ་བར་ནི་ཤེས་པར་བྱ།།

अनु०— दसों पराक्षरों (को) तो, किसी संज्ञा के परे संयोग करे (और) उन (शब्दों) को चौथा आलि (अर्थात् ओ की मात्रा) लगावे तो (वह) प्रतिसमाहरण (के नाम) में (से) जानियेगा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

समाप्ति संयोजक अव्यय (རྫོགས་ཚིག་) भी इसी का नाम है ।

इस का प्रयोग पूर्व कालिक क्रिया की भांति होता है, परन्तु यह संयोजक अव्यय है । जैसे—

(१) བྱའོ་སྙམ་ནས་བྱས་སོ།)= करूंगा सोच कर किया) (२) ལས་ཤིག་ བྱའོ་སྙམ་ནས་བྱས་སོ། (= एक काम करूंगा सोचकर किया) पहले वाक्य में कर्म व्यक्त नहीं हुआ है, परन्तु दूसरे वाक्य में कर्म को दिखाने के साथ साथ 'འོ་' का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है । ' བྱས་སོ། ' यह पूर्ण बोधक क्रिया है, यहाँ पर ' སོ་ ' समाप्ति संयोजक अव्यय है । किसी भी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया के अन्त्याक्षरों को द्वित्व कर के उस पर 'ओ' की मात्रा लगावे तो वह प्रतिसमाहरण (= སྤྱིར་བསྡུ་) या समाप्ति संयोजक अव्यय (རྫོགས་ཚིག་) हो जाता है । जैसे—

འདུག་གོ ། བཟང་ངོ་།། ཡོད་དོ།། བཞིན་ནོ།། ནུབ་བོ།།
འདམ་མོ།། ལི་འོ།། ཤར་རོ།། དཔལ་ལོ།། ཤེས་སོ།།

कभी कभी यह हिन्दी भाषा की वर्तमान कालिक सहायक क्रिया है, हैं, हूँ तथा हो का सा भाव व्यक्त करता है । जैसे—

འདི་ནི་མིའོ།།	དེ་ནི་གསེར་རོ།།	དེ་དག་ནི་མུ་ཏིག་གོ།
यह तो आदमी है ।	वह तो सोना है ।	वे तो मोती है ।
འདི་ནི་ངའི་དཔལ་ལོ།།	མ་ནི་བཟང་ངོ་།།	ཁོ་ལ་ནོར་ནི་ཡོད་དོ།།
यह तो मेरी श्री है ।	माता तो अच्छी है ।	उसको धन तो है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཉི་མ་ནི་ནུབ་པོ།། ང་ནི་ཐུབ་པ་བཞིན་ནོ།། ཞིང་ལ་ནི་འདམ་མོ།།
सूर्य तो डूबा है । मैं तो मुनि सदृश हूँ । खेत में तो कीचड़ है ।

འདི་ནི་བདག་ཤེས་སོ།། བུད་མེད་ནི་མེ་ཏོག་བཞིན་ནོ། འདིར་འདུག་གོ།
यह तो मैं जानता हूँ । औरत तो पुष्प सदृश है । यहाँ है ।

མེ་ཏོག་ལ་ནི་དཔལ་ལོ།། ཆོས་ནི་བཟང་ངོ་།། རིག་པ་ནི་ཡོད་དོ།།
पुष्प में तो श्री है । धर्म तो अच्छा है । विद्या तो है ।

ལེགས་པར་སྦྱོར་བའི་གསལ་བྱེད།= संयुक्त व्यञ्जन

जब दो या दो से अधिक व्यञ्जनों के बीच में स्वर नहीं रहता तो उन्हें संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं । भोट भाषा में तीन से अधिक व्यञ्जनों का संयोग नहीं पाया जाता । संयोग में उर्ध्वस्थ-व्यञ्जन 'ར' के अतिरिक्त 'ལ་ ས་' का पूरा स्वरूप लिखा जाता है, परन्तु अधःस्थ-व्यञ्जन 'ཡ་ ར་ ཝ་' आधा और 'ལ' को पूरा लिखा जाता है । ར་ ལ་ ས་ तीन संयोजक वर्ण जब उर्ध्व (མགོ་) में आते हैं तो उनके उच्चारण बिल्कुल नहीं होते, परन्तु अधः प्रयुक्त (འདོགས་པ་) ཡ་ ར་ ལ་ ཝ་ चार संयोजक वर्णों का प्रायः पूरा उच्चारण होता है । ཀ་ ཁ་ ག་ པ་ ཕ་ བ་ མ་ इन सात व्यञ्जनों के नीचे 'ཡ' संयोग होता है तो इसका रूप (ྱ) यह हो जाता है ।

ཀ + ཡ = ཀྱ། ཁ + ཡ = ཁྱ། ག + ཡ = གྱ། པ + ཡ = པྱ།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཕ + ཡ = ཕྱ། བ+ ཡ = བྱ།། མ + ཡ = མྱ[1]

उच्चारण क्रमशः क्य, ख्य, ग्य, च, छ, ज, ञ, इत्यादि ।

स्वरयुक्त संयुक्त व्यञ्जनों के उच्चारण में कोई विकार नहीं आता ।

ཀྱི་ ཁྱུ་ གྱེ་ པྱོ་ ཕྱི་ བྱུ་ མྱོ་ ཀྱེ།

क्यी ख्यु ग्ये चो छी जु ञो क्ये ।

शब्द = ཀྱང་ ཀྱི་ ཁྱོད་ ཁྱི་ དགྱེས་ དཔྱིད་ ཕྱག ཕྱིར་ བྱིས་པ།

अर्थ = भी की तुम कुत्ता प्रसन्न वसंत हाथ प्रति बालक

'ར' (བཏགས་) का जब नीचे संयोग होता है तो इस का रूप (ྲ) यह हो जाता है । ཀ་ ཁ་ ག་ ད་ པ་ ཕ་ བ་ མ་ ཤ་ ས་ ཧ་ ग्यारह व्यञ्जन वर्णों के साथ इसका संयोग होता है । जैसे, ཀྲ་ ཁྲ་ पहले सात संयुक्त वर्णों का उच्चारण हिन्दी के संयुक्त अक्षरों की भांति क्र ख्र न होकर ट ठ ड होता है, परन्तु बाद के चार वर्णों का क्रमशः म्र श्र स्र ह्र ही होगा ।

ཀ + ར = ཀྲ། ཁ+ ར = ཁྲ། ག + ར = གྲ། ད+ ར = དྲ།

उच्चारण = ट ठ ड ड

པ + ར = པྲ། ཕ+ ར = ཕྲ། བ + ར = བྲ། མ+ ར = མྲ།

ट ठ ड म्र

ཤ +ར = ཤྲ། ས+ ར = སྲ། ཧ +ར = ཧྲ

श्र स्र ह्र

---

१. प्राचीन भोट भाषा में हर शब्दों में आने वाले सभी वर्णों का उच्चारण किया जाता था ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

शब्द	= ཀྲད་པ།	ཁྲག	གྲང་མོ།	དྲུག	ཕྲུ་གུ	སྲན་མ།
उच्चारण	= टद पा	ठग	डङमो	ड्रुग	ठु गु	स्रन मा
अर्थ	= जूता	रक्त	सर्दी	छः	बच्चा	मटर
	དྲོན་མོ།	བྲག།	ཧྲིལ་པོ།	ཁྲོན་པ།	དྲི་མ།	གྲུ།
	डोन् मो	डग्	ह्रिल् पो	ठोन् पा	डीमा	डु
	गरम	शिला	गोल	कुँवा	गन्ध	नाव

བརྗོད་པ།= **वाक्य**

གྲང་མོ་འདུག	ཁྲོན་པའི་ནང་ཆུ་འདུག	བྲག་ལ་དྲི་མ་མེད།
सर्दी है।	कुवें के भीतर पानी है ।	शिला में गन्ध नहीं है ।
གྲུ་ནང་ཕྲུ་གུ་དྲུག་འདུག	སྲན་མ་ཧྲིལ་པོ་རེད།	ཆུ་དྲོན་མོ་འདུག
नाव में छः बच्चे हैं ।	मटर गोल है ।	पानी गरम है ।

'ལ་' (བཏགས་) का छः व्यञ्जन वर्णों के नीचे संयोग होता है । इसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं आता । चौथा वर्ण ཟླ་ = द को छोड़ कर बाकी पाचों वर्णों का उच्चारण ལ་ ही होगा ।

	ཀ +ལ = ཀླ།	ག +ལ = གླ།	བ+ལ = བླ།	ཟ+ལ = ཟླ།
उच्चारण=	ल	ल	ल	द

ར +ལ = རླ།	ས+ ལ = སླ།
ल	ल

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

शब्द=	གླད་པ།	གླ་གློ།	གླང་	གླ་ཆ།	བླ་མ།	བློན་པོ།	ཟླ་བ།
उच्चारण =	लद् पा	ल लो	लङ	ल छ	ल मा	लोन् पो	द वा
अर्थ=	मस्तिष्क	म्लेच्छ	बैल	मज़दूरी	गुरु	मंत्री	चन्द्र
	རླངས་པ།	རློན་པ།	སླ་མོ།	བསླབ་བྱ།	གླུ།	བློ།	སླ་རེ།
	लङस् पा	लोन् पा	ल मो	लब् जा	लु	लो	ल रे
	भाप	गीला	सरल	उपदेश	गाना	चित्त	वितान

བརྗོད་པ།= वाक्य

མགོའི་ནང་གླད་པ་འདུག མི་དེ་གླ་གློ་རེད། གླང་ལ་གླ་ཆ་མེད།

सिर के भीतर मस्तिष्क है । वह आदमी म्लेच्छ है ।बैल के लिये मज़दूरी नहीं है ।

བླ་མའི་ཞབས་དང་བླ་མའི་ཕྱག མི་དེ་བློན་པོ་ཆེན་པོ་གཅིག་རེད།

गुरु का चरण और गुरु का कर । वह आदमी एक बड़ा मंत्री है ।

ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་རྫིལ་པོ་འདུག ཁྲོན་པའི་ནང་དུ་རླངས་པ་འདུག

सूर्य और चन्द्र गोल हैं । कुवें के अन्दर में भाप है ।

ཀྲད་པ་འདི་རློན་པ་འདུག བླ་མའི་བསླབ་བྱ་སླ་མོ་འདུག

यह जूता गीला है । गुरु का उपदेश सरल है ।

'ར' का बारह व्यज्जन वर्णों के ऊपर (མགོ་) संयोग होता है तो

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

इसका रूप(ར) यह हो जाता है, परन्तु ཉ के साथ ར पूरा लिखा जाता है । इन संयुक्त व्यज्जन वर्णों के उच्चारण में कोई विशेष अन्तर नहीं आता ।

	ར + ཀ = རྐ།	ར + ག = རྒ།	ར + ང = རྔ།	ར + ཇ = རྗ།
उच्चारण=	क	ग	ङ	ज
	ར + ཉ = རྙ།	ར + ཏ = རྟ།	ར + ད = རྡ།	ར + ན = རྣ།
	ञ	त	द	न
	ར + བ = རྦ།	ར + མ = རྨ།	ར + ཙ = རྩ།	ར + ཛ = རྫ།
	ब	म	च़	ज़

शब्द	= རྐང་པ།	རྐུན་མ།	རྐྱེན།	རྒྱབ།	རྒད་པོ།	རྒྱན།
उच्चारण	= कङ् पा	कुन् मा	केन्	ग्यब्	गद् पो	ग्यन्
अर्थ	= पाद	चोर	कारण	पीठ	बूढ़ा	आभूषण
	རྔ།	རྔ་མ།	རྗེས་སུ།	རྙིང་པ།	རྟ།	རྟགས།
	ङ	ङ मा	जेस् सु	ञिङ् पा	त	तगस्
	दुंदुभी	पूंछ	बादमें	पुराना	घोड़ा	चिन्ह
	རྡོ།	རྡོ་རྗེ།	རྣ་བ།	རྣོན་པོ།	རྦ་རླབས།	རྦབ།
	दो	दो जे	नव	नोन् पो	ब लबस्	बब
	पत्थर	वज्र	कान	पैना	लहर	लुढ़का
	རྨ།	རྨང་།	རྩེ་མོ།	རྩེད་མོ།	རྫུན།	རྫ་མ།
	म	मङ्	चे़ मो	चे़द् मो	.जुन	ज़मा
	फोड़ा	नींव	अग्र	क्रीड़ा	झूठ	घड़ा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བརྗོད་པ། = वाक्य

འདི་རྟའི་རྐང་པ་རེད། རྐང་པ་ལ་རྨ་འདུག འདི་མི་རྒན་པོའི་རྟ་རེད།
यह घोड़े का पाद है । टांग पर फोड़ा है । यह बूढ़े आदमी का घोड़ा है ।

རྟ་ལ་རྟགས་མི་འདུག རྟའི་རྔ་མ་དང་རྣ་བ་གཉིས་རིང་པོ་འདུག
घोड़े पर चिन्ह नहीं है । घोड़े की पूंछ और कान दोनों लम्बे हैं ।

རྟའི་རྒྱབ་ལ་རྡོ་འདུག རྡོ་རྗེའི་རྩེ་མོ་རྣོན་པོ་འདུག རྫ་མ་རྙིང་པ་རེད།
घोड़े की पीठ पर पत्थर है । वज्र का अग्र तीक्ष्ण है । घड़ा पुराना है ।

རྩེད་མོའི་ཕྱིར་རྫུན་མ་ལབ། ཁྲོན་པའི་ནང་ན་རྦ་རླབས་མི་འདུག
क्रीड़ा के लिये झूठ मत कहो । कुवें के भीतर लहर नहीं है ।

རྐྱེན་གང་རེད། འདི་གསེར་གྱི་རྒྱན་གཅིག་རེད། ལག་པ་ལ་རྔ་འདུག
कारण क्या है ? यह सोने का एक आभूषण है । हाथ में दुंदुभी है ।

'ལ' का दस व्यञ्जन वर्णों के ऊपर (མགོ་) संयोग होता है । इस के स्वरूप में कोई विकार नहीं आता । इन संयुक्त व्यञ्जनों में उच्चारण केवल नीचे वाले वर्ण का होता है, परन्तु दसवाँ 'ལྷ་' का ल्ह ही उच्चारण होगा ।

	ལ + ཀ = ལྐ།	ལ + ག = ལྒ།	ལ + ང = ལྔ།	ལ + ཅ = ལྕ།
उच्चारण	क	ग	ङ	च
	ལ + ཇ = ལྗ།	ལ + ཏ = ལྟ།	ལ + ད = ལྡ།	ལ + པ = ལྤ།
	ज	त	द	प

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ལ + བ = ལྦ། ལ + ཧ = ལྷ།
ब ल्ह

शब्द	=	ལྐུགས་པ།	ལྐོག་མ།	ལྒང་ཕུག	ལྔ།	ལྕང་མ།	ལྗི་བ།
उच्चारण	=	कुगस् पा	कोग् मा	गङ् फुग्	ङ	चङ् मा	ची वा
अर्थ	=	मूढ	गला	मूत्राशय	पांच	वेतस	भारी

ལྗང་ཁུ།	ལྗོན་པ།	ལྟད་མོ།	ལྡེ་མིག།	ལྟོ་བ།	ལྦ་བ།
जङ् खु	जोन् पा	तद् मो	दे मिग्	तो वा	ब वा
हरा	वृक्ष	तमाशा	ताला	पेट	गलगंड (घेंघा)

ལྷོ།	ལྷ།	ལྕེ།	ལྷམ།	ལྒང་ཞུ།	ལྕོག་ཙེ།
ल्हो	ल्ह	चे	ल्हम्	गङ् जु	चोग् चे
दक्षिण	देव	जीभ	जूता	दीपक	मेज़

བརྗོད་པ། = वाक्य

མི་འདི་ལྐུགས་པ་རེད། ལྐོག་མ་ལ་ལྦ་བ་འདུག ལྕང་མ་ལྗང་ཁུ་འདུག
यह आदमी मूढ है । गले में गलगंड है । वेतस हरा है ।

ལྐུགས་པ་ལ་ལྟད་མོ་ཅི། ཁང་པའི་ལྡེ་མིག་མེད། དེར་ལྟད་མོ་མི་འདུག
मूर्ख को तमाशा क्या । घर का ताला नहीं है । वहाँ तमाशा नहीं है ।

ལག་པ་ལ་སོར་མོ་ལྔ་ཡོད། ལྟོ་བ་མེད་པའི་མི་མེད། གསེར་ལྗི་བ་རེད།
हाथ में पाँच अंगुलियाँ हैं । बिना पेट का आदमी नहीं है । सोना भारी है ।

ལྷོ་ལ་ཙནྡན་ལྗང་ཁུ་ཡོད། མེ་ཏོག་ལྷ་ལ་ཡིན། ལྕོག་ཙེ་ཆེན་པོ་འདུག
दक्षिण में हरा चन्दन है । फूल देवता के लिये है । मेज़ बड़ा है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཉིན་མོར་ལྷང་ཞུ་མི་དགོས། མི་ལ་ལྷམ་དགོས།
दिन में दीपक नहीं चाहिये । आदमी के लिये जूता चाहिये ।

ཁྱོད་ཀྱི་ལྕེ་རིང་པོ་འདུག
तुम्हारी जीभ लम्बी है ।

'ས' का ग्यारह व्यञ्जन वर्णों के ऊपर (མགོ་) संयोग होता है । इसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आता ।

ས +ཀ = སྐ། ས +ག = སྒ། ས +ང = སྔ། ས +ཉ = སྙ།

उच्चारण= क ग ङ ञ

ས +ཏ = སྟ། ས +ད = སྡ། ས +ན = སྣ། ས +པ = སྤ།
त द न प

ས +བ = སྦ། ས +མ = སྨ ས +ཙ = སྩ།
ब म च्

शब्द=	སྐད་	སྐར་མ་	སྒོ་	སྒོར་མོ་	སྔ་མོ་	སྔགས།
उच्चारण=	कद्	कर् मा	गो	गोर् मो	ङमो	ङगस्
अर्थ=	भाषा	सितारा	द्वार	रुपया	प्रातः	मंत्र

སྙིང་	སྙན་	སྟོན་པ་	སྟོང་	སྡོམ་པ་	སྡིག་པ།
ञिङ्	ञन्	तोन् प	तोङ्	दोम् प	दिग् प
हृदय	कान	शास्ता	सहस्र	संवर	पाप

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྣག་ཚ་	སྤུ་	སྤྱོད་པ་	སྦྱིན་པ་	སྨན་	སྨྱུ་གུ་
नग् छ़	पु	चोद् पा	जिन् पा	मन्	ञु गु
स्याही	रोवाँ	चरित्र	दान	दवा	कलम

སྦྱལ་།	བོད་སྐད་	སྟོང་པ་	ཁ་སྤུ་	སྨིན་མ།
च़ल्	बोद कद	तोङ्-पा	ख पु	मिन मा
दो (विधि)	भोट भाषा	शून्य	मूँछ	भौं

བརྗོད་པ།= **वाक्य**

འདི་ངའི་སྐད་མ་རེད།   སྐར་མ་སྟོང་གཅིག་འདུག

यह मेरी भाषा नहीं है ।   एक सहस्र सितारे हैं ।

སྒོར་མོ་ལྔའི་སྦྱིན་པ་རེད།   ཁང་པའི་སྒོ་ལ་ཤེལ་མི་འདུག

पाँच रूपये का दान है ।   मकान के दरवाज़े पर शीशा नहीं है ।

མི་ལ་སྨན་དང་སྔགས་གཉིས་དགོས། ཁ་སྤུ་རིང་པོ་འདུག

आदमी के लिए दवा और मंत्र दोनों चाहिये । मूँछ लम्बा है ।

སྡོམ་པ་དང་སྤྱོད་པ་གཅིག་རང་རེད།   སྡིག་པ་དང་སྣག་ཚ་གཅིག་པ་རེད།

संवर और चरित्र एक ही है ।   पाप और स्याही एक है ।

ཁོང་ལ་སྨྱུ་གུ་མི་འདུག   སྟོན་པའི་སྙན་རིང་པོ་འདུག

उनको कलम नहीं है ।   शास्ता के कान लम्बे हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ད་སྔ་མོ་རེད། རྒད་པོའི་ཁ་ལ་སྤུ་མི་འདུག

अब प्रातः है। बुड्ढे के मुख पर रोवाँ नहीं है ।

ཀྱེ་སྟོན་པ་ང་ལ་སྙིང་སྩོལ། ང་བོད་སྐད་ཤེས་ཀྱི་ཡོད།

हे शास्ता, मुझ को हृदय दीजिये । मैं भोट भाषा जानता हूँ ।

'ཝ' का सोलह व्यञ्जन वर्णों के नीचे (བཏགས) संयोग होता है, तो इस का स्वरूप (ྭ) यह हो जाता है । इसे वजुर (ཝ་ཟུར་)कहते हैं ।

इन संयुक्त वर्णों का उच्चारण आंशिक रूप से चतुर्थ स्वर 'ओ' के सदृश होता है ।

ཀ + ཝ = ཀྭ། ཁ + ཝ = ཁྭ། ག + ཝ = གྭ། ཅ + ཝ = ཅྭ།

उच्चारण= क्व ख्व ग्व च्व

ཉ + ཝ = ཉྭ ཏ + ཝ = ཏྭ། ད + ཝ = དྭ། ཙ + ཝ = ཙྭ།

ञ्व त्व द्व च्व

ཚ + ཝ = ཚྭ། ཞ + ཝ = ཞྭ། ཟ + ཝ = ཟྭ། ར + ཝ = རྭ།

छूव ज्व ज़्व र्‌व

ལ + ཝ = ལྭ། ཤ + ཝ = ཤྭ། ས + ཝ = སྭ། ཧ + ཝ = ཧྭ

ल्व श्व स्व ह्व[1]

शब्द=	ཀྭ་ཡེ།	ཁྭ་ཏ།	གྲྭ་པ།	བཅྭ་ལྔ།	ཏྭ་ཕྲུག	ཙྭ།	ཚྭ།
उच्चारण=	क्व ये	ख्व ता	ड्व पा	च्व ङ	द्व ठुग्	च़्व	छूव
अर्थ=	हे	कौआ	संन्यासी	पन्द्रह	अनाथपुत्र	घास	नमक

१. 'व' का उच्चारण हिन्दी का सा घोष नहीं होता ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཞྭ་མོ། ཟྭ་ཚོད། སྭོགས། ཤྭ་བ། ཧྭགས། ལྭ་བ། རྭ་ཅོ།
ज्व मो ज़्व छोद् स्वगस् श्व वा ह्वगस् ल्व वा र्व चो
टोपी बिच्छु वृक्ष प्राण हिरण शक्कर कम्बल सींग

བརྗོད་པ།= वाक्य

ཤྭ་བའི་རྭ་ཅོ་རེད།
हिरण का सींग है ।

ཇའི་ནང་ཚྭ་མི་འདུག
चाय के अन्दर नमक नहीं है ।

འདི་ཤྭ་བ་མ་རེད།
यह हिरण नहीं है ।

ཀྭ་ཡེ་ཁྱོད་ངའི་ནུ་བོ་རེད།
हे ! तुम मेरे अनुज हो ।

ཁྱོད་ཀྱི་རྐང་པའི་ཉྭ་ཆེན་པོ་འདུག
तुम्हारी टांग की मांस पेशी बड़ी है ।

ཧྭགས་ཀྱི་ཆུ་དྭ་ཕྲུག་ལ་རེད།
शक्कर का पानी अनाथपुत्र के लिये है ।

རི་དེ་ལ་ཟྭ་ཚོད་མི་འདུག
उस पहाड़ पर बिच्छु वृक्ष नहीं है ।

དེའི་མགོ་ལ་ཞྭ་མོ་འདུག
उसके सिर पर टोपी है ।

གྲྭ་པ་བཅྭོ་ལྔ་ཁང་པར་འདུག
पन्द्रह संन्यासी घर में हैं ।

མིང་།= संज्ञा

संज्ञा वह विकारी शब्द है जिस से वस्तु का यथार्थ ज्ञान होता है । भोट भाषा में संज्ञा तीन तरह की होती हैं ।

१. རིགས་མིང་ཅན། = जाति वाचक संज्ञा
२. གང་ཟག་མིང་ཅན། = व्यक्ति वाचक संज्ञा
३. ཆོས་མིང་ཅན། = भाव वाचक संज्ञा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རིགས་མིང་ཅན། = जाति वाचक संज्ञा

जिस संज्ञा के द्वारा जाति भर का बोध हो, उसे जाति वाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे, རྟ་ = घोड़ा कह देने से संसार भर के घोड़े जाति का ज्ञान होता है । इस प्रकार :—

གནམ་གྲུ་	= विमान ।	གཙང་པོ་	= नदी ।
མེ་འཁོར་	= रेल ।	རླངས་འཁོར་	= मोटर ।
མེ་སྒྲོགས་	= तोप ।	མེ་མདའ་	= बन्दूक ।
བྱིས་པ་	= बालक ।	ཞིང་པ་	= कृषक ।
ཉིན་དེབ་	= रोज़नामचा ।	རྡོ་རྗེ་	= वज्र ।

གང་ཟག་མིང་ཅན། = व्यक्ति वाचक संज्ञा

जिस संज्ञा के द्वारा किसी जाति के एक ही व्यक्ति का बोध हो, उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे, འཐབ་དཀའ་ = दुर्योधन कह देने से संसार भर के मनुष्य जाति का बोध न होकर अपितु एक ही व्यक्ति का बोध होता है । इस प्रकार :—

དགའ་བྱེད་	= राम ।	རོལ་སྐྱེད་མ་	= सीता ।
དིལླི་གསར་པ་	= नयी दिल्ली।	གསལ་ལྡན་	= काशी ।
དགའ་ལྡན་	= तुषित।	རྒྱལ་ཆེན་རིགས་བཞི་	=चतुर्महाराज।
དབྱངས་ཅན་མ་	= सरस्वती ।	ཐིག་ལེ་མཆོག་མ་	=तिलोत्तमा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྙན་ངག་མེ་ལོང་མ་ =काव्यादर्श དགའ་བྱེད་རྟོགས་བརྗོད་=रामायण । इत्यादि व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं ।

ཆོས་མིང་ཅན།= भाव वाचक संज्ञा

जिस संज्ञा के द्वारा किसी वस्तु का धर्म; गुण, अवस्था तथा व्यापार का बोध हो, उसे भाव वाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे, མཛེས་ཆོས་ = सुन्दरता कह देने से वस्तु का ज्ञान न होकर अपितु उस वस्तु के धर्म का बोध होता है । इस प्रकार :-

དཀར་ཆོས་	= सफेदी ।	དཀར་ཆ་	= सफेदी ।
ནག་ཆོས་	= कालापन ।	ནག་ཆ་	= कालापन ।
བརྟེག་ཆོས་	=धैर्य ।	རིང་ཆ་	= लम्बाई ।
མངར་ཆ་	= मिठास ।	སྙིང་རྗེའི་ཆོས་ཅན་	= दयालुता ।
སྐྱུར་ཆ་	= खट्टापन ।	རྒ་བའི་ཆོས་ཅན་	= जराधर्मी ।

इत्यादि भाव वाचक संज्ञा हैं ।

भाव वाचक संज्ञा बनाने के लिये संज्ञा या विशेषण शब्दों के परे ཆོས་ या ཆ་ जोड़ दिया जाता है । कभी कभी ཆོས་ཅན་ जोड़ कर भाव वाचक संज्ञा बनाई जाती है परन्तु यह नियम सर्वत्र लागु नहीं होता क्योंकि བུད་མེད་ཀྱི་ཆོས་ཅན་ कह देने से स्त्रीत्त्व का बोध न होकर एक मासिक धर्म वाली स्त्री का बोध होगा । बहुधा भाव वाचक संज्ञा की जगह विशेषण शब्दों का ही प्रयोग होता है । भोट भाषा में प्राय: हिन्दी या अन्य भाषाओं की तरह भाव वाचक संज्ञा होती ही नहीं । जैसे, मनुष्यत्व,राज्य, पंडिताई,लड़कपन तथा बड़प्पन इत्यादि ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བརྗོད་པ། वाक्य

འདི་གནམ་གྲུ་རེད། དགའ་བྱེད་དང་རོལ་རྗེད་མ་གསལ་ལྡན་ན་ཡོད། དགའ་ལྡན་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ཡུལ་ཞིག་རེད། སྣག་ཚ་ནང་ནག་ཆ་འདུག མཚན་མོའི་ནག་ཆོས་ནང་གང་ཡང་མཐོང་གི་མི་འདུག མེ་ཏོག་གི་མཛེས་ཆོས་བདག་གི་སེམས་ལ་འོངས། འདིར་སྙན་ངག་མེ་ལོང་མའི་དཔེ་ཆ་ཞིག་འདུག དིལླི་གསར་པར་སློབ་གྲྭ་སྟོང་གཅིག་ལྷག་ཡོད། ཉིན་དེབ་སྟེང་སྨྱུ་གུ་གཅིག་འདུག ཞིང་གི་རིང་ཆ་མེ་ལི་དྲུག་ཡོད། ཆུ་མོ་གང་གའི་ཐ་མ་ལ་གསལ་ལྡན་གྲོང་ཁྱེར་ཆགས་ཡོད། དབྱངས་ཅན་མ་རིག་པའི་ལྷ་མོ་རེད། ཐིག་ལེ་མཆོག་མའི་དཀར་ཆོས་ཁོང་གི་ཡོན་ཏན་རེད།

यह विमान है । राम और सीता काशी में हैं । तुषित देवताओं का एक देश है । स्याही में कालापन है । रात्रि के कालेपन में कुछ भी दीखता नहीं है । पुष्प की सुन्दरता मेरे मन में आयी । यहाँ काव्यादर्श की एक पुस्तक है । नयी दिल्ली में एक हज़ार से अधिक स्कूल हैं । रोज़नामचे के ऊपर एक कलम है । खेत की लम्बाई छ:मील है । गंगा नदी के किनारे काशी नग़री बसी है । सरस्वती विद्या की देवी है । तिलोत्तमा का उजलापन उनका गुण है ।

བྱ་བ། = क्रिया

जिस शब्द के अन्त में པ་ या བ रहे तथा उस से किसी काम का होना या व्यापार जाना जाय तो वह क्रिया का साधारण रूप है । जैसे, གློག་པ། ཟ་བ། इत्यादि । क्रिया दो प्रकार की होती हैं, सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सकर्मक क्रिया (པ)

བྱེད་པ་	= करना	བརྗེད་པ་	= भूलना
ཀློག་པ་	= पढ़ना	བཞེས་པ་	= ग्रहण करना
རྒྱབ་པ་	= मारना	འཆད་པ	= बोलना
མཆོད་པ་	= पूजा करना	རློག་པ	= खोना
གཅོད་པ་	= काटना	ཞོན་པ་	= चढ़ना
འབྲུབ་པ་	= काटना	སྒྲུབ་པ་	= सिद्ध करना
འཛིན་པ་	= धारण करना	འཇིབ་པ་	= चूसना
ལེན་པ་	= लेना	འཇོག་པ་	= रखना
ཕྲེག་པ་	= सहना	བགྱིད་པ་	= करना
སྐྱེད་པ་	= बढ़ाना	འདོན་པ་	= निकालना
བསྟོད་པ་	= स्तुति करना	འཚོད་པ་	= पकाना
རེག་པ་	= स्पर्श करना	གཞོམ་པ་	= सजाना
འདེབས་པ	= बोना	གསན་པ་	= सुनना
རྒྱག་པ་	= लगाना	སྤྲོད་པ་	= देना

सकर्मक क्रिया (བ)

རྡུང་བ་	= मारना	འཚིར་བ་	= निचोड़ना

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཟ་བ་	= खाना	ཟླ་བ་	=जपना
འཐུང་བ་	= पीना	གོ་བ་	= समझाना
སྤོང་བ་	= छोड़ना	སློང་བ་	= माँगना
དྲི་བ་	= पूछना	འདིང་བ་	= पसारना
ཉོ་བ་	= खरीदना	འཇལ་བ་	= चुकाना
གཏོང་བ་	= देना	འཚེ་བ་	= हिंसा करना
སྨྲ་བ་	= कहना	འཁལ་བ་	= कातना
སྐྱོང་བ་	= पालना	འཛུ་བ་	= पकड़ना
བཟོ་བ་	= बनाना	འཆིང་བ་	= बाँधना
རྔོ་བ་	= भूनना	བརྗེ་བ་	= बदलना
རྐོ་བ་	= खोदना	སྤེལ་བ་	= फैलाना
རྒྱལ་བ་	= जीतना	འཚོང་བ་	= बेचना
བཙའ་བ་	= पैदा करना	འཛོ་བ་	= दुहना
ཞུ་བ་	= प्रार्थना करना	འབུལ་བ་	= चढ़ाना
ལྟ་བ་	= देखना	སྒྲོལ་བ་	= तारना
རྐུ་བ་	= चोरी करना	འཁྱེར་བ་	= ले जाना
འབྲི་བ་	= लिखना	སྐོར་བ་	= घुमाना
འཆང་བ་	= धरना	སྐུར་བ་	= भेजना

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अकर्मक क्रिया (པ, བ)

དགོད་པ་	= हंसना	འགྲོ་བ་	= जाना
རྒྱུག་པ་	= दौड़ना	ངལ་བ་	= थकना
འབྱོན་པ་	= आना	ཡོང་བ་	= आना
འགུག་པ་	= झुकना	ངུ་བ་	= रोना
སོན་པ་	= पहुँचना	ཉལ་བ་	= लेटना
འགྱོད་པ་	= पछताना	ལང་བ་	= उठना
སྡོད་པ་	= बैठना	འདར་བ་	= काँपना
འབྲིད་པ་	= लुभाना	འཁོར་བ་	= घूमना
འཁྲབ་པ་	= नाचना	འབར་བ་	= जलना
འཇབ་པ་	= झाँकना	འཚེར་བ་	= चमकना

जिस शब्द के अन्त में པ་ བ་ रहे परन्तु उस से किसी व्यापार या काम का होना न जाना जाय तो उसे क्रिया नहीं कह सकते । जैसे, ལག་པ། ཀང་པ། ཁང་པ། इत्यादि संज्ञा हैं । इस का प्रसंग आगे कृदन्त में आवेगा । भोट भाषा की क्रियाओं में लिंग और वचन के विकार नहीं होते ।

བྱ་བ་དང་མིང་གཉིས་སུ་སྦྱོར་བའི་ཚིག་འགའ།
क्रिया एवं संज्ञा दोनों में प्रयुक्त कुछ शब्द

མཆོད་པ་	= पूजा करना (पूजा)	དགའ་བ་	=आनन्द मानना (आनन्द)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འགྱོད་པ་	= पछताना (पश्चाताप)	གོ་བ་	= समझना (ज्ञान)
ཤེས་པ་	= जानना (ज्ञान)	འཁོར་བ་	= घूमना (संसार)
བསྟོད་པ་	= स्तुति करना (स्तुति)	གཏོང་བ་	= देना (दान)
ཐེག་པ་	= सहना (यान)	རྒྱལ་བ་	= जीतना (बुद्ध)
སྦྱིན་པ་	= देना (दान)	ཡོལ་བ་	= परिपूर्ण होना (परदा)
སྒྲུབ་པ་	= सिद्ध करना (सिद्ध)	གསང་བ་	= छिपाना (गुह्य)
བཤད་པ་	= बोलना (भाष्य)	ངལ་བ་	= थकना (थकावट)
ཞོན་པ་	= चढ़ना (सवारी)	འཁོར་བ་	= मोहित होना (छड़ी)
རིག་པ་	= जानना (विद्या)	འདུལ་བ་	= नम्र होना (विनय)
བསྟན་པ་	= दिखाना (शासन)	ཟ་བ་	= खाना (भोजन)
ཐུག་པ་	= स्पर्श करना (सूप)	དྲི་བ་	= पूछना (प्रश्न)
འཁྱག་པ་	= जमजाना (बरफ)	སྤྲོ་བ་	= फैलाना (अनुमोदन)
ཆིབས་པ་	= चढ़ना (घोड़ा)	འཆི་བ་	= मरना (मृत्यु)
ཐུབ་པ་	= सकना (मुनि)	འགྲོ་བ་	= जाना (प्राणी)
གྲགས་པ་	= प्रसिद्ध होना (प्रसिद्धि)	སྨྲ་བ་	= कहना (बात)
དམོད་པ་	= शाप देना (शाप)	ཞུ་བ་	= कहना (प्रार्थना)
མཁྱེན་པ་	= जानना (ज्ञान)	ལྟ་བ་	= देखना (मत)
ཐར་པ་	= मुक्त होना (मुक्ति)	འཇུ་བ་	= पकड़ना (पिस्सु)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

होना-क्रिया

དུས་ད་ལྟ་བ། = सामान्य वर्त्तमान काल

སྐྱེས་བུ་		གཅིག་ཚིག་	མང་ཚིག་
སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་རེད།(= ཡིན།)	ང་ཚོ་རེད། (= ཡིན།)
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་རེད།(= ཡིན།)	ཁྱོད་ཚོ་རེད། (= ཡིན།)
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་རེད།(= ཡིན།)	ཁོ་ཚོ་རེད། (= ཡིན།)

पुरुष		एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	=	मैं हूँ ।	हम हैं ।
मध्यम पुरुष	=	तू है ।	तुम हो ।
अन्य पुरुष	=	वह है ।	वे हैं ।

དུས་འདས་པ། = सामान्य भूत काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོད། I was	ང་ཚོ་ཡོད། We were
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོད། You were	ཁྱོད་ཚོ་ཡོད། You were
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོད། He was	ཁོ་ཚོ་ཡོད། They were
उत्तम पु0	=	मैं था।	हम थे ।
मध्यम पु0	=	तू था ।	तुम थे ।
अन्य पु0	=	वह था ।	वे थे ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དུས་མ་འོངས་པ། = सामान्य भविष्यत् काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡིན་གྱི་རེད།	ང་ཚོ་ཡིན་གྱི་རེད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡིན་གྱི་རེད།	ཁྱོད་ཚོ་ཡིན་གྱི་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡིན་གྱི་རེད།	ཁོ་ཚོ་ཡིན་གྱི་རེད།
उ0 पु0	=	मैं हूँगा ।	हम होंगे ।
म0 पु0	=	तू होगा ।	तुम होंगे ।
अ0 पु0	=	वह होगा ।	वे होंगे ।

अकर्मक क्रिया

བྱ་བ་ཡོང་བ། =आना क्रिया

དུས་ད་ལྟ་བ། =सामान्य वर्त्तमान काल

སྐྱེས་བུ་	=	གཅིག་ཚིག་	མང་ཚིག
སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོང་གི་ཡོད།	ང་ཚོ་ཡོང་གི་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོང་གི་འདུག	ཁྱོད་ཚོ་ཡོང་གི་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོང་གི་འདུག	ཁོ་ཚོ་ཡོང་གི་འདུག
पुरुष		एकवचन	बहुवचन
उत्तम पु0	=	मैं आता हूँ ।	हम आते हैं ।
मध्यम पु0	=	तू आता है ।	तुम आते हो ।
अन्य पु0	=	वह आता है ।	वे आते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तात्कालिक वर्तमान

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོང་བཞིན་ཡོད།	ང་ཚོ་ཡོང་བཞིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོང་བཞིན་འདུག	ཁྱོད་ཚོ་ཡོང་བཞིན་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོང་བཞིན་འདུག་	ཁོ་ཚོ་ཡོང་བཞིན་འདུག
उ0 पु0	=	मैं आ रहा हूँ ।	हम आ रहे हैं।
म0 पु0	=	तू आ रहा है।	तुम आ रहे हो।
अ0 पु0	=	वह आ रहा है ।	वे आ रहे हैं ।

དུས་འདས་པ།= सामान्य भूत काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོངས།(= འོངས་)	ང་ཚོ་ཡོངས།(= འོངས་)
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོངས།(= འོངས་)	ཁྱོད་ཚོ་ཡོངས།(= འོངས་)
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོངས། (= འོངས་)	ཁོ་ཚོ་ཡོངས།(= འོངས་)
उ0 पु0	=	मैं आया ।	हम आये ।
म0 पु0	=	तू आया ।	तुम आये ।
अ0 पु0	=	वह आया ।	वे आये ।

आसन्नत भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོང་བ་ཡིན།	ང་ཚོ་ཡོང་བ་ཡིན།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོང་བ་ཡིན།	ཁྱོད་ཚོ་ཡོང་བ་ཡིན།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོང་བ་ཡིན།	ཁོ་ཚོ་ཡོང་བ་ཡིན།
उत्तम पु0	=	मैं आया हूँ ।	हम आये हैं ।
मध्यम पु0	=	तू आया है ।	तुम आये हो ।
अन्य पु0	=	वह आया है ।	वे आये हैं ।

तात्कालिक भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོང་གིན་ཡོད།	ང་ཚོ་ཡོང་གིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོང་གིན་ཡོད།	ཁྱོད་ཚོ་ཡོང་གིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོང་གིན་ཡོད།	ཁོ་ཚོ་ཡོང་གིན་ཡོད།
उ0 पु0	=	मैं आ रहा था ।	हम आ रहे थे ।
म0 पु0	=	तू आ रहा था ।	तुम आ रहे थे ।
अ0 पु0	=	वह आ रहा था ।	वे आ रहे थे।

पूर्ण भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོང་ཡོད།	ང་ཚོ་ཡོང་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོང་ཡོད།	ཁྱོད་ཚོ་ཡོང་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོང་ཡོད།	ཁོ་ཚོ་ཡོང་ཡོད།
उ0 पु0	=	मैं आया था ।	हम आये थे ।
म0 पु0	=	तू आया था ।	तुम आये थे ।
अ0 पु0	=	वह आया था ।	वे आये थे ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དུས་མ་འོངས་པ། = सामान्य भविष्यत् काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཡོང་གི་ཡིན།	ང་ཚོ་ཡོང་གི་ཡིན།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཡོང་གི་རེད།	ཁྱོད་ཚོ་ཡོང་གི་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཡོང་གི་རེད།	ཁོ་ཚོ་ཡོང་གི་རེད།
उ0 पु0	=	मैं आऊँगा ।	हम आवेंगे ।
म0 पु0	=	तू आवेगा ।	तुम आओगे ।
अ0 पु0	=	वह आवेगा ।	वे आवेंगे ।

सकर्मक-क्रिया

सकर्मक क्रिया का रूप भी अकर्मक क्रिया की भांति होता है, परन्तु सामान्य भूत, आसन्न भूत तथा पूर्णभूत को छोड़कर सामान्य वर्त्तमान, तात्कालिक वर्त्तमान, तात्कालिक भूत तथा सामान्य भविष्यत् के कर्त्ता के परे करण कारक का चिन्ह, 'ས' नहीं लगता है । सामान्य वर्त्तमान क्रिया के साथ ཀྱི་གི་གྱི་ तथा तात्कालिक वर्त्तमान और तात्कालिक भूत की क्रिया के साथ ཀྱིན། གིན། གྱིན། བཞིན་ प्रत्यय लगते हैं । सभी वर्त्तमान को बताते हैं । क्रिया का अन्त्याक्षर आदि 'ད་ བ་ ས་' रहे तो ཀྱི་ ཀྱིན། इसी प्रकार 'ག་ ང་' के साथ གི་ གིན और ན་ མ་ ར་ ལ་ के साथ གྱི་ གྱིན་ लगते हैं । བཞིན་ सभी प्रकार के अन्त्याक्षरों के साथ लगता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ལྟ་བ། = देखना

དུས་ད་ལྟ་བ། = सामान्य वर्त्तमान काल

སྐྱེས་བུ་		གཅིག་ཚིག་	མང་ཚིག་
སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ལྟ་གྱི་ཡོད།	ང་ཚོ་ལྟ་གྱི་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ལྟ་གྱི་འདུག་	ཁྱོད་ཚོ་ལྟ་གྱི་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ལྟ་གྱི་འདུག་	ཁོ་ཚོ་ལྟ་གྱི་འདུག་
पुरुष		एकवचन	बहुवचन
उत्तम पु0	=	मैं देखता हूँ ।	हम देखते हैं ।
मध्यम पु0	=	तू देखता है ।	तुम देखते हो ।
अन्य पु0	=	वह देखता है ।	वे देखते हैं ।

तात्कालिक वर्तमान

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ལྟ་བཞིན་ཡོད།	ང་ཚོ་ལྟ་བཞིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ལྟ་བཞིན་འདུག	ཁྱོད་ཚོ་ལྟ་བཞིན་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ལྟ་བཞིན་འདུག་	ཁོ་ཚོ་ལྟ་བཞིན་འདུག
उ0 पु0	=	मैं देख रहा हूँ ।	हम देख रहे हैं।
म0 पु0	=	तू देख रहा है।	तुम देख रहे हो।
अ0 पु0	=	वह देख रहा है ।	वे देख रहे हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དུས་འདས་པ།= सामान्य भूत काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ངས་བལྟས།	ང་ཚོས་བལྟས།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཀྱིས་བལྟས།	ཁྱོད་ཚོས་བལྟས།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོས་བལྟས།	ཁོ་ཚོས་བལྟས།
उत्तम पुरुष	=	मैं ने देखा ।	हम ने देखा ।
मध्यम पुरुष	=	तू ने देखा ।	तुम ने देखा।
अन्य पुरुष	=	उसने देखा ।	उन्होंने देखा ।

आसन्नत भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ངས་བལྟས་པ་ཡིན།	ང་ཚོས་བལྟས་པ་ཡིན
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཀྱིས་བལྟས་པ་རེད།	ཁྱོད་ཚོས་བལྟས་པ་རེད
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོས་བལྟས་པ་རེད།	ཁོ་ཚོས་བལྟས་པ་རེད།
उत्तम पु0	=	मैं ने देखा है ।	हम ने देखा है ।
मध्यम पु0	=	तू ने देखा है ।	तुम ने देखा है ।
अन्य पु0	=	उसने देखा है ।	उन्होंने देखा है ।

तात्कालिक भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ལྟ་བཞིན་ཡོད།	ང་ཚོ་ལྟ་བཞིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ལྟ་བཞིན་ཡོད།	ཁྱོད་ཚོ་ལྟ་བཞིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ལྟ་བཞིན་ཡོད།	ཁོ་ཚོ་ལྟ་བཞིན་ཡོད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उ0 पु0	=	मैं देख रहा था।	हम देख रहे थे ।
म0 पु0	=	तू देख रहा था।।	तुम देख रहे थे ।
अ0 पु0	=	वह देख रहा था। ।	वे देख रहे थे ।

पूर्ण भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ངས་བལྟས་ཡོད་པ་རེད།	ང་ཚོས་་བལྟས་ཡོད་པ་རེད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཀྱི་བལྟས་ཡོད་པ་རེད།	ཁྱོད་ཚོས་བལྟས་ཡོད་པ་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོས་བལྟས་ཡོད་པ་རེད།	ཁོ་ཚོས་བལྟས་ཡོད་པ་རེད།
उ0 पु0	=	मैं ने देखा था ।	हम ने देखा था ।
म0 पु0	=	तू ने देखा था ।	तुम ने देखा था ।
अ0 पु0	=	उसने देखा था ।	उन्होंने देखा था ।

དུས་མ་འོངས་པ།= सामान्य भविष्यत् काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་བལྟ་གྱི་ཡིན།	ང་ཚོ་བལྟ་གྱི་ཡིན།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་བལྟ་གྱི་རེད།	ཁྱོད་ཚོ་བལྟ་གྱི་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་བལྟ་གྱི་རེད།	ཁོ་ཚོ་བལྟ་གྱི་རེད།
उ0 पु0	=	मैं देखूंगा।	हम देखेंगे ।
म0 पु0	=	तू देखेगा ।	तुम देखोगे ।
अ0 पु0	=	वह देखेगा ।	वे देखेंगे ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཅོད་པ།= काटना

དུས་ད་ལྟ་བ།= सामान्य वर्त्तमान काल

སྐྱེས་བུ་	གཅིག་ཚིག་	མང་ཚིག་
སྐྱེས་བུ་རབ་ =	ང་ཤིང་གཅོད་ཀྱི་ཡོད།	ང་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱི་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་ =	ཁྱོད་ཤིང་གཅོད་ཀྱི་འདུག	ཁྱོད་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱི་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་ =	ཁོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱི་འདུག	ཁོ་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱི་འདུག

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पु0 =	मैं लकड़ी काटता हूँ ।	हम लकड़ी काटते हैं ।
मध्यम पु0 =	तू लकड़ी काटता है ।	तुम लकड़ी काटते हो ।
अन्य पु0 =	वह लकड़ी काटता है ।	वे लकड़ी काटते हैं ।

तात्कालिक वर्तमान

སྐྱེས་བུ་རབ་ =	ང་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།	ང་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་ =	ཁྱོད་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་འདུག	ཁྱོད་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་ =	ཁོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་འདུག	ཁོ་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་འདུག
उ0 पु0 =	मैं लकड़ी काट रहा हूँ ।	हम लकड़ी काट रहे हैं।
म0 पु0 =	तू लकड़ी काट रहा है।	तुम लकड़ी काट रहे हो।
अ0 पु0 =	वह लकड़ी काट रहा है ।	वे लकड़ी काट रहे हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དུས་འདས་པ།= सामान्य भूत काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ངས་ཤིང་བཅད།	ང་ཚོས་ཤིང་བཅད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིང་བཅད།	ཁྱོད་ཚོས་ཤིང་བཅད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོས་ཤིང་བཅད།	ཁོ་ཚོས་ཤིང་བཅད།
उत्तम पुरुष	=	मैं ने लकड़ी काटी ।	हम ने लकड़ी काटी ।
मध्यम पुरुष	=	तू ने लकड़ी काटी ।	तुम ने लकड़ी काटी ।
अन्य पुरुष	=	उसने लकड़ी काटी।	उन्होंने लकड़ी काटी ।

आसन्नत भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ངས་ཤིང་བཅད་པ་ཡིན།	ང་ཚོས་ཤིང་བཅད་པ་ཡིན།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིང་བཅད་པ་རེད།	ཁྱོད་ཚོས་ཤིང་བཅད་པ་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོས་ཤིང་བཅད་པ་རེད།	ཁོ་ཚོས་ཤིང་བཅད་པ་རེད།
उ0 पु0	=	मैं ने लकड़ी काटी है ।	हम ने लकड़ी काटी है ।
म0 पु0	=	तू ने लकड़ी काटी है ।	तुम ने लकड़ी काटी है ।
अ0 पु0	=	उसने लकड़ी काटी है ।	उन्होंने लकड़ी काटी है ।

तात्कालिक भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།	ང་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།	ཁྱོད་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།	ཁོ་ཚོ་ཤིང་གཅོད་ཀྱིན་ཡོད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उ0 पु0	=	मैं लकड़ी काट रहा था।	हम लकड़ी काट रहे थे ।
म0 पु0	=	तू लकड़ी काट रहा था।।	तुम लकड़ी काट रहे थे ।
अ0 पु0	=	वह लकड़ी काट रहा था। ।	वे लकड़ी काट रहे थे ।

पूर्ण भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ངས་ཤིང་བཅད་ཡོད་པ་རེད།	ང་ཚོས་ཤིང་བཅད་ཡོད་པ་རེད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིང་བཅད་ཡོད་པ་རེད།	ཁྱོད་ཚོས་ཤིང་བཅད་ཡོད་པ་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོས་ཤིང་བཅད་ཡོད་པ་རེད།	ཁོ་ཚོས་ཤིང་བཅད་ཡོད་པ་རེད།
उ0 पु0	=	मैं ने लकड़ी काटी थी ।	हम ने लकड़ी काटी थी ।
म0 पु0	=	तू ने लकड़ी काटी थी।	तुम ने लकड़ी काटी थी ।
अ0 पु0	=	उसने लकड़ी काटी थी ।	उन्होंने लकड़ी काटी थी

དུས་མ་འོངས་པ།= सामान्य भविष्यत् काल

སྐྱེས་བུ་རབ་	=	ང་ཤིང་བཅད་ཀྱི་ཡིན།	ང་ཚོ་ཤིང་བཅད་ཀྱི་ཡིན།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་	=	ཁྱོད་ཤིང་བཅད་ཀྱི་རེད།	ཁྱོད་ཚོ་ཤིང་བཅད་ཀྱི་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་	=	ཁོ་ཤིང་བཅད་ཀྱི་རེད།	ཁོ་ཚོ་ཤིང་བཅད་ཀྱི་རེད།
उ0 पु0	=	मैं लकड़ी काटूंगा।	हम लकड़ी काटेंगे ।
म0 पु0	=	तू लकड़ी काटेगा ।	तुम लकड़ी काटोगे ।
अ0 पु0	=	वह लकड़ी काटेगा ।	वे लकड़ी काटेंगे।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཀློག་པ། = पढ़ना

དུས་ད་ལྟ་བ། = सामान्य वर्त्तमान काल

སྐྱེས་བུ་རབ་ =	ང་དཔེ་ཆ་ཀློག་གི་ཡོད།	ང་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གི་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་ =	ཁྱོད་དཔེ་ཆ་ཀློག་གི་འདུག	ཁྱོད་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གི་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་ =	ཁོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གི་འདུག	ཁོ་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གི་འདུག

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पु0 =	मैं ग्रन्थ पढ़ता हूँ ।	हम ग्रन्थ पढ़ते हैं ।
मध्यम पु0 =	तू ग्रन्थ पढ़ता है ।	तुम ग्रन्थ पढ़ते हो ।
अन्य पु0 =	वह ग्रन्थ पढ़ता है ।	वे ग्रन्थ पढ़ते हैं ।

तात्कालिक वर्तमान

སྐྱེས་བུ་རབ་ =	ང་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།	ང་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་ =	ཁྱོད་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་འདུག	ཁྱོད་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་འདུག
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་ =	ཁོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་འདུག	ཁོ་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་འདུག

उ0 पु0 =	मैं ग्रन्थ पढ़ रहा हूँ ।	हम ग्रन्थ पढ़ रहे हैं।
म0 पु0 =	तू ग्रन्थ पढ़ रहा है।	तुम ग्रन्थ पढ़ रहे हो।
अ0 पु0 =	वह ग्रन्थ पढ़ रहा है ।	वे ग्रन्थ पढ़ रहे हैं ।

དུས་འདས་པ། = सामान्य भूत काल

སྐྱེས་བུ་རབ་ =	ངས་དཔེ་ཆ་བཀློགས།	ང་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀློགས།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྐྱེས་བུ་འབྲིང་ =	ཁྱོད་ཀྱིས་དཔེ་ཆ་བཀླགས།	ཁྱོད་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་ =	ཁོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས།	ཁོ་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས།
उत्तम पुरुष =	मैं ने ग्रन्थ पढ़ा ।	हम ने ग्रन्थ पढ़ा ।
मध्यम पुरुष =	तू ने ग्रन्थ पढ़ा ।	तुमने ग्रन्थ पढ़ा ।
अन्य पुरुष =	उसने ग्रन्थ पढ़ा ।	उन्होंने ग्रन्थ पढ़ा ।

आसन्नत भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་ =	ངས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་པ་ཡིན།	ང་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་པ་ཡིན།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་ =	ཁོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་པ་རེད།	ཁོ་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་པ་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་ =	ཁྱོད་ཀྱིས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་པ་རེད།	ཁྱོད་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་པ་རེད།
उ0 पु0 =	मैं ने ग्रन्थ पढ़ा है ।	हम ने ग्रन्थ पढ़ा है ।
म0 पु0 =	तू ने ग्रन्थ पढ़ा है ।	तुम ने ग्रन्थ पढ़ा है ।
अ0 पु0 =	उसने ग्रन्थ पढ़ा है ।	उन्होंने ग्रन्थ पढ़ा है ।

तात्कालिक भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་ =	ང་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།	ང་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་ =	ཁྱོད་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།	ཁྱོད་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་ =	ཁོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།	ཁོ་ཚོ་དཔེ་ཆ་ཀློག་གིན་ཡོད།
उ0 पु0 =	मैं ग्रन्थ पढ़ रहा था।	हम ग्रन्थ पढ़ रहे थे ।
म0 पु0 =	तू ग्रन्थ पढ़ रहा था।	तुम ग्रन्थ पढ़ रहे थे ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अ0 पु0	=	वह ग्रन्थ पढ़ रहा था।	वे ग्रन्थ पढ़ रहे थे ।

पूर्ण भूत

སྐྱེས་བུ་རབ་= ངས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་ཡོད་པ་རེད།
ང་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་ཡོད་པ་རེད།

སྐྱེས་བུ་འབྲིང་= ཁྱོད་ཀྱིས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་ཡོད་པ་རེད།
ཁྱོད་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་ཡོད་པ་རེད།

སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་= ཁོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་ཡོད་པ་རེད།
ཁོ་ཚོས་དཔེ་ཆ་བཀླགས་ཡོད་པ་རེད།

उ0 पु0	=	मैं ने ग्रन्थ पढ़ा था ।	हम ने ग्रन्थ पढ़ा था ।
म0 पु0	=	तू ने ग्रन्थ पढ़ा था ।	तुम ने ग्रन्थ पढ़ा था ।
अ0 पु0	=	उसने ग्रन्थ पढ़ा था ।	उन्होंने ग्रन्थ पढ़ा था ।

དུས་མ་འོངས་པ།= सामान्य भविष्यत् काल

སྐྱེས་བུ་རབ་=	ང་དཔེ་ཆ་བཀླག་གི་ཡིན།	ང་ཚོ་དཔེ་ཆ་བཀླག་གི་ཡིན།
སྐྱེས་བུ་འབྲིང་=	ཁྱོད་དཔེ་ཆ་བཀླག་གི་རེད།	ཁྱོད་ཚོ་དཔེ་ཆ་བཀླག་གི་རེད།
སྐྱེས་བུ་ཐ་མ་=	ཁོ་དཔེ་ཆ་བཀླག་གི་རེད།	ཁོ་ཚོ་དཔེ་ཆ་བཀླག་གི་རེད།

उ0 पु0	=	मैं ग्रन्थ पढ़ूंगा ।	हम ग्रन्थ पढ़ेंगे ।
म0 पु0	=	तू ग्रन्थ पढ़ेगा ।	तुम ग्रन्थ पढ़ोगे ।
अ0 पु0	=	वह ग्रन्थ पढ़ेगा ।	वे ग्रन्थ पढ़ेंगे ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

मुहावरेदार क्रिया

संज्ञा या विशेषण के आगे कभी कभी རྒྱབ་པ། རྒྱག་པ། (= लगाना मारना) གཏོང་བ། (= देना) འདོར་བ། (= छोड़ना) བཀྱེ་བ། (= फैलाना) འབུལ་བ། (= चढ़ाना) འདེབས་པ། (= रोपना) གཏོད་པ། (= लक्ष्य करना) इत्यादि जोड़ कर क्रिया बनायी जाती है । इस अवस्था में क्रिया का मूल अर्थ प्रायः बदल सा जाता है । भोट भाषा में इस प्रकार की क्रिया अधिक नहीं होती । जैसे –

སྐད་རྒྱབ་པ་	= चिल्लाना	བརྡ་གཏོང་བ	= संकेत करना
བཤད་པ་རྒྱབ་པ་	= व्याख्या करना	ཚིག་ངན་གཏོང་བ་	= अपशब्द कहना
ལན་རྒྱབ་པ་	= उत्तर देना	སྨོད་པ་འདོར་བ་	= शाप देना
འགྲེལ་པ་རྒྱབ་པ་	= टीकाकरना	ཕོ་ཉ་བཀྱེ་བ་	= दूत भेजना
ཨར་པོ་རྒྱག་པ་	= तामीर करना	ཞུ་བ་འབུལ་བ་	= अर्ज करना
ཤགས་རྒྱག་པ་	= विवाद करना	གསོལ་བ་འདེབས་པ་	= प्रार्थना करना
རིག་པ་གཏོང་བ་	= सोचना	ངན་འདེབས་པ་	= शाप देना
ཁ་གཏོང་བ་	= ताड़ना	དམིགས་པ་གཏོད་པ་	= समाधि लगाना
བསམ་བློ་གཏོང་བ་	= विचारना	གསེར་གཟིགས་པ་	= सोना खरीदना
གསལ་གཏོང་བ་	= सूचित करना	ཕྱག་ལས་གནང་བ་	= काम करना

वाक्य

ཕྲུ་གུ་ཚོ་སྐད་རྒྱབ་ཀྱི་འདུག = बच्चे चिल्लाते हैं

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ངའི་དཔེ་ཆ་ལ་འགྲེལ་པ་རྒྱབ་འདུག = मेरी पुस्तक पर टीका की है ।

ཨར་པོ་རྒྱག་པའི་ལས་ཤེས་དགོས། = तामीर करने का काम जानना चाहिये ।

རྩ་བ་ལ་བཤད་པ་རྒྱབ་འདུག = मूल पर व्याख्या की है

ཁོ་ཤགས་རྒྱགས་ཤེས་ཀྱི་འདུག = वह विवाद करना जानता है ।

ཁོང་ལ་ལན་རྒྱབ་དགོས། = उन को उत्तर देना चाहिये ।

རིག་པ་གཏོང་སྟངས་ཡག་པོ་འདུག = सोचने का ढंग अच्छा है ।

གཞན་ལ་ཁ་གཏོང་བ་སྤྲོང་དགོས། = दूसरों को ताड़ना छोड़ना चाहिये ।

ལག་པས་བརྡ་གཏོང་དགོས། = हाथ से संकेत करना चाहिये ।

ཕྱི་རྒྱལ་ལ་ཕོ་ཉ་བཀྱེ་འདུག = विदेश में दूत भेजा है ।

ཚིག་ངན་གཏོང་བ་སུ་མི་ཤེས། = अपशब्द कहना कौन नहीं जानता ।

སོ་སོའི་སེམས་ནས་བསམ་བློ་གཏོང་དགོས = अपने मन से सोचना चाहिये ।

དྲང་སྲོང་གིས་སྙོད་པ་འདོར་འདུག = ऋषि ने शाप दी है ।

ཁོང་ལ་གསལ་གཏོང་མི་དགོས། = उनको सूचित करने की आवश्यकता नहीं

ཁྲིམས་ཁང་དུ་ཞུ་བ་ཕུལ་བ་ཡིན། = न्यायालय में अर्ज़ किया हूँ ।

བླ་མ་ལ་གསོལ་བ་ཐོབས་ཤིག = गुरु <u>को</u> (से) प्रार्थना करो ।

ངན་འདེབས་པའི་ལས་ཐ་མ་རེད། = शाप देने का काम तुच्छ है ।

དམིགས་པ་གཏོད་པ་ཀུན་གྱི་ལས་མིན། = समाधि लगाना सब का धंधा नहीं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བྱ་བ་སྐུལ་བའི་དོན་ཅན། = प्रेरणार्थक क्रिया

प्रेणार्थक क्रिया बनाने के लिये मूल क्रिया के पराक्षर तथा परात्पराक्षर ས་ के बाद སུ་, ག་བ་ के बाद ཏུ, ང་ད་ན་མ་ར་ལ་ के बाद དུ་ तथा འ་ और बिना पराक्षर वाली क्रियाओं के बाद རུ་ बनाकर འཇུག་པ་ वर्त्तमान काल के लिये བཅུག་པ་ भूत काल के लिये तथा གཞུག་པ་ (= डालना) क्रिया भविष्यत् काल की क्रियाओं के साथ जोड़ दिये जाते हैं । जैसे–

वर्त्तमान

ཀློག་ཏུ་འཇུག་པ།	= पढ़वाना ।
གཏོང་དུ་འཇུག་པ།	= दिलवाना ।
གསོད་དུ་འཇུག་པ།	= मरवाना ।
འབྱིན་དུ་འཇུག་པ།	= निकलवाना ।
སྦྱར་ཏུ་འཇུག་པ།	= लगवाना ।
སྣོམ་དུ་འཇུག་པ།	= सुंधवाना ।
འདེད་དུ་འཇུག་པ།	= हंकवाना ।
འདོར་དུ་འཇུག་པ།	= छुड़वाना ।
འབུལ་དུ་འཇུག་པ།	= चढ़वाना ।
སྐྱེས་སུ་འཇུག་པ།	= जनवाना ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भूत

བཀླགས་སུ་བཅུག་ནས།	= पढ़वा कर ।
བཏང་དུ་བཅུག་ནས།	= दिला कर ।
བསད་དུ་བཅུག་ནས།	= मरवा कर ।
ཕྱུང་ས་སུ་བཅུག་ནས།	= निकलवा कर ।
རྒྱབ་ཏུ་བཅུག་ནས།	= लगवा कर ।

भविष्यत्

བསྣམ་དུ་གཞུག་གི་རེད།	= सुंघवायेगा ।
བདའ་རུ་གཞུག་གི་རེད།	= हंकवायेगा ।
འདོར་དུ་གཞུག་གི་རེད།	= छुड़वायेगा ।
འཕྱུལ་དུ་གཞུག་གི་རེད།	= चढ़वायेगा ।
བཞེས་སུ་གཞུག་གི་རེད།	= जनवायेगा ।

བྱ་བའི་ཁྱད་ཆོས། = क्रिया विशेषण

जिस अव्यय (= མི་ཟད་པ།) के द्वारा क्रिया की विशेषता जानी जाती है । जो स्थान, काल, परिमाण तथा भाव इत्यादि का बोध करता है उसे क्रिया विशेषण कहते हैं । जैसे–

ཁོ་ད་ལྟ་ཀློག་གི་འདུག	= वह अब पढ़ता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཁོ་འདིར་ཀློག་གི་འདུག = वह यहाँ पढ़ता है ।

ཁོ་ག་ལེར་ཀློག་གི་འདུག = वह धीरे पढ़ता है ।

ཁོ་ཞེ་དྲག་ཀློག་གི་འདུག = वह खूब पढ़ता है ।

ཁོ་རིམ་བཞིན་ཀློག་གི་འདུག = वह क्रमशः पढ़ता है ।

མགྱོགས་པ་ = शीघ्र	དལ་བུ་ = मन्द	འདིར་ = यहाँ
མྱུར་བ་ = जल्दी	ཀློག་བཞིན་ = पढ़ते हुए	དེར་ = वहाँ
ག་ལེར་ = घीरे	བྱེད་བཞིན་ = करते हुए	དེ་རིང་ = आज
རིམ་བཞིན་ = क्रमशः	ཉིན་གང་ = दिन भर	སང་ཉིན་ = कल
སྙིང་ནས་ = मन से	ལྐོག་ཏུ་ = चुपके	ཁ་སང་ = कल (भूत)
ཞོགས་པ་ = प्रातः	དེ་ཚེ་ = तत्काल	ད་ལྟ་ = अब
ཕ་གི་ན་ = वहाँ (पर)	ཅིག་ཅར་ = एक साथ	ཞེ་དྲག་ = अत्यन्त
གང་ན་ = कहाँ (पर)	འགྲོ་བཞིན་ = जाते हुए	ནམ་ = अब
དུས་སུ་ = समय में	ཅིག་ཅར་དུ་ = एकाएक में	རྟག་ཏུ་ = सदा
རྒྱུན་དུ་ = सदा	སྐྲིབ་ཙམ་ལ་ = झट से	བར་དུ་ = बीच में
ཇི་ལྟར་ = किस प्रकार	མྱུར་བ་ཉིད་དུ་ = एक दम	འོག་ཏུ་ = नीचे
ཇི་སྐད་ = जैसा	དག་པར་ = साफ साफ	སྟེང་ན་ = ऊपर
དེ་ལྟར་ = वैसा	ཕལ་ཆེར་ = प्रायः	ཅི་ཙམ་ = कितना
འདི་ལྟར་ = ऐसा	མདུན་ནས་ = सामने से	དེ་ཙམ་ = उतना

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དེ་བཞིན་ = तैसा	ག་དུས་ = किस कमय	ཕྲལ་དུ་ = एकदम
སྐད་ཅིག་ཉིད་དུ་ = क्षण भर में		སྙིང་རྗེ་དང་བཅས་ = दया पूर्वक
གང་ཐུབ་ = यथा शक्ति		སྡུག་བསྔལ་དང་བཅས་ = दुःख पूर्वक
ནམ་ཞིག་ = कभी न कभी		ཉིན་ལྟར་ = प्रति दिन
ཚེ་གང་ = आजन्म		འཁོར་དང་བཅས་ = सपरिवार

ཞེ་སའི་གདམས་པ།= आदर सूचक विधि

आदर सूचक विधि में कर्म और मुख्य क्रिया के साथ གནང་། རོགས་གནང་། མཛད། མཛད་པ་གནང་། སྩལ། སྩོལ། མཛོད། མཛད་དུ་གསོལ། གསོལ། इत्यादि जोड़ दिये जाते हैं । जिन के हिन्दी इये, इयेगा, तथा इए होते हैं । ये आज्ञा; विधि तथा प्रार्थना आदि में अन्य और मध्यम पुरुषों के सब वचनों में प्रयुक्त होते हैं । इस अवस्था में अन्य पुरुष, एकवचन ཁོ་ का ཁོང་ तथा मध्यम पुरुष के एकवचन ཁྱོད་ का ཁྱེད་ और बहुवचन ཁྱོད་ཚོ་ का ཁྱེད་ཚོ་ हो जाता है । जैसे–

ཁྱེད་དགེ་བ་གནང་། = आप पुण्य कीजिये ।

སྦྱིན་པ་ཡང་གནང་རོགས་གནང་། = दान भी दीजिये ।

དཔེ་ཆ་ཀློག་རོགས་གནང་། = पुस्तक पढ़िये ।

ཕྱག་ལས་འདི་མཛད་རོགས་གནང་། = यह कार्य कीजिये ।

ཆབ་ཁོལ་བཞེས་རོགས་གནང་། = गर्म पानी ग्रहण कीजिये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དེ་ཚོ་ཁྱེད་ཀྱིས་མཛད་རོགས་གནང་།	= वे आप के द्वारा कीजिये।
བདག་ལ་རིག་པ་སྩོལ་དུ་གསོལ།	= मुझ को विद्या दीजिये ।
སྒོར་ལྔ་གསོལ་རས་སྩོལ་དུ་གསོལ།	= पाँच रूपये परितोषिक दीजिये ।
ཚིག་འགའ་སྨྲ་བར་མཛད་དུ་གསོལ།	= कुछ बातें कहियेगा ।
ཆུ་དྲོན་མོར་ཁྲུས་གསོལ།	= गर्म पानी में स्नान कीजिये ।
ཆོས་ཀྱི་བསླབ་བྱ་མཛོད་ཅིག	= धर्मोपदेश कीजिये ।

ཀྱི་ གི་ གྱི་ का प्रयोग

यद्यपि ཀྱི་ गི་ གྱི་ षष्ठि विभक्ति प्रत्यय हैं परन्तु जब ये निषेधार्थक और सहकारी क्रिया से पूर्व आवे तो सामान्य वाक्य वर्त्तमान काल में ता, ते, ती, ए और भविष्यत् काल में ऊ, ए या ओ के बोधक होते हैं ।

सामान्य वर्त्तमान

ཤེས་ཀྱི་ཡོད།	= जानता है ।	ཤེས་ཀྱི་མེད།	= नहीं जानता है ।
འགྲོ་གི་འདུག	= जाते हैं ।	འགྲོ་གི་མི་འདུག	= नहीं जाते हैं ।
གནང་གི་འདུག	= देती है ।	གནང་གི་མི་འདུག	= नहीं देती है ।
དགོས་ཀྱི་རེད།	= चाहिए ।	དགོས་ཀྱི་མ་རེད།	= नहीं चाहिए ।

भविष्यत् काल

འབྲི་གྱི་ཡིན།	= लिखूंगा ।	འབྲི་གྱི་མིན།	= नहीं लिखूंगा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འགྲོབ་ཀྱི་རེད། = मिलेगा । འགྲོབ་ཀྱི་མ་རེད། = नहीं मिलेगा ।

འཐུང་གི་ཡིན་ནམ། = पियोगे ? འཐུང་གི་མིན་ནམ། = नहीं पियोगे ?

བྱེད་ཅན། = **कारक**

सू0- ཛྫས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་རྣམས་ལས།།
གང་མིང་མཐའ་ན་བཅུ་པ་གནས།།
དེ་ལ་ཨཱ་ལི་གཉིས་པ་སྦྱར།
གང་མིང་མཐའ་ན་བརྒྱད་པ་གནས།།
དེ་ལ་གཉིས་པ་ཨུ་ཡང་སྦྱར།།
གང་མིང་མཐའ་ན་གསུམ་པ་གནས།།
དེ་ལ་ཨཱ་ལི་གཉིས་པ་སྦྱར།།
བཞི་པ་དགུ་པ་དངོས་ཀྱང་སྟེ།།
ལས་དང་ཆེད་དང་རྟེན་གནས་དང་།།
དེ་ཉིད་ཚེ་སྐབས་ལ་སྒྲ་ཡིན།།

अनु0- दस पराक्षरों (ག་ ང་ ད་ ན་ བ་ མ་ འ་ ར་ ལ་ ས་) में से, किसी संज्ञा (के) अन्त में दसवाँ (पराक्षर 'ས') रहे, (तो विभक्ति प्रत्यय बनाने के लिये) उस में द्वितीय आलि (अर्थात् उ की मात्रा) लगावे (तो 'སུ' प्रत्यय बनता है ।)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(इसी प्रकार) किसी संज्ञा (के) अन्त में आठवाँ (पराक्षर 'ར') रहे, (तो यहाँ विकल्प से एक ར और आता है तथा) उस में भी द्वितीय (आलि) उ लगावे (तो ར་རུ་ प्रत्यय बनते हैं ।)

किसी संज्ञा (के) अन्त में तृतीय (पराक्षर 'ད') रहे, (तो विभक्ति प्रत्यय बनाने के लिये) उस में द्वितीय आलि (= उ) लगावे (तो དུ་) बनता है ।

(इसी प्रकार किसी संज्ञा के अन्त में) चतुर्थ (पराक्षर 'ན' एंव) नवां (पराक्षर 'ལ' रहे तो वे) वैसे ही रहेंगे, (अर्थात् विभक्ति प्रत्यय बनाने के लिये उन में कोई मात्रा नहीं जुड़ेगी ।)

(यहाँ इन प्रत्ययों के अतिरिक्त विकल्प से 'ཏུ' प्रत्यय भी होता है । इसी तरह སུ་ར་རུ་ཏུ་ན་ལ་དུ་ ये सातों ལ་ नामवाची[1] विभक्ति प्रत्ययाँ) कर्म और सम्प्रदान और अधिकरण और तत्त्व (और) अवधि वाचक के प्रत्यय हैं ।

भोट भाषामें सधारणतः आठ कारक तथा सात विभक्तियाँ होतीं हैं । कर्त्ता कारक के विभक्ति चिन्ह नहीं होता । सारी संज्ञायें कर्त्ता कारक हैं ।

---

१. विभक्ति प्रत्ययों में अन्तिम होने के कारण इन (विभक्ति प्रत्ययों) का ल प्रत्यय नाम पड़ा है । इन प्रत्ययों का प्रयोग भी उपर्युक्त प्रेरणार्थक क्रिया के परे आने वाले प्रत्ययों की तरह ས་ पराक्षर के बाद སུ། ག་བ་ और ད་ परात्पराक्षर को ཏུ། ང་ད་ན་མ་ར་ལ་ को དུ་ तथा འ་ और बिना पराक्षर वाली संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के परे རུ་ लगते हैं । ན་ ལ་ दोनों किसी भी पराक्षर के परे उपयुक्त हो सकता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བྱེད་ཅན། = कारक   རྣམ་དབྱེ། = विभक्तियाँ

१. ངོ་བོ་ཙམ་སྟོན་པ། = कर्त्ता[1] . . . . . .

२. ལས་སུ་བྱ་བ་ = कर्म སུ་ ར་ རུ་ དུ་ ན་ ལ་ ཏུ།

३. བྱེད་པ་པོ་ = करण གིས་ ཀྱིས་ གྱིས་ འིས་ ཡིས།

४. དགོས་ཆེད་ = सम्प्रदान སུ་ ར་ རུ་ དུ་ ན་ ལ་ ཏུ།

५. འབྱུང་ཁུངས་ = अपादान ནས་ ལས།

६. འབྲེལ་སྒྲ་ = सम्बन्ध གི་ ཀྱི་ གྱི་ འི་ ཡི།

७. རྟེན་གནས་ = अधिकरण སུ་ ར་ རུ་ དུ་ ན་ ལ་ ཏུ།

८. འབོད་སྒྲ་ = संबोधन ཀྱེ ཀྭ་ཡེ། ལྷ་ཡེ།

ལས་སུ་བྱ་བ། = कर्म कारक

क्रिया के व्यापार का फल जिस पर पड़े उसे कर्म कारक कहते हैं । जैसे–

ཤར་ཕྱོགས་སུ་འགྲོ་དགོས། = पूर्व दिशा को जाना चाहिये ।

མེ་ལྷར་བལྟ་བར་བྱ། = अग्नि देवता को देखियेगा ।

མེ་ལྷ་རུ་བལྟ་བར་བྱ། = अग्नि देवता को देखियेगा ।

རྒྱ་གར་དུ་ཕྱིན་པ་རེད། = भारतवर्ष को गया है ।

---

१. हिन्दी के कर्तृ कारक, जैसे, 'नौकर ने पत्र ले आया' का भोट भाषा में करण कारक हो जाएगा । जैसे, གཡོག་པོ་ཡིས་ཡི་གེ་འཁྱེར་འོངས།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རྒྱབ་ཏུ་ཕྱོགས་དགོས། = पीछे को मुड़ना चाहिये ।

རང་གི་གཟུགས་ལ་ལྟོས། = अपने रूप को देखो ।

རྒྱ་མཚོའི་ཕ་རོལ་ན་ཕྱིན། = समुद्र के (उस)पार को जाओ ।

དགོས་ཆེད། = सम्प्रदान कारक

देने वाली वस्तु जिसे प्राप्त हो उसे तथा क्रिया के द्वारा जिस से संबन्ध किया जाये उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं । जैसे—

རིགས་སུ་གདམས་ངག་གནང་། = जाति को उपदेश दीजिये ।

མདར་སྨྱུག་མ་ཁྱེར་ཤོག = वाण को बेंत ले आओ।

མདའ་རུ་སྨྱུག་མ་ཁྱེར་ཤོག = वाण को बेंत ले आओ।

ཤིང་གཅོད་དུ་སྟ་རེ་དགོས། = लकड़ी काटने के कुल्हाड़ी चहिये ।

མེ་ཏོག་་ལ་ཆུ་ཐོར་ཅིག = फूल को पानी छिड़काओ ।

གར་ལྟ་བ་ལ་སྒྲོན་མེ་ཐོགས། = नाच देखने को दीपक उठाओ ।

ཆེད་དུ། ཆེད་ལ། དོན་དུ། དོན་ལ། ཕྱིར་དུ། ཕྱིར་ལ།

इत्यादि भी सम्प्रदान कारक के भांति प्रयोग किये जाते हैं । जो हिन्दी के 'लिये' और 'के लिये' के सूचक हैं ।

उदाहरणार्थ

རིགས་ཀྱི་ཆེད་དུ་གདམས་ངག་གནང་། = जाति के लिये उपदेश दीजिए ।

མདའི་ཆེད་ལ་སྨྱུག་མ་ཁྱེར་ཤོག = वाण के लिये बेंत ले आओ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མདའི་དོན་དུ་སྨྱུག་མ་ཁྱེར་ཤོག = वाण के लिये बेंत ले आओ ।

ཤིང་གཅོད་ཕྱིར་སྟ་རེ་དགོས། = लकड़ी काटने के लिये कुल्हाड़ी चाहिये ।

མེ་ཏོག་གི་དོན་ལ་ཆུ་ཐོར་ཅིག = फूल के लिये पानी छिड़काओ ।

ཚོགས་ཀྱི་ཕྱིར་དུ་སྦྱིན་པ་གནང་། = गण के लिये दान दीजिये ।

རྟེན་གནས། = अधिकरण कारक

जो जिस पर रहे या अधारित हो, ऐसे अर्थों में प्रयुक्त होने वाला तथा क्रिया के अधार को अधिकरण कारक कहते हैं जैसे—

ཚོགས་སུ་ཚོགས་བདག་གནས། = गण में गणपति रहता (है) ।

མེར་མེ་ལྷ་གནས། = आग में अग्नि देव वास करता (है) ।

མེ་རུ་མེ་ལྷ་གནས། = आग में अग्नि देव वास करता (है) ।

ལྷ་ཁང་དུ་སྐུ་འདྲ་ཡོད། = देवालय में मूर्ति है ।

གཟུགས་ཁམས་ན་ཚངས་པ་གནས། = रूप लोक में ब्रह्मा वास करता (है) ।

རྒྱ་གར་ལ་མཆོད་རྟེན་ཡོད། = भारत वर्ष में स्तूप हैं ।

སྟེང་ तथा སྟེང་ལ་ हिन्दी के 'पर' एवं 'ऊपर' शब्द की जगह आते हैं । ये विभक्ति न हो कर एक स्वतंत्र शब्द हैं । कुछ हिन्दी वैयाकरण भी इसे विभक्ति नहीं मानते । ये कभी कभी अधिकरण कारक की जगह प्रयोग किये जाते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उदाहरणार्थ

ཚོགས་སྟེང་ཚོགས་བདག་གནས། = गण में गणपति रहता है ।

རི་སྟེང་ཤིང་སྡོང་སྐྱེས་འདུག = पहाड़ पर वृक्ष उगा है ।

རིའི་སྟེང་ཤིང་སྡོང་སྐྱེས་འདུག = पहाड़ के ऊपर वृक्ष उगा है ।

ལྷ་ཁང་སྟེང་དར་ལྕོག་འདུག = देवालय पर झण्डा है ।

གཟུགས་ཁམས་ཀྱི་སྟེང་ལ་གཟུགས་མེད་ཁམས་ཡོད། =रूप लोक के ऊपर अरूप लोक है।

རྒྱ་གར་སྟེང་ལ་གཉའ་གནོན། = भारत वर्ष पर दबाव ।

དེ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲ། = तत्त्ववाचक

इन सात तरह के विभक्ति प्रत्ययों में से ན་ और ལ་ तत्त्ववाचक में प्रयुक्त नहीं होते । तत्त्ववाचक को कर्म कारक का एक भेद माना जाता है परन्तु इसके प्रत्यय अधिकरण की तरह लगते हैं । यद्यपि कर्म, अधिकरण तथा तत्त्ववाचक के प्रत्यय एक ही हैं । परन्तु जब तत्त्ववाचक प्रत्यय से युक्त वाक्यों का उच्चारण किया जाता है तब अधिकरण सा भाव व्यक्त होता है । जैसे—

མཁས་སུ་གྱུར། = विज्ञ में हुआ ।

ཆུར་ཁོལ། = पानी में खोला ।

ཆུ་རུ་ཁོལ། = पानी में खोला ।

ཆོས་སུ་བཤད། = धर्म में कहा ।

དགེ་རྒན་དུ་གྱུར། = अध्यापक में हुआ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མཆོག་ཏུ་གྱུར། = श्रेष्ठ में हुआ ।

ཚེ་སྐབས། = अवधिवाचक

अवधिवाचक सप्तमी अधिकरण कारक के अन्तगर्त है, परन्तु अधिकरण कारक नहीं है । यह केवल अवधि अथवा समय को सूचित करता है न कि समय इसका आधार होता है । जैसे—

རྒྱལ་པོ་མྱ་ངན་མེད་ཀྱི་སྐབས་སུ་ མུ་གེ་མ་བྱུང་། = राजा अशोक के समय दुर्भिक्ष नहीं पड़ा ।

ཉི་མ་འཆར་ཀར་ཁྲུས་གསོལ། = सूर्योदय के समय स्नान कीजिए ।

ཉི་མ་འཆར་ཀ་རུ་ཁྲུས་གསོལ། = सूर्योदय के समय स्नान कीजिए ।

སློབ་གཉེར་བའི་སྐང་དུ་བརྩོན་འགྲུས་ བྱོས་ཤིག = विद्यार्थी के समय परिश्रम करो

ལམ་དུ་འགྲོ་བ་ན་དགྲ་དང་ཕྲད། = मार्ग में जाते समय शत्रु से मिला ।

སངས་རྒྱས་ཀྱིས་སྲོད་ལ་བདུད་ བཏུལ། = बुद्ध ने सांय काल मार दमन किया ।

གནས་བསྐོར་དད་ཏུ་བསོད་ནམས་ བསགས། = तीर्थयात्रा (के) समय पुण्य कमाया ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དུས། སྐབས། གནས་སྐབས། ཚེ། ཙ་ན། སྐང་། इत्यादि काल के पर्यायवाची शब्द हैं, जिनको अवधिवाचक विभक्ति की जगह प्रयोग किये जाने पर वाक्य के भाव में कोई अन्तर नहीं आता ।

उदाहरणार्थ

རྒྱལ་པོ་མྱ་ངན་མེད་ཀྱི་ཚེ་མུ་གེ་མ་བྱུང་། = राजा अशोक के समय दुर्भिक्ष नहीं पड़ा ।

ཉི་མ་འཆར་དུས་ཁྲུས་གསོལ། = सूर्योदय (के) समय स्नान कीजिये

ཉི་མ་འཆར་སྐབས་སུ་ཁྲུས་གསོལ། = सूर्योदय (के) समय स्नान कीजिये

ལམ་དུ་འགྲོ་ཙ་ན་དགྲ་དང་ཕྲད། = मार्ग में जाते समय शत्रु से मिला ।

སངས་རྒྱས་ཀྱིས་སྲོད་ཀྱི་གནས་སྐབས་སུ་ བདུད་བཏུལ། = बुद्ध ने सांय काल मार दमन किया ।

གནས་བསྐོར་སྐང་ལ་བསོད་ནམས་བསགས། = तीर्थयात्रा (के) समय पुण्य कंमाया ।

सु0— ཇེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ནི།།
ཨི་དང་མཐུན་ལུགས་འདི་ཞེས་བྱ།།

अनु0— दस पराक्षरों (में से कोई भी पराक्षर युक्त संज्ञा के अन्त) में, इ (की मात्रा वाले षष्ठी विभक्ति प्रत्ययों का) योग इस तरह है, (कहकर बताता हूँ ।)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འབྲེལ་སྒྲ། = संबन्ध कारक

सू०— དང་པོ་གཉིས་ལ་དང་པོ་མཐུན།།
གསུམ་ལྔ་བཅུ་ལ་ཀྱི་དང་སྦྱར
བདུན་པ་ཉིད་ལ་བདུན་པ་སྟེ།།
ལྷག་མ་རྣམས་ལ་གྱི་དང་སྦྱར།
དེ་དག་ཨི་དང་སྦྱར་འབྲེལ་བའི་ས།།

अनु०— (पराक्षरों के) प्रथम (ག་ और ང་) दोनों (वर्णान्त शब्दों के परे षष्ठी विभक्ति प्रत्ययों का) प्रथम (ག་) योग, (होता है । इस प्रकार पराक्षरों के) तृतीय (ད) पंचम (བ་ तथा) दसवाँ (ས་ वर्णान्त शब्दों में) 'ཀྱ་' योग, (होता है । तदनुसार पराक्षरों के) सप्तम (འ་ वर्णान्त शबदों) में सातवाँ (पराक्षर 'འ' ही (का योग) होता है । शेष (ན་མ་ར་ལ་ वर्णान्त शब्दों) में 'གྱ' योग, (होता है । इस तरह ག་ ཀྱ་ གྱ་ འ་ विकल्प से ཡ་' इत्यादि) इन (पांचों प्रत्ययों में) इ (की मात्रा) लगाने (से གི་ ཀྱི་ གྱི་ འི་ ཡི་ बनते हैं, जो) संबन्ध (कारक) के अर्थ (का बोध कराते हैं ।)

दो वस्तुओं के परस्पर संबन्ध को सूचित करने वाले कारक को संबन्ध कारक कहते हैं । जैसे—

འདི་བདག་གི་ནོར་རེད། = यह मेरा धन है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཁྱེད་ཀྱི་མིང་ག་རེ་རེད། = आप का नाम क्या है ?

གསེར་གྱི་གདུ་བུ་གཅིག་འདུག = सोने की एक अँगूठी है ।

མི་དེའི་ཡོན་ཏན་རྗོད་ཅིག = उस आदमी का गुण बताओ ।

མི་དེ་ཡི་ཡོན་ཏན་རྗོད་ཅིག [1] = उस आदमी का गुण बताओ ।

भोट भाषा में संबन्ध कारक पाँच प्रकार के होते हैं—

१. རྟེན་དང་བརྟེན་པའི་འབྲེལ་སྒྲ། = आधाराधेयभाव ।

२. ཡན་ལག་དང་ཡན་ལག་ཅན་གྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = अंगांगिभाव ।

३. ཆོས་དང་ཁྱད་ཆོས་ཀྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = गुणगुणीभाव ।

४. གཞི་མཐུན་གྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = कार्यकारण ।

५. བདག་པོ་དང་ཡུལ་གྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = स्वस्वामिभाव ।

རྟེན་དང་བརྟེན་པའི་འབྲེལ་སྒྲ། = आधाराधेयभाव

ཅོག་གི་སྣག་བུམ། = चौकी का मसीपात्र (दवात्) ।

ཡུལ་གྱི་མཆོད་རྟེན། = देश का स्तूप ।

བོད་ཀྱི་དགོན་པ། = तिब्बत के मन्दिर ।

ཁྲོམ་གྱི་མི། = बाजार के लोग ।

---

१. जिन शब्दों के परे 'འ' पराक्षर रहे अथवा नहीं । जैसे, མདའ་ =तीर । ལྷ་ =देव आदि षष्ठी विभक्ति प्रत्ययों में से 'འི་' ही लगाना चाहिये तथा पदपूर्ति के लिये 'འི་' की जगह 'ཡི་' लगता है । जैसे, མདའ་ཡི། ལྷ་ཡི། इत्यादि ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཡུར་པའི་ཆུ། = नहर का पानी ।

ཡན་ལག་དང་ཡན་ལག་ཅན་ཀྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = अंगांगिभाव

བུ་ཚའི་ལག་པ། = लड़के का हाथ ।

བུད་མེད་ཀྱི་སྐྲ། = स्त्री के केश ।

ལག་པའི་སོར་མོ། = हाथ की अँगुली ।

ཁང་པའི་སྒོ། = घर का दरवाजा ।

སྟག་གི་པགས་པ། = बाघ का चर्म ।

ཆོས་དང་ཁྱད་ཆོས་ཀྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = गुणगुणीभाव

ཞབས་ཕྱིའི་ཡིད་བརྟན། = नौकर का विश्वास !

ཤིང་མཁན་གྱི་ལས། = बढ़ई का काम ।

ཤིང་འབྲས་ཀྱི་མངར་ཆ། = फल की मिठास ।

ཕ་མའི་བརྩེ་བ། = माता पिता का प्रेम ।

མཚན་གྱི་མུན་པ། = रात का अँधेरा ।

གཞི་མཐུན་གྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = कार्यकारण

ལྕགས་ཀྱི་རལ་གྲི། = लोहे की तलवार ।

སའི་ཛ་མ། = मिट्टी का घड़ा ।

རྡོའི་གཟུགས་བརྙན། = पत्थर की मूर्ति ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཤིང་གི་ལྕུག་ཙེ། = लकड़ी की चौकी ।

དངུལ་གྱི་བུམ་པ། = चाँदी का कलश ।

བདག་པོ་དང་ཡུལ་གྱི་འབྲེལ་སྒྲ། = स्वस्वामिभाव

ཕྱུག་པོའི་ལོངས་སྤྱོད། = सेठ की सम्पत्ति।

ཁྱིམ་བདག་གི་ཁང་པ། = गृहपति का घर ।

ས་བདག་གི་གླང་ཆེན། = भूपति का हाथी ।

ཁྱོད་ཀྱི་དཔེ་དེབ། = तुम्हारी पुस्तिका ।

བླ་མའི་བཞུགས་གདན། = गुरु का आसन ।

इन विभक्ति प्रत्ययों में से གི་ ཀྱི་ གྱི་ तीनों, वाक्यों के पूर्व तथा पिछले खण्डों में असमानता दिखाने के लिये शब्दालंकार के रूप में आते हैं । ये हिन्दी के निश्चयार्थक और आग्रार्थक अव्यय की जगह प्रयोग किये जाते हैं ।

उदाहरणार्थ

བདག་གི་བླ་མ་སངས་རྒྱས་ཡིན་ = मेरे गुरु बुद्ध हैं इन्द्र तो नहीं हैं ।
གྱི་དབང་པོ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

འདི་ནི་བདེན་གྱི་གཞན་ནི་རྫུན། = यह तो सत्य (है)बाकी तो झूठ ।

འདི་ལྟར་འཐད་མོད་ཀྱི་འོན་ཀྱང་། = इस तरह तो ठीक है, फिर भी ।

ལས་ཀ་ཁག་གི་ཟ་བ་ནི་སླ། = कार्य कठिन (है) खाना तो आसान है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བྱེད་སྒྲ། = करण कारक

सू0— དེ་ཉིད་ལ་ནི་བཅུ་པ་སྦྱར།།
བྱེད་པ་པོ་རུ་ཤེས་པར་བྱ།།

अनु0— उन (षष्ठी विभक्ति प्रत्यय གི་ ཀྱི་ གྱི་ འི་ ཡི།) में दसवाँ (पराक्षर 'ས') जोड़े तो, (གིས་ ཀྱིས་ གྱིས་ འིས་ ཡིས། बनते हैं जिन को) करण कारक (के अर्थ) में जानियेगा ।

कर्ता जिस साधन के द्वारा क्रिया को करे उसे करण कारक कहते हैं । जैसे—

མིའི་མིག་གིས་གཟུགས་མཐོང་། = मनुष्य की आंख से रूप देखा ।

གཞན་གྱིས་བྱེད་དུ་ཆུགས་ཤིག = दूसरों से करने को दो ।

སྔོན་བསགས་བསོད་ནམས་ཀྱིས་མི་ལུས་ཐོབ། = पूर्व संचित पुण्य से मानव शरीर पाया ।

ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པས་ (པའིས་[1]) ཡི་གེ་བྲིས། = तुम्हारे हाथ से पत्र लिखो ।

---

१. सम्भोट के व्याकरणानुसार 'པའིས་' ही लिखना चाहिए, परन्तु सम्राट ठीरलपाचन= ཁྲི་རལ་པ་ཅན་ के राज्य काल ई0 ८५६-६८, में जब द्वितीय भाषा संशोधन हुआ तो པའིས་ की 'འི་' हटा कर པས་ कर दिया गया । इस प्रकार མིའིས་ का མིས་ = मनुष्य से । ཁྱིའིས་ का ཁྱིས་ = कुत्ते से । སྨྱུ་གུའིས་ का སྨྱུ་གུས་ = कलम से । ཁོའིས་ का ཁོས་ = उस से । ངའིས་ का ངས་ =मुझ से इत्यादि । शब्दों के साथ इन के योग का नियम षष्ठी विभक्ति की तरह जानना चाहिये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་ཡིས་ཡི་གེ་ཐྲིས། = तुम्हारे हाथ से पत्र लिखो ।

རྒྱན་སྡུད་ཀྱི་ཕྲད། = अलंकार (और) समासक के प्रत्यय

सू0— ཨཱ་ལི་ཕྱིས་ནས་གཉིས་པ་སྦྱར།།
ཚིག་རྒྱན་གཉིས་དང་སྡུད་པར་འགྱུར།།

अनु0— (उपर्युक्त सम्बन्ध कारक के ཀྱི་ འི་ ཡི་ प्रत्ययों की) आलि (अर्थात् इ की मात्रा) मिटाकर (जो ཀྱ་ འ་ ཡ་ ही शेष रह जाते हैं उनमे पराक्षर का) द्विवतीय (ང་) जोड़, (तो ཀྱང་ འང་ ཡང་ बनते हैं, जो समान तथा असमान नामक) दो (तरह के) शब्दालंकार तथा समासक (के सूचक)होते हैं ।

ये हिन्दी के 'ही' तथा 'भी' अव्यय के सदृश होते हैं । जैसे—

བཅད་ཀྱང་།	= काटने पर भी ।	བྱས་ཀྱང་།	= करने पर भी ।
ཁྱོད་ཀྱང་།	= तुम भी ।	ཡིན་ནའང་།	= होने पर भी ।
ལྷ་ཡང་།	= देव भी ।	ཕྱིན་ན་ཡང་།	= जाने पर भी ।

अलंकार दो तरह के होते हैं—

མཐུན་པའི་རྒྱན། = समानालंकार
མི་མཐུན་པའི་རྒྱན། = असमानालंकार

མཐུན་པའི་རྒྱན། = समानालंकार

དཀར་ཡང་དཀར། = सफेद ही सफेद (विशेष सफेद)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མཛེས་ཀྱང་མཛེས། = सुन्दर ही सुन्दर ।

བསམ་ཡང་བསམ། = सोचा ही सोचा ।

བཙའ་ཡང་བཙའ། = पैदा ही पैदा ।

བཤད་ཀྱང་བཤད། = बताया ही बताया ।

མི་མཐུན་པའི་རྒྱན། = असमानालंकार

རིག་པ་བཟང་ཡང་བྱ་བ་ངན། = बुद्धि अच्छी होने पर भी काम बुरा ।

ངག་ངན་ཡང་སེམས་པ་བཟང་། = वचन बुरे होने पर भी मन अच्छा ।

ཕྱུག་པོ་ཡིན་ནའང་སེར་སྣ། = धनी होने पर भी कृपण ।

ཡོན་ཏན་ཡོད་ཀྱང་གླུན། = गुण होने पर भी मूर्ख ।

མཛའའང་སླུ་བར་བྱེད་དོ།། = मित्र भी ठगता है ।

སྡུད་པ། = समासक

མིར་མ་ཟད་ལྷས་ཀྱང་བཏུད་དོ།། = मानव के अतिरिक्त देवों द्वारा भी पूजा जाता है ।

ཨུཏྤལ་ཡང་ཡིན་ལ་སྔོན་པོའང་ཡིན། = उत्पल भी है नीला भी है ।

བདག་གི་བསམ་པའི་དོན་ཡང་འགྲུབ། = मेरी मनोकामना भी पूरी हुई ।

ཁྱོད་ཀྱི་ཚིག་ཀྱང་སྙན་པོ་འདུག = तुम्हारे वचन भी मृदु हैं ।

མིར་མ་ཟད་བདུད་འགྲོས་ཀྱང་ཤེས་ཀྱི་རེད། = मानव को छोड़कर पशु भी जानते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བརྗོད་པ།

དེ་ར་ང་ཡང་ཡོད་ཁྱོད་ཀྱང་ཡོད་པ་རེད། = वहाँ मैं भी था तुम भी थे ।

ཡོན་ཏན་ཤེས་ཀྱང་ཕན་མི་ཐོགས། = विद्या जानने पर भी लाभ नहीं ।

མཛེས་ཀྱང་མཛེས་ལ་ལུས་ཀྱང་དཀར། = सुन्दर ही सुन्दर (और)शरीर भी सफेद ।

ལམ་ཡང་ངན་ལ་མུན་ནག་ཀྱང་ཡོད་པ་རེད། = मार्ग भी खराब (और) अन्धेरा भी था ।

ཆུ་ར་སྐྱེས་ཀྱང་ཆུས་མ་གོས་འདུག = पानी में पैदा होने पर भी पानी से अलिप्त है

གཡོག་པོ་ཞིག་བཙལ་ཡང་མ་རྙེད། = एक नौकर खोजने पर भी नहीं मिला।

སློབ་གྲྭར་ཕྱིན་ན་ཡང་དོན་མེད་རེད།[1] = पाठशाला जाने पर भी व्यर्थ है ।

ལྷག་བཅས་ཀྱི་ཕྲད། सशेषक प्रत्यय

सू०— ལ་དོན་སུ་ལ་ཨུ་ཕྱིས་ནས།།

དེ་ལ་གསུམ་པའི་དང་པོ་སྦྱར།།

དེ་ལ་ཨཱ་ཡི་གསུམ་པ་སྦྱར།།

དེ་ནི་ལྷག་དང་བཅས་པའོ།།

---

१. शब्दों के साथ इन प्रत्ययों के योग का नियम यदि पराक्षर ག་ ད་ བ་ ས་ तथा ད་ परात्पराक्षर रहे तो उस में ཀྱང་། ང་ ན་ མ་ ར་ ལ་ में ཡང་། འ तथा बिना पराक्षर वाले शब्दों में འང་། योग होता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— [1]लार्थक (= लप्रत्याहार)में सུ་ (के) ཨུ་ (की मात्रा) मिटा कर, (जो 'ས་' ही शेष रह जायगा) उस में तृतीय (वर्ग) के प्रथम (वर्ण 'ཏ' अधः) प्रयुक्त, (करने पर 'སྟ་' बना) उस (= 'སྟ་') में तृतीय आलि (अर्थात् ए की मात्रा) जोड़े, (तो སྟེ་ शब्द बना । यहाँ विकल्प से ཏེ་ तथा དེ་ दो और प्रत्यय होते हैं) उन (སྟེ་ ཏེ་ དེ तीनों को) <u>तो</u> सशेषक (प्रत्यय कहते हैं ।)

ये हिन्दी के संबन्ध सूचक 'कर' और 'करके' की तरह प्रयुक्त होते हैं । वाक्य के अन्त में आने पर कभी कभी हो, है तथा हैं का सा अर्थ प्रकट करते हैं । ये प्रत्यय वाक्य की असमाप्ति के सूचक हैं । इस लिये इसका नाम सशेषक (अर्थात् वाक्य के अधूरेपन को दिखाने वाले) प्रत्यय हैं ।

सशेषक प्रत्यय तीन प्रकार के हैं—

१. མཚམས་སྦྱོར་ལྷག་བཅས། = संयोजक सशेषक ।

२. དམ་བཅས་ལྷག་བཅས། = संकल्पक सशेषक ।

३. གཞན་འདྲེན་ལྷག་བཅས། = परनायक सशेषक।

མཚམས་སྦྱོར་ལྷག་བཅས།= संयोजक सशेषक ।

མདའ་འཕངས་ཏེ་ཕོག	= तीर प्रक्षिप्त होकर लगा ।
ལྷ་མཆོད་དེ་འགྲོ།	= देव भज कर जा ।

---

१. इन सातों प्रत्यय में अधिकांश के स्थान में 'ལ་' का ही प्रयोग किया जा सकता है । अतः 'ལ་' की प्रधानता होने के कारण इन विभक्ति प्रत्ययों की संज्ञा भी लार्थक है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འཛུམ་དམུལ་ཏེ་གནང་། = मुसकरा कर दिये ।

ཕྱག་བཙལ་ཏེ་བཤད། = बन्दना कर के बोले ।

རྡོ་བརྒྱབ་སྟེ་ཤོར་སོང་། = पत्थर मार कर भाग गया ।

ནས་ और ཅིང་ प्रत्ययों को यदि མཚམས་སྦྱོར་ལྷག་བཅས་ की जगह प्रयोग किया जाय तो उस वाक्य के अर्थ या भाव में कोई अन्तर नहीं आता ।

उदाहरणार्थ

མདའ་འཕངས་ནས་ཕོག = तीर प्रक्षिप्त होकर लगा ।

ལྷ་མཆོད་ནས་འགྲོ། = देव भज कर जा ।

འཛུམ་དམུལ་ཅིང་གནང་། = मुस्करा कर दिये ।

ཕྱག་བཙལ་ནས་བཤད། = बन्दना कर के बोले ।

རྡོ་བརྒྱབ་ནས་ཤོར་སོང་། = पत्थर मार कर भाग गया ।

དམ་བཅས་ལྷག་བཅས། = संकल्पक सशेषक ।

ཕུང་པོ་ནི་ལྔ་སྟེ། གཟུགས་དང་། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ།། = पाँच स्कन्ध हैं, रूप और वेदना और संज्ञा और सस्कार तथा विज्ञान ।

མེ་ཡོད་དེ་དུ་བ་ཡོད་པའི་ཕྱིར། = वह्नि है, धूम होने से ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དཀོན་མཆོག་ནི་གསུམ་སྟེ། སངས་རྒྱས་ = रत्न हैं, बुद्ध और धर्म और
དང་། ཆོས་དང་། དགེ་འདུན་ནོ།། संघ ।

བསླབ་པ་སྟེ། ལྷག་པ་ཚུལ་ཁྲིམས། = शिक्षा है, अधि शील, अधि
ལྷག་པ་ཤེས་རབ་དང་ལྷག་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ།། प्रज्ञा तथा अधि समाधि

གཞན་འདྲེན་ལྷག་བཅས།= परनायक सशेषक

ཤར་གྱི་ཕྱོགས་ན་དབང་པོ་སྟེ་ལྷོའི་ = पूर्व की दिशा में इन्द्र है दक्षिण की दिशा
ཕྱོགས་ན་འཆི་བདག་གོ = में यमपति है
ཁྱོད་ནི་དཔལ་ཏེ་ཁྱོད་ནི་མགོན། = तुम तो लक्ष्मी हो(और) तुम तो नाथ ।

ཁོ་ཆེན་པོ་རེད་དེ་འོན་ཀྱང་ཀླུགས་ = वह बड़ा (तो) है, परन्तु (उन में) मूर्खता
ཧྲགས་ཆེན་པོ་འདུག अधिक है ।
ཆོས་ནི་ཟབ་ཅིང་རྒྱས་ཏེ་ཀུན་གྱིས་མི་ཤེས། = धर्म तो गम्भीर (और) विस्तृत है
सब लोगों से नहीं जाना जाता ।

བདེ་བས་མངའ་སྟེ་སྡུག་བསྔལ་མེད། = सुख से लिप्त है दुःख (से)नहीं ।

གཞན་འདྲེན་ལྷག་བཅས་ के स्थान पर यदि 'ལ' लिखा जाय तो उस वाक्य के भाव में अन्तर नहीं आता ।

उदाहरणार्थ

ཁོ་ཆེན་པོ་རེད་ལ་འོན་ཀྱང་ཀླུགས་ཧྲགས་ = वह बड़ा (तो)है, परन्तु (उन में)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཆེན་པོ་འདུག   मूर्खता अधिक है ।

ཁྱོད་ནི་དཔལ་ལ་ཁྱོད་ནི་མགོན།   = तुम तो लक्ष्मी हो (और) तुम तो नाथ ।

ཆོས་ནི་ཟབ་ཅིང་རྒྱས་ལ་ཀུན་གྱིས་མི་ཤེས།   = धर्म तो गम्भीर (और) विस्तृत है सब लोगों से नहीं जाना जाता ।

བདེ་བས་མངའ་ལ་སྡུག་བསྔལ་མེད།   = सुख से लिप्त है दुःख (से)नहीं ।

བརྗོད་པ།

ཟ་ཁང་ནང་དངུལ་གནང་སྟེ་ཞལ་ལག་བཞེས།   = भोजनालय में रूपया दे कर भोजन ग्रहण कीजिए ।

ལག་པ་བཟུང་སྟེ་ཚུར་ཁྲིད་ཤོག   = हाथ पकड़ कर इधर ले आओ ।

དུས་ནི་བཞི་སྟེ།   དབྱར།   སྟོན།   = ऋतु तो चार हैं । ग्रीष्म, शरद,

དགུན་དང་དཔྱིད་དོ།།   हेमन्त तथा वसन्त ।

སྨྱུ་གུ་བླངས་ཏེ་ཡི་གེ་བྲིས་ཤིག   = कलम लेकर पत्र लिखो ।

ཁྱོད་ནི་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་མཁན་ཏེ་སློབ་གཉེར་བའོ།།   = तुम तो विद्या अभ्यास करने वाले विद्यार्थी हो ।

མིག་ལ་ཕན་ཏེ་སྨན་ཡིན་པའི་ཕྱིར།[1]   = नेत्र को लाभ होता है दवा होने से ।

---

१. शब्दों के साथ इन के प्रयोग का नियम भी यदि पराक्षर ན་ ར་ ལ་ ས་ तथा परात्पराक्षर ད་ रहे तो 'ཏེ' ད་ में 'དེ' । ག་ང་བ་མ་འ་ और बिना पराक्षर वाले शब्दों के परे 'སྟེ' योग होता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འབྱེད་སྡུད་ཀྱི་ཕྲད། = विभाजक (और) संयोजक प्रत्यय

सू0— ཛེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ལ།།
དྲུག་པ་སྦྱར་ན་འབྱེད་སྡུད་ཡིན།།

अनु0— दसों पराक्षरों में, (पराक्षर का) छठवां (མ་) योग करे तो (གམ་ ངམ་ དམ་ ནམ་ བམ་ མམ་ འམ་ རམ་ ལམ་ སམ་ तथा विकल्प से ཏམ་ हो जाता है ये) संयोजक (तथा) विभाजक (प्रत्यय) हैं ।

ये ग्यारह प्रत्यय हिन्दी और उर्दू के समुच्चय बोधक 'और या व' की तरह प्रयोग किये जाते हैं । इन के चार भेद हैं ।

१. འབྱེད་པ། = विभाजक

२. སྡུད་པ། = संयोजक

३. དྲི་བ། = प्रश्नवाचक

४. ཐེ་ཚོམ། = संशयक

འབྱེད་པ། = विभाजक

དབང་པོ་ནི་ལྔ་སྟེ། མིག་གམ། = पाँच इन्द्रियां हैं । चक्षु व
སྣའམ། རྣའམ། ལྕེའམ། ལུས་སོ།། घ्राण व श्रोत व जिह्वा और काय ।

ཁམས་ནི་གསུམ་མོ།། འདོད་ཁམས་སམ། = तीन लोक हैं । काम लोक व
གཟུགས་ཁམས་སམ། གཟུགས་མེད་ཀྱི་ रूप लोक और अरूप लोक ।
ཁམས་སོ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བསླབ་པ་ནི་གསུམ་སྟེ། ལྷག་པ་ཚུལ་ = तीन शिक्षाएँ हैं । अधि शील
ཁྲིམས་སམ། ལྷག་པ་ཤེས་རབ་ व अधि प्रज्ञा और अधि समाधि ।
བམ། ལྷག་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ།།

འབྱུང་བ་བཞིའོ།། སའམ། ཆུའམ། = चार महाभूत हैं । पृथिवी
མེའམ། རླུང་ངོ་།། व आप व तेज और वायु ।

ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་གོ། སྦྱིན་པའམ། = छः पारमितायें हैं । दान व
ཚུལ་ཁྲིམས་སམ། བཟོད་པའམ། शील व क्षांति व वीर्य व समाधि
བརྩོན་འགྲུས་སམ། བསམ་གཏན་ནམ། और प्रज्ञा ।
ཤེས་རབ་བོ།།

སྦྱད་པ།= संयोजक

མིག་གམ། སྣའམ། རྣ་བའམ། चक्षु व घ्राण व श्रोत व
ལྕེའམ། ལུས་དང་བཅས་དབང་པོ་ལྔའོ།། जिह्वा और काय के साथ पाँच इन्द्रियां हैं ।

འདོད་ཁམས་སམ། གཟུགས་ཁམས་སམ། = काम लोक व रूप लोक
གཟུགས་མེད་ཀྱི་ཁམས་བཅས་ और अरूप लोक के साथ
ཁམས་གསུམ་མོ།། तीन लोक हैं ।

ལྷག་པ་ཚུལ་ཁྲིམས་སམ། ལྷག་པ་ = अधि शील व अधि प्रज्ञा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཤེས་རབ་བམ། ལྷག་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་ और अधि समाधि के साथ तीन
བཅས་བསླབ་པ་གསུམ་མོ།། शिक्षायें हैं ।

སའམ། ཆུའམ། མེའམ། = पृथिवी व आप व तेज
རླུང་དང་བཅས་འབྱུང་བ་བཞིའོ།། और वायु के साथ चार महाभूत हैं ।

སྦྱིན་པའམ། ཚུལ་ཁྲིམས་སམ། བཟོད་པའམ། = दान व शील व क्षांति व
བརྩོན་འགྲུས་སམ། བསམ་གཏན་ནམ། साथ वीर्य व समाधि और
ཤེས་རབ་བཅས་ཕར་ཕྱིན་དྲུག་གོ།། प्रज्ञा के छः पारमितायें हैं ।

དྲི་བ།= प्रश्नवाचक

ཁྱོད་ལ་གསེར་ཡོད་དམ། = आप को (= के पास) सोना है क्या ?
ཡི་གེ་དེ་བྲིས་ཚར་རམ། = वह पत्र लिख चुका है क्या ?
དིལ་ལི་གསར་པ་མཐོང་ངམ། = नई दिल्ली देखा है क्या ?
བུམ་པའི་ནང་ཆུ་འདུག་གམ། = कलश में पानी है क्या ?
འདི་ཁྱོད་ཀྱི་མིང་རེད་དམ། = यह तुम्हारा नाम है क्या ?

किसी भी क्रिया के पराक्षर को द्वित्व करके उसे ' མ ' जोड़ने से प्रश्नवाचक बनता है । इस तरह के प्रश्न वाचकों का व्यवहार प्रायः शास्त्रीय भाषा में होता है परन्तु प्रचलित भाषा में इन की जगह པ་ པས་ और གས་ का प्रयोग किये जाते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उदहरणार्थ

ཁྱེད་ལ་གསེར་ཡོད་པས། = आप को (= के पास) सोना है क्या ?

ཡི་གེ་དེ་བྲིས་ཚར་བ་ཡིན་པ། = वह पत्र लिख चुका है क्या ?

དིལ་ལི་གསར་པ་མཐོང་བ་ཡིན་པ། = नई दिल्ली देखा है क्या ?

བུམ་པ་ནང་ལ་ཆུ་འདུག་གས། = कलश में पानी है क्या ?

འདི་ཁྱོད་ཀྱི་མིང་རེད་པས། = यह तुम्हारा नाम है क्या ?

ཐེ་ཚོམ།= संशयक

མི་འདི་ཀུན་མ་རེད་དམ་མ་རེད། = यह आदमी चोर है या नहीं ।

བདག་གི་དཔེ་དེབ་འདི་རང་ཡིན་ནམ་མིན། = मेरी पुस्तिका यही है या नहीं ।

བྱིས་པ་སློབ་གྲྭར་སོང་ངམ་མ་སོང་། = बालक स्कूल गया है या नहीं ।

མགྲོན་པོ་དེ་རིང་ཡོང་གི་ཡིན་ནམ་མིན། = अतिथि आज आयेगा या नहीं ।

མ་ཤེས་ང་འགྲོ་དགོས་ཡིན་ནམ་མིན། = मालूम नहीं, मुझ (को) जाना चाहिये या नहीं ।

འབྱུང་ཁུངས།= **अपादान**

सू०— ཛྷེས་འཛུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ཡི།།
བཞི་པ་དགུ་པ་ལ་བཅུ་པ།།
སྦྱར་བས་འབྱུང་ཁུངས་སྒྲ་ཡིན་ཏེ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— दस पराक्षरों (में) के, चतुर्थ (ན་ तथा) नवें (ལ་) में (पराक्षर का) दसवाँ, (ས་) जोड़ने से (ནས་ और ལས་ दो प्रत्यय बनते हैं । जो) अपादान (कारक के) प्रत्यय हैं ।

जिस से या जहाँ से किसी वस्तु का अलग होना जाना जाय उसे अपादान कारक कहते हैं[1] ।

རྒྱ་མཚོ་ནས་ནོར་བུ་འཐོན་གྱི་རེད། समुद्र से रत्न निकलता है ।

མཁས་པ་ལས་རིག་པ་འབྱུང་གི་རེད། विद्वान से विद्या आती है ।

གསེར་གྱི་གཏེར་ཁ་ནས་གསེར་འཐོབ་ཀྱི་རེད། सोने की खान से स्वर्ण मिलता है ।

བ་ཕྱུགས་ལས་འོ་མ་འཐོབ་ཀྱི་རེད། गाय से दूध मिलता है ।

བྲམ་ཟེ་ཚངས་པའི་ཞལ་ནས་ཐོན་པ་རེད། ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से निकले हैं ।

འབྱུང་ཁུངས་དང་ཆ་འདྲ་བ། = आंशिक रूप से अपादान

यह अपादान नहीं है परन्तु आंशिक रूप से अपादान का सा अर्थ प्रकट करता है । इस के दो भेद हैं —

१ འབྲལ་བ། = वियोग

२ རྒྱུ་མཚན། = कारण

---

१. ये स्वतन्त्र प्रत्यय हैं अतः अपादान में शब्द के परे अपनी इच्छानुसार ནས་ या ལས་ जो भी हो प्रयोग किया जाता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འབྲལ་བ། = वियोग

ཁོ་རྟ་ལས་ལྷུང་། = वह धोड़े से गिरा ।

ཤར་ནས་ཉི་མ་ཤར། = पूर्व से सूर्योदय हुआ ।

ཤིང་ལས་ལོ་མ་ཟགས། = वृक्ष से पत्ते गिरे ।

ལག་པ་ནས་ཉི་གདུགས་ཤོར་སོང་། = हाथ से छाता छूट गया ।

ང་ལས་ཐ་དད་སྡོད་ཀྱི་འདུག = मुझ से अलग बैठता है ।

རྒྱུ་མཚན། = कारण

དུ་བ་ལས་མེ་ཡོད་པ་ཤེས། = धूम से वह्नि है, जाना ।

ངང་པ་ལས་ཆུ་ཡོད་པ་ཤེས། = हंस से जल है, जाना ।

ཁོའི་བྱེད་སྟངས་ནས་ཧ་གོ་སོང་། = उन के करने (के) ढंग से मालूम हो गया ।

ཉི་འོད་ལས་ཉིན་མོ་བྱུང་། = धूप से दिन हुआ।

སྐར་བརྟན་ནས་བྱང་ཕྱོགས་ཡིན་པ་རྟོགས། = ध्रुव तारा से उत्तर दिशा है, जाना ।

डरना क्रिया के अर्थ में भोट भाषा में सदा कर्म कारक का प्रयोग किया जाता है । जैसे, मैं शेर से नहीं डरता का मैं शेर को नहीं डरता । = ང་སེང་གེ་ལ་འཇིགས་ཀྱི་མེད། वह अपने माता पिता से नहीं डरता है । = ཁོ་རང་གི་ཕ་མ་ལ་འཇིགས་ཀྱི་མི་འདུག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དགར་སྡུད། = निर्द्धारण समाहार

सू०— དགར་དང་སྡུད་པའང་དེ་བཞིན་ཡིན།།

अनु०— निर्द्धाकरण और समाहर भी उन (अपादान प्रत्यय ནས་ और ལས་ की) तरह (प्रयुक्त) होते हैं ।

ये अपादान कारक के अंतर्गत नहीं है परन्तु इन के प्रयोग शाब्दिक अपादान की तरह होता है इस लिये ये अपादान के सामान्य अंग रूप में रख दिये गये हैं ।

དགར་བ། = निर्द्धारण (ལས་)

བོད་ལས་རྒྱ་གར་ཆེ། = तिब्बत से भारत बड़ा (है) ।

མིའམ་ཅི་ལས་དྲི་ཟ་ཐ་དད་དོ།། = किन्नर से गन्धर्व भिन्न हैं ।

ལྷ་ཆེན་པོ་ལས་བདེ་བར་གཤེགས་པ་ཡོན་ཏན་དུ་མས་འཕགས་སོ།། = महादेव से सुगत अनेक गुणों से (में) श्रेष्ठ हैं!

ཡང་སོས་ལས་ཐིག་ནག་སྡུག་བསྔལ་ཆེ། = संजीवी (= नरक विशेष) से कालसूत्र (= नरक विशेष) दु:खतर (है) ।

ཁ་དོག་རྣམས་ལས་དཀར་པོ་ཉིད་མཛེས་སོ།། = वर्णों में से श्वेत ही सुन्दर है ।

(ནས་)

མི་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་རྒྱལ་པོ་དཔའ། = मनुष्यों में से राजा वीर (हैं) ।

གསེར་དང་དངུལ་གཉིས་ཀྱི་ནང་ནས་གསེར་གོང་ཆེ། = स्वर्ण और चाँदी दोनों में से सोना ज्यादा महँगा (है) ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རིགས་བཞིའི་ནང་ནས་གདོལ་བའི་རིགས་དམའ་བ་རེད། = चार वर्णों में से शूद्र जाति नीच है ।

བ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་ནག་མོ་འོ་མ་མང་པོ་སྟེར་གྱི་འདུག = गायों में से कृष्णा दूध ज़्यादा देती है ।

བྱ་བ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་ཡི་དམ་གྱི་ལྷ་མཆོད་པ་ལེགས་པོ་ཡིན། = कार्यों में से इष्ट देव (का) भजना अच्छा है ।

སྡུད་པ། = समाहार[1]

ལྷ་ས་ནས་གཞིས་ཀ་རྩེ་བར། = ल्हसा से जिकाचे़ तक ।

སྔ་དྲོ་ནས་ཕྱི་དྲོ་བར། = सबेरे से शाम तक ।

ཨང་གི་གཅིག་ནས་བརྒྱ་བར། = एक अंक से सौ तक ।

གནའ་བོའི་དུས་ནས་དེ་རིང་བར། = प्राचीन काल से आज तक ।

རྒྱལ་པོ་མྱ་ངན་མེད་ནས་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་གཱན་དྷི་བར། = राजा अशोक से महात्मा गांधी तक ।

འབོད་སྒྲ། = सम्बोधन

सू0— གང་མིང་བརྗོད་པའི་དང་པོ་རུ།།

---

१. 'སྡུད་ལ་ནས་སྒྲ་ཁོ་ན་འཇུག' དབྱངས་ཅན་གྲུབ་པས། = समाहार में 'ནས་' प्रत्यय ही लगता है । अर्थात् समाहार में 'ནས་' के अतिरिक्त 'ལས་' का प्रयोग नहीं किया जाता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཀྱེ་སྒྲར་ན་ནི་བོད་པ་ཡིན།།

अनु0— किसी (भी) संज्ञा के पुकारने में (उस संज्ञा के) प्रथम (= पूर्व) में, ཀྱེ་ (= हे । ཀྭ་ཡེ་ = अहो। ཨྸ་ཡེ་ = अरे इत्यादि का) प्रयोग किया जाय तो (उसे) सम्बोधन कहते हैं ।

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारा जाय उसे सम्बोधन कहते हैं । जैसे—

ཀྱེ་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ། = हे, महाराज !

ཀྭ་ཡེ་གྲོགས་མཆོག = अहो, मित्रवर !

ཨྸ་ཡེ་གཡོག་པོ། = अरे, नौकर !

ཀྭས་ག་རེ་འདུག = अरी क्या है !

བདག་ལ་སྐྱོབས་ཤིག་སྟོན་པ་ཀྱེ། = मुझे बचाओ हे, शास्ता !

ནི་སྒྲ། = तो प्रत्यय

सू0— གང་མིང་མཐའ་དང་མཐུན་པ་ཡི།།
བཞི་པ་ལ་ནི་ཨི་སྦྱར་བ།།
དགར་དང་བརྣན་པའི་ཚིག་ཏུ་འགྱུར།།

अनु0— किसी (भी) संज्ञान्त (में) योग होने वाले, (ནི་ प्रत्यय को बनाने के लिये पराक्षरों के) चौथे (ན་) में इ (की मात्रा) जोड़े तो, (ནི་ प्रत्यय बनता है, जो) अवधारण तथा आग्रह (अर्थ वाला) शब्द होता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

इस से निश्चय और आग्रह जाना जाता है । यह संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया के बाद आता है[1] ।

ངེས་པ། = अवधारण

ཁྱབ་འཇུག་ནི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་བརྟུལ་ཕོད་པའོ།།	= विष्णु तो देवों में से शूर हैं ।
བོང་བུ་ནི་རྐང་བཞིའི་ནང་ནས་ཐ་ཆད་དོ།།	= गधा तो चौपायों में से निकृष्ट है ।
རྒྱ་ནག་ནི་རྒྱ་གར་ལས་གཞན་ནོ།།	= चीन तो भारत से भिन्न है ।
མཚོ་མ་ཕམ་ནི་བོད་ཀྱི་སྟོད་ཁུལ་དུ་ཡོད་དོ།།	= मान सरोवर तो तिब्बत के उत्तरी क्षेत्र में है ।
གློག་རྟོག་ནི་ཞུན་མ་གཞན་ལས་རབ་ཏུ་གསལ་ལོ།།	= बल्ब तो अन्य दीपकों (में) से प्रकाशमय है ।

བརྣན་པ། = आग्रह

ཁྱོད་ནི་མགོན་དང་ཁྱོད་ནི་བཤེས།	= तू तो नाथ (हो) और तू तो मित्र।
དཔེ་ཆ་ནི་ཡོད་ལོང་ཡང་ཡོད།	= पुस्तक तो है वक्त भी है ।
སྤང་བར་བྱ་བ་ནི་སྤངས།	= त्याज्य (को) तो त्यागा ।

---

१. यह हिन्दी के समुच्चय बोधक अव्यय की भांति एक वाक्य का सम्बन्ध दूसरे वाक्य से जोड़ता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཆུབ་པར་བྱ་བ་ནི་ཆུབ། = बोधनीय (को) तो बोध (किया) ।

སྨན་ནི་བཟས་ཁབ་ནི་བཙུགས། दवा तो खायी सुई तो चुभाई ।

ཚིག་ཁ་སྐོང་དུ། = शब्द पूर्ती में

བསླབ་པ་དང་ལྡན་པའི་དགེ་བའི་བཤེས་གཉེན་ནི། = शीलवान् कल्याण मित्र तो ।

རིག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ནི། = बुद्धिमान् लोग तो ।

ནོར་བུ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་མཛོད་ནི། = रत्न सम्पन्न कोष तो ।

སྤྱོད་པ་ངན་པའི་མི་རྣམས་ནི། = दुश्चरित्र लोग तो ।

རྡུལ་ཚན་ལྡན་པའི་ཡུལ་ནི། = अणु शस्त्र वाले देश तो ।

དང་སྒྲ། = और प्रत्यय

सू0— མིང་གང་རུང་བའི་བར་མཚམས་སུ།།
གསུམ་པ་ལ་ནི་གཉིས་པ་སྦྱར།།
དེ་ནི་སྡུད་དང་འབྱེད་པ་དང་།།
རྒྱུ་མཚན་ཚེ་སྐབས་གདམས་ངག་ལྡོའ།།

अनु0— किसी (भी) संज्ञा (या सर्वनाम शब्दों के परे दो वाक्यों को) आपस में, (जोड़ने के लिये आने वाला 'དང་' प्रत्यय को बनाने के लिये

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पराक्षर के) तीसरे (ད་) में दूसरा (ང་) जोड़े तो, (དང་ प्रत्यय बनता है ।) वह (དང་ प्रत्यय) तो संयोग और वियोग, कारण, काल तथा विधि (इत्यादि) पाँच (अर्थों में प्रयुक्त होता) है ।

यह དང་སྒྲ། (= 'और' नामक अव्यय) हिन्दी के समुच्चय बोधक अव्यय की भांति दो या दो से अधिक संज्ञा सर्वनाम तथा वाक्यों का संयोग तथा वियोग करता है ।

སྦྱོར་པ། = संयोग

ཤར་དང་། ལྷོ་དང་། ནུབ་དང་། = पूर्व और दक्षिण और पश्चिम और
བྱང་སོགས་ཕྱོགས་བཞིའོ།། उत्तर आदि चार दिशायें हैं ।

མངར་བ་དང་། སྐྱུར་བ་དང་། = मीठा और खट्टा और कड़वा और
ཁ་བ་དང་། བསྐ་བ་དང་། कषाय और तीता और लवण
ཚ་བ་དང་ལན་ཚ་བ་དང་། སོགས་རོ་དྲུག་གོ । आदि छः रस हैं ।

ངེས་བརྗོད་དང་། མཆོད་སྦྱིན་དང་། = ऋक् और यजुष् और शाम
སྙན་ཚིག་དང་། སྲིད་བསྲུང་སོགས་ और अथर्व आदि चार
རིག་བྱེད་བཞིའོ།། वेद हैं ।

འདོད་ཆགས་དང་། ཞེ་སྡང་དང་། = राग और द्वेष और मोह आदि
གཏི་མུག་སོགས་དུག་གསུམ་མོ།། तीन क्लेश हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སངས་རྒྱས་དང་། ཆོས་དང་། དགེ་	= बुद्ध और धर्म और सघं
འདུན་སོགས་དཀོན་མཆོག་གསུམ་མོ།།	आदि तीन रत्न हैं।

འབྱེད་པ།= वियोग

ཕྱོགས་བཞི་ནི། ཤར་དང་། ལྷོ་	= चार दिशायें तो, पूर्व और दक्षिण
དང་། ནུབ་དང་བྱང་ངོ་།།	और पश्चिम और उत्तर हैं ।
རོ་དྲུག་ནི། མངར་བ་དང་།	= छः रस तो, मीठा और खट्टा और
སྐྱུར་བ་དང་། ཁ་བ་དང་།	कड़वा और कषाय और तीता और
བསྐ་བ་དང་། ཚ་བ་དང་ལན་ཚྭའོ།།	लवण हैं ।
རིག་བྱེད་བཞི་ནི། ངེས་བརྗོད་དང་། མཆོད	= चार वेद तो, ऋक् और
སྦྱིན་དང་། སྙན་ཚིག་དང་སྲིད་བསྲུང་ངོ་།།	यजुष् और साम और अथर्व हैं ।
དུག་གསུམ་ནི། འདོད་ཆགས་དང་།	= तीन क्लेश तो, राग और
ཞེ་སྡང་དང་། གཏི་མུག་གོ །	द्वेष और मोह हैं ।
དཀོན་མཆོག་གསུམ་ནི། སངས་རྒྱས་	= तीन रत्न तो, बुद्ध और धर्म और
དང་། ཆོས་དང་དགེ་འདུན་ནོ།།	संघ हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རྒྱུ་མཚན། = कारण

उपर्युक्त अपादान के अन्तर्गत རྒྱུ་མཚན་ और इस རྒྱུ་མཚན་ के प्रयोग में बहुत अन्तर है । यह संज्ञा के परे न आ कर क्रिया के बाद ही प्रयोग किया जाता है ।

འབྱུང་ཁུངས་ ལས་ = དུ་བ་ལས་མེ་ཡོད་པ་ཤེས།

དང་སྦྲ་ དང་ = དུ་བ་མཐོང་བ་དང་མེ་ཡོད་པ་ཤེས།

རོལ་རྙེད་མ་ཕྲོགས་པ་དང་དགའ་བྱེད་ = सीता हरण से राम शोकाकुल हुए ।
མྱ་ངན་གྱིས་ནར་བར་གྱུར་རོ།།

ཆོས་ཐོས་པ་དང་ཆོས་སེམས་སུ་གྱུར། = धर्म श्रवण से धर्मात्मा में हुआ ।

དབྱངས་ཅན་མ་བསྒྲུབས་པ་དང་རིག་ = सरस्वती साधने से बुद्धि (की) वृद्धि
པ་འཕེལ་ལོ།། हुई है ।

བླ་མ་བསྟེན་པ་དང་ཐར་པ་ཐོབ། = गुरु धारण से मोक्ष मिला ।

ཆུ་བཏུངས་པ་དང་སྐོམ་པ་བསེལ་སོང་། = पानी पीने से प्यास बुझ गई ।

ཚེ་སྐབས། = काल

उपर्युक्त सप्तमी अधिकरण कारण के अन्तर्गत अवधि वाचक (= ཚེ་སྐབས་) और इस ཚེ་སྐབས། (= काल) के प्रयोग में विशेष अन्तर नहीं रहता तथापि इन के प्रयोग में सर्वत्रा समता भी नहीं है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	समान	असमान
(དང་སྒྲ་)	ལམ་དུ་འགྲོ་བ་དང་	གནས་བསྐོར་དུ་ཕྱིན་པ་དང་
	དགྲ་དང་ལྡན།	བསོད་ནམས་བསགས།
(ཚེ་སྐབས།)	ལམ་དུ་འགྲོ་བ་ན་	གནས་བསྐོར་དུ་བསོད
	དགྲ་དང་ལྡན།	ནམས་བསགས།
(དང་སྒྲ་)	ཉི་མ་འཆར་བ་དང་	སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཐོ་རངས་
	ཁྲུས་གསོལ།	ཤར་བ་དང་ཆོས་གསུངས།
(ཚེ་སྐབས།)	ཉི་མ་འཆར་ཀ་རུ་	སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཐོ་རངས་
	ཁྲུས་གསོལ།	ལ་ཆོས་གསུངས།

उदाहरण

དཔྱིད་དུས་འོང་བ་དང་མེ་ཏོག་ཤར། = वसंत काल आने के साथ फूल खिले ।

ཉི་མ་ཤར་བ་དང་སློབ་གྲྭ་དབྱེ་བར་བྱ། =सूर्योदय के साथ स्कूल खोलियेगा ।

བུ་ནོར་ཐོབ་པ་དང་འདོད་པ་ཅན་གྱུར། = पुत्र रत्न प्राप्त होने के साथ लालची हुआ ।

ནམ་ཟླ་གྲང་བ་དང་བལ་གོས་གྱོན། = शीत ऋतु (आने) के साथ ऊनी कपड़ा पहनो ।

རྒྱུ་སྐར་འཆར་བ་དང་གླུད་ཆུར་བསྐྱུར་བར་བྱ། = नक्षत्र उदय (होने) के साथ पुतला पानी में विसर्जन करियेगा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གདམས་ངག = विधि

जब དང་སྒྲ་ विधि में प्रयोग किया जाता है तो यह हिन्दी के प्रत्यक्ष विधि और परोक्ष विधि के अनुसार ही होता है ।

མངོན་སུམ་གདམས་ངག = प्रत्यक्ष विधि

ཕེབས་དང་ཁོ་གང་བྱེད་ཀྱི་འདུག = चलिये, वह क्या करता है ।

ང་ཚོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་ཕྱག་འཚལ་དང་། = हम लोग नागार्जुन को प्रणाम करें ।

ཁྱེད་བདག་ལ་ཐུགས་རྗེ་མཛོད་དང་། = आप, मुझ पर कृपा करें ।

འདིར་སྡོད་དང་ཀ་ཅ་མ་ཐོང་ས། = यहाँ बैठो, चिल्लाओ नहीं ।

ལྟོས་དང་དེ་ག་བར་འགྲོ་གི་འདུག = देखो, वह कहाँ जाता है ।

ལྐོག་གྱུར་གདམས་ངག = परोक्ष विधि

ལེགས་པར་སློབས་དང་། = अच्छी तरह सीखो ।

ཡིད་ལ་ཟུངས་དང་། = मन में धारो ।

ཡང་ཡང་སྐྱོར་སྦྱོང་གྱིས་དང་། = पुनः पुनः अभ्यास करो ।

དགེ་རྒན་གྱི་བསྙེན་བཀུར་ཞུས་དང་། = अध्यापक की सेवा करो ।

སློབ་གྲོགས་ཚོ་མཉམ་མཐུན་འབྲེལ་ཞིག་དང་། = सहपाठियों (के) साथ मैत्री संबन्ध रखो

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དེ་སྒྲ།= वह प्रत्यय

सू०— གང་མིང་གི་ནི་ཡ་མཐའ་རུ།།
གསུམ་པ་ལ་ནི་ཨེ་སྦྱར་བ།།
ཐ་སྙད་དབང་དུ་གསུམ་ཡིན་ཏེ།།
དངོས་པོའི་དབང་དུ་བཞི་རུ་འགྱུར།།
དུས་ཀྱི་དབང་དུ་གཉིས་ཡིན་ནོ།།

अनु— किसी (भी) संज्ञा (या सर्वनाम शब्दों) के पूर्व में, (आने वाला 'དེ་' प्रत्यय को बनाने के लिये पराक्षरों के) तीसरे (ད་) में ए (की मात्रा) जोड़े तो, (དེ་ बनता है । यह निश्चयवाचक सर्वनाम དེ་ प्रत्यय) व्यवहार (के) भेद से तीन; (तरह का) वस्तु (=संज्ञा) के भेद से चार, (तरह का तथा) काल के भेद से दो (तरह का प्रयोग) होता है ।

सूत्र में དེ་སྒྲ་ का प्रयोग संज्ञा के पूर्व में करने को कहा है । साधारणतः यह संज्ञा के पर में और शब्दों के मध्य में भी प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार व्यवहार के भेद से तीन प्रकार का 'དེ་སྒྲ་' बताया गया है, परन्तु यह भाज्य (དབྱེ་བ་) और भाजक (འབྱེད་བྱེད་) को लेकर तीन तरह की गणना हुई है । वस्तुतः व्यवहार की भेद से 'དེ་སྒྲ་' का प्रयोग दो ही तरह का होता है । यह क्षणान्तरभाव भाज्य तथा अन्य पर्यायी भाव और परनायक सशेषक भाव ये दोनों भाजक हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཐ་སྙད་དབང་དུ་གསུམ། = व्यवहार के भेद से तीन

१. ཐ་སྙད་འདས་མ་ཐག་པ། = क्षणान्तर भाव ।

२. (क)ཐ་སྙད་རྣམ་གྲངས་གཞན་ཅན། = अन्य पर्यायी भाव

३. (ख) ཐ་སྙད་གཞན་འདྲེན་ལྷག་བཅས། = परनायक सशेषक भाव ।

ཐ་སྙད་རྣམ་གྲངས་གཞན་ཅན།= अन्य पर्यायी भाव

वक्ता या श्रोता के अतिरिक्त संसार भर की वस्तुओं का निर्देश करने वाला शब्द 'དེ་སྒྲ་' हिन्दी के अन्य पुरुष सर्वनाम की भांति प्रयुक्त होता है । यह तीनों काल और दोनों लिङ्गों में आता है । इन के दो विभेद हैं ।—

१. རྣམ་གྲངས་གཞན་ཅན་ཚིག་ཟེན་དུ་ཡོད་པ། = अन्य पर्यायीवाची विशेषण ।

२. རྣམ་གྲངས་གཞན་ཅན་ཚིག་ཟེན་དུ་མེད་པ། = अन्य पर्यायीवाची सर्वनाम ।

རྣམ་གྲངས་གཞན་ཅན་ཚིག་ཟེན་དུ་ཡོད་པ། = अन्य पर्यायीवाची विशेषण

བྱམས་པའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་པའི་བྱང་ཆུབ་ = मैत्रेय के रूप में होने वाला
སེམས་དཔའ་དེ་མ་འོངས་པའི་སངས་རྒྱས་སོ།། वह बोधिसत्व भविष्य के बुद्ध हैं ।

རྡོ་བ་དེ་ཁྱོད་ཀྱིས་འདེགས་ནུས་སམ། = वह पत्थर तुम से उठा सकते हो

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གནའ་བོའི་དུས་སུ་འཕགས་པའི་ཡུལ་དེ་ན། = प्राचीन काल में आर्यों के उस देश में ।

མི་དེ་ལ་སྐད་ཆ་ཤོད། = उस आदमी को बात बताओ ।

ཨ་མྲ་དེ་ཁྱོད་ཀྱི་བཟས་སམ། = वह आम तुम ने खाया क्या ?

རྣམ་གྲངས་གཞན་ཅན་ཚིག་ཟིན་དུ་མེད་པ། = अन्य पर्यायीवाची सर्वनाम

བྱམས་པའི་གཟུགས་སུ་འགྱུར་བ་དེ་མ་ = मैत्रेय के रूप में होने वाला वह
འོངས་པའི་སངས་རྒྱས་སོ།། भविष्य के बुद्ध हैं ।

དེ་ཁྱོད་ཀྱིས་འདེགས་ནུས་སམ། = वह तुम से उठा सकते हो ।

གནའ་བོའི་དུས་སུ་དེ་ན། = प्राचीन काल में उस में ।

དེ་ལ་སྐད་ཆ་ཤོད། = उस को बात बताओ ।

དེ་ཁྱོད་ཀྱིས་བཟས་སམ། = वह तुम ने खाय क्या ?

ཐ་སྙད་གཞན་འདྲེན་ལྷག་བཅས། = परनायक सशेषक भाव

उपर्युक्त (पृ–0 73) सशेषक (ལྷག་བཅས་ཀྱི་ཕྲད།) और इस परनायक सशेषक के भाव तथा पराक्षरों और प्रत्ययों की संयोजन विधि में सर्वत्र एक सा नियम रहता है परन्तु इस सशेषक का एक मात्र भूत काल के लिये प्रयोग किया जाता है । इस लिए उपर्युक्त संकल्पक सशेषक इस से भिन्न है ।

ཤིང་བཅད་དེ་མེ་སྦྱོར་ཅིག = लकड़ी काट कर आग जलाओ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གནམ་གྲུར་བསྡད་དེ་ལྟོས། = वायुयान में बैठ कर देखो ।

རླུང་འཕྲིན་ཁང་དུ་བཀའ་མོལ་ = आकाशवाणी में वार्ता कह कर गया

བཤད་དེ་སོང་།

ཁ་པར་གྱི་ལྕགས་སྐུད་བཅད་དེ་ཁྱེར་སོང་། = टेलीफोन का तार काट कर ले गया ।

ཀང་སྣ་རི་ཁྲིད་དེ་ཁྱེར་ཤོག = साइकिल धकेल कर ले आओ ।

དངོས་པོའི་དབང་དུ་བཞི། = वस्तु (= संज्ञा) के भेद से चार

यह अन्य पर्यायी भाव का ही एक विभेद है, परन्तु प्रयोग की दृष्टि से ये चार प्रकार के होते हैं—

१. བདེན་པའི་དངོས་པོ། = सत्वस्तु ।

२. གསང་བའི་དངོས་པོ། = गुप्तवस्तु ।

३ བདག་གི་བའི་དངོས་པོ། = निजवस्तु ।

४. ཕ་རོལ་པོའི་དངོས་པོ། = दूरवर्तीवस्तु ।

བདེན་པའི་དངོས་པོ། = सत्वस्तु

དེ་དེ་བཞིན་ནོ།། = वह उसी तरह है ।

དེ་དེ་རང་ཡིན། = वह वही है ।

དེ་དེ་ལྟར་གསུངས། = वह उस प्रकार बोला ।

དེ་འདི་ལྟར་གྱིས་ཤིག = वह इस प्रकार करो ।

དེ་ཉིད་རང་རེད། = वही ही है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གསང་བའི་དངོས་པོ། = गुप्तवस्तु

ཁྱེད་ཀྱིས་དེ་བྱས་སམ། = तुम ने वह किया क्या ?

དེ་དེ་ལ་མ་བྱིན་ཅིག = वह उसे मत दो ।

དེ་ཁྱེར་ཤོག = वह लेते आओ ।

དེ་དེ་རིང་ཐུབས་ཤིག = वह आज काटो ।

དེ་གཞན་ལ་མ་ཤོད་ཅིག = वह दूसरों को मत बताओ ।

བདག་གི་བའི་དངོས་པོ། = निजवस्तु

ངའི་སྐུད་མེད་གློག་འཕྲིན་དེ། = मेरा वह बेतार का तार ।

ཁོ་བོའི་བསམ་པ་དེ། = अपना वह विचार ।

བདག་གི་ལོངས་སྤྱོད་དེ། = मेरी वह सम्पत्ति ।

ང་ཚོའི་ཐག་ཐག་འཁོར་ལོ་དེ། = हम लोगों की वह मोटर साइकिल ।

རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་མེ་མདའ་ཐག་ཐག་དེ། = राष्ट्र का वह मशीनगन ।

ཕ་རོལ་པོའི་དངོས་པོ། = दूरवर्तीवस्तु

ཀ་བ་དེ་ནི་རིང་ལ་ཕྲ་དྲག་པ་འདུག = वह खम्भा तो लम्बे में अत्यन्त पतला है ।

སྣག་བུམ་དེ་ཚོའི་གྲས་ཁྲོམ་ལ་འདུག = मसीपात्रों के वे किस्म बाज़ार में हैं ।

ཞ་སྨྱུག་དམར་པོའི་ནང་ནས་རིང་བ་ཡོད་ = लाल पेंसिलों में से वह लम्बी

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

པ་དེ་བརླགས་སོང་། वाली खो गई ।

གཡོག་མོ་དེ་ནི་ད་ལྟ་ཡང་འདུག་གོ ། = वह नौकरानी तो अभी भी है ।

གྲུ་གཟིངས་དེ་རྒྱ་མཚོའི་ནང་ནུབ་སོང་ = वह जहाज़ समुद्र में डूब गया है
འདུག

དུས་ཀྱི་དབང་དུ་གཉིས། = काल के भेद से दो

यहाँ पर དེ་སྐྲ་ का भूत और भविष्यत् को छोड़ कर वर्त्तमान काल तथा निकटवर्ती सर्वनाम के लिये प्रयोग नहीं किया जाता । इन के लिये 'དེ་' की जगह 'འདི་' होता है ।

དུས་འདས་པ། = भूत काल

ཁ་སང་གི་ཉི་མ་ཤར་བ་དེའི་ཚེ། = कल के उस सूर्योदय के समय ।

ན་ནིང་གི་ལོའི་ཚེས་དེ་ལ་བྱུང་བ་རེད། = पिछले वर्ष के उस तारीख को हुआ है ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འཁོར་བ་འཇིག་འཇིག་ཧེན་དུ་བྱོན་པ་དེའི་ཚེ། = सुगत क्रकुच्छन्द संसार में आये उस समय ।

རྒྱ་གར་ན་དབྱིན་ཇིའི་དབང་ཡོད་པ་དེའི་དུས་ = भारत में अंग्रेजों के राज्य काल में

 སུ་དེའི་མི་དམངས་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་མ་ཐུབ། उस की जनता शिक्षा पा नहीं सकी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་གཱན་དྷི་ལགས་ཀྱི་འཁྲུངས་ = महात्मा गांधी जी के जन्मदिन के ཞག་གི་རྒྱུ་སྐར་དེ་ལ། उस नक्षत्र में ।

དུས་མ་འོངས་པ། = भविष्यत् काल

སང་གི་ཉི་མ་འཆར་བའི་དུས་དེར་འགྲོ་བ་ངེས་བྱུང་། = कल के सूर्योदय के उस समय में जाना निश्चित हुआ ।

སང་ལོད་ཀྱི་ས་ག་ཟླ་བའི་ཚེས་བཅོ་ལྔ་དེ་ལ་སྟོན་མོ་ཡིན། = आगामी वर्ष के वैशाख मास की उस पन्द्रह तिथि को उत्सव है ।

མ་འོངས་པ་ན་འགྱུར་བའི་རྒྱ་གར་གྱི་སྲོན་ཆེན་དེ་ཕྱོགས་ལྷུང་མེད་པའི་མི་ཞིག་དགོས། = भविष्य में होने वाला भारत का वह प्रधान मंत्री एक निष्पक्ष व्यक्ति (होना) चाहिये ।

སང་གི་ཞལ་ཏོག་དེ་དེ་རིང་སྔ་གོན་གྱིས་ཤིག = कल की यह मिठाई आज तैयार कर लो ।

གནངས་ཀྱི་གཟའ་ཉི་མ་དེ་ལ་འགྲོ། = परसों के उस रविवार को चलो ।

འདི། = यह

वर्त्तमान काल तथा निकटवर्ती सर्वनाम

དུས་འདི་ལ་སློབ་སྦྱོང་ཡག་པོ་གནང་དགོས། = इस वक्त अच्छा अध्ययन करना चाहिये ।

འདི་ཁྱེད་ཀྱི་ཚིབས་ཏོར་རེད་དམ། = यह आप की मोटर है क्या ?

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དེ་རིང་གི་ཉི་མ་འདི་ཚ་པོ་འདུག = आज का यह दिन गर्म है ।

འདི་ཁྱོད་ཀྱི་གང་རེད། = यह तुम्हारा क्या है ?

ཁྱོད་འདི་ཚོ་སུ་ལ་འང་མ་སྤྲོད་ཅིག = तुम इन्हें किसी को भी न देना ।

གང་སྒྲ། = कौन प्रत्यय

सू०— གང་མིང་བརྗོད་པའི་དང་པོ་རུ།།
དང་པོ་ལ་ནི་གཉིས་པ་སྦྱར།།
སྤྱི་ལ་ཁྱབ་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར།།

अनु०— किसी (भी) संज्ञा (को) कहने से पहले (प्रश्न के रूप में आने वाला གང་ प्रत्यय को बनाने के लिये पराक्षरों के) प्रथम (ག་) में द्वितीय (ང་) जोड़े तो (གང་ प्रत्यय बनता है । वह प्रश्नवाचक सर्वनाम གང་ जीव निर्जीव) सब ले लिये व्याप्त <u>ही</u> होता है (अर्थात् प्रयोग किया जाता है ।)

གང་། = कौन, क्या

सूत्र में གང་སྒྲ་ संज्ञा के पूर्व में प्रयोग करने के लिये बताया गया है, परन्तु यह हिन्दी के प्रश्नवाचक 'कौन' और 'क्या' तथा संबन्धवाचक 'जो' के बदले में आता है । अत: वाक्य के मध्य और अन्त में भी प्रयोग किया जाता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཅི། ཇི། སུ[1] । इत्यादि सर्वनामों को भी यदि 'གང་' की जगह प्रयोग करें तो उस वाक्य के भाव में कोई अन्तर नहीं आता, परन्तु 'སུ་' निर्जीव के लिये प्रयोग नहीं किया जाता है ।

ཁྱོད་ཀྱི་མིང་གང་རེད། = तुम्हारा नाम क्या है ?

གང་གིས་བྲིས་པ་རེད། = किस से लिखा है ?

རྒྱ་མཚོའི་ནང་གང་ཡོད། = समुद्र में क्या है ?

ཨ་ཇོ་དང་ནུ་བོ་གང་མཛེས་པོ་འདུག = बड़े भाई और छोटे भाई (में) कौन सुन्दर है ।

བདག་གིས་བྱས་པའི་ལས་གང་། = मेरे द्वारा किया (गया) कार्य जो ।

གང་གིས་བརྡུངས། [2] = किसने मारा । (=किसके द्वारा मारा)

ཅི་ ཇི་ སུ།

ཁྱོད་ཀྱི་མིང་ཅི་རེད། = तुम्हारा नाम क्या है ?

ཅི་ཡིས་བྲིས་པ་རེད། = किस से लिखा है ?

རྒྱ་མཚོའི་ནང་ཇི་ཡོད། = समुद्र में क्या है ?

ཨ་ཇོ་ཆེ་བ་དང་ནུ་བོ་སུ་མཛེས་ = बड़े भाई और छोटे भाई (में) कौन

---

१. སུ་ནི་གང་ཟག་གང་ཀུན་ལའོ།། དབྱངས་ཅན་གྲུབ་པའི་རྡོ་རྗེས། 'སུ་' व्यक्ति (=प्राणी) मात्र के लिए तथा 'གང་' सब के लिये है ।

२. भोट भाषा में प्रथम विभक्ति का कोई चिन्ह नहीं है । अतः हिन्दी के कर्त्ताकारक के 'ने' की जगह यथायोग्य करणकारक के གིས་ ཀྱིས་ གྱིས་ འིས कर दिये जाते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

པོ་འདུག   सुन्दर है ।

སུ་ཡིས་བརྡུངས།   = किसने मारा ।

གང་ཙམ་ के स्थान में ཅི་ཙམ་ और སུ་ཙམ་ का प्रयोग होता है परन्तु ཇི་སྙེད་། ཇི་སྐད། ཇི་སྲིད། ཇི་བཞིན། के स्थान में གང་སྙེད་། གང་སྐད། གང་སྲིད། གང་བཞིན། इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जा सकता है ।

प्रयोग के अनुसार सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं—

१.	སྐྱེས་སྒྲ།	ང་	ཁྱོད།	ཁྱེད།	
	पुरुष वाचक	मैं,	तू,	आप	
२.	རང་སྒྲ།	རང་།	རང་ཉིད།	ཉིད།	
	निजवाचक	आप			
३.	ངེས་སྒྲ།	འདི།	དེ།		
	निश्चयवाचक	यह,	वह,	सो	
४.	འབྲེལ་སྒྲ།	གང་།			
	संबन्धवाचक	जो			
५.	དྲི་བའི་སྒྲ།	སུ།	གང་།	ཅི།	ཇི།
	प्रश्नवाचक	कौन,	क्या		

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

६.	ངེས་མེད་སྒྲ།	གང་ཞིག	གང་	ཁ་ཅིག
	अनिश्चयवाचक	कोई,	जो,	कुछ

संज्ञाओं की भांति सर्वनामों में भी कारक और वचन होते हैं । बहुवचन बनाने के लिये सर्वनामों के परे ཚོ་ या རྣམས་ तथा कारक को दिखाने के लिये विभक्ति प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं ।

कारक	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता कारक	१.	དེ་	དེ་རྣམས།
कर्म कारक	२.	དེ་ལ་	དེ་རྣམས་ལ།
करण कारक	३.	དེ་ཡིས་	དེ་རྣམས་ཀྱིས།
सम्प्रदान कारक	४.	དེ་ལ་	དེ་རྣམས་ལ།
अपादन कारक	५.	དེ་ནས་	དེ་རྣམས་་ནས།
संबन्ध कारक	६.	དེའི་	དེ་རྣམས་ཀྱི།
अधिकरण कारक	७.	དེ་ལ་	དེ་རྣམས་སུ།

ཁྱད་ཆོས། = **विशेषण**

जिस से संज्ञा के गुणादि जाने जायें उसे विशेषण कहते हैं । जैसे, `རྟ་ནག་པོ། = काला घोड़ा । काला, घोड़े का विशेषण है और घोड़ा विशेष्य (= ཁྱད་གཞི་) है । भोट भाषा में विशेषण चार प्रकार के होते हैं—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

१. ཡོན་ཏན་གྱི་ཁྱད་ཆོས། = गुणवाचक विशेषण ।

२. གྲངས་ཀྱི་ཁྱད་ཆོས། = संख्यावाचक विशेषण ।

३. ཀུན་མིང་གི་ཁྱད་ཆོས། =सर्वनाम विशेषण ।

४. དགར་བའི་ཁྱད་ཆོས། = तुलनात्मक विशेषण ।

ཡོན་ཏན་གྱི་ཁྱད་ཆོས། = गुणवाचक विशेषण[1]

जिस विशेषण से संज्ञा की अवस्था एवं गुण आदि जाने जायें उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं । जैसे–

ཡག་པོ་	= अच्छा ।	སྦོམ་པོ་	= मोटा ।
ཆེན་པོ་	= बड़ा ।	སྔོན་མ་	= अगला ।
དཀར་པོ་	= सफेद ।	རྗེས་མ་	= पिछला ।
དྲང་པོ་	= सीधा ।	རིལ་པོ་	= गोल ।
རྙིང་པ་	= पुराना ।	ཕྱུག་པོ་	= धनी ।
སྟེང་	= ऊपर ।	སྡུག་ཅག་	= दुष्ट ।
འོག་	= नीचे ।	འཁྱོག་པོ་	= टेढ़ा ।
མཛེས་པོ་	= सुन्दर ।	རྣོན་པོ་	= नुकीला ।
རིང་པོ་	= लम्बा ।	དཔའ་པོ་	= वीर ।

१. भोट भाषा में विशेषण संज्ञा के पश्चात् लगता है। जैसे, རྟ་ནག་པོ། =घोड़ा काला । མི་དེ།= आदमी वह । བོང་བུ་བཅུ། = गधे दस इत्यादि ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དབུལ་པོ་	= गरीब ।	ཟབ་པ་	= गहरा ।

གྲངས་ཀྱི་ཁྱད་ཆོས། = संख्यावाचक विशेषण

जिस विशेषण से वस्तु की संख्या, क्रम तथा गु ादि जाने जायें उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं । जैसे—

གཅིག་	= एक ।	དང་པོ་	= पहला ।		
གཉིས་	= दो ।	གཉིས་པ་	= दूसरा ।	ཉི་ལྡབ་	= दुगुना ।
གསུམ་	= तीन ।	གསུམ་པ་	= तीसरा ।	སུམ་ལྡབ་	= तिगुना ।
བཞི་	= चार ।	བཞི་པ་	= चौथा ।	བཞི་ལྡབ་	= चौगुना ।
བཅུ་	= दस ।	བཅུ་པ་	= दसवाँ ।	བཅུ་ལྡབ་	= दसगुना ।
ཉི་ཤུ་	= बीस ।	ཉི་ཤུ་པ་	= बीसवाँ ।	ཉི་ཤུ་ལྡབ་	= बीसगुना ।
བརྒྱ་	= सौ ।	བརྒྱ་པ་	= सौवाँ ।	བརྒྱ་ལྡབ་	= सौगुना ।
སྟོང་	= हज़ार	སྟོང་པ་	= हज़ारवाँ ।	སྟོང་ལྡབ་	= हज़ारगुना ।

ཀུན་མིང་གི་ཁྱད་ཆོས། = सर्वनाम विशेषण

हिन्दी ही की भांति उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष तथा निजवाचक सर्वनाम को छोड़ कर शेष सर्वनामों का प्रयोग विशेषण की तरह होता है । जैसे—

པུ་གུ་དེ་	= वह लड़का ।	གོས་ཇི་ལྟར་	= कैसा कपड़ा ।
ལོངས་སྤྱོད་དེ་	= वह सम्पत्ति ।	མི་སུ་	= कौन आदमी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མི་གང་འདྲ་ = कैसा आदमी । རིག་པ་གང་ = क्या विद्या ।

ཀུན་མ་དེ་འདྲ་ = वैसा चोर । བུ་མོ་གང་ཙམ་ = कुछ लड़कियाँ ।

རྟ་དེ་ཙམ་ = उतने घोड़े । ལུག་འདི་ཙམ་ = इतने भेड़ ।

ཡུལ་འདི་འདྲ་ = ऐसा देश । ནད་པ་གང་ = कौन रोगी ।

ལས་ཇི་ལྟར་ = जैसा कार्य । ཆུ་དེ་ཚོད། = उतना पानी ।

དགར་བའི་ཁྱད་ཆོས། = तुलनात्मक विशेषण[1]

दो या दो से अधिक वस्तुओं में तुलना करने में विशेषणों की तीन अवस्थायें होती हैं । मूलावस्था, उत्तरावस्थ तथा उत्तमावस्था । सर्वनाम विशेषण का तुलनात्मक- विशेषण नहीं बनता । जिस विशेषण से किसी दूसरे वस्तु की तुलना नहीं की जा सकती उसे मूलावस्था कहते हैं । जैसे— བུ་གུ་མཛེས་པོ་འདུག बालक सुन्दर है ।

विशेषण के जिस रूप से दो वस्तुओं में से एक के गुण की अधिकता या न्यूनता जानी जाये उसे उत्तरावस्था कहते हैं । जैसे, དོན་གྲུབ་ཀུན་བཟང་དེ་ལས་མཛེས་པོ་འདུག = सिद्धार्थ समन्तभद्र से सुन्दर हैं । उत्तरावस्था बनाने के लिये विशेषण के बाद ' དེ་ལས་ ' जोड़ दिया जाता है ।

विशेषण के जिस रूप से तीन या उस से अधिक वस्तुओं में से किसी एक के गुण की अधिकता या न्यूनता जानी जाय उसे उत्तमावस्था कहते हैं ।

१. यद्यपि यह प्रकरण भोट भाषा में उपर्युक्त अपादान कारक के अंतर्गत निर्द्धारण का विषय है परन्तु यहाँ हिन्दी व्याकरणों के अनुसार विशेषण के साथ दिया जा रहा है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

जैसे, སྒྲོལ་མ་བུ་མོའི་ནང་མཛེས་ཤོས་ཤིག་རེད། = तारा लड़कियों में सबसे सुन्दरी है । उत्तमावस्था दिखाने के लिये विशेषण के परे 'ཤོས་' जोड़ दिया जाता है ।

मूलावस्था	अर्थ	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
མཁས་པ་	= विद्वान्।	དེ་ལས་མཁས་པ་	མཁས་ཤོས།
དམར་པོ་	= लाल ।	དེ་ལས་དམར་པོ་	དམར་ཤོས།
ཆེན་པོ་	= बड़ा ।	དེ་ལས་ཆེན་པོ་	ཆེ་ཤོས།
ཆུང་ངུ་	= छोटा ।	དེ་ལས་ཆུང་ངུ་	ཆུང་ཤོས།
གྲང་མོ་	= ठण्ढा ।	དེ་ལས་གྲང་མོ་	གྲང་ཤོས།
ཚ་བ་	= गरम ।	དེ་ལས་ཚ་བ་	ཚ་ཤོས།
ཡག་པོ་	= अच्छा ।	དེ་ལས་ཡག་པོ་	ཡག་ཤོས།
ངན་པ་	= बुरा ।	དེ་ལས་ངན་པ་	ངན་ཤོས།
རིང་པོ་	= लम्बा ।	དེ་ལས་རིང་པོ་	རིང་ཤོས།
ཐུང་ངུ་	= छोटा।	དེ་ལས་ཐུང་ངུ་	ཐུང་ཤོས།
གླེན་པོ་	= मूर्ख ।	དེ་ལས་གླེན་པོ་	གླེན་ཤོས།
མཐུག་པོ་	= मोटा ।	དེ་ལས་འཐུག་པོ་	འཐུག་ཤོས
སྲབ་པོ་	= पतला ।	དེ་ལས་སྲབ་པོ་	སྲབ་ཤོས།
སྐྱུར་མོ་	= खट्टा ।	དེ་ལས་སྐྱུར་མོ་	སྐྱུར་ཤོས།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कुछ विशेषणों को दो बार लिखा जाता है परन्तु उस से विशेषण में विशेषता नहीं आती । जैसे—

རིལ་རིལ་	= गोल ।	ལེབ་ལེབ་	= चपटा ।
ཆུང་ཆུང་	= छोटा ।	ཐུང་ཐུང་	= छोटा ।
ཉུང་ཉུང་	= थोड़ा ।	སྒོར་སྒོར་	= गोल ।
གཞོན་གཞོན་	= युवा ।	ནར་ནར་	= लम्बा ।
ཐང་ཐང་	= तकड़ा ।	དགའ་དགའ་	= आनन्द ।

པུ་གུ་ཆུང་ཆུང་ཞིག་རེད།	= एक छोटा लड़का है ।
སྤྲང་ཤིང་ལེབ་ལེབ་ཅིག་རེད།	= एक चपटा पल्ला है ।
ཁྱོ་ག་གཞོན་གཞོན་ཞིག་རེད།	= एक युवा पुरुष है ।
ཆུ་ཉུང་ཉུང་ཞིག་འདུག	= थोड़ा पानी एक है ।
དངུལ་སྒོར་སྒོར་རེད།	= रुपया गोल है ।
མི་ཐང་ཐང་ཞིག་འདུག	= एक तकड़ा आदमी है ।
ཁོའི་མགོ་རིལ་རིལ་རེད།	= उस का सिर गोल है ।
སྒྲུང་ཐུང་ཐུང་ཞིག་ཤོད།	= एक छोटी सी कहानी कहो ।
འབུ་ནར་ནར་ཞིག་འདུག	= एक लम्बा कीड़ा है ।
ཁོ་དགའ་དགའ་འདྲ་མཐོང་གི་འདུག	= वह संतुष्ट सा दीखता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བརྗོད་པ།

མེ་ཏོག་ལྡུམ་ར། = पुष्पवाटिका

མེ་ཏོག་ནི་མཛེས་ཆོས་ཀུན་གྱི་མཚན་མ་ལགས། མེ་ཏོག་གི་ལྡུམ་ར་འདིར་མེ་ཏོག་དཀར་པོ་དང་མེ་ཏོག་དམར་པོ་མང་ཤོས་རེད། མེ་ཏོག་དམར་པོའི་ཁུ་བ་ཡང་དམར་པོ་ཡོང་གི་རེད། མེ་ཏོག་གི་སྡོང་པོའི་སྟེང་འོག་ཀུན་ལ་མེ་ཏོག་ཆེ་ཆུང་མང་པོ་ཆགས་འདུག མེ་ཏོག་ཁ་ཤས་ལ་ཆུ་ཉིས་ལྡབ་གཏོང་དགོས་ཀྱི་རེད། སྡོང་པོ་གསུམ་པ་ལ་ད་དུང་པདྨའི་སྦུབས་ཀྱང་ཆགས་མི་འདུག དེའི་འདབ་མའི་མདོག་ནི་སེར་པོ་འདྲ་ཡོང་། ལྡུམ་ར་འདིར་ཟེ་འབྲུ་མེད་པའི་མེ་ཏོག་གཅིག་ཀྱང་མཐོང་གི་མི་འདུག རེ་འགའ་ལ་འབྲས་བུ་ཡང་མི་ཆགས། རྐང་ལ་ལོ་མ་མེད་ན་མེ་ཏོག་གི་མཛེས་ཆོས་མེད་པར་འགྲོ་གི་རེད། མེ་ཏོག་གི་ཟེ་འབྲུ་ལ་གུར་གུམ་ཡང་ཟེར་རོ།།

वाक्य

पुष्प तो सारे सुन्दरताओं का प्रतीक है । इस पुष्पवाटिका में श्वेत पुष्प और रक्त पुष्प सब से ज्यादा हैं । लाल पुष्पों का रस भी लाल होता है । पुष्प (वाले) पौधे के ऊपर नीचे सर्वत्र छोटे बड़े बहुत फूल लगे हैं । कुछ पुष्पों को पानी दुगुना देना पड़ता है । तीसरे पौधे पर अभी कली भी नहीं लगी है । उस की पंखुड़ी का रंग तो पीला सा होता है । इस वाटिका में विना पराग के एक भी फूल दिखाई नहीं देते । किसी पर फल भी नहीं लगता । डण्डी पर पत्ते न रहें तो फूल की सुन्दरता समाप्त हो जाती है । पुष्प के पराग को कुंकुम भी कहते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བདག་སྒྲ། = स्वामित्व सूचक

सू0— གང་མིང་གི་ནི་མ་མཐའ་ན།།
ཕ་ཡིང་ག་ཡི་སྒྲ་མེད་པ།།
དེ་ལ་ཕ་ཡིང་ག་སྦྱར་ན།།
བདག་པོའི་སྒྲར་ནི་ཤེས་པར་བྱ།།

अनु0— किसी (भी) संज्ञा के अन्त में पुल्लिंग (= स्वामित्व-सूचक པ་ པོ་) प्रत्यय न रहें, (और यदि) उन (संज्ञाओं) में पुल्लिंग (प्रत्यय པ་ པོ་) जोड़े तो स्वामि के भाव में जानना चाहिये[1] । जैसे, འོ་མ་པ། = दूध वाला । སྨན་པ། = दवा वाला ।

དེ་ཕན། = तद्धित

संज्ञा या विशेषण शब्दों के परे 'པ་ པོ་ མ་' प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं ।

པ་ པོ།

རྟ་པ་	= घोड़ा वाला ।	གྲུ་པ་	= नाव वाला ।
ཤིང་པ་	= लकड़ी वाला ।	ཆུ་པ་	= पानी वाला ।

---

१. संभोट के मूल व्याकरण पर महाभाष्यकार धर्माकर (१७ वीं शताब्दी) इत्यादि कुछ वैयाकरण པ་ པོ་ के अतिरिक्त दूसरा कोई प्रत्यय བདག་སྒྲ་ स्वीकार नहीं करते, परन्तु དབྱངས་ཅན་གྲུབ་པ་ आदि बाद के वैयाकरण པ་ པོ་ མ་ མོ་ तथा བ་ को भी स्वामित्व सूचक प्रत्यय मानते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཚོང་པ་	= सौदा वाला ।	ནོར་པ་	= धन वाला ।
ཉ་པ་	= मछली वाला ।	གསེར་པ་	= सोना वाला ।
ཞིང་པ་	= खेत वाला ।	ཁུ་ར་པ་	= पूड़ी वाला ।
རྣ་བ་པོ་	= कान वाला ।	མཐོ་བ་པོ་	= ऊंचा वाला ।
ཤུ་བ་པོ་	= फोड़ा वाला ।	དམའ་བ་པོ་	= नीचा वाला ।

མ།

མཆོད་ཡོན་མ་	= अर्घ्य वाली ।	ཞལ་ཟས་མ་	= नैवेद्य वाली ।
ཞབས་བསིལ་མ་	= पाद्य वाली ।	དྲི་ཆབ་མ་	= गन्ध वाली ।
མེ་ཏོག་མ་	= पुष्प पाली ।	རོལ་མོ་མ་	= शब्द वाली ।
བདུག་སྤོས་མ་	= धूप वाली ।	ཆོས་མ་	= धर्म वाली ।
མར་མེ་མ་	= आलोक वाली ।	ལྷ་མ་	= देव वाली ।

ཅན། ལྡན། མངའ་བ[1]།

इन का प्रयोग भोट भाषा में स्वामित्व सूचक अर्थ में नहीं होता क्योंकि ये निर्जीव के लिये भी लगते हैं, परन्तु हिन्दी में ये वाला और युक्त के अर्थ में आते

१. कभी कभी इन के अर्थ में ཡོད་པའི་ का भी प्रयोग होता है । जैसे—

རྭ་ཆེན་པོ་ཡོད་པའི་ལུག་དེ།	बड़ा सींग वाला वह भेड़ ।
སྐེད་པ་ཕྲ་མོ་ཡོད་པའི་བུད་མེད།	पतली कमर वाली स्त्री ।
ཀུ་ཤུ་ཡོད་པའི་ལུང་པའི་མི།	सेब वाले देश का आदमी ।
ཁྱོ་ག་ཡོད་པའི་བུད་མེད་རྣམས།	पति वाली स्त्रीयाँ ।
སྐུ་འདྲ་ཡོད་པའི་ལྷ་ཁང་།	मूर्ति वाला देवालय ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

हैं । अतः इन के प्रयोग भी यहाँ दिये जा रहे हैं । लिंग भेद से इन के स्वरूप में भेद नहीं होता ।

ཅན།

ཡོན་ཏན་ཅན་ = विद्या वाला ।	རིག་པ་ཅན་ = बुद्धि वाला ।
མེ་ཏོག་ཅན་ = फूल वाला ।	མགོ་ཅན་ = सिर वाला ।
མིང་ཅན་ = नाम वाला ।	མཐུ་ཅན་ = शक्ति वाला ।

ལྡན།

ནོར་ལྡན་ = धन वाला ।	སྟོབས་ལྡན་ = बल वाला ।
སེམས་ལྡན་ = मन वाला ।	དཔལ་ལྡན་ = श्री वाला ।
དབང་ལྡན་ = अधिकार वाला ।	དྲི་ལྡན་ = गन्ध वाला ।

མངའ་བ།

ཚུལ་མངའ་བ་ = शील युक्त ।	དཔལ་མངའ་བ་ = श्री युक्त ।
ཡོན་ཏན་མངའ་བ་ = विद्या युक्त ।	སྙིང་རྗེ་མངའ་བ་ = करुणा युक्त ।
འཁོར་མངའ་བ་ = परिवार युक्त ।	སྤྱན་མངའ་བ་ = चक्षु युक्त ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བ།[1]

བདག་སྒྲ་ཡར་བྱུར་བ་དང་ནི། ।
ཆ་ལ་པ་ཉིད་སྦྱོར་བ་ཞིགས། ।
དབྱངས་ཅན་གྲུབ་པའི་རྡོ་རྗེ་ཡིས། ।

संज्ञा	धर्माकर	अन्य वैयाकरण	अर्थ
ལྷ་ས	ལྷ་ས་པ་	ལྷ་ས་བ་	ल्हसा वाला
སེ་ར་	སེ་ར་པ་	སེ་ར་བ་	सेरा वाला
ཅོང་ཁ་	ཅོང་ཁ་པ་	ཅོང་ཁ་བ་	चोङ्खा वाला
རྒྱ་གར་	རྒྱ་གར་པ་	རྒྱ་གར་བ	हिन्दुस्तानी
ཕྱི་གླིང་	ཕྱི་གླིང་པ་	ཕྱི་གླིང་བ་	अंग्रेज
དཔེ་ཆ་	དཔེ་ཆ་པ་	དཔེ་ཆ་བ་	पुस्तक वाला
ཡི་གེ་	ཡི་གེ་པ་	ཡི་གེ་བ་	पत्र वाला
སོ་ནམ་	སོ་ནམ་པ་	སོ་ནམ་བ་	खेत वाला
གནམ་གྲུ་	གནམ་གྲུ་པ་	གནམ་གྲུ་བ་	वायुयान वाला
མཐའ་མ་	མཐའ་མ་པ་	མཐའ་མ་བ་	अन्त वाला

१. धर्माकर के महाभाष्य में 'བ་' को स्वामित्व सूचक प्रत्यय में कोई स्थान नहीं, परन्तु आज सारे तिब्बती लेखक इसे स्वामित्व सूचक प्रत्यय में प्रयोग करते हैं । बोल-चाल की भाषा में भी 'བ་' ही घर कर गया है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བྱེད་མཐའ་ཅན། = कृदन्त

शब्द बनाने के लिये क्रिया के परे जो प्रत्यय लगते हैं उन्हें कृत् (= བྱེད་སྒྲ་) प्रत्यय कहते हैं । कृत प्रत्यय से बने हुये शब्द कृदन्त कहलाते हैं । अर्थ भेद से कृदन्त संज्ञा के दो भेद हैं —

१. བྱེད་པོ་བརྗོད་པ། = कर्तृवाचक

२. དངོས་པོ་བརྗོད་པ། = भाववाचक

བྱེད་པོ་བརྗོད་པ།= कर्तृवाचक

कर्तृवाचक संज्ञा से क्रिया के करने वाले का बोध होता है । किसी भी क्रिया के परे 'པ་ པོ་'[1] = कृत प्रत्यय जोड़ने से जो शब्द बनते हैं उसे कर्तृवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे —

ཉན་པ་པོ་	= सुनने वाला ।	འཁོར་བ་པོ་	= धूमने वाला ।
བྱེད་པ་པོ་	= करने वाला ।	ཤེས་པ་པོ་	= जानने वाला ।
གཏོང་བ་པོ་	= देने वाला ।	དྲི་བ་པོ་	= पूछंने वाला ।
མཐོང་བ་པོ་	= देखने वाला।	འགྲོ་བ་པོ་	= जाने वाला।

---

१. कभी कभी 'མཁན་' जोड़कर कर्तृवाचक संज्ञा बनाई जाती है । जैसे—

འཚོང་མཁན་	= बेचने वाला	བྱེད་མཁན་	= करने वाला ।
སྨྲ་མཁན་	= बोलने वाला ।	མཐོང་མཁན་	= देखने वाला ।
འཆད་མཁན་	= कहने वाला ।	འབྲི་མཁན་	= लिखने वाला ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཀློག་པ་པོ་	= पढ़ने वाला।	ངུ་བ་པོ་	= रोने वाला ।

མ་ མོ།

प्रयोग की दृष्टि से 'མ་ མོ་' भी कृत् प्रत्यय में आते हैं, परन्तु 'པ་ པོ་' से पुल्लिंग तथा 'མ་ མོ་' से स्त्रीलिंग कर्तृवाचक का बोध होता है । जैसे —

འཁོར་བ་མ་	= घूमने वाली ।	བྱེད་པ་མོ་	= करने वाली ।
དུད་འགྲོ་མ་	= रेंगने वाली ।	འབྱིན་པ་མོ་	= निकालने वाली ।

དངོས་པོ་བརྗོད་པ། = भाववाचक

भाववाचक संज्ञा से क्रिया का व्यापार मात्र जाना जाता है । भोट भाषा में भाववाचक संज्ञा और धातुओं का स्वरूप एक ही रहता है । जैसे —

ཀློག་པ་	= पढ़ना ।	འབྲི་བ་	= लिखना ।
དགོད་པ་	= हँसना ।	འགྲོ་བ་	= जाना ।
འཆད་པ་	= बोलना ।	ཟ་བ་	= खाना ।
འཛེག་པ་	= चढ़ना ।	འཆི་བ་	= मरना ।
ཤེས་པ་	= जानना ।	འཐུང་བ་	= पीना ।
ལྡུག་པ་	= डालना ।	འཕུར་བ་	= उड़ना ।

भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये क्रिया के साथ कभी कभी 'རྒྱུ་' अथवा 'ཡ་' प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं । जैसे—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཀློག་རྒྱུ་	= ཀློག་ཡ་	= पढ़ना ।
འབྲི་རྒྱུ་	= འབྲི་ཡ་	= लिखना।
འཛེག་རྒྱུ་	= འཛེག་ཡ་	= चढ़ना।
བླུག་རྒྱུ་	= བླུག་ཡ་	= डालना ।
ཤེས་རྒྱུ་	= ཤེས་ཡ་	= जानना ।

བརྗོད་པ།

ཚོགས་འདུ། = सभा

དེ་རིང་རྒྱ་གར་པ་ཞིག་ཧ་པ་ཞིག་མཉམ་གཉིས་ཀ་རྩེ་ནས་རྒྱ་གར་ལ་ཕྱིན་སོང་། ཁོང་ཚོང་པ་ནི་མ་རེད། ཐལ་ཆེར་ཡོན་ཏན་ཅན་ཞིག་ཡིན་འདྲའོ། ཁ་སང་མི་དམངས་ཚོགས་འདུ་ནང་ཁོང་གིས་གསུང་བཤད་ཅིག་ཀྱང་གནང་སོང་། ཁོང་གི་གསུང་བཤད་ཉན་ཕྱིར་མི་དམངས་ཀྱང་མང་པོ་འདུས་སོང་། ཚོགས་འདུའི་ལས་རིམ་བཞིན་ཐོག་མར་ལྷ་ས་མ་སློབ་གྲྭ་མ་ཞིག་གིས་བཀྲ་ཤིས་ཀྱི་གླུ་བླངས་ནས་ཚོགས་འདུའི་འགོ་བཙུགས། དེ་རྗེས་མཁས་པ་དང་ས་གནས་ཀྱི་དཔོན་པོ་ཁག་གིས་སོ་སོའི་བསམ་འཆར་གསུངས་སོང་། དེ་རྣམས་ཀྱི་རྗེས་ལ་རྒྱ་གར་པ་དེས་ཆུ་ཚོད་གཉིས་ཙམ་གསུང་བཤད་གནང་སོང་། དེ་བཞིན་རྒྱ་གར་ནའང་ཁྱབ་འཇུག་མཆོད་མཁན་སུ་ཡང་ཡོད་པ་མ་རེད་ཅེས་གསུང་གི་འདུག འོན་ཀྱང་ཆོས་ལ་ཡིད་ཆེས་དང་དད་པ་བྱེད་མཁན་ནི་ཧ་ཅང་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད། རྒྱ་གར་རང་དབང་རང་བཙན་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཡིན་སྐབས་ཀྱིས་ཞིང་པ་དང་། ཉ་པ་དང་། ཚོང་པ་དང་། ངལ་རྩོལ་བ་དང་གཞན་ཡང་ལས་བྱེད་པ་སོགས་ལ་སོ་སོའི་འདོད་མོས་ལྟར་བྱེད་རྒྱུའི་དབང་ཆ་ཡོད་པ་རེད། རྒྱ་གར་ལ་ཁྲིམས་དང་དཔོན་པོ་མེད་པའི་དོན་དག་ནི་མ་རེད། དཔོན་པོ་ཁག་ནི་མི་དམངས་ཀྱི་ལས་བྱེད་པ་ཡིན་སྐབས་ཀྱིས་དུས་རྟག་ཏུ་མི་དམངས་ཀྱི་བདེ་སྐྱིད་སྒྲུབ་པ་ལ་འབུངས་ཡོད་པ་རེད་ཅེས་གསུང་གི་འདུག མཇུག་ཏུ་ཚོགས་པའི་ཁྲི་པས་གསུང་བཤད་གནང་མཁན་དང་གསན་མཁན་ཐམས་ཅད་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུས་སོང་། ད་རྗེས་ཚོགས་འདུ་གྲོལ་སོང་།

वाक्य

आज एक भारतीय एक घोड़े वाले के साथ जिस्काचे़ से भारत को चला गया । आप व्यापारी तो नहीं थे । सम्भवत: एक विद्वान् थे । कल आम सभा में आप के द्वारा एक भाषण भी दिया गया । आप का भाषण सुनने के लिये जनता भी बहुत इक्ट्ठी (हो) गई । सभा के कार्यक्रमानुसार शरू में एक ल्हसायी छात्रा के द्वारा मंगल का गान गाने पर सभा का आरम्भ हुई । तत्पश्चात् विद्वान् और स्थानीय अधिकारी वर्ग के द्वारा क्रमश: अपने अपने विचार कहे गए । उन लोगों के बाद में उस भारतीय ने लगभग दो घण्टे भाषण किया गया । तदनुसार ''भारत में भी विष्णु देखने वाला कोई भी नहीं है'' ऐसा कहते हैं । ''फिर भी धर्म में विश्वास और श्रद्धा करने (=रखने) वाले तो बहुत ज्यादा हैं । भारत स्वतन्त्र है (= होने के) कारण कृषक और मछुअे और व्यापारी और श्रमिक और अन्य कार्य कर्त्ताओं को भी अपनी अपनी इच्छानुसार (कार्य) करने का अधिकार है । भारत में विधान और अधिकारी नहीं हैं (इस का) अर्थ (यह) न (निकालियेगा) अधिकारी गण तो जनता के कर्मचारी हैं (= होने के) नाते सदा में जनता की

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सुख सुविधा बनाने में रत हैं '' ऐसा कहते हैं । अन्त में सभा के पति ने भाषण करने वाले तथा सुनने वाले सब को धन्यवाद अर्ज (दिया) गया । उस (के) बाद सभा (का) विसर्जन (हो)गयी ।

རྟགས། = लिङ्ग

विकारी शब्दों के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति का बोध हो उसे लिङ्ग कहते हैं । भोटभाषा में दो ही लिङ्ग होते हैं, स्त्रीलिङ्ग औरपुल्लिङ्ग । संज्ञा या विशेषण के परे 'པ་ པོ་' रहे तो पुल्लिङ्ग 'མ་ མོ་' रहे तो स्त्रीलिङ्ग हो जाता है ।

ཕོ་རྟགས་	= पुल्लिङ्ग	མོ་རྟགས་	= स्त्रीलिङ्ग
འཕགས་པ་	= आर्य	འཕགས་མ་	= आर्या
རྣལ་འབྱོར་པ་	= योगी	རྣལ་འབྱོར་མ་	= योगिनी
སློབ་གྲྭ་པ་	= छात्र	སློབ་གྲྭ་མ་	= छात्रा
རྒྱ་གར་བ་	= हिस्दुस्तानी	རྒྱ་གར་མ་	= हिन्दुस्तानी
བལ་པོ་པ་	= नेपाली	བལ་པོ་མ་	= नेपाली
ལྷ་ས་པ་	= ल्हसायी	ལྷ་ས་མ་	= ल्हसायी
ལ་དྭགས་པ་	= लद्दाखी	ལ་དྭགས་མ་	= लद्दाखी
ལས་བྱེད་པ་	= कर्मचारी	ལས་བྱེད་མ་	= कर्मचारिणी
རྒྱལ་པོ་	= राजा	རྒྱལ་མོ་	= रानी
མེས་པོ་	= पितामह	མེས་མོ་	= पितामही

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྤྱང་པོ་	= चतुर	སྤྱང་མོ་	= चतुर (स्त्री)
དབང་པོ་	= इन्द्र	དབང་མོ་	= इन्द्राणी
མཚར་པོ་	= सुन्दर	མཚར་མོ་	= सुन्दरी
གྱོས་པོ་	= ससुर	གྱོས་མོ་	= सास
རྒད་པོ་	= बूढ़ा	རྒད་མོ་	= बूढ़ी
ནག་པོ་	= काला	ནག་མོ་	= काली
དཀར་པོ་	= गोरा	དཀར་མོ་	= गोरी
བོད་པ་	= तिब्बती	བོད་མོ་	= तिब्बती
ཁམས་པ་	= खम्पा	ཁམས་མོ་	= खम्पणी
འབྲུག་པ་	= भूटानी	འབྲུག་མོ་	= भूटानी
མཁས་པ་	= विद्वान्	མཁས་མོ་	= विदुषी
བྱང་པ་	= उत्तरवाला	བྱང་མོ་	= उत्तरवाली
སོ་པ་	= गुप्तचर	སོ་པ་མོ་	= गुप्तचर (स्त्री)

कुछ प्राणी वाचक संज्ञाओं के परे ཕོ་ जोड़ने से पुल्लिङ्ग མོ་ से स्त्रीलिङ्ग का बोध होता है ।

ཕོ་རྟགས།	= पुल्लिङ्ग	མོ་རྟགས།	= स्त्रीलिङ्ग
རྔ་མོང་ཕོ་	= ऊँट	རྔ་མོང་མོ་	= ऊँटनी
ཝ་ཕོ་	= नर लोमड़ी	ཝ་མོ་	= मादा लोमड़ी

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བྱ་ཕོ་	= मुर्गा	བྱ་མོ་	= मुर्गी
ཁྱི་ཕོ་	= कुत्ता	ཁྱི་མོ་	= कुत्ती
སེངྒེ་ཕོ་	= शेर	སེངྒེ་མོ་	= शेरनी
ཞིམ་བུ་ཕོ་	= नर बिल्ली	ཞིམ་བུ་མོ་	= मादा बिल्ली
སྟག་ཕོ་	= नर बाध	སྟག་མོ་	= मादा बाघ
ཉ་ཕོ་	= नर मछली	ཉ་མོ་	= मादा मछली

कभी कभी जड़ वस्तुओं के परे 'མ་ མོ་' जोड़ कर स्त्रीलिङ्ग बनाया जाता है ।

སྔོ་བསངས་མ་	= आकाश	བཞད་ལྡན་མ་	= पद्मयुक्त सरोवर
འཁོར་འགྲོ་མ་	= रात्रि	གསེར་ལྡན་མ་	= पृथ्वी
འཁོར་བྱེད་མ་	= रात्रि	མིག་སྨན་མ་་	= कालिख
ཐུན་གསུམ་མ་	= रात्रि	དལ་འགྲོ་མ་	= पानी
མེལ་ཚེ་མ་	= रात्रि	མདའ་མོ་	= वाण
འབབ་ལྡན་མ་	= पानी	གཡུ་མོ་	= फिरोज़ा

कुछ 'མ་ མོ་' परवर्ती संज्ञान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग का बोध नहीं होता । जैसे—

བླ་མ་	= गुरु	ཕྱགས་མ་	= झाड़ू
ཟ་མ་	= भोजन	གཙང་མ་	= साफ

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གདུང་མ་	= शहतीर	མཇུག་མ་	= पूंछ
འདབ་མ་	= पत्ता	མཚན་མ་	= चिन्ह
ནུ་མ་	= स्तन	དབུ་མ་	= सुषुम्ना
དྲི་མ་	= गन्ध	རོ་མ་	= इड़ा
བྱེ་མ་	= बालू	རྐྱང་མ་	= पिंगला
ཉིན་མོ་	= दिन	ཐལ་མོ་	= अंजलि
མཚན་མོ་	= रात	སེན་མོ་	= नाखून
ཆེན་མོ་	= बड़ा	ཙེ་མོ་	= चोटी
སོར་མོ་	= अंगुली	རྙིལ་མོ་	= पुराना
སྲིར་མོ་	= नख	གྲུ་མོ་	= भुजा
སྣེ་མོ་	= सिरा	གད་མོ་	= हँसी
ཕྲ་མོ་	= पतला	མངར་མོ་	= मीठा

བརྗོད་པ།

བཀའ་མོལ། = वार्तालाप

ཀྱེ་འཕགས་པ། ཁྱེད་སུ་ཡིན། བྲམ་ཟེ་མོ། ང་བོད་པ་ཞིག་ཡིན།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བོད་ནས་འོང་བ་ཡིན། བོད་ལ་མཁས་པ་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད་པས། ལགས་ཡོད་པ་རེད། མཁས་པ་མ་ཟད་བླ་མ་སྤྲུལ་པའི་སྐུ་ཡང་ཤིན་ཏུ་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད། བོད་ཀྱི་ལྟེ་བ་ལྷ་ས་ལ་དགོན་པ་ཆེན་པོ་དང་ཇོ་བོ་བཞུགས་ཡོད་པ་རེད། མ་གཞི་ལྷ་ས་ལ་ཁམས་པ་དང་། ཨ་མདོ་དང་། འབྲུག་པ་སོགས་མི་རིགས་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད། འོན་ཀྱང་དེ་རྣམས་ཕལ་ཆེར་བོད་སྐད་ཤ་སྟག་ལབ་ཀྱི་རེད། ལྷ་སའི་ཉེ་འཁྲམ་དུ་ཤིང་ནགས་མེད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་སེང་གེ་དང་སྟག་སོགས་ནི་ཡོད་པ་མ་རེད། འོན་ཀྱང་ཁྱི་དང་ཞིམ་བུ་ནི་ཁྱིམ་ཚང་རེ་རེར་ཡོད་པ་རེད། ལྷ་སའི་མདུན་ནས་རྒྱུག་མཁན་སྐྱིད་ཆུ་གཙང་པོ་ནང་ཉ་མོ་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད།

हे आर्य ! आप कौन हैं ? ब्राह्मणी, मैं एक तिब्बती हूँ, तिब्बत से आया हूँ । क्या तिब्बत में विद्वान् ज़्यादा होते हैं ? जी, होते हैं । विद्वानों के अतिरिक्त आवतारी लामा भी बहुत ज़्यादा होते हैं । तिब्बत के केन्द्र ल्हसा में बड़े बड़े मन्दिर और ठाकुर विराजमान हैं । यूं तो ल्हसा में खम्पा <u>और</u> अम्दो और भूटानी आदि विभिन्न जांति के लोग रहते हैं, परन्तु वे लोग प्राय: तिब्बती भाषा ही बोलते हैं । ल्हसा के आस-पास जंगल न होने के कारण शेर और बाघ आदि तो नहीं होते फिर भी कुत्ते बिल्ली तो प्रत्येक घर में होते हैं । ल्हसा के सामने से बहने वाली किद-छु नामक नदी में मादा मछली बहुत होती हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དགག་སྒྲ། = निषेधात्मक प्रत्यय[1]

सू०— གང་མིང་བརྗོད་པའི་ཡ་མཐའ་ན།།
སྟྲཱི་ལིངྒ་ཡི་སྒྲ་མེད་པ།།
དེ་ལ་སྟྲཱི་ལིངྒ་སྦྱར་ན།།
དགག་པའི་གནས་སུ་ཤེས་པར་བྱ།།

अनु०— किसी (भी) संज्ञा, (विशेषण तथा क्रियाओं के) उच्चारण के पूर्व (उन) में, स्त्रीलिङ्ग का (सूचक निषेधात्मक) प्रत्यय (མ་ མི་) न रहे, (और यदि)उन (संज्ञाओं) में स्त्रीलिङ्ग (सूचक མ་ མི་ प्रत्यय पूर्व में) जोड़ें तो, (उन्हें) निषेध के भाव में समझना चाहिये ।

भोट भाषा में 'མ་ མོ་' स्त्रीलिङ्ग सूचक प्रत्यय हैं । इन में 'མོ་' निषेधार्थ में नहीं लगता । केवल 'མ་' और 'མི་' को संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा सहायक क्रियाओं के पूर्व में जोड़ने से उस का अर्थ विरुद्ध हो जाता है, जैसे—

---

१. शब्दों के पूर्व में आने पर भी इसे यहां प्रत्यय ही कहा जायेगा।

नोटः-

कुछ वैयाकरण 'མེད་' और མིན་' को भी निषेधात्मक प्रत्यय मानते हैं । परन्तु धर्माकर མེད་ མིན་ को निषेधात्मक प्रत्यय नहीं मानता । यद्यपि धर्माकर ने अपने महाभाष्य में इस विषय में कुछ चर्चा की है, परन्तु उतने से उस का पूरा निराकरण नहीं होता । इस प्रकार मेरे अपने मत से 'མེད་' और 'མིན་' जो མ་ཡོད་ और མ་ཡིན་ का ही एक संक्षिप्त रूप (མ་ + ཡོད་ = མེད། མ་ + ཡིན་ = མིན་) है । इसलिए धर्माकर इसे अलग से एक स्वतंत्र निषेधात्मक प्रत्यय नहीं मानता ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མ་ངེས་པ་	= अनिश्चित	མི་སྡུག་པ་	= असुन्दर
མ་རིག་པ་	= अविद्या	མི་རྟག་པ་	= अनित्य
མ་སྐྱེས་དགྲ་	= अजात सत्रु	མི་གཙང་བ་	= अशुद्ध
མ་ལུས་པ་	= अशेष	མི་ཚངས་སྤྱོད་	= अब्रह्मचर्य
མ་ལྡན་པ་	= अयुक्त	མི་དགེ་བ་	= अकुशल

सहायक क्रिया के पूर्व 'མ་ མི་'

མ་རེད་ = नहीं हूँ । नहीं हो । नहीं है । नहीं हैं ।

མ་ཡིན་ = नहीं हूँ । नहीं हो । नहीं है । नहीं हैं ।

མི་འདུག་ = नहीं है[1] ।

ཡོད་པ་མ་རེད། = नहीं था । नहीं थी । नहीं थे ।

---

१. མི་རེད། མི་ཡིན། མ་འདུག་ इत्यादि निषेधात्मक सहायक क्रियायें नहीं होती । अपितु མི་ཡིན། के स्थान में མིན་ तथा མི་ཡོད། के स्थान में མེད།। का प्रयोग होता है । जिनकी संज्ञा तथा मूल क्रियाओं के परे व्यवहार होता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

निषेधात्मक क्रिया रूप

क्रिया བྱ་བ་	भविष्यत् མ་འོངས་པ་	वर्त्तमान ད་ལྟ་བ་	भूत འདས་པ་	विधि གདམས་ངག
ལྟ་བ་ देखना	མི་ལྟ་བ་	མ་ལྟ་	མ་བལྟས་	མ་ལྟོས་ཤིག
སྡོད་པ་ वैठना	མི་བསྡད་	མ་སྡོད	མ་བསྡད་	མ་སྡོད་ཅིག
བཤད་པ་ कहना	མི་བཤད་	མ་འཆད་	མ་བཤད་	མ་ཤོད་ཅིག
ཉན་པ सुनना	མི་མཉན་	མ་མཉན	མ་མཉན་	མ་ཉོན་ཅིག
གཏོང་བ་ देना	མི་བཏང་	མ་གཏོང	མ་བཏངས་	མ་ཐོངས་ཤིག
སྐྱོབ་པ་ रक्षा करना	མི་བསྐྱབ་	མ་སྐྱོབ་	མ་བསྐྱབས་	མ་སྐྱོབས་ཤིག
ཟླ་བ་ जपना	མི་བ་ཟླ་	མ་ཟླ་	མ་བཟླས་	མ་ཟློས་ཤིག
འགྱུར་བ་ होना	མི་འགྱུར་	མ་འགྱུར་	མ་གྱུར་	མ་གྱུར་ཅིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བརྗོད་པ།

དྲི་བ་དྲི་ལན། = प्रश्नोत्तर

སྐུ་ཞབས་ལགས། མེ་ཏོག་དེ་ཉི་མ་གང་ཤར་མ་རེད་དམ། ཀང་གཅིག་ལ་མེ་ཏོག་གཅིག་ལས་མང་ཆགས་ཀྱི་ཡོད་པ་མ་རེད་དམ། དེ་ཡང་མི་རྟག་པའི་རང་བཞིན་ཞིག་ཡིན་པ་འདྲ་འོ།། འདི་ལས་སྔོན་མེ་ཏོག་འདིའདྲ་ངས་མ་མཐོང་། དགེ་རྒན་ལགས་ཀྱིས་ཀྱང་གསུངས་མ་སོང་། མེ་ཏོག་འདི་འཛུགས་པ་ལ་སུས་འབད་རྩོལ་བྱས་པ་རེད། རྒྱ་གཏོང་དགོས་ཀྱི་རེད་དམ་མ་རེད། རང་བྱུང་གི་སྐྱིད་ཡུལ་འདི་མཛེས་པ་ལ།

གྲོགས་པོ་ལགས། མེ་ཏོག་དེ་ཉི་མ་གང་ཤར་རང་རེད། ཀང་རེ་ལ་ཕལ་ཆེར་མེ་ཏོག་གཅིག་ལས་མང་མི་ཆགས། མེ་ཏོག་འདི་དང་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་མི་རྟག་པའི་རང་བཞིན་རེད། མེ་ཏོག་ནི་མཛེས་ཆོས་ཐམས་ཅན་གྱི་མཚན་མ་ཡིན་པས་ཁྱོད་ཀྱི(ས་)མ་མཐོང་བ་ནི་ཧ་ལས་ཀྱི་གཏམ་རེད། བླ་མས་མ་བསྟན་པའི་ཆོས་གང་ཡང་ཡོད་པ་མ་རེད། ཁྱོད་ཀྱིས་མ་གསན་པ་འདྲ་འོ། མེ་ཏོག་འདི་སུས་ཀྱང་བཙུགས་པ་མ་རེད། རང་བྱུང་གྱིས་སྐྱེས་པ་རེད། རྒྱ་མེད་ན་མེ་ཏོག་འདི་ཚོ་སྐྱིད་འགྲོ་གི་རེད།

= वाक्य

महाशय जी, क्या वह सूर्य मुखी फूल नहीं है ? एक डँडी में एक से ज़्यादा फूल नहीं लगता क्या ? शायद वह भी एक अनित्य स्वभाव का है । इस

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

से पूर्व इस प्रकार (के) फूल मैं ने नहीं देखा । गुरु जी ने भी नहीं कहा गया । इस फूल (को) रोपने में किस ने परिश्रम किया है ? पानी देने की आवश्यकता है या नहीं ? प्रकृति की यह दृश्य कितना सुन्दर (है) ।

मित्र जी, वह फूल सूर्य मुखी ही है । प्रत्येक डँडी में प्राय: एक से ज़्यादा फूल नहीं लगता । यह फूल और सारे द्रव्य अनित्य हैं । फूल तो सारे सुन्दरताओं का प्रतीक है, तुम्हारा न देखना तो आश्चर्य की बात है गुरु द्वारा बताया नहीं (गया)कोई भी धर्म नहीं है । शायद तुम ने नहीं सुना है । यह फूल किसी ने रोपा नहीं है । प्रकृति से पैदा हुआ है । पानी नहीं तो (= के विना) ये फूल कुम्हला जाते हैं ।

ཞེ་ས།= आदर (सूचक)

भोटषाषा में शिष्ट लोगों की भाषा तथा रचना सर्वदा भिन्न रहती है । वे प्रथम पुरुष को छोड़कर मध्यम तथा उत्तम पुरुष के लिये सदा आदर सूचक शब्दों का व्यवहार करते हैं । जैसे—

ཕལ་སྐད། = साधारणभाषा	ཞེ་སའི་སྐད། = शिष्टभाषा	དོན། = अर्थ
མགོ་	དབུ་	सिर
མིག་	སྤྱན་	आँख
ཁ་	ཞལ་	मुँह
སོ་	ཚེམས་	दाँत
ལྟོ་བ་	གསུས་པ་	पेट
སྣ་	ཤངས	नाक
རྣ་བ་	སྙན་	कान

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ལག་པ་	ཕྱག་	हाथ
རྐང་པ་	ཞབས་	पैर
ལྕེ་	ལྗགས་	जिह्वा
གོས་	ན་བཟའ་	कपड़ा
བཀའ་	གསུང་	आज्ञा
བླ་མ་	ཡོངས་འཛིན་	गुरु
ཕ་	ཡབ་	पिता
མ་	ཡུམ་	माता
བུ་ཚ་	སྲས་	पुत्र
བུ་མོ་	སྲས་མོ་	पुत्री
མིང་	མཚན་	नाम
ཆུང་མ་	ལྕམ་	पत्नी

शरीर से संबन्धित अगों तथा प्रत्यङ्गों की संज्ञाओं के आदर सूचक शब्द बनाने के लिये संज्ञा के पूर्व 'སྐུ་' (= काय) शब्द जोड़ दिया जाता है । जैसे—

साधारणभाषा	शिष्टभाषा	अर्थ
གཟུགས་པོ་	སྐུ་གཟུགས་	शरीर
དཔུང་པ་	སྐུ་དཔུང་	कंधा
བྲང་ཁོག་	སྐུ་བྲང་	छाती

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མཁྲིས་པ་	སྐུ་མཁྲིས་	पित्त
ལུས་	སྐུ་ལུས་	शरीर
ཁྲག་	སྐུ་ཁྲག་	रक्त
ཤ་	སྐུ་ཤ་	मांस
ལྟོ་བ་	སྐུ་ལྟོ་	पेट
རྒྱབ་	སྐུ་རྒྱབ་	पीठ
ན་ཚོད་	སྐུ་ན་	अवस्था
གཟན་གོས་	སྐུ་གཟན་	चीवर
མཁར་	སྐུ་མཁར་	प्रासाद
སྐེ་རགས་	སྐུ་རགས་	कमरबन्द
ཟླ་བོ་	སྐུ་ཟླ་	साथी
གཟུགས་བརྙན་	སྐུ་བརྙན་	रूप,मूर्ति
མདོག་	སྐུ་མདོག་	रंग,रूप
དངོས་ཆས་	སྐུ་ཆས་	सामान
ཚེ་	སྐུ་ཚེ་	आयु
འཁོར་	སྐུ་འཁོར་	परिवार
མལ་	སྐུ་མལ་	विस्तर
སྲིང་མོ་	སྐུ་སྲིང་	बहिन
སྤུན་མཆེད་	སྐུ་མཆེད་	भाई

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རུས་པ་	སྐུ་རུས་	हड्डी
རུས་པ་	སྐུ་གདུང་	अस्थि

वाक् से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'གསུང་' (= वचन) जोड़ कर आदर सूचक शब्द बनाया जाता है । जैसे—

ཟསྐད་	གསུང་སྐད་	भाषा
གཞས་	གསུང་གཞས་	गाना
མགུར་	གསུང་མགུར་	गीत
བཤད་པ་	གསུང་བཤད་	भाषण
དབྱངས་	གསུང་དབྱངས་	स्वर

चित्त से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'ཐུགས་' (= मन) जोड़ कर आदर सूचक शब्द बनाया जाता है । जैसे—

སེམས་རྒྱུད་	ཐུགས་རྒྱུད་	मनोभाव
འདོད་པ་	ཐུགས་འདོད་	इच्छा
སྙིང་རུས་	ཐུགས་རུས་	परिश्रम
བསམ་པ་	ཐུགས་བསམ་	भावना
སེམས་བསྐྱེད་	ཐུགས་བསྐྱེད་	चित्तोत्पाद
སྨོན་ལམ་	ཐུགས་སྨོན་	प्रणिधान
དགོངས་པ་	ཐུགས་དགོངས་	विचार
མོས་པ་	ཐུགས་མོས་	आस्था

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཁོང་འཁྲུགས་	ཐུགས་འཁྲུགས་	चित्तविक्षेप
དོ་སྣང་	ཐུགས་སྣང་	ख्याल
ང་རྒྱལ་	ཐུགས་རྒྱལ་	अहंकार
འགན་	ཐུགས་འགན་	उत्तरदायी
སེམས་ངན་	ཐུགས་ངན་	द्वेष चित्त
སེམས་ཁྲལ་	ཐུགས་ཁྲལ་	चिन्ता
སེམས་ཉིད་	ཐུགས་ཉིད་	आत्मा
བསམ་བློ་	ཐུགས་བསམ་	विवेचन
སེམས་ཆུང་	ཐུགས་ཆུང་	दयालु, कायर
འདུན་པ་	ཐུགས་འདུན་	रुचि
ཡིད་མུག་པ་	ཐུགས་མུག་པ་	निराश
སྙིང་རྗེ་	ཐུགས་རྗེ་	दया, करुणा
སེམས་སྤྲོ་	ཐུགས་སྤྲོ་	आनन्द
བྲེལ་བ་	ཐུགས་བྲེལ་	व्यस्त

शिर से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'དབུ་' (= सिर) जोड़ कर आदर सूचक शब्द बनाया जाता है । जैसे—

སྐྲ་	དབུ་སྐྲ	केश
ཞྭ་མོ་	དབུ་ཞྭ་	टोपी
དཔྲལ་བ་	དབུ་དཔྲལ་	माथा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཉི་གདུགས་	དབུ་གདུགས་	छाता
མགོ་རྒྱན་	དབུ་རྒྱན་	शिरोभूषण
མགོ་སྡོགས་	དབུ་སྡོགས་	माथापच्ची

हाथ से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'ཕྱག་' (= कर) लगा कर आदर सूचक शब्द बनाया जाता है । जैसे—

དཔེ་ཆ་	ཕྱག་དཔེ་	पुस्तक
སྨྱུ་གུ་	ཕྱག་སྨྱུག་	कलम
བེར་ཀ་	ཕྱག་བེར་	छड़ी
འཁར་རྒྱུག་	ཕྱག་འཁར་	छड़ी
ཡི་གེ་	ཕྱག་བྲིས་	पत्र
སོར་མོ་	ཕྱག་སོར་	अँगुली
སེན་མོ་	ཕྱག་སེན་	नाखून
བཏགས་	ཕྱག་བཏགས་	उपहार
ལས་ཀ་	ཕྱག་ལས་	कार्य
དངུལ་	ཕྱག་དངུལ་	रुपया
ཤོག་བུ་	ཕྱག་ཤོག་	काग़ज
རྟགས་	ཕྱག་རྟགས་	हाथ चिन्ह=मोहर
སྒམ་	ཕྱག་སྒམ་	बक्स
མདུད་པ་	ཕྱག་མདུད་	गांठ

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྣག་ཕྲུམ་	ཕྱག་ཕྲུམ་	मसीपात्र
ལག་ཆ་	ཕྱག་ཆ་	हथियार
དམ་ག་	ཕྱག་དམ་	मोहर
མེ་མདའ་	ཕྱག་མདའ་	बन्दूक
ལག་རས་	ཕྱག་རས་	रूमाल
འཕྲེང་བ་	ཕྱག་འཕྲེང་	माला
ལྡེ་མིག་	ཕྱག་ལྡེ་	ताली

पैर से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'ཞབས་' (= चरण) जोड़ कर आदर सूचक शब्द बनाया जाता है । जैसे—

ཀུབ་ཀྱག་	ཞབས་ཀྱག་	कुरसी
གཡོག་པོ་	ཞབས་ཕྱི་	सेवक
རྐང་རྗེན་	ཞབས་རྗེན་	नंगा पैर
རྐང་སྟེགས་	ཞབས་སྟེགས་	पादपीठ
རྐང་ཟུང་	ཞབས་ཟུང་	युगल चरण
རྐང་རྗེས་	ཞབས་རྗེས་	पद चिन्ह
རྐང་ཤུབས་	ཞབས་ཤུབས་	मोजा
རྐང་མཐིལ་	ཞབས་མཐིལ་	तलवा
རྐང་སོར་	ཞབས་སོར་	पैर की अंगुली
རྐང་སེན་	ཞབས་སེན་	पैर का नख

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རྐང་གདུབ་	ཞབས་གདུབ་	नूपुर
ལྷམ་གོག་	ཞབས་ལྷམ་	जूता
རྐང་རྟིང་	ཞབས་རྟིང་	एड़ी

मुख से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'ཞལ་' (= मूँह) जोड़ कर आदर सूचक शब्द बनाया जाता है । जैसे—

གདོང་	ཞལ་གདོང་	मुखमण्डल
སྐྱེམས་	ཞལ་སྐྱེམས་	पेय
ཁ་རྫུན་	ཞལ་རྫུན་	झूठ
ཁ་ཆེམས་	ཞལ་ཆེམས་	मरते वक्त की बात
ཁ་བྱང་	ཞལ་བྱང་	पता
དཀར་ཡོལ་	ཞལ་དཀར་	प्याला
ཁ་ཕོར་	ཞལ་ཕོར་	कटोरा
ཁ་ལག་	ཞལ་ལག་	भोजन
བཞིན་རས་	ཞལ་རས་	मुखमण्डल
ཁ་ཁྲུས་	ཞལ་ཁྲུས་	कुल्ला
འབག་	ཞལ་འབག་	मुखौटा
ཐུར་མ་	ཞལ་ཐུར་	चमचा
ཁ་མཆུ་	ཞལ་མཆུ་	मुक़दमा
ཁ་ཟས་	ཞལ་ཟས་	भोजन

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཁ་དོན་	ཞལ་དོན་	भजन, पाठ
གདམས་ངག་	ཞལ་གདམས་	उपदेश
ཁས་ལེན་པ་	ཞལ་གྱིས་བཞེས་པ་	प्रतिज्ञा करना

जीभ से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'ལྗགས་' (=जिह्वा) गर्दन से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'མགུལ་' (=गला) तथा आँख से संबन्धित संज्ञाओं के पूर्व 'སྤྱན་' (=चक्षु) जोड़ कर आदर सूचक शब्द बनाया जाता है । जैसे—

ཚྭ་	ལྗགས་ཚྭ་	नमक
ཁ་ཆུ་	ལྗགས་ཆབ་	थूक
བྲོ་བ་	ལྗགས་བྲོ་	स्वाद
སི་པན་	ལྗགས་སིལ་	मिर्च
གླིང་བུ་	ལྗགས་གླིང་	अलगोज़ा
ཆམ་པ་	མགུལ་ཆམ་	ज़ुकाम
གློ་	མགུལ་གློ་	बलगम
གླུ་	མགུལ་གླུ་	गाना
སྐེ་རྒྱན་	མགུལ་རྒྱན་	कंठा
མགུར་	མགུལ་མགུར་	भजन
སྐེ་འཕྲེང་	མགུལ་འཕྲེང་	माला
མགྲིན་ནག་	མགུལ་ནག་	नीलकंठ

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྐེ་རིང་	མགུལ་རིང་	अतिग्रीव
མིག་	སྤྱན་	नेत्र
མིག་ལྤིབས་	སྤྱན་ལྤིབས་	पलक
མིག་འབྲས་	སྤྱན་འབྲས་	पुतली
མིག་ཡངས་པ་	སྤྱན་ཡངས་པ་	विशालाक्ष
མིག་ཆུ་	སྤྱན་ཆབ་	आँसू
མིག་འཛུམ་	སྤྱན་འཛུམ་	निमेष
མིག་ལྤགས་	སྤྱན་ལྤགས་	चक्षुचर्म
མིག་ལྡན་	སྤྱན་ལྡན་	चक्षुष्मान्, विद्वान्
མིག་ཤེལ་	སྤྱན་ཤེལ་	चश्मा
མིག་གྲུ་	སྤྱན་གྲུ་	चक्षुः कोण
མིག་སྤུ་	སྤྱན་སྤུ་	बरौनी
མིག་སྐྱུག་	སྤྱན་སྐྱུག་	आँख का कचरा

ग्रहणीय वस्तु की संज्ञा के पूर्व བཞེས་ या 'གསོལ་' (=ग्रहण) क्रिया जोड़ कर आदर सूचक संज्ञा बनाई जाती है । जैसे—

ཞོ་	བཞེས་ཞོ་	दही
བག་ལེབ་	བཞེས་བག	रोटी
འབྲས་	བཞེས་འབྲས་	भात
ཤ་	བཞེས་ཤ་	मांस

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཚལ་	བཞེས་ཚལ་	सब्जी
ཞོག་ཁོག་	བཞེས་ཁོག་	आलू
ལ་ཕུག་	བཞེས་ལབ་	मूली
ཐུག་པ་	བཞེས་ཐུག་	सूप
ཞལ་ཏོག་	བཞེས་ཏོག་	मिठाई
ཐུར་མ་	བཞེས་ཐུར་	चम्मच
ཡོས་	བཞེས་ཡོས་	भूँजा
ཆང་	བཞེས་ཆང་	कच्चा मदिरा
ཀུ་ཤུ་	བཞེས་ཤུ་	सेब
ཐ་མག་	བཞེས་ཐག་	तमाकू
ཁུ་ར་	བཞེས་ཁུར་	पूड़ी
ཁུ་བ་	བཞེས་ཁུ་	जूस
རྩམ་པ་	བཞེས་རྩམ་	सत्तू
ཞོ་	གསོལ་ཞོ་	दही
ཐུག་པ་	གསོལ་ཐུག་	सूप
མ་ཆེན་	གསོལ་དཔོན་	रसोइया
ཉ་	གསོལ་ཉ་	मछली
ལྟོ་ཆས་	གསོལ་ཚིགས་	भोजन
ཏིབ་རིལ་	གསོལ་ཏིབ་	चाय दान

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མར་	གསོལ་མར་	मक्खन
ཐབ་	གསོལ་ཐབ་	चौका
ཐབ་གཡོག་	གསོལ་གཡོག་	बेरा
ཇ་	གསོལ་ཇ་	चाय
ཅོག་ཙེ་	གསོལ་ཅོག་	मेज़
ཕོགས་	གསོལ་ཕོགས་	वेतन
སྨན་	གསོལ་སྨན་	दवा
ལྟོ་ཆས་	གསོལ་ཆས་	भोजन
ཐབ་ཚང་	གསོལ་ཁང་	रसोइघर
དཀར་ཡོལ་	གསོལ་དཀར་	प्याला
ཞིབ་ར་	གསོལ་ཞིབ་	सत्तू
ཇན་པ་	གསོལ་རས་	परितोषक

कुछ आदर सूचक क्रियाएं

འོང་བ་	ཕེབས་པ་	पधारना
ལྟ་བ་	གཟིགས་པ་	देखना
ཤེས་པ་	མཁྱེན་པ་	जानना
ཉན་པ་	གསན་པ་	सुनना
ངུ་བ་	ཤུམ་པ་	रोना

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དགོད་པ་	བཞད་པ་	हँसना
ཟ་བ་	མཆོད་པ་ = བཞེས་པ་	खाना
སྐྱེ་བ་	ལྟམ་པ་	पैदा होना
བཙའ་བ་	འཁྲུངས་པ་	पैदा होना
སེམས་པ་	བཞེད་པ་ = དགོངས་པ་	विचारना
ཉལ་བ་	གཟིམ་པ་	सोना
གཏོང་བ་	གནང་བ་ = སྩོལ་བ་	देना
ན་བ་	སྙུང་པ་	बीमार होना
འཆི་བ་	གྲོངས་པ་	मरना
སྨྲ་བ་	གསུང་བ་	कहना
སྡོད་པ་	བཞུགས་པ་	बैठना
འགྲོ་བ་	གཤེགས་པ་	जाना
འོང་བ་	འབྱོན་པ་	आना
ལེན་པ་	བཞེས་པ་ = སྣོམ་པ་	लेना
འཁྲུད་པ་	བཤལ་བ་	धोना
ཟེར་བ་	ཞུ་བ་	कहना
བྱེད་པ་	གནང་བ་ = མཛད་པ་	करना
ངལ་བ་	འོ་བརྒྱལ་བ་	कष्ट होना

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पशुओं तथा जड़ वस्तुओं की संज्ञा के आदर सूचक शब्द नहीं बनते, परन्तु जिस पशु अथवा वस्तु का संबन्ध किसी मानव जाति के साथ रहे, और वक्ता उस के लिये आदर भाव व्यक्त करना चहे तो उसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति के साथ जुड़ा कर प्रयोग किया जाता है । जैसे—

དཔོན་པོའི་ཆིབས།	= अधिकारी का घोड़ा ।
ཁྱེད་ཀྱི་གསོལ་ཅོག་	= आप की मेज़ ।
ཕ་ལགས་ཀྱི་ཕྱག་བེར།	= पिता जी की छड़ी ।
མཁས་པའི་གསུང་བཤད།	= विद्वान् का भाषण ।
ལྕམ་སྐུ་ཞབས་ཀྱི་མགུལ་རྒྱན།	= श्रीमती का कंठा ।

བརྗོད་པ།

གནས་པོ་དང་མགྲོན་པོ།= आतिथेय और अतिथि

སྐུ་ཞབས་ལགས། ཁྱེད་ཀྱི་མཚན་གང་ལགས། ཁྱེད་ཀྱི་འཁྲུངས་ཡུལ་གང་ཡིན། ཕེབས་ལམ་ལ་འོ་བརྒྱལ་ལྷ་བྱུང་མ་སོང་ངམ། སྐུ་ཆས་གང་བསྣམས་ཡོད། ཞབས་ཕྱི་སུ་ཡོད། ལྕམ་སྐུ་ཞབས་ཀྱང་མཉམ་དུ་ཡོད་འདུག། སྲས་སྲས་མོ་ག་ཚོད་ཡོད། ཡབ་ཡུམ་གཉིས་སྐུ་གཟུགས་བདེ་པོ་ཡིན་འདུག།། དེ་རིང་བདག་གི་ཕུར་བཞུགས་གདན་འཛམས་རོགས་གནང་། དབུ་གདུགས་དང་སྐུ་ཆས་སོགས་འདིར་འཇོག་རོགས་གནང་། ཞལ་ལག་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གང་བཞེས་ཀྱི་ཡིན་པས། གལ་ཏེ་ཁྱེད་ཟླ་བ་གཅིག་ཙམ་འདིར་བཞུགས་པའི་ཐུགས་འདོད་གནང་ན་གཟིམས་ཤག་ཀྱང་བདག་གིས་འབུལ་ཆོག །

གྲོགས་པོ་ལགས། ཐུགས་རྗེ་ཆེ། བདག་གི་མིང་ཙན་དྲ་སིཧྣ་ (= ཟླ་བ་སེངྒེ་) རེད། ངའི་སྐྱེ་ཡུལ་རྒྱ་གར་རེད། ལམ་འགག་ལ་དཀའ་ལས་གང་ཡང་མ་བྱུང་། ཅ་ལག་མང་པོ་མེད། གཡོག་པོ་རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་པ་ཞིག་ཡོད། སྐྱེ་དམན་ཡང་མཉམ་དུ་ཡོང་ཡོད། བུ་ཚ་དང་བུ་མོ་གཉིས་ཡོད། ཕ་མ་གཉིས་ཁམས་བཟང་ཡིན། ཁ་ལག་འབྲས་སམ་བག་ལེབ་གང་ཡང་བཟོ་རོགས་གནང་།

वाक्य

महाशय जी, आप का नाम क्या है ? आप का जन्मस्थान कहाँ है ? क्या मार्ग में कष्ट तो नहीं हुआ ? सामान क्या लिये हैं ? सेवक कौन है ? शायद श्रीमती भी साथ में होगी । पुत्र (एवं) पुत्री कितने हैं ? सम्भवतः माता पिता दोनों स्वस्थ होंगे । आज मेरे पास बैठिये । छाता और सामान इत्यादि यहाँ रख दीजिये । भोजन क्या ग्रहण कीजियेगा ? यदि आप एक मास (के) लगभग यहाँ रहने का विचार करें तो मकान भी मैं दे सकता (हूँ) ।

मित्र जी, धन्यवाद । मेरा नाम चन्द्रसिंह है । मेरा जन्मस्थान भारत है । मार्ग में कुछ भी कष्ट नहीं हुआ । सामान ज्यादा नहीं है । नौकर एक दक्षिण भारतीय है । औरत भी साथ में आयी है । पुत्र एवं पुत्री दो हैं । माता पिता दोनों स्वस्थ हैं । भोजन भात या रोटी कुछ भी बनाइए

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྡུད་པ། = समास

ཚིགས་བཅད་འགྲོལ་ཚུལ། = पद विग्रह विधि

सू0— ཚིགས་སུ་བཅད་པའི་མཚམས་སྦྱོར་རྣམས།།
ཅུང་ཟད་བསྡུས་པ་ཡོད་ན་ཡང་།།
དེ་ནི་དེ་བཞིན་སྦྱར་བར་བྱ།།

अनु0— (त्रिपिटक तथा शास्त्रों में) पदों की प्रतिसंधियाँ, (अधिक की गई हों तो कहना ही क्या) तनिक भी समस्त (=समास की हुई) हों तो, उन में (उपर्युक्त नियम के) अनुसार (विभक्ति और प्रत्यय इत्यादि) लगाना चाहिए । (अर्थात् व्याकरण के नियमानुसार प्रत्ययों का जहाँ तहाँ उपर्युक्त हो, प्रयोग करके वाक्य का भाव समझना चाहिये ।) जैसे—

སྡུད་པ། = समास	འབྱེད་པ། = विग्रह
བསོད་ནམས་རྒྱ་མཚོ། पुण्य सागर ।	བསོད་ནམས་ཀྱི་རྒྱ་མཚོ། पुण्यों का सागर ।।
དོན་གྲུབ། सिद्धार्थ ।	དོན་ཀུན་གྲུབ་པ། सर्वसिद्धार्थ ।।
བློ་རྟུལ། मन्दबुद्धि ।	བློ་རྟོགས་རྟུལ་པོ། मन्दबुद्धि ।।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འཆི་མེད་གནས།	འཆི་བ་མེད་པའི་གནས།
अमृतपद ।	अमृतपद ।
ཕ་མ།	ཕ་དང་མ།
माता पिता ।	माता और पिता ।

བསླབ་གསུམ་བརྒྱན་པ། བསླབ་པ་ཚུལ་ཁྲིམསདང་། བསླབ་པ་ཤེས་རབ་དང་། བསླབ་པ་བསམ་གཏན་གསུམ་གྱིས་བརྒྱན་པ།
शीलशिक्षा <u>और</u> प्रज्ञा शिक्षा और समाधि शिक्षा तीनों के द्वारा अलंकृत ।

भोट भाषा में हिन्दी अथवा संस्कृत की तरह समास के मुख्य छः भेद हैं —

མི་ཟད་པ། དེའི་སྐྱེས་བུ། ལས་འཛིན་པ། བ་གཉིས་པ། འབྲུ་མང་། ལྷས་དབྱེ།

མི་ཟད་པ། = अव्ययीभाव

མངོན་ཕྱོགས།	མངོན་པར་ཕྱོགས་པ།
अभिमुख ।	मुख (दिशा) के सामने ।
ཉིན་རེ།	ཉི་མ་རེ་རེ།
प्रतिदिन ।	दिन दिन ।

དེའི་སྐྱེས་བུ། = तत्पुरुष

རྒྱལ་སྲས།	རྒྱལ་པོའི་སྲས།
राजकुमार ।	राजा का कुमार ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཡུལ་བཏོན།	ཡུལ་ལས་བཏོན་པ།
देशनिष्क्रान्त ।	देश से निकला हुआ ।

ལས་འཛིན། = कर्मधारय

གསེར་བུམ།	གསེར་བཟོས་བུམ་པ།
स्वर्ण कलश ।	स्वर्ण निर्मित कलश ।
ལྷ་ཆེན།	ལྷ་ཆེན་པོ།
महादेव ।	महान देव ।

བ་གཉིས་པ། = द्विगु

ཁམས་གསུམ།	ཁམས་གསུམ་པོ་བསྡུས་པ།
तीन भुवन ।	तीन भुवनों का समूह ।
མཆོག་གསུམ།	མཆོག་གསུམ་གྱི་ཚོགས།
त्रिरत्न ।	तीन रत्नों का समूह ।

འབྲུ་མང་། = बहुब्रीही

དྲི་བྲལ།	གང་དྲི་མ་ལས་བྲལ་བ།
विमल ।	निकल गया है मल जिस में से ।
ཕྱག་རྡོར།	ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ།
वज्रपाणी ।	वज्र है हाथ में जिस के ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཟླས་དབྱེ། = द्वन्द

ཉི་ཟླ།	ཉི་མ་དང་ཟླ་བ།
सूर्यचन्द्र ।	सूर्य और चन्द्रमाँ ।
ཕ་མ།	ཕ་དང་མ།
माता पिता ।	माता और पिता ।

ཉེ་སྒྱུར་ཉི་ཤུ། = **बीस उपसर्ग**

उपसर्ग के प्रयोग से धातु का अर्थ बलपूर्वक बदल जाता है । संस्कृत अथवा हिन्दी उपसर्गों के भोटभाषा में निम्न प्रयोग मिलते हैं ।

རབ།	རབ་གསལ་།	རབ་འབྱོར།	རབ་བྱེད་།	རབ་དགའ།
प्र—	प्रकाश	प्रयोग	प्रकरण	प्रमुद
གཞན།	གཞན་སྐྱོབ།	གཞན་རྒྱལ།	གཞན་གནོན།	ཞན་བྱུང་།
परा—	पराश्रय	पराजय	पराक्रम	पराभूत
ངན་པ།	ཚིག་ངན།	མིང་ངན།	མིང་ངན།	ལས་ངན།
अप—	अपशब्द	अपकीर्ति	अपनाम	अपकर्म
བྲལ་བ།	ཕྱོགས་བྲལ།	འཇིགས་བྲལ།	རིམ་བྲལ།	གཉིད་བྲལ།
अप—	अपदिश	अपभय	अपकर्म	अपनिद्रा
རྫོགས་པ།	རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས།		རྫོགས་བྱང་།	རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ།
सम्—	सम्बुद्ध		सम्बोध	सम्बोधि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཡང་དག་པ།	ཡང་དག་སྦྱོར་བ།	ཡང་དག་བསྡུས་པ།	ཡང་དག་སྡོམ་པ།
सम्—	संयोग	संगृहीत	संयम
རྗེས་སུ།	རྗེས་སུ་འགྲོ་བ་པོ།	རྗེས་དཔག	རྗེས་ཆགས།
अनु—	अनुगामी	अनुमान	अनुरक्त
མཐུན།	མཐུན་གཟུགས།	མཐུན་ཕྱོགས།	མཐུན་ཡིག
अनु—	अनुरूप	अनुपक्ष	अनुलिपि
དམན་པ།	ཡོན་ཏན་དམན་པ།	རིགས་དམན་པ།	བགྲོད་པ་དམན་པ།
अव—	अवगुण	अवजाति	अवगति
མེད་པ།	སྐྱོན་མེད།	འཇིགས་མེད།	རྙོག་མེད།
निर्—	निर्दोष	निर्भय	निष्कलंक
ངན་པ།	སྤྱོད་ངན།	མི་ངན།	མདོག་ངན།
दुर्—	दुराचार	दुर्जन	दुर्वर्ण
དཀའ་བ།	རྙེད་དཀའ།	འགྲོ་དཀའ་བ།	ཤེས་དཀའ་བ།
दुर्—	दुर्लभ	दुर्गम	दुर्ज्ञेय
རྣམ་པར།	རྣམ་པར་རྒྱལ་བ།	རྣམ་པར་ཤེས་པ།	རྣམ་པར་བཤད་པ།
वि—	विजय	विज्ञान	विभाषा
བྲལ་བ།	དྲི་བྲལ།	ཆགས་བྲལ།	ཡོན་ཏན་བྲལ་བ།
वि—	विमल	विराग	विगुण

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ངེས་	ངེས་འགོག	ངེས་བསྐོས།	ངེས་ལྷུང་།
नि—	निरोध	नियुक्त	निपात
ལྷག་པ།	ལྷག་པ་ཚུལ་ཁྲིམས།	ལྷག་པ་ཤེས་རབ།	ལྷག་པའི་དབང་ཕྱུག
अधि—	अधिशील	अधि प्रज्ञा	अधीश्वर
	ལྷག་པ་བསམ་གཏན།	ལྷག་པའི་ལྷ།	ལྷག་པའི་བདག་པོ།
	अधि समाधि	अधि देव	अधिपति
ཤིན་ཏུ།	ཤིན་ཏུ་ཁྲོ་བ།	ཤིན་ཏུ་མང་པོ།	ཤིན་ཏུ་རྒ་བ།
अति—	अतिचण्ड	अत्यधिक	अतिजर
ལེགས་པ།	ལེགས་འོངས།	ལེགས་སྐྱེས་མ།	ལེགས་བྱས།
सु—	स्वागत	सुजाता	सुकृत
བཟང་།	ལས་བཟང་།	ཚུལ་བཟང་།	དྲི་བཟང་།
सु—	सुकर्म	सुशील	सुगन्ध
རབ།	རབ་དགའ།	རབ་འབྱོར།	རབ་དུལ།
सु—	सुमोद	सुभूति	सुदान्त
མཆོག	མཆོག་འདོད།	མཆོག་རྒྱས།	མཆོག་རབ།
उत्—	उत्कण्ठा	उत्कीर्ण	उत्तम
མཐོན་པོ།	མཐོན་སྐྱེད།	མཐོན་པོའི་ལྷ།	མཐོན་བསྐྱེད
उत्—	उत्थान	उत्सुर	उत्थापित

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མངོན།	མངོན་ཞེན།	མངོན་རློམ།	མངོན་ཤེས།
अभि—	अभिरत	अभिमान	अभिज्ञा
རེ་རེ།	ཉིན་རེ་རེ།	ཟླ་བ་རེ་རེ།	མི་རེ་རེ།
प्रति—	प्रतिदिन	प्रतिमास	प्रति व्यक्ति
ཡོངས་སུ།	ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ།	ཡོངས་སུ་འཛིན་པ།	ཡོངས་སུ་བྱིན།
परि-	परिपूर्ण	परिग्रह	परिदत्त
ཀུན།	ཀུན་དགའ།	ཀུན་གསལ།	ཀུན་སྤྱོད།
आ—	आनन्द	आकाश	आचरण
གང་།	ཚེ་གང་།	མི་ཚེ་གང་།	རྩ་བ་གང་།
आ—	आजन्म	आजीवन	आमूल
ཉེ་བར།	ཉེ་བར་སྤྱོད་པ།	ཉེ་བར་བསྟན་པ།	ཉེ་བར་འཚེ་བ།
उप-	उपचारना	उपदेश	उपद्रव
ཉེ་བ།	ཉེ་དགའ།	ཉེ་སྦས།	ཉེ་བཀོད།
उप-	उपानन्द	उपगुप्त	उपन्यस्त
ཡང་།	གང་ཡང་།	ཇི་ལྟར་ཡང་།	དེ་ལྟ་ཡང་།
अपि—	किमपि	यथापि	तथापि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཚིག་ཕྲད། = निपात

ཞིང་།	ཅིང་།	ཤིང་།	= कर, करके, करते हुये, हुये ।
ཞེས།	ཅེས།	ཤེས།	= कहा, इस प्रकार, इति ।
ཞེའོ།	ཅེའོ།	ཤེའོ།	= कहा, कहते हैं ।
ཞེ་ན།	ཅེ་ན།	ཤེ་ན།	= कहे तो, कहने पर।
ཞིག	ཅིག	ཤིག	= एक (अनिश्चित) विधि ।

भोट भाषा में ये पन्द्रह तरह के 'ཚིག་ཕྲད་' यत्र तत्र युक्त होते हैं । इन का अर्थ सर्वथा एक सा नहीं रहता, वाक्यों के अनुसार अर्थ बदल जाता है । पराक्षर ང་ ན་ མ་ འ་ ར་ ལ་ तथा बिना पराक्षर वाले शब्दों के परे ཞིང་། ཞེས། ཞེའོ། ཞེ་ན། ཞིག आदि लगते हैं । तदनुसार ག་ད་བ་ तथा ད་ परात्पराक्षर के पश्चात् ཅིང་ आदि । ས་ पराक्षर के पश्चात् ཤིང་། आदि तथा विकल्प से ཞིང་། आदि लगते हैं । जैसे—

ཡི་གེ་འབྲི་ཞིང་།	= पत्र लिखते हुये ।
འཛུམ་དམུལ་ཞིང་བཤད།	= मुसकरा कर कहा ।
ཅེས་གསུངས་སོ།།	= इस प्रकार कहा ।
ནོར་ཡོད་ཅེའོ།།	= धन है कहते हैं ।
ལས་ཤིག་བྱེད་དང་།	= कोई काम करो ।
ནོར་ཡོད་ཅེ་ན།	= धन है कहे तो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཆོས་ཞེས་བྱ་བ། = धर्म नामक ।

གང་ལགས་ཞེ་ན། = क्या है कहे तो ।

ཐོས་ཤེས་བྱའོ།། = सुना इस प्रकार कहा ।

རྗེས་འཇུག་གི་དགོས་པ། = पराक्षरों की आवश्यकता

सू0— སྔོན་འཇུག་ཡོད་དམ་མེད་ཀྱང་རུང་།།
མིང་གཞིའི་ཡི་གེ་གང་ཡིན་ལ།།
གཉིས་འབྲེལ་ཡོད་དམ་གསུམ་འབྲེལ་ཡོད།།
ཨ་ལི་བཞི་ལས་གང་ལྡན་ཡང་།།
རྗེས་འཇུག་བཅུ་པོ་མ་ཞུགས་ན།།
མིང་གཞན་སྦྱོར་བ་ཡོད་མི་སྲིད།།

अनु0— (संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के पहले) पूर्वाक्षर (ག་ད་བ་མ་འ་) रहे अथवा न भी रेहे, (परन्तु) संज्ञामूलक (= མིང་གཞི) के वर्ण जिनमें, दो (दो वर्णों का) योग हो अथवा तीन (तीन वर्णों का) योग हो । (जैसे, ཕྱ། ཀྱ། སྒྲ། རྒྱ། इत्यादि, तथा इन शब्दों पर) चार (प्रकार की) स्वरों (में) से कोई भी लगे (अथवा न लगे । जैसे, ཀྱུ། སྒྲོ། རྒྱུ། ཀྱ། སྒྲ། རྒྱ། इत्यादि। तो उन में यदि) दसों पराक्षरों (ག་ང་ད་ན་བ་མ་འ་ར་ལ་ས་ में का कोई भी) युक्त न हो तो, (ऐसी अवस्था में उन से किसी) दूसरी

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

संज्ञा (का) औचित्य (युक्ति संगत अर्थ निकालना) असम्भव है । (अर्थात ऐसी कोई संज्ञा[1] नहीं बनती ।

ཇེས་འཇུག་ཤེས་པའི་དགོས་པ། = **पराक्षर ज्ञान का प्रयोजन**

सू०— ཇེས་འཇུག་བཅུ་ཡི་དོན་ཤེས་ན།།
འབྲི་དང་ཀློག་དང་བཤད་རྣམས་ཀྱི།།
མཚམས་སྦྱོར་སྔ་ལ་ཐོགས་མེད་ཅིང་།།
འབྲེལ་བ་སྨྲ་བའི་མཆོག་ཏུ་འགྱུར།།
གཞན་ཡང་ཇེས་འཇུག་ཤེས་པ་ཡིས།།
དོན་གྱི་སྦྱོར་བ་མ་མཐོང་ཡང་།།
དོན་དང་མཐུན་པའི་སྦྱོར་བ་ཤེས།།

अनु०— दसों पराक्षरों का अर्थ (= प्रयोग अच्छी तरह) जाने तो, (शुद्ध) रचना (शुद्ध) वाचना तथा (मधुर) भाषणों (में, इस के अतिरिक्त शब्दों की परस्पर) प्रतिसंधियों में (तथा व्याकरण के नियमों में) अपूर्व (ज्ञाता हो) कर युक्ति युक्त श्रेष्ठ प्रवक्ता होता है ।

---

१. यद्यपि ཀླ། མི། ཆུ། ས། སྒྲ། इत्यादि विना पराक्षर के शब्द लिखे जाते हैं । वस्तुतः ये शब्द पराक्षर से रहित नहीं हैं । इनके असली रूप ཀླའ། མིའ། ཆུའ། སའ། སྒྲའ། होता है किन्तु बाद में भाषा संशोधन के समय जैसे— དཔའ། དགའ། མདའ། आदि कुछ शब्दों को छोड़कर शेष शब्दों से पराक्षर 'འ' हटा दिया गया है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

और भी पराक्षरों (का प्रयोग भलीभांति) जानने से (शब्दों और) अर्थों के प्रयोग (के नियम पहले कभी) देखे न (होने पर) भी, अर्थ से संगत (शब्द) निर्माण करना जानेगा ।

དོན་ལ་འཇུག་ཚུལ། = अर्थ निरूपण

सू0— ཇེས་འཇུག་སྦྱོར་བ་མཁས་པ་ནི།།
ལུང་གི་དོན་དང་སྦྱོར་བ་དང་།།
བླ་མའི་མན་ངག་གསུམ་སྦྱར་ནས།།
དོན་གྱི་ཐོག་ཏུ་དཔབ་པར་བྱ།།

अनु0— पराक्षरों (के) प्रयोगों (में) विद्वत्ता (प्राप्त पुरुषों को) तो, आगमों के अर्थ (उन के) प्रयोग तथा गुरुजनों के उपदेश (इन) तीनों (का) योग कर, (रचनाओं के नियम तथा) अर्थों के निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिये ।

བསླབ་ཚུལ་གྱི་གོ་རིམ། = शिक्षण विधि का क्रम

सू0— བསླབ་ལ་བརྩོན་པའི་གང་ཟག་གིས།།
དང་པོ་ང་རོ་རྣམས་ལ་སྦྱང་།།

अनु0— शिक्षा (अर्जन) में लगे व्यक्ति के द्वार (सर्व) प्रथम (वर्णों के) उच्चारणों को अभ्यास (करना चाहिये) ।

सू0— སྔོན་འཇུག་མིང་གཞི་རྗེས་འཇུག་གསུམ།།
ཀློག་གི་ཆེད་དུ་བསླབ་པ་ཡིན།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— (पाँच) पूर्वाक्षर (तीस) संज्ञामूलक (तथा दस) पराक्षरों (की व्यवस्था तो शुद्ध) उच्चारण के लिये बतायी (गई) है ।

सू0— རྗེས་འཇུག་བཞི་ཡི་སྦྱོར་བ་ནི།།
མཉན་བསམ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་སྤྱར།།
ཡན་ལག་དེ་དག་མཐུ་ཡིས་ནི།།
འབྲས་བུའི་ཆེད་དུ་དོན་ལ་དབབ།།

अनु0— पराक्षरों (के) चार[1] (तरह) के संयोजन (भी) तो, श्रवण, चिंतन (तथा) निर्देशन के लिये प्रयोग में (लाना) चाहिये । (उच्चारण और व्याकरण के नियमों के) उन अंगों (= सिद्धान्तों) के बल से <u>तो</u>, (पांडित्व) फल (प्राप्त करने) के लिए यथार्थ में लगना (चाहिये, अर्थात् परिश्रम करना चाहिए ।)

सू0— བསླབ་པའི་རིམ་པ་འདི་ཡིས་ནི།།
གང་ཞིག་འབད་པ་ཆུང་ངུས་ཀྱང་།།
ཤེས་རབ་མྱུར་དུ་གྲོལ་བར་འགྱུར།།
དེ་ཕྱིར་དང་པོར་དེ་ཉིད་བསླབ།།
དེ་ནས་རྒྱས་པའང་མཉན་བྱས་ཏེ།།
བསླབ་པ་གང་ལ་དད་པ་ཡི།།
གཞུང་ཉིད་བླ་མ་དག་ལས་མཉན།།

---

१. (१) དོན་གང་ལ་འཇུག་པ། (२) ཡི་གེ་གང་གིས་འཇུག་པ། (३) ཚུལ་ཇི་ལྟར་འཇུག་པ། (४) དགོས་པ་ཅི་ཕྱིར་འཇུག་པ། दूसरे अध्याय में देखिये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— इस (तरह) के शिक्षा क्रम से तो, (यदि) कोई (व्यक्ति) थोड़ा (सा) भी परिश्रम (करता है तो) भी, (उसका) ज्ञान शीघ्र खुल जायेगा। इसलिये पहले यही (སུམ་ཅུ་པ་) सीखे, तत्पश्चात् वृहत् (ज्ञान के लिये རྟགས་འཇུག་) भी श्रवण करके, (उस के बाद) जिन शिक्षापदों (= अधिशील, अधिप्रज्ञा तथा अधिध्यान) में (अपनी) श्रद्धा रहे वही साहित्य गुरुजनों से श्रवण करे ।

གདམས་ངག་སྟོན་རུང་ལ་བསྟན་པ། = योग्य पात्र को उपदेश देना

सू0— སློབ་དཔོན་དེ་ཉིད་དུ་འཛིན་ཅིང་།།
ལེ་ལོ་གཡེང་བ་རྣམ་པར་སྤངས།།
ཟེ་བཟང་དད་པ་ལ་བརྟེན་པ།།

अनु0— (शिक्षार्थी अपने आचार्य के) आचार्यत्व (=गुरुभाव को मन में) धारण करे । आलस्य (और) आवारापन (का) परित्याग (करे)। सज्जनता (तथा) श्रद्धा में आधारित (=युक्त) हो ।

སློབ་དཔོན་གྱི་མཛད་སྤྱོད། = आचार्य का कर्तव्य

सू0— སྐྱེས་བུ་དེས་ནི་སྐུར་ཚོགས་ཏེ།།
དེ་ལ་དུས་སུ་འདོམས་པར་བྱ།།
ཅིག་ཤོས་དེ་ལས་ལྡོག་པའོ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— उन पुरुषों (के) द्वारा तो (किसी भी विषय की) शीघ्र बोध किया करते हैं । (अतः) उनको (पढ़ाई की अवस्था जान कर) समय में सिखाना चाहिये । इन (गुणों से) विपरीत (स्वभाव वालों से) निवृत होना चाहिये । (अर्थात् अनुशासनहीन, आलसी, आवरा,दुष्ट तथा आस्था हीन पुरुषों को इस व्याकरण की शिक्षा नहीं देनी चाहिये ।)

ཝྱཱ་ཀ་ར་ཎའི་རྩ་བ་བརྒྱད་པ་ལས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་ཝྱཱ་ཀ་ར་ཎ་དང་པོའི་སྐབས་ཏེ་ལྔ་པའོ།།

(संस्कृत के) मूल आठ व्याकरणों में से संभोट व्याकरण, प्रथम अवकाश का पंचम (परिवर्त) ।

कुछ उपयोगी संज्ञाएँ

ཕྱོགས་བཞི་དང་མཚམས་བརྒྱད། = चार दिशायें तथा आठ कोण

ཤར། = पूर्व ।

ནུབ། = पश्चिम ।

ལྷོ། = दक्षिण ।

བྱང་། = उत्तर ।

ཤར་ལྷོ། = आग्नेयी ।

ནུབ་བྱང་། = वायव्य।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྲིན་བུབ།	= नैऋत्य ।
བྱང་ཤར།	= ईशान ।

གཟའ་བདུན་ནམ་བདུན་ཕྲག = सात ग्रह या सप्ताह

གཟའ་ཉི་མ།	= रविवार ।
གཟའ་ཟླ་བ།	= सोमवार ।
གཟའ་མིག་དམར།	= मंगलवार ।
གཟའ་ལྷག་པ།	= बुधवार ।
གཟའ་ཕུར་བུ།	= बृहस्पतिवार ।
གཟའ་པ་སངས།	= शुक्रवार ।
གཟའ་སྤེན་པ།	= शनिवार ।

ནམ་ཟླ་བཞི། = चार ऋतुएं

དཔྱིད་ཀ།	= वसन्त ।
དབྱར་ཁ།	= ग्रीष्म ।
སྟོན།	= शरद् ।
དགུན་ཁ།	= हेमन्त ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྐད་རིགས་བཞི། = चार प्रकार की भाषाएं

ལེགས་སྦྱར།	= संस्कृत ।
ཟུར་ཆག	= अपभ्रंश ।
རང་བཞིན།	= प्राकृत ।
ཤ་ཟའི་སྐད།	= पैशाचिक ।

ཟླ་བ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་མིང་། = बारह मासों के नाम

ग्रामीण मास	शास्त्रीय मास	
ཟླ་བ་དང་པོ།	ཆོས་འཕྲུལ་ཟླ་བ།	= माघ ।
ཟླ་བ་གཉིས་པ།	སྦོ་ཟླ་བ་	= फाल्गुन ।
ཟླ་བ་གསུམ་པ།	ནག་པ་ཟླ་བ་	= चैत्र ।
ཟླ་བ་བཞི་པ།	ས་ག་ཟླ་བ་	= वैशाख ।
ཟླ་བ་ལྔ་པ།	སྣྲོན་ཟླ་བ་	= ज्येष्ठ ।
ཟླ་བ་དྲུག་པ།	ཆུ་སྟོད་ཟླ་བ་	= आषाढ़ ।
ཟླ་བ་བདུན་པ།	གྲོ་བཞིན་ཟླ་བ་	= श्रावण ।
ཟླ་བ་བརྒྱད་པ།	ཁྲུམས་སྟོད་ཟླ་བ་	= भाद्रपद ।
ཟླ་བ་དགུ་པ།	ཐ་སྐར་ཟླ་བ་	= आश्विन ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཟླ་བ་བཅུ་པ།	སྨིན་དྲུག་ཟླ་བ་	= कार्तिक ।
ཟླ་བ་བཅུ་གཅིག་པ།	མགོ་ཟླ་བ་	= मार्गशीर्ष ।
ཟླ་བ་བཅུ་གཉིས་པ།	རྒྱལ་ཟླ་བ་	= पौष ।

ལོ་འཁོར་བཅུ་གཉིས། = द्वादश वर्ष संवत्

བྱི་བ།	= मूषक ।
གླང་།	= वृष ।
སྟག	= व्याघ्र ।
ཡོས།	= शश ।
འབྲུག	= नाग । (Dragon)
སྦྲུལ།	= सर्प ।
རྟ།	= अश्व।
ལུག	= मेष।
སྤྲེ།	= वानर।
བྱ།	= पक्षी।
ཁྱི།	= श्वान ।
ཕག	= शूकर ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བཀྲ་ཤིས་རྟགས་བརྒྱད། = अष्ट मंगल चिन्ह

གདུགས།	= छाता ।
གསེར་ཉ།	= सुवर्णमत्स्य ।
པདྨ།	= पद्म ।
དུང་།	= शंख।
དཔལ་བེའུ།	= श्रीवत्स ।
འཁོར་ལོ།	= चक्र ।
བ་དན།	= पताका ।
བུམ་པ།	= कुम्भ ।

བཀྲ་ཤིས་རྫས་བརྒྱད། = अष्ट मंगल वस्तु

མེ་ལོང་།	= आदर्श ।
ཞོ།	= दही ।
ལི་ཁྲི།	= सिन्धुर ।
དུང་།	= शंख ।
དོན་གྲུབ་སྙེ་ཡུངས་ཀར།	= सिद्धार्थ ।
རྩྭ་པ་སྟོང་ལྡན་དེ་དྭ།	= सहस्रवीर्य ।
དཔལ་འབྲས་དེ་བིལ་བ།	= श्रीफल ।
གླང་བཙུད་དེ་གི་ཝང་།	= गोरोचन ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རིན་ཆེན་སྣ་བདུན། = सप्त रत्न

འཁོར་ལོ་རིན་པོ་ཆེ།	= चक्र रत्न ।
ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེ།	= मणिरत्न ।
བཙུན་མོ་རིན་པོ་ཆེ།	= स्त्रीरत्न ।
བློན་པོ་རིན་པོ་ཆེ།	= परिनायक (मंत्री) ।
གླང་པོ་རིན་པོ་ཆེ།	= हस्ति रत्न ।
རྟ་མཆོག་རིན་པོ་ཆེ།	= अश्व रत्न ।
དམག་དཔོན་རིན་པོ་ཆེ།	= सेनापति ।

ཁྱིམ་བཅུ་གཉིས། = बारह राशि

ལུག	= मेष ।
གླང་།	= वृषभ ।
འཁྲིག་པ།	= मिथुन ।
ཀར་ཀ་ཏ།	= कर्क ।
སེང་གེ	= सिंह ।
བུ་མོ།	= कन्या ।
སྲང་།	= तुला ।
སྡིག་པ།	= वृश्चिक ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཞུ།	= धनुष ।
ཆུ་སྲིན།	= मकर ।
བུམ་པ།	= कुम्भ ।
ཉ།	= मीन ।

འབྱུང་བ་བཞི། = चार महाभूत

ས།	= पृथिवी ।
ཆུ།	= आप ।
མེ།	= तेज ।
རླུང་།	= वायु ।

རིག་གནས་ཆེ་བ་ལྔ། = पंचमहा विद्या

སྒྲ་རིག་པ།	= शब्द विद्या ।
ཚད་མ་རིག་པ།	= प्रमाण विद्या ।
གསོ་བ་རིག་པ།	= चिकित्सा विद्या ।
བཟོ་བ་རིག་པ།	= शिल्प विद्या ।
ནང་དོན་རིག་པ།	= आध्यात्मिक विद्या ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཨང་གྲངས། = गिनती

གཅིག་	= एक	བཅུ་བདུན་	= सत्रह
གཉིས་	= दो	བཅོ་བརྒྱད་	= अठारह
གསུམ་	= तीन	བཅུ་དགུ་	= उन्नीस
བཞི་	= चार	ཉི་ཤུ་ཐམ་པ་	= बीस
ལྔ་	= पाँच	རྩ་བཅིག་	= इक्कीस
དྲུག་	= छः	རྩ་གཉིས་	= बाईस
བདུན་	= सात	རྩ་གསུམ་	= तेईस
བརྒྱད་	= आठ	རྩ་བཞི་	= चौबीस
དགུ་	= नौ	རྩ་ལྔ་	= पच्चीस
བཅུ་	= दस	རྩ་དྲུག་	= छब्बीस
བཅུ་གཅིག་	= ग्यारह	རྩ་བདུན་	= सत्ताईस
བཅུ་གཉིས་	= बारह	རྩ་བརྒྱད་	= अट्ठाईस
བཅུ་གསུམ་	= तेरह	རྩ་དགུ་	= उन्तीस
བཅུ་བཞི་	= चौदह	སུམ་ཅུ་ཐམ་པ་	= तीस
བཅོ་ལྔ་	= पन्द्रह	སོ་གཅིག་	= इकत्तीस
བཅུ་དྲུག་	= सोलह	སོ་གཉིས་	= बत्तीस

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སོ་གསུམ་	= तेंतीस	ལྔ་བཅུ་ཐམ་པ་	= पचास
སོ་བཞི་	= चौंतीस	ང་གཅིག་	= इक्यावन
སོ་ལྔ་	= पैंतीस	ང་གཉིས་	= बावन
སོ་དྲུག་	= छत्तीस	ང་གསུམ་	= तिरहन
སོ་བདུན་	=सैंतीस	ང་བཞི་	= चौवन
སོ་བརྒྱད་	=अड़तीस	ང་ལྔ་	= पचपन
སོ་དགུ་	=उंतालीस	ང་དྲུག་	= छप्पन
བཞི་བཅུ་ཐམ་པ་	=चालीस	ང་བདུན་	= सत्तावन
ཞེ་གཅིག་	= इकतालीस	ང་བརྒྱད་	= अट्ठावन
ཞེ་གཉིས་	= बयालीस	ང་དགུ་	= उनसठ
ཞེ་གསུམ་	= तेंतालीस	དྲུག་ཅུ་ཐམ་པ་	= साठ
ཞེ་བཞི་	= चौवालीस	རེ་གཅིག་	= इकसठ
ཞེ་ལྔ་	= पैंतालीस	རེ་གཉིས་	= बासठ
ཞེ་དྲུག་	= छियालीस	རེ་གསུམ་	= तिरसठ
ཞེ་བདུན་	= सैंतालीस	རེ་བཞི་	= चौंसठ
ཞེ་བརྒྱད་	= अड़ताली	རེ་ལྔ་	= पैंसठ
ཞེ་དགུ་	= उनचास	རེ་དྲུག་	= छासठ

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རེ་བདུན་ = सड़सठ

རེ་བརྒྱད་ = अड़सठ

རེ་དགུ་ = उनहत्तर

བདུན་ཅུ་ཐམ་པ། = सत्तर

དོན་གཅིག་ = इकहत्तर

དོན་གཉིས་ = बहत्तर

དོན་གསུམ་ = तिहत्तर

དོན་བཞི་ = चौहत्तर

དོན་ལྔ་ = पचहत्तर

དོན་དྲུག་ = छिहत्तर

དོན་བདུན་ = सतहत्तर

དོན་བརྒྱད་ = अठहत्तर

དོན་དགུ་ = उन्यासी

བརྒྱད་ཅུ་ཐམ་པ་ = अस्सी

གྱ་གཅིག་ = इक्यासी

གྱ་གཉིས་ = बयासी

གྱ་གསུམ་ = तिरासी

གྱ་བཞི་ = चौरासी

གྱ་ལྔ་ = पचासी

གྱ་དྲུག་ = छियासी

གྱ་བདུན་ = सत्तासी

གྱ་བརྒྱད་ = अट्ठासी

གྱ་དགུ་ = नवासी

དགུ་བཅུ་ཐམ་པ་ = नब्बे

གོ་གཅིག་ = इक्यानबे

གོ་གཉིས་ = बानबे

གོ་གསུམ་ = तिरानबे

གོ་བཞི་ = चौरानबे

གོ་ལྔ་ = पंचानबे

གོ་དྲུག་ = छियानबे

གོ་བདུན་ = सत्तानबे

གོ་བརྒྱད་ = अट्ठानबे

གོ་དགུ་ = निन्नानबे

བརྒྱ་ཐམ་པ། = सौ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཅིག་	= इकाई	१
བཅུ་	= दहाई	१०
བརྒྱ་	= सैंकड़ा	१००
སྟོང་	= हज़ार	१०००
ཁྲི་	= दस हजार	१००००
འབུམ་	= लाख	१०००००
ས་ཡ་	= दस लाख	१००००००
བྱེ་བ་	= कोटि	१०००००००
དུང་ཕྱུར་	= दस कोटि	१००००००००

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

दूसरा अध्याय

ཏགས་འཇུག = लिङ्गावतार

साधारणतया भोट भाषा में उपयोग होने वाली तिब्बती वर्णमाला में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दो प्रकार के लिङ्ग भेद हैं । ཨི་ ཨུ་ ཨེ་ ཨོ། चारों स्वर स्त्रीलिङ्ग तथा तीसों व्यञ्जन पुल्लिंग हैं । इस तरह सूत्र कहता है –

सूत्र०— ཕོ་ཡི་ཡི་གེ་འབའ་ཞིག་ལ།།
སྡེ་པ་ཕྱེད་དང་བརྒྱད་གནས་པའང་།།
སྡེ་ཚན་ལྔ་རུ་དབྱེ་བྱས་ནས།།
ཕོ་དང་མ་ནིང་མོ་དང་ནི།།
ཤིན་ཏུ་མོ་དང་བཞི་བཞི་རུ།།
སྡེ་པ་བཞི་པ་ཡན་ཆད་དབྱེ།།

अनु०—पुल्लिंग के (सूचक) अक्षर (= व्यञ्जन) मात्र में, (भी जो) अर्ध के साथ आठ (=साढ़े सात) वर्ग रहते हैं । (इन को लिङ्ग भेद से) पाँच समूहों में विभक्त करे तो, (सर्व प्रथम ཀ་ ཅ་ ཏ་ པ་) पुरुष और (ཁ་ ཆ་ ཐ་ ཕ་) नपुंसक और (ག་ ཇ་ ད་ བ་) स्त्री तथा (ང་ ཉ་ ན་ མ་) अतिस्त्री (आदि) चार चार (वर्णों) में चतुर्थ वर्ग (པ་) पर्यन्त पृथक् करें, जैसे—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

वर्ग	व्यञ्जन				
लिङ्ग	पुरुष	नपुंसक	स्त्री	अतिस्त्री	बन्ध्या
१	ཀ་	ཁ་	ག་	ང་	
२	ཅ་	ཆ་	ཇ་	ཉ་	
३	ཏ་	ཐ་	ད་	ན་	
४	པ་	ཕ་	བ་	མ་	

सू0— ལྷག་མ་བཅུ་བཞི་གནས་པ་ལ།།

अनु0— (तो) चौदह (वर्ण) शेष रह जाते हैं, जैसे—

ཙ་ ཚ་ ཛ་ ཝ།

ཞ་ ཟ་ འ་ ཡ།

ར་ ལ་ ཤ་ ས།

ཧ་ ཨ།

सू0— ཙ་སོགས་གསུམ་ནི་ཙ་སོགས་སྦྱར།།

ཝ་ནི་བ་དང་སྦྱར་བར་བྱ།།

ལྷག་མ་དྲུག་ནི་མོ་རུ་སྦྱར།།

ར་ལ་ཧ་མོ་གཤམ་སྟེ།།

ཨ་ནི་མཚན་མེད་ཅེས་ཀྱང་བྱ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— (उन चौदह वर्णों में से) ཙ་ (ཚ་ཛ་) इत्यादि तीन (वर्णों को) तो (क्रमशः दूसरे वर्ग के) ཅ་ (ཆ་ཇ་) इत्यादि (से) मिलावे, (तथा) ཀྵ་ (को) པ་ के साथ जोड़ियेगा । शेष (ཞ་ཟ་འ་ཡ་ཤ་ས་ इत्यादि) छः (वर्णों को) तो स्त्री(कक्ष) में जोड़े । ར་ལ་ཧ་ तो बन्ध्या है, (अतः बन्ध्या कक्ष में रखना चाहिये ।) ཨ་ तो लिङ्ग हीन है ऐसा भी कहते हैं । (अर्थात् ཨ་ का प्रयत्न अति मन्द होता है । अतः उसे भी बन्ध्या कक्ष में ही रखना चाहिये,) जैसे—

वर्ग	पुरुष	नपुंसक	स्त्री	अतिस्त्री	बन्ध्या
१	ཀ་	ཁ་	ག་	ང་	
२	ཅ་	ཆ་	ཇ་	ཉ་	
३	ཏ་	ཐ་	ད་	ན་	
४	པ་	ཕ་	བ་	མ་	
५	ཙ་	ཚ་	ཛ་	ཀྵ་	
६	ཞ་	ཟ་	འ་	ཡ་	
७	ར་	ལ་	ཤ་	ས་	
८	ཧ་	ཨ་			

सू0— སོ་ཡི་ཡི་གེའི་ནང་ནས་ནི།།
འཇུག་པའི་ཡི་གེ་བཅུ་དབྱུང་བྱ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— (उपर्युक्त कक्ष में) स्त्रीलिङ्गीय वर्ण[1] (ག· ང· ཇ· ཉ· ད· ན· བ· མ· ཛ· ཝ· ཞ· ཟ· འ· ཡ· ར· ལ· ཤ· ས· ཧ· ཨ· बीस) में से तो पैठ्य अक्षर (=पराक्षर) दस निकालियेगा, जैसे—

ག· ང· ཇ· ཉ· ད· ན· བ· མ· ཛ· ཝ· ཞ· ཟ·
འ· ཡ· ར· ལ· ཤ· ས· ཧ· ཨ·

རྗེས་འཇུག་བཅུ། = **दस पराक्षर**

ག· ང· ད· ན· བ· མ· འ· ར· ལ· ས།

सू0— འཇུག་པ་བཅུ་ཡི་ནང་ནས་ནི།།
སྔོན་འཇུག་ཡི་གེ་ལྔ་དབྱུང་བྱ།།

ག· ང· ད· ན· བ· མ· འ· ར· ལ· ས།

अनु0—पैठ (अक्षर = पराक्षर) दसों में से (भी) तो पूर्व पैठ (=पूर्वाक्षर) पाँच निकालियेगा, जैसे—

སྔོན་འཇུག་ལྔ། = **पाँच पूर्वाक्षर**

सू0—སྔོན་འཇུག་ཡི་གེ་ལྔ་པོ་ལ།།
ཕོ་དང་མ་ནིང་མོ་དང་ནི།།
ཤིན་ཏུ་མོ་དང་བཞི་རུ་དབྱེ།།

---

१. स्त्री वाचक वर्णों में स्त्री, अतिस्त्री तथा बन्ध्या आदि सभी कक्ष के वर्ण गिने जाते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0—पूर्व पैठ पाँचों अक्षरों को (भी)पुरुष और नपुंसक और स्त्री तथा अतिस्त्री (इन) चार (लिङ्गों) में विभक्त करें, जैसे—

लिङ्ग	नपुंसक	पुरुष	अतिस्त्री	स्त्री
पूर्वाक्षर	ག་ ད་	བ་	མ་	འ་

सू0— དེ་དག་རེ་རེའང་བཞི་བྱེད་དེ།།

अनु०—उन (में) प्रत्येक (पूर्वाक्षरों का प्रयोग) भी चार (तरह से) किया गया है ।

यथा, सूत्र प्रश्न करता है कि:—

सू0— (१) གང་ལ་འཇུག་བྱེད་? (२) གང་གིས་བྱེད་?
(३) ཇི་ལྟར་འཇུག་བྱེད་? (४) ཅི་ཕྱིར་བྱེད་?

अनु0— (१) (कौन पूर्वाक्षर) किन (संज्ञामूलक वर्णों) में योग करता है ? (२) किस (लिङ्ग) के द्वारा करता है ? (३) किस प्रकार करता है ? तथा (४) क्यों करता है ?

सू0— གང་ལ་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་ན།།

अनु0— किन (संज्ञामूलक वर्णों) में (कौन सा पूर्वाक्षर) योग करेगा (यदि ऐसा) कहा जाय तो (सूत्र क्रमशः उत्तर देते हैं कि:—)

सू0— ཕོ་ནི་ཕོ་དང་མོ་ལ་འཇུག།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— (प्र0 न0 १ तथा २ का संयुक्त उत्तर है कि पूर्वाक्षर का) पुरुष (वाचक 'བ') तो (अपने वर्ग के པ་ ཕ་ མ་ को छोड़कर, संज्ञामूलक वर्णों के) पुरुष (वाचक ག་ ཅ་ ཏ་ ཙ་) तथा स्त्री (वाचक ག་ང་ཛ་ཉ་ད་ན་ཛ་ཞ་ཟ་ར་ཤ་ས་ आदि सोलह वर्णों के पूर्व) में योग (करता है), जैसे—

བཀའ།	= आज्ञा।	བདག	= मैं ।
བཅུ།	= दस ।	བརྐོགས་པ།	= छिपाया ।
བདགས་པ།	= बद्ध ।	བཛྲངས།	= भेजा ।
བཙོན་ར།	= कारागार ।	བཞེད་པ།	= विचार ।
བགྱིས་པ།	= किया ।	བཟང་པོ།	= भद्र ।
བརྔོས་པ།	= भुंजाया ।	བརླ་ཤ།	= जांघ ।
བརྗོད་པ།	= वाक्य ।	བཤུ་བ།	= नकल करना ।
བརྙས་པ།	= सताया ।	བསམས།	= सोचा ।

सू0— མོ་ནི་མོ་དང་མ་ནིང་ལ།།

अनु0— (पूर्वाक्षर का) स्त्री (वाचक 'འ') तो संज्ञामूलक वर्णों के) स्त्री (वाचक ག་ཛ་ད་བ་ཛ་) तथा नपुंसक (वाचक ཁ་ཆ་ཐ་ཕ་ཚ་ आदि दस अक्षरों (के पूर्व) में (योग करता है ।) जैसे—

འགོད་པ།	= आंकना ।	འཁོར་བ།	= भाव ।
འཛམ་པོ།	= नम्र ।	འཆི་བ།	= मरना ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འདམ་བག	= कीचड़ ।	འཐག་པ།	= बीनना ।
འབྲེལ་པ།	= सम्बन्ध ।	འཕགས་པ།	= आर्य ।
འཛོམ་པ།	= एकत्र होना ।	འཚིག་པ།	= जलना ।

सू०— མ་ནིང་ཡང་ནི་ཕོ་མོ་ལའོ།།

अनु०— (पूर्वाक्षर का) नपुंसक (वाचक 'ག་') भी तो (संज्ञामूलक वर्णों के) पुरुष (वाचक ཅ་ཏ་ཙ་ तथा) स्त्री (वाचक ཉ་ད་ན་ཞ་ཟ་ཡ་ཤ་ས་ आदि ग्यारह वर्णों के पूर्व) में (योग करता) है, जैसे—

གཅིག	= एक ।	གཞུ།	= धनुष ।
གཏོར་མ།	= बलि ।	གཟུགས།	= रुप=शरीर ।
གཙང་མ།	= शुद्ध ।	གཡོག་པོ།	= नौकर ।
གཉེར་པ།	= भण्डारी ।	གཤིན་རྗེ།	= यम ।
གདོང་།	= मुख ।	གསང་བ།	= गुप्त ।
གནས།	= स्थान ।	གསལ་པོ།	= स्पष्ट ।

(तदनुसार पूर्वाक्षर का नपुंसक वाचक 'ད' भी तो संज्ञामूलक वर्णों के पुरुष वाचक ཀ་ པ་ तथा स्त्री वाचक ག་ ང་ བ་ མ་ छह वर्णों के पूर्व में योग करता है,) जैसे—

དཀོན་པོ།	= दुर्लभ ।	དབང་ཆ།	= अधिकार ।
དཔའ་བོ།	= वीर।	དབུས།	= मध्य ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དགའ་བོ།	= आनन्द ।	དམོད་པ།	= शाप ।
དངུལ།	= चाँदी=रुपया ।	དབྲེན་པ།	= अभाव ।
དབྱིག	= द्रव्य ।	དབེན་པ།	=निर्जन स्थान ।
དམར་པོ།	= लाल ।	དགྲ་བོ།	= शत्रु ।

सू0— ཤིན་ཏུ་མོ་ནི་མ་ནིང་དང་།།
མོ་དང་ཤིན་ཏུ་མོ་ཉིད་ལའོ།།

अनु0— (पूर्वाक्षर का) अतिस्त्री (वाचक 'མ' भी) तो संज्ञामूलक वर्णों के) नपुंसक (वाचक ཁ་ཚ་ཐ་ཚ་) और, स्त्री (वाचक ག་ཇ་ད་ཇ་) तथा अतिस्त्री (वाचक ང་ཉ་ན་) आदि ग्यारह वर्ण मात्र (के पूर्व) में (योग करता) है, जैसे—

མཁས་པ།	= विद्वान् ।	མདོག	= रंग=शक्ल ।
མཆན།	= फुट नोट ।	མཛོད།	= कोष ।
མཐོན་པོ།	= ऊँचा ।	མངར་མོ།	= मीठा ।
མཚན་མོ།	= रात्रि ।	མཉན་པ།	= मछुवा ।
མགོན་པོ།	= नाथ ।	མནའ་མ།	= दुलहिन ।
མཇལ་བ།	= दर्शन करना ।	མཁྱེན།	= ज्ञान ।

यहाँ तक तो कौन सा पूर्वाक्षर किन संज्ञामूलक वर्णो के पूर्व योग करता है, बताया गया है । अब कौन सा पूर्वाक्षर किन संज्ञामूलक वर्णों से संसर्ग नहीं करता यह बताया जायेगा । यथ. सूत्र कहता है की:—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सू0— མི་འཇུག་པ་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ།།

अनु0— अयोग तो इस प्रकार है ।

सू0— ཕོ་ནི་མ་ནིང་ལ་མི་འཇུག །

अनु0—(पूर्वाक्षर का) पुरुष (वाचक 'བ') तो (संज्ञामूलक वर्णों के) नपुंसक (वाचक ཁ་ཆ་ཐ་ཕ་ཚ་) में योग नहीं (करता, अर्थात् संज्ञामूलक नपुंसक लिङ्गीय वर्णों में पूर्वाक्षर 'བ' पूर्व में योग नहीं करता ।)

सू0— མོ་ཡང་ཕོ་ལ་འཇུག་པ་མིན།།

अनु0— (पूर्वाक्षर का) स्त्री (वाचक 'འ' तथा अतिस्त्री वाचक 'མ' दोनों भी (संज्ञामूलक वर्णों के) पुरुष (वाचक ག་ཅ་ཏ་པ་ཙ) में योग नहीं (करते, अर्थात् ऐसा कोई शब्द नहीं है जिस में पुरुष वाची संज्ञामूलक वर्णों के पूर्व स्त्री या अतिस्त्री वाचक पूर्वाक्षर का योग हो ।)

सू0— མ་ནིང་རང་ལ་རང་མི་འཇུག།

अनु0—(पूर्वाक्षर का) नपुंसक (वाचक 'ག་ད་' दोनों, संज्ञामूलक वर्णों के नपुंसक वाचक ཁ་ཆ་ཐ་ཕ་ཚ་) में परस्पर योग नहीं (करते ।)

सू0— རང་གི་སྡེ་དང་འཕྲད་པ་ན།།
ཕོ་ཡང་མོ་ལ་འཇུག་མི་འགྱུར།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0—(यदि) अपने वर्ग के साथ मिले तो, पुरुष (वाचक पूर्वाक्षर 'བ' संज्ञामूलक वर्णों के)स्त्री (वाचक བ་མ་ तथा पुरुष वाचक པ་ से) भी योग नहीं होगा ।

सू0— མ་ནིང་མོ་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ།།

अनु0— तदनुसार (पूर्वाक्षर के) नपुंसक (वाचक 'ག་ད་' दोनों क्रम से अपने वर्ग के ཀ་ག་ང་ तथा ཏ་ད་ན་ के साथ एवं) स्त्री (वाचक पूर्वाक्षर 'འ' का अपने वर्ग के ཞ་ཟ་འ་ཡ་ के साथ तथा अतिस्त्री वाचक पूर्वाक्षर 'མ' का अपने वर्ग के ཕ་བ་མ་ के साथ) भी (योग नहीं होते ।)

सू0— ཇི་ལྟར་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་ན།།

अनु0— (पूर्वाक्षरों के संज्ञामूलक वर्णों के साथ समागम होने पर उन पूर्वाक्षरों की ध्वनि तथा प्रयत्न) किस तरह होते हैं (ऐसा) कहे तो (सूत्र उत्तर देते हैं, कि:—

सू0— ཕོ་ནི་དྲག་པོའི་ཚུལ་གྱིས་ཏེ།།
མ་ནིང་རན་པར་འཇུག་པ་ཡིན།།
མོ་ནི་ཞན་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཏེ།།
ཤིན་ཏུ་མོ་ནི་མཉམ་པས་སོ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— (उत्तर प्र0 न0 ३, पूर्वाक्षर का) पुरुष (वाचक 'བ' संज्ञामूलक वर्णों के साथ संसर्ग होने पर उस पूर्वाक्षर के उच्चारण तथा प्रयत्न में एक तीव्रता आती है, अत: उस का) तो तीव्र रूपसे (समागम होता) है ।[1]

नपुंसक ('ག་ད་') मध्यम (रूप से) योग होता है ।

स्त्री (वाचक 'འ') तो मन्द रूप से (योग होता) है ।

अतिस्त्री ('མ') क्षीणता से (होती) है ।

བྱ་བྱེད་ལས། = कर्त्ता कर्म (तथा) क्रिया

क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कहते हैं । भोट भाषा में कर्त्ता दो तरह के होते हैं । प्रत्यक्ष कर्त्ता एवं अप्रत्यक्ष कर्त्ता । (བྱེད་པ་པོ་དང་དངོས་སུ་འབྲེལ་བ་དང་བྱེད་པ་པོ་དང་དངོས་སུ་མ་འབྲེལ་བ།) प्रत्यक्ष कर्त्ता में भी བདག་ (=स्व) तथा གཞན་ (=पर) ये दो भेद हैं । क्रिया के करने वाले को བྱེད་པ་པོ་ = कर्त्ता तथा उस कर्त्ता के द्वारा कार्य के करने में जो क्रिया होती है उसे བྱེད་པའི་ལས་ = कर्त्ता की क्रिया कहते हैं । इस तरह कर्त्ता एवं उस के द्वारा कार्य करने में होने वाली क्रिया इन दोनों का नाम བདག་ (=स्व) है ।

---

१. क्योंकि भोट भाषा के शब्दों में जितने भी वर्ण आते हैं । प्राचीन काल में उन सभी वर्णों का पूर्णतया उच्चारण किया जाता था । जैसे, 'བཀའ་' को 'क' न पढ़कर बल्कि 'बक़ा' पढ़ते थे तो इन के उच्चारण तथा प्रयत्नों का अन्तर साफ साफ मालूम पड़ता था । इस तरीके के पढ़ने पर पूर्वाक्षर 'བ' का उच्चारण एक झटके के साथ होता है । अतः इस की ध्वनि को तीव्र रूप कहा गया है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया का फल जिस पर पड़े वह བྱ་བའི་ཡུལ་ = कर्म है । कर्म में होने वाली क्रिया को བྱ་བའི་ལས་ = कर्म की क्रिया कहते हैं । इस तरह कर्म एवं कर्म में होने वाली क्रिया इन दोनों का नाम གཞན་ (=पर)है, जैसे —

रामू लकड़ी फाड़ता है ।

यहाँ पर रामू क्रिया को करने वाला བྱེད་པ་པོ་ = कर्त्ता है । उसके द्वारा हाथ चलाने का व्यापार བྱ་བའི་ལས་ =कर्त्ता की क्रिया है । कर्त्ता और कर्त्ता के द्वारा किये जाने वाला व्यापार का नाम བདག་ (=स्व) है, ये वर्त्तमान काल के अंतर्गत हैं ।

यहाँ पर लकड़ी བྱ་བའི་ཡུལ་ = कर्म है । कुल्हाड़ी के आघात से लकड़ी का फटना आदि བྱ་བའི་ལས་ = कर्म की क्रिया है । कर्म तथा कर्म में होने वाली क्रिया का नाम གཞན་ (= पर) है। ये भविष्यत् काल के अंतर्गत हैं ।

किसी कार्य के करने में कर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से दिखाई न दे तो उसे अप्रत्यक्ष कर्त्ता की क्रिया कहते हैं । जैसे, ཐག་པ་ཆད་ =रसी टूटी । इस में रसी तोड़ने वाला कोई कर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देता है अतः यह अप्रत्यक्ष कर्त्ता की क्रिया है । ऐसी क्रियाओं में བདག་ और གཞན་ की व्यवस्था नहीं होती ।

सू०— ཅི་ཕྱིར་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་ན།།

अनु०— (उत्तर प्र० न० ४) क्यों योग करता (है) कहे तो (सूत्र क्रमशः उत्तर देते हैं कि:—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सू0— ཕོ་ནི་འདས་དང་གཞན་བསྒྲུབ་ཕྱིར།།

अनु0— (पूर्वाक्षर का) पुरुष (वाचक 'བ') तो (प्रत्यक्ष क्रिया के तीनों कालों में से) भूत (काल) तथा पर (= कर्म तथा कर्म की क्रिया को) रचने के लिये (योग होता है,) जैसे—

དུས་འདས་པ། = भूत काल

ཆུ་བཀང་། = पानी भराया   ལས་བགྱིས། = कार्य कराया ।

གོས་བཀབ། = कपड़ा ढकाया ।   ཐག་པས་བསྡམས། = रसी से बाँधा ।

ལམ་བཀག = मार्ग रोका ।   རྩེད་མོ་བརྩེས། = खेल खेला ।

ཤིང་བཀས། = लकड़ी फटी ।   དོན་བསམས། = मतलब सोचा ।

བཙས་མ་བརྔས། = फसल कटी ।   ཡི་གེ་བསྐྲིངས། = पत्र भेजा ।

གཞན་བྱ་བའི་ཡུལ། = पर कर्म

བསྐོར་བྱ། = भ्रमण योग्य ।

བསྐོར་བར་བྱ་བ། = भ्रमणीय ।

བསྐོར་བྱའི་གནས། = भ्रमण करने का स्थान ।

བསྒྲུབ་བྱ། = साध्य ।

བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ། = साधनीय ।

བསྒྲུབ་བྱའི་ལྷ། = साधने का देव ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བཅབ་བྱ། = गोप्य ।

བཅབ་པར་བྱ་བ། = गोपनीय ।

བཅབ་བྱའི་སྐྱོན། = गुप्त रखने का दोष ।

བལྟ་བྱ། = दृश्य ।

བལྟ་བར་བྱ་བ། = दर्शनीय ।

བལྟ་བྱའི་གཟུགས། = देखने का रूप ।

གཞན་བྱ་བའི་ལས། = पर कर्म की क्रिया

བསྐོར་བར་བྱ། = घुमाइयेगा, घुमाना चाहिये ।

བསྐོར་རོ།། = घुमाओ ।

བཅབ་པར་བྱ། = छिपाइयेगा,छिपाना चाहिये ।

བཅབ་བོ། = छिपाओ ।

བཀལ་བར་བྱ། = लादियेगा, लादना चाहिये । कातियेगा, कातना चाहिये ।

བཀལ་ལོ།། = लादो ।

བསྒྲུབ་པར་བྱ། = साधियेगा, साधना चाहिये ।

བསྒྲུབ་བོ། = साधो ।

བཀྱིག་པར་བྱ། = बाँधियेगा, बाँधना चाहिये ।

བཀྱིག་གོ ། = बाँधो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བསྐུ་བར་བྱ། = पोतियेगा, पोतना चाहिये ।

བསྐུའོ།། = पोतो ।

सू0— མ་ནིང་གཉིས་ཀ་ད་ལྟར་ཆེད།།

अनु0—(पूर्वाक्षर का) नपुंसक (ག་ད་ स्व और पर) दोनों (तथा) वर्त्तमान (काल) के लिये (योग होता है ।)

བདག་བྱེད་པ་པོ། = स्व कर्त्ता

གཅོད་པ་པོ། = छेदने वाला । གསུང་བ་པོ། = कहने वाला ।

གཅོད་བྱེད། = छेदक । གསུང་བྱེད། = वक्ता ।

གཅོག་པ་པོ། = तोड़ने वाला । གསོད་པ་པོ། = हत्याकरने वाला ।

གཅོག་བྱེད། = तोड़क । གསོད་བྱེད། = हत्यारा ।

གཏོང་བ་པོ། = देने वाला । གསོ་བ་པོ། = पालने वाला ।

གཏོང་བྱེད། = दायक । གསོ་བྱེད། = पालक ।

བདག་བྱེད་པའི་ལས། = स्वकर्त्ता की क्रिया

གཅོད་པར་བྱེད། = काटना । གསུང་བར་བྱེད། = कहना ।

གཅོད་དོ།། = काटता है । གསུང་ངོ་།། = कहता है ।

གཅོག་པར་བྱེད། = तोड़ना । གསོད་པར་བྱེད། = बधना ।

གཅོག་གོ ། = तोड़ता है । གསོད་དོ།། = बध करता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཏོང་བར་བྱེད།	= देना ।	གསོ་བར་བྱེད།	= पालना ।
གཏོང་ངོ་།།	= देता है ।	གསོའོ།	= पालता है ।

གཞན་བྱ་བའི་ཡུལ། = पर कर्म

གཅད་བྱ།	= छेदय ।	གདང་བྱ།	= देय ।
གཅད་པར་བྱ་བ།	= छेदनीय ।	གདང་བར་བྱ་བ།	= दातव्य ।
གཅད་བྱའི་ཤིང་།	= छेदने की लकड़ी ।	གདང་བྱའི་ནོར།	= देने का धन ।
གཅོག་བྱ།	= तोड़ने योग्य ।	གདུབ་བྱ།	= काटय ।
གཅོག་པར་བྱ་བ།	= तोड़नीय ।	གདུབ་པར་བྱ་བ།	= काटनीय ।
གཅོག་བྱའི་རྡོ།	= तोड़ने का पत्थर ।	གདུབ་བྱའི་ཤིང་།	= काटने की लकड़ी ।

གཞན་བྱ་བའི་ལས། = पर कर्म की क्रिया

གཅད་པར་བྱ།	= कटियेगा, काटना चाहिये ।
གཅད་དོ།།	= काटो ।
གཅོག་པར་བྱ།	= तोड़ियेगा, तोड़ना चाहिये ।
གཅོག་གོ །	= तोड़ो ।
གདུབ་པར་བྱ།	= काटियेगा, काटना चाहिये ।
གདུབ་བོ།།	= काटो ।
གཙིར་བར་བྱ།	= निचोड़ियेगा, निचोड़ना चाहिये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཙིར་རོ༎	= निचोड़ो ।	
གདོན་པར་བྱ།	= निकालियेगा, निकालना चाहिये ।	
གདོན་ནོ༎	= निकालो ।	
གཉག་པར་བྱ།	= घिसाइयेगा, घिसाना चाहिये ।	
གཉག་གོ །	= घिसो ।	

དུས་ད་ལྟ་བ་སྤྱི། = सामान्य वर्त्तमान काल

གཅོད་པར་བྱེད།	= काटना ।	གསུང་བར་བྱེད།	= कहना ।
གཅོད་དོ༎	= काटता है ।	གསུང་ངོ༎	= कहता है ।
གཅོག་པར་བྱེད།	= तोड़ना ।	གསོད་པར་བྱེད།	= बधना ।
གཅོག་གོ །	= तोड़ता है ।	གསོད་དོ༎	= बध करता है ।
གཏོང་བར་བྱེད།	= देना ।	གསོ་བར་བྱེད།	= पालना ।
གཏོང་ངོ༎	= देता है ।	གསོའོ༎	= पलता है ।

དུས་ད་ལྟ་བ་བྱེད་བཞིན་པ། = तत्कालिक वर्त्तमान काल

གཅོད་བཞིན།	= काट रहा ।	གཅེར་གྱིན།	= भेंट कर रहा ।
གཅོག་བཞིན།	= तोड़ रहा ।	གསོན་བཞིན།	= सुन रहा ।
གཏོང་གིན།	= दे रहा ।	གསོ་བཞིན།	= पाल रहा ।
གསུང་གིན།	= कह रहा ।	གཉེར་བཞིན།	= सम्भाल रहा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གསོད་ཀྱིན།	= हत्या कर रहा ।	གཅུལ་གྱིན།	= चर रहा ।
གནོན་གྱིན།	= दबा रहा ।	གཡོག་བཞིན།	= ढका रहा ।

བདག་བྱེད་པ་པོ། = स्व कर्त्ता

དགྲི་པ་པོ།	= बटोरने वाला ।	དབྱུག་པ་པོ།	= मारने वाला ।
དགྲི་བྱེད།	= बटोरने वाला ।	དབྱུག་བྱེད།	= मारक ।
དཔོག་པ་པོ།	= मापने वाला ।	དམོད་པ་པོ།	= निन्दा करने वाला ।
དཔོག་བྱེད།	= मापयिता ।	དམོད་བྱེད།	= निन्दक ।
དགོད་པ་པོ།	= हँसने वाला ।	དཔྱོད་པ་པོ།	= निरीक्षण करने वाला ।
དགོད་བྱེད།	= मासखरा ।	དཔྱོད་བྱེད།	= निरीक्षक ।

བདག་བྱེད་པའི་ལས། = स्व कर्त्ता की क्रिया

དགྲི་བར་བྱེད།	= बटोरना ।	དབྱུག་པར་བྱེད།	= पीटना ।
དགྲིའོ།།	= बटोरता है ।	དབྱུག་གོ ।	= पीटता है ।
དཔོག་པར་བྱེད།	= मापना ।	དམོད་པར་བྱེད།	= शाप देना ।
དཔོག་གོ ।	= मापता है ।	དམོད་དོ།།	= शाप देता है ।
དགོད་པར་བྱེད།	= हँसना ।	དཔྱོད་པར་བྱེད།	= निरीक्षण करना ।
དགོད་དོ།།	= हँसता है ।	དཔྱོད་དོ།།	= निरीक्षण करता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཞན་བྱ་བའི་ཡུལ། = पर कर्म

དགྲི་བྱ།	= बटोरने योग्य ।
དགྲི་བར་བྱ་བ།	= बटोरने योग्य ।
དགྲི་བྱའི་སྐུད་པ།	= बटोरने का तागा ।
དམོད་བྱ།	= निन्द्य ।
དམོད་པར་བྱ་བ།	= निन्दनीय ।
དམོད་བྱའི་ཚིག	= निन्दा करने का शब्द ।
དབོག་བྱ།	= कथ्य ।
དབོག་པར་བྱ་བ།	= क़थनीय ।
དབོག་བྱའི་ལུང་།	= कहने का आगम ।
དཔྱད་བྱ།	= निरीक्षय ।
དཔྱད་པར་བྱ་བ	= निरीक्षणीय ।
དཔྱད་བྱའི་ཆོས།	= निरीक्षण करने का धर्म।

གཞན་བྱ་བའི་ལས། = पर कर्म की क्रिया

དགག་པར་བྱ།	= रोकियेगा, रोकना चाहिये ।
དགག་གོ །	= रोको ।
དབྱུང་བར་བྱ།	= निकालियेगा, किालना चाहिये ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དབྱུང་ངོ་།། = निकालो ।

དགོད་པར་བྱ། = आंकियेगा, आंकना चाहिये ।

དགོད་དོ།། = आंको ।

དགལ་བར་བྱ། = लादियेगा, लादना चाहिये ।

དགལ་ལོ།། = लादो ।

དགྲོལ་བར་བྱ། = मुक्त करियेगा, मुक्त करना चाहिये ।

དགྲོལ་ལོ།། = मुक्त करो ।

དབབ་པར་བྱ། = बरसाइयेगा, बरसना चाहिये ।

དབབ་བོ།། = बरसाओ ।

དུས་ད་ལྟ་བ་སྒྲ། = सामान्य वर्त्तमान काल

དགྲི་བར་བྱེད།	= बटोरना ।	དབྱུག་བར་བྱེད།	= पीटना ।
དགྲིའོ།།	= बटोरता है ।	དབྱུག་གོ །	= पीटता है ।
དཔོག་པར་བྱེད།	= मापना ।	དམོད་པར་བྱེད།	= निन्दा करना ।
དཔོག་གོ །	= मापता है ।	དམོད་དོ།།	= निन्दा करता है।
དགོད་པར་བྱེད།	= हँसना।	དཔྱོད་པར་བྱེད།	= निरीक्षण करना ।
དགོད་དོ།།	= हँसता है ।	དཔྱོད་དོ།།	= देखता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དུས་ད་ལྟ་བ་བྱེད་བཞིན་པ། = तत्कालिक वर्त्तमान काल

དགྲི་ཡིན།	= बटोर रहा ।	དཔྱོད་བཞིན།	= देख रहा ।
དཔོག་གིན།	= माप रहा ।	དཕུར་བཞིན།	= रगड़ रहा ।
དགོད་ཀྱིན།	= हँस रहा ।	དཔྱང་བཞིན།	= लटका रहा ।
དབྲུག་གིན	= पीट रहा ।	དགོད་བཞིན།	= आंक रहा ।
དམོད་ཀྱིན།	= धिक्कार रहा ।	དབྲལ་བཞིན།	= फाड़ रहा ।

सू0— མོ་ནི་བདག་ད་མ་འོངས་ཕྱིར།།

अनु0— (पूर्वाक्षर का (स्त्री वाचक 'འ') तो स्व, वर्त्तमान (तथा) भविष्यत् (काल) के लिये (योग होता है ।)

བདག་བྱེད་པ་པོ། = स्व कर्त्ता

འཁྲིགས་པ་པོ།	= बाँधने वाला ।	འདོར་བ་པོ།	= त्यागने वाला ।
འཁྲིགས་བྱེད།	= बन्धयिता ।	འདོར་བྱེད།	= त्यागी ।
འགྱེད་པ་པོ།	= आक्रमण करने वाला ।	འཚོལ་བ་པོ།	= खोजने वाला ।
འགྱེད་བྱེད།	= आक्रमक ।	འཚོལ་བྱེད།	= अनवेषक ।
འཆང་བ་པོ།	= धारण करने वाला ।	འཇོམས་པ་པོ།	= नाश करने वाला ।
འཆང་བྱེད།	= धारक ।	འཇོམས་བྱེད།	= नाशक ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བདག་བྱེད་པའི་ལས། = स्व कर्त्ता की क्रिया

འཁྲིགས་པར་བྱེད།	= बाँधना ।	འདོར་བར་བྱེད།	= छोड़ना ।
འཁྲིགས་སོ།།	= बाँधता है ।	འདོར་རོ།	= छोड़ता है
འགྱེད་པར་བྱེད།	= आक्रमण करना ।	འཚོལ་བར་བྱེད།	= खोजना ।
འགྱེད་དོ།།	= आक्रमण करता है ।	འཚོལ་ལོ།	= खोजता है
འཆང་བར་བྱེད།	= धारण करना ।	ཇོམས་པར་བྱེད།	= नाश करना ।
འཆང་ངོ་།།	= धारण करता है ।	འཇོམས་བྱེད།	= नाश करता है ।

དུས་ད་ལྟ་བ་སྤྱི། = सामान्य वर्त्तमान काल

འཁལ་བར་བྱེད།	= कातना ।	འཆང་བར་བྱེད།	= धारण करना ।
འཁལ་ལོ།	= कातता है ।	འཆང་ངོ་།།	= धारण करता है ।
འཁྲུད་པར་བྱེད།	= थामना ।	འདོར་བར་བྱེད།	= त्यागना ।
འཁྲུད་དོ།།	= थामता है ।	འདོར་རོ།།	= त्यागता है ।
འཁྱེར་བར་བྱེད།	= ले जाना ।	འདུག་པར་བྱེད།	= बैठना ।
འཁྱེར་རོ།།	= ले जाता है ।	འདུག་གོ །	= बैठता है ।

དུས་ད་ལྟ་བ་བྱེད་བཞིན་པ། = तत्कालिक वर्त्तमान काल

འཁལ་གྱིན།	= कात रहा ।	འོང་གྱིན།	= आ रहा ।
འཁྲུད་ཀྱིན།	= थाम रहा ।	འབུལ་གྱིན།	= चढ़ा रहा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འཁྲིར་བཞིན། = ले रहा । འཁྲུད་ཀྱིན། = बजा रहा ।
འཆང་གིན། = धर रहा । འཕྱུར་བཞིན། = लहरा रहा ।
འདོར་གྱིན། = त्याग रहा । འཛུ་ཡིན། = पकड़ रहा ।
འདུག་གིན། = बैठ रहा । འཇོ་ཡིན། = दुह रहा ।

དུས་མ་འོངས་པ། = भविष्यत् काल

འཁྲུང་བར་འགྱུར། = जन्मेगा । འབྱིང་བར་འགྱུར། = डूबेगा ।
འགུལ་བར་འགྱུར། = हिलेगा । འཚོ་བར་འགྱུར། = जियेगा ।
འགུམ་བར་འགྱུར། = मरेगा । འདོང་བར་འགྱུར། = जायेगा ।
འགྲོ་བར་འགྱུར། = जायेगा । འཐོན་པར་འགྱུར། = निकलेगा ।
འདའ་བར་འགྱུར། = पार करेगा । འཆི་བར་འགྱུར། = मरेगा ।
འབྱུང་བར་འགྱུར། = होगा । འཆར་བར་འགྱུར། = उदय होगा ।

सू०— ཤིན་ཏུ་མོ་ནི་མཉམ་ཕྱིར་རོ།།

अनु०— (पूर्वाक्षर का) अतिस्त्री (वाचक 'མ') तो (स्व, पर, वर्त्तमान, भविष्यत् तथा भूत कालों के शब्द रचने के) लिये सामान्य (रूप से योग होता है ।) जैसे—

མཆོད་པ་པོ། = पूजा करने वाला । མཆོད་པར་བྱ། = पूजेयेगा ।
མཆོད་བྱེད། = पूजक । མཆོད་དོ།། = पूजो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མཆོད་པར་བྱེད།	= पूजा करना ।	མཆོད་པར་བྱེད།	= पूजना ।
མཆོད་དོ།།	= पूजता है ।	མཆོད་དོ།།	= पूजता है ।
མཆོད་བྱ།	= पूज्य ।	མཆེད་བཞིན།	= पूज रहा ।
མཆོད་པར་བྱ་བ།	= पूजनीय ।	མཆོད་པར་འགྱུར།	= पूजेगा ।
མཆོད་བྱའི་ཡི་དམ།	= पूजा करने का इष्ट ।	མཆོད།	= पूजो ।

सू0— རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ལ།།
ཕོ་མོ་མ་ནིང་གསུམ་དུ་དབྱེ།།

अनु0— दसों पराक्षरों (ག་ ང་ ད་ ན་ བ་ མ་ འ་ ར་ ལ་ ས་) को (भी) पुरुष स्त्री (तथा) नपुंसक (आदि) तीन (लिङ्गों) में विभक्त (करियेगा), जैसे—

पुरुष वाचक पराक्षर = ག་ ད་ བ་ ས།

स्त्री वाचक पराक्षर = ང་ མ་ འ།

नपुंसक वाचक पराक्षर = ན་ ར་ ལ།

सू0— ཕོ་ལ་སྐྱེས་བུ་རབ་འབྲིང་གསུམ།།
མོ་ལ་མོ་དང་ཤིན་ཏུ་མོ།།
མ་ནིང་འགྱུར་དང་མཚན་གཉིས་དང་།
མཚན་མེད་དག་དང་གསུམ་དུ་འདོད།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— पुरुष (वाचक ཕ་ད་པ་སཱ་) उत्तम, मध्यम (तथा अन्य) तीन (वर्गों में तथा) स्त्री (वाचक ང་མ་འ་) स्त्री और अतिस्त्री (दो वर्गों में विभक्त किया जाता है । इस प्रकार) नपुंसक (वाचक ན་ར་ལ་) परिवर्ती, द्विलिङ्गी तथा अलिङ्गी आदि तीन (वर्गों) में विभक्त माना जाता है ।

यहाँ पर पराक्षरों का तीन तरह से लिङ्गीकरण किया गया है । इन पराक्षरों के आपस में तथा संज्ञामूलक वर्णों से समागम होने पर जो ध्वनि उत्पन्न होती है उसके भी आन्तरिक आठ विभेद होते हैं ।

सू0— དེ་ཡང་བྱེད་པ་བཞི་བྱེད་དེ།།

अनु0— उन (तीनों लिङ्गों के पराक्षरों के प्रत्येक के) चार (चार तरह के प्रयोग) किये गये हैं ।

यथा यहाँ पर सूत्र प्रश्न करता है कि:—

सू0— (१) གང་ལ་འཇུག་བྱེད་? (२) གང་གིས་བྱེད།?
(३) ཇི་ལྟར་འཇུག་བྱེད་? (४) ཅི་ཕྱིར་བྱེད།?

अनु0— १. (दसों पराक्षर) किन (संज्ञामूलक वर्णों) में योग करते (हैं) ?
२. (तथा) किन (पराक्षरों) के द्वारा (योग) करते (हैं) ?
३. किस तरह योग करते (हैं) ?
४. (तथा) किस (अर्थ) के लिये (योग) करते (हैं) ?

तो सूत्र क्रमशः उत्तर देते हैं कि:—

सू0— གང་ལ་ཡི་གེ་ཐམས་ཅད་ལ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु0— (उत्तर प्र0 न0 १) किन (संज्ञामूलक वर्णों) में (पराक्षर योग करते हैं कहे तो) सभी (तरह के संज्ञामूलक वर्णों) में (योग करते हैं ।)

ཚིག	= शब्द ।	ལམ།	= मार्ग ।
ནང་།	= भीतर ।	བཀའ།	= आज्ञा ।
ཁྲིད།	= भार ।	མར།	= मक्खन ।
ཀུན།	= सब ।	དཔལ།	= श्री ।
ཁབ།	= सुई ।	ལས།	= कर्म ।

सू0— གང་གིས་བཅུ་པོ་དེ་དག་གིས།།

अनु0— (उत्तर प्र0 न0 २) किन (पराक्षरों) के द्वारा (योग करते हैं कहे तो) उन दसों (पराक्षरों) के द्वारा ।

अर्थात् सभी तरह के पराक्षर संज्ञामूलक वर्णों के साथ सामान्य रूप से संयुक्त होते हैं ।

सू0— ཇི་ལྟར་རྣམ་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ།།
སྒྲ་ཡི་འཇུག་ཚུལ་དོན་གྱི་ཚུལ།།

अनु0— (उत्तर प्र0 न0 ३) किस तरह (योग करते हैं कहे तो, इन के भी) दो विभेद हैं । ध्वनि प्रयोग (तथा) अर्थ प्रयोग ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྒྲའི་འཇུག་ཚུལ། = ध्वनि का प्रयोग

उपर्युक्त पराक्षरों के आपस में तथा संज्ञामूलक वर्णों के साथ संयोग होने से जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, उन के साधारणतः तीन भेद हैं ।

सू0— ཕོ་གསུམ་མོ་གཉིས་མ་ནིང་གསུམ།།
དྲག་ཞན་བར་མ་གསུམ་དུ་འཇུག།

अनु0—पुरुष (उत्तम, मध्यम तथा अन्य) तीन (हैं) स्त्री (स्त्रीवत् और अतिस्त्री) दो (हैं) नपुसंक (परिवर्ती, द्विलिङ्गी तथा अलिङ्गी) तीन (हैं), (जिन के क्रमशः पुरुषों की ध्वनि) तीव्र स्त्रियों की ध्वनि) मन्द (तथा) (नपुंसकों की ध्वनि) मध्यम (इन) तीन (स्वरों) में होती हैं ।

सू0— དྲག་པ་གསུམ་ཉིད་ནང་ཕྲད་དམ།།

अनु0—तीव्र (ध्वनि वाले उत्तम, मध्यम तथा अन्य) तीनों (पुरुष वाचक पराक्षर) आपस में संबद्ध होंवे तो (जिस की जो ध्वनि होती है उसे देख कर ध्वनियों का यह निम्न वर्गीकरण किया गया है ।)

किसी भी संज्ञामूलक वर्णों के परे पुरुष वाचक पराक्षर 'ག' रहे तथा उस पराक्षर 'ག' के बाद पुरुष वाचक परात्पराक्षर 'ས' जोड़े तो वे शब्द तीव्र ध्वनि वाले पुरुष वाचकों में सर्व श्रेष्ठ ध्वनि वाले उत्तम पुरुष होते हैं । जैसे, ནགས་ = जंगल । यहाँ पर 'ན' संज्ञामूलक वर्ण है । उस के परे पुरुष वाचक पराक्षर 'ག' लगा है । उस पराक्षर 'ग' के बाद परात्पराक्षर 'ས' जुड़ा हुआ है, तो इस तरहके शब्दों के उच्चारण करने में ध्वनि में एक तीव्रता आती है । अतः इस तरह के शब्दों को तीव्र ध्वनि वालों में उत्तम पुरुष कहते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྐྱེས་བུ་རབ་ཀྱི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། =उत्तम पुरुष के कुछ (और) उदाहरण

ལྕགས།	= लोहा ।	པགས་པ།	= चमड़ा ।
ཐུགས།	= मन ।	གྲོགས་པོ།	= मित्र ।
ཚོགས།	= गण ।	འཁྱགས་པ།	= बरफ ।
ལེགས།	= साधु ।	འཕགས་པ།	= आर्य ।
རིགས།	= जाति ।	གཟིགས་པ།	= देखना ।

तदनुसार संज्ञामूलक वर्णों के परे पुरुष वाचक पराक्षर 'བ' रहे तथा उस 'བ' के बाद परात्पराक्षर 'ས' जुड़ा हो तो वे (शब्द) तीव्र ध्वनि वाले पुरुष वाचकों में मध्यम ध्वनि वाले मध्यम पुरुष कहलाते हैं ।

སྐྱེས་བུ་འབྲིང་གི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། = मध्यम पुरुष के कुछ उदाहरण

སྐབས།	= समय ।	ཐབས།	= उपाय ।
སྐྱབས།	= शरण ।	ཤུབས།	= खोल ।
ཆིབས།	= सवारी ।	སྲུབས།	= दरार ।
སྟོབས།	= शक्ति ।	ཁེབས།	= ढक्कन ।
ཞབས།	= चरण ।	རླབས།	= लहर ।

संज्ञामूलक वर्णों के परे पुरुष वाचक पराक्षर 'ག་ ད་ བ་ ས་' में का कोई भी सम्बद्ध हो तथा उस के पश्चात् परात्पराक्षर 'ས' जुड़ा न रहे तो वे तीव्र ध्वनि वाले पुरुष वाचकों में मन्द ध्वनि वाले अन्य पुरुष कहलाते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྐྱེས་བུ་ཐ་མའི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། = अन्य पुरुष के कुछ उदाहरण

ཕག	= सूअर ।	ངེད།	= आप ।
ཁྲག	= रक्त ।	ཕད།	= थैला ।
རྒྱབ།	= पीठ ।	ཆས།	= सामान ।
རབ།	= श्रेष्ठ ।	སྐས།	= सीढ़ी ।
སྐད།	= भाषा ।	ཆོས།	= धर्म ।

सू0— གལ་ཏེ་ཞན་པ་ནང་ཕྲད་ན།།
དེའང་ནང་གི་ཆ་ཤས་ཀྱིས།།
དེ་ཡང་དྲག་ཞན་གཉིས་སུ་དབྱེ།།

अनु0— यदि मन्द (स्वर वाले) वे (स्त्री वाचक पराक्षर) आपस में सम्बद्ध हो (कर संज्ञामूलक वर्णों के साथ योग करें) तो उन में भी तीव्र (एवं) मन्द (ये) दो (आन्तरिक) विभेद होंगे ।

संज्ञामूलक वर्णों के परे स्त्री वाचक पराक्षर 'ང་མ་འ་' कोई भी रहे, तथा उस के पश्चात् परात्पराक्षर 'ས' रहे तो स्त्रीवाचकों में वे क्षीण ध्वनि वाले स्त्रीवत् कहलाते हैं । परात्पराक्षर न रहे तो अतिस्त्री वाचक कहलाते हैं ।

མོ་ཙམ་གྱི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། = स्त्रीवत् के कुछ उदाहरण

གངས།	= बरफ ।	ཁམས།	= धातु (शरीर) ।
དབྱངས།	= स्वर ।	རིམས།	= छूत रोग ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འཕངས།	= प्रजा ।	ཡམ།	= रोग ।
རྫོངས།	= दहेज ।	མཚམས།	= सीमा-कोण ।
ལྗོངས།	= घाटी ।	སེམས།	= मन ।

ཤིན་ཏུ་མོའི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། = अतिस्त्री वाचक के कुछ उदाहरण

བྱང་།	= उत्तर (दिशा)।	སྒོམ།	= ध्यान ।
ཐང་།	= मैदान ।	མདའ།	= वाण ।
ཤིང་།	= काष्ठ।	མཐའ།	= अन्त ।
ཙམ།	= लगभग ।	དགའ་བ།	= नन्द ।
གོམ་པ།	= कदम ।	འདའ་བ།	= पार करना ।

सू0— མ་ཉིད་གསུམ་དུ་གང་གདོགས་པ།།
དྲག་དང་ལྡན་ན་དྲག་པར་འགྱུར།།
ཞན་དང་ལྡན་ན་ཞན་པར་འགྱུར།།

अनु0— (परिवर्ती) नपुंसक (आदि) तीनों (नपुंसकों के) अंतगर्त जो (नपुंसक वाचक पराक्षर हैं, यदि वे आपस में अथवा संज्ञामूलक वर्णों के साथ सम्बद्ध हो तथा यदि वे) तीव्र (पुरुष लिङ्गीय संज्ञामूलक वर्णों) के साथ संबद्ध होगा तो (उन के परे परात्पराक्षर रहे अथवा न रहे फिर भी उन की ध्वनि) तीव्र ही होगी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(यदि वे) मन्द (स्त्री लिङ्गीय संज्ञामूलक वर्णों) के साथ संबद्ध होंगे तो (उनकी ध्वनि) मन्द होगी । (अतः इस तरह के शब्दों को परिवर्ती नपुंसक कहते हैं ।)

འགྱུར་བ་མ་ནིང་གི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། = परिवर्ती नपुंसक के कुछ उदाहरण

ཀུན་མ།	= चोर ।	རྒན་པོ།	= वृद्ध ।
བསྟན་ད།	= शासन ।	མགུལ།	= कण्ठ ।
རྩོལ་བ།	= यत्न ।	དོར་མ།	= पाजामा ।
བཙིར་རད་པ།	= निचोड़ा ।	གདོལ་བ།	= डोम ।
བསྐོར་རད་པ།	= घूमा ।	འབར་བ།	= जलना ।

सू०— གཉིས་ཀ་དག་དང་ལྡན་གྱུར་ན།།
དེ་ནི་གཉིས་ཀ་ཅན་དུ་འགྱུར།།

अनु०— (यदि संज्ञामूलक वर्ण स्त्री लिङ्ग का हो तथा परात्पराक्षर पुरुष वाचक रहे तो इन दोनों के बीच का नपुंसक वाचक पराक्षर) दोनों के साथ संबद्ध होने से वे <u>तो</u> दोनों (लिङ्ग)वाले <u>में</u> होंगे । (अर्थात् ये द्विलिङ्गी नपुंसक कहलाते हैं ।

མཚན་གཉིས་མ་ནིང་གི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། द्विलिङ्गी नपुंसक के कुछ उदाहरण

འབྱོརད་པ།	= पाया ।	བསལད་པ།	= हटाया ।
གྱུརད་པ།	= हुआ ।	བདརད་པ།	= घिसा ।
རོལད་པ།	= खेला ।	བསྒྲིལད་པ།	= गिरा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཤིན་ཏུ།	= बहुत ।	མ་ནོན་ད།	= दबाओ ।
བརྒལ་ད་པ།	= पार किया ।	སྡུ་རད།	= पीसो ।

सू0— གཉིས་ཀ་དག་དང་མ་ལྡན་ན།།
གང་དུ་ཡང་ནི་མི་འགྱུར་རོ།།

अनु0— (यदि नपुंसक पराक्षर, संज्ञामूलक वर्णों के पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग) दोनों के संबद्ध न (रहे) <u>तो</u> (परन्तु संज्ञामूलक नपुंसक वर्णों में संबद्ध रहे तथा उनके पश्चात् परात्पराक्षर रहे अथवा न रहे तो उनकी ध्वनि न तो स्त्री की रहेगी न पुरुष की ही, अतः वह ध्वनि) किसी में भी न होने से अलिङ्गी नपुंसक कहलाते हैं ।

མཚན་མེད་མ་ཉིང་གི་དཔེར་བརྗོད་འགའ། = अलिङ्गी नपुंसक के कुछ उदाहरण

ཐུན།	= खण्ड ।	འཁྲུལ་ད་པ།	= माया।
མཆིལ་མ།	= थूक ।	མཁྱེན་ད་པ།	= ज्ञान ।
ཕོན་པོ།	= गुच्छा ।	འཁྲུལ་ད་པ།	= भ्रम ।
ཚེར་མ།	= कांटा ।	ཐརད་པ།	= मुक्ति ।
འཕྲོར་བ།	= फैलना ।	ཕྱིན་ད་པ།[1]	= गया ।

सू0— དེས་ན་འགྱུར་དང་མཚན་གཉིས་དང་།།
མཚན་མེད་དག་དང་གསུམ་དུ་འདོད།།

१. 'ད་' परात्पराक्षर वाले अलिङ्गी नपुंसक को डुलछु परिवर्ती नपुंसक में मानता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དེ་ནི་སྒྲ་ཡི་འཇུག་ཚུལ་ལོ།།

अनु0— इस लिये (क्रमशः) परिवर्ती और द्विलिङ्गी तथा अलिङ्गी (नपुंसकों) के साथ तीन (तरह के नपुंसक) माने जाते हैं । यह तो ध्वनि का प्रयोग (बताया गया) है ।

དོན་གྱི་འཇུག་ཚུལ། = **अर्थ का प्रयोग**

सू0— དོན་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ།།

अनु— अर्थ (प्रयोग के भी) तो दो (स्वरूप) होते हैं ।

सू0— སྔ་མ་གང་ལྟར་འགྱུར་བ་དང་།།
ཕྱི་མ་གང་ལྟར་འགྱུར་བའོ།།

अनु०— (प्रत्ययों और विभक्तियों के) पूर्ववर्ती (=पराक्षर) किस तरह (के अर्थ सूचित करने के लिये) होते हैं (तथा) पर (अक्षर) किस तरह (के प्रत्यय और विभक्तियों के साथ संयुक्त होता है ।)

तो सूत्र कहता है कि:—

सू0— སྔ་མ་སྔོན་འཇུག་ལྔ་བཞིན་སྦྱར།།

अनु०— (किसी भी विभक्ति आदि प्रत्ययों के) पूर्ववर्ती (पराक्षरों से कौन से काल का बोध होता है यह) पाँचो पूर्वाक्षरों (के प्रयोग के) अनुसार तुलना करके (जानना चाहिये) ।

अर्थात् क्रियाओं के काल का ज्ञान केवल पराक्षरों के द्वारा ही नहीं होता अपितु बहुधा पूर्वाक्षरों के प्रयोगानुसार होता है । जैसे, བསྐྱེགས།= पीछा किया ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

यहाँ पर पूर्वाक्षर पुरुष वाचक 'བ' के द्वारा ही क्रिया के भूत काल का बोध होता है पराक्षर ག' और ས' से नहीं, क्योंकि यदि ག་ས' से भूत काल की क्रिया का बोध होता तो 'སྒྲིགས་' कह देने से भी भूत काल का ज्ञान होता परन्तु 'སྒྲིགས་' शब्द भूतकाल की क्रिया न हो कर विधि है ।

कभी कभी केवल पराक्षरों से भी क्रिया के काल का बोध होता है । जैसे, བསམས། =सोचा । यहाँ पर क्रिया के भूत काल का बोध पुरुष-वाचक पुर्वाक्षर 'བ' से न होकर परात्पराक्षर 'ས' के द्वारा हुआ है क्योंकि इसकी भविष्यत् काल की क्रिया में 'བསམ་' शब्द होता है । यहाँ पर पूर्वाक्षर 'བ' होने पर भी परात्पराक्षर 'ས' न होने के कारण यह क्रिया भूत काल की न होकर भविष्यत् काल की बोधक है ।

सू०— ཕྱི་མ་དག་གི་འཇུག་ཚུལ་ནི།།

अनु०— पर (अक्षरों) के (द्वारा परवर्ती वर्णों को) प्रभावित (करने का) तरीका <u>तो</u> (यह है) ।

सू०— ཕོ་ཡིས་ཕོ་ཡི་མིང་མཐའ་དྲང་།།
མོ་ཡིས་མོ་ཡི་མིང་མཐའ་དྲང་།།
མ་ནིང་གིས་ནི་མ་ནིང་ངོ་།།

अनु०— (पूर्ववर्ती पराक्षर) पुरुष (वाचक) के द्वारा (परवर्ती) संज्ञान्त का पुरुष (वाचक संज्ञामूलक वर्ण ही) प्रभावित (किया जाता है) । (तदनुसार) स्त्री के द्वारा संज्ञान्त स्त्री प्रभावित होती है । नपुंसक के द्वारा नपुंसक (प्रभावित होगा) ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अर्थात् यदि पूर्व में पुरुष वर्ण हो तो पर में भी पुरुष वर्ण ही होगा। जैसे, དཔྱིད་ཀ། =वसन्त। यहाँ དཔྱིད་ཀ། शब्द में पूर्ववर्ती पराक्षर 'ད' पुरुष वाचक है अतः उस के द्वारा परवर्ती संज्ञामूलक पुल्लिङ्ग 'ཀ' ही प्रभावित किया गया है। इन के और कुछ उदाहरण।

ཕོ་ཡིས་ཕོ། = पुरुष के द्वारा पुरूष

རྩོད་པ།	= विवाद।	དགོངས་པ།	= विचार।
འཐོབ་པ།	= पाना।	ཅིག་ཅར།	= एक साथ।
སོས་ཀ།	= ग्रीष्म।	བདུག་པ།	= धूप।
དངོས་པོ།	= द्रव्य।	ལྷོད་པ།	= ढीला।
རིག་པ།	= विद्या।	དག་པོ།	= शुद्ध।

མོ་ཡིས་མོ། = स्त्री के द्वारा स्त्री

མཐིང་ག	= नीला।	དགའ་མ།	= प्रिया।
སྙིང་ག	= हृदय।	གཏའ་མ།	= धरोहर।
གསུམ་ག	= तीनों।	ཉིའ་མ།	= सूर्य।
འདྲ་བ།	= सदृश।	གཞིང་མ།	= घास का मैदान।
བཟང་བ།	= भद्र।	མཐོང་བ།	= देखना।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

མ་ནིང་གིས་མ་ནིང་། = नपुंसक के द्वारा नपुंसक

སྟོན་ཁ།	= शरद् ।	མཕལ་ཆས།	= विस्तर ।
དགུན་ཁ།	= हेमन्त ।	དཀར་ཆ།	= प्रभा ।
དབྱར་ཁ།	= ग्रीष्म ।	འཕྲོན་ཚད།	= उत्पादन ।
རྒྱལ་ཁ།	= विजय ।	ཕལ་ཆེར།	= प्रायः ।
གསལ་ཁ།	= स्पष्ट ।	རིན་ཆེན།	= रत्न ।

རྣམ་དབྱེ་དང་ཕྱད་འདྲེན་ཚུལ།
विभक्ति और प्रत्यय प्रभावित (करने का) तरीका

सू०— མིང་མཐའ་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་ནི།།
དེ་ཉིད་རང་གི་སྒྲ་མཐུན་པའི།།
ཆོས་དངོས་ལས་དང་བྱེད་པ་དང་།།
སྦྱིན་དང་འབྱུང་ཁུངས་འབྲེལ་བ་དང་།།
གནས་དང་བོད་པའི་སྒྲ་ཡང་དྲང་།།

अनु०— उन संज्ञान्त (पूर्ववर्ती तथा परवर्ती) के द्वारा ही, ''(चाहे) वे अपने सजातीय ध्वनि के (हों अथवा हलकी ध्वनि के परन्तु)'' कर्त्ता और कर्म और करण, सम्प्रदान और अपादान और सम्बन्ध, अधिकरण और संबोधन (कारक) के (विभक्ति) प्रत्यय भी प्रभावित (किये जाते हैं ।)

सू०— གཞན་ཡང་སྔར་བསྡུ་ཕྲུག་བཅས་དང་།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

འབྱེད་སྡུད་བསྣན་དང་བདག་པོ་དང་།།

དགག་སྒྲུབ་རྒྱན་དང་དུས་ལའང་འཇུག།

དེ་དག་སྔ་ཤུགས་འདྲེན་པས་སྦྱང་།།

अनु०— इन के अतिरिक्त प्रतिसमाहरण, <u>और</u> सशेषक, विभाजक संयोजक आग्रह (-अवधारण), <u>और</u> स्वामित्वसूचक, <u>और</u> निषेधात्मक, निर्द्धारण-समाहरण, अलंकार (-समासक) तथा काल (वाचक प्रत्ययों) को भी उन पूर्ववर्ती (= परवर्ती संज्ञान्त की) शक्ति से प्रभावित होना पड़ता है ।

सू०— དེ་དག་ནང་གསེས་གང་འཇུག་པ།།

अनु०— (इस प्रकार) उन (विभक्ति और प्रत्ययों में) से कौन (सा प्रत्यय किस संज्ञान्त में) लगता (है) ?

तो सूत्र उत्तर देता है कि:-.

सू०— མཐར་སྦྱར་འོག་མའི་མིང་དོན་ལས།།

अनु०— (पद) अन्त (में) जुड़ने (वाले विभक्ति प्रत्ययों को परवर्ती) शब्दों (के) भावानुसार (प्रयोग करना चाहिये ।)

विभक्ति प्रत्यय किस प्रकार लगाना चाहिये, इस का उदाहरण सूत्र देता है कि:-

सू०— སྤྱི་འཇུག་ཡོད་དམ་བྱེད་པ་ཡོད།།

དེ་བཞིན་ཆེད་བྱེད་རྟེན་བྱེད་དང་།།

ལས་བྱ་སླང་བྱ་བསྒྲུབ་པར་བྱ།། ग'

སྔོན་དུ་འོས་པ་གནས་པའམ།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु०— भोट भाषा में संज्ञा मात्र कर्त्तृ कारक है । किसी भी संज्ञा के परे (कोई भी) सर्वनाम रहे, (जैसे, བདུད་རྩི་གང་ = अमृत जो) तो यहाँ पर བདུད་རྩི་ संज्ञा में कर्तृ कारक की विभक्ति लगी है ऐसा समझना चाहिये । तथा (जिस साधन के द्वारा कर्त्ता (क्रिया को करे उसे) करण कारक कहते हैं (जैसे, བདུད་རྩིས་འཚོ་བར་བྱེད། यहाँ पर བདུད་རྩི་ शब्द में तृतीय विभक्ति लगी है।

तदनुसार (जिस के लिये विशेष क्रिया की जाय उसे) सम्प्रदान (कहते हैं तथा उस में चतुर्थ विभक्ति लगती है । जैसे, བདུད་རྩི་ལ་མོས། यहाँ पर བདུད་རྩི་ शब्द में चतुर्थ विभक्ति लगी है ।

(जो क्रिया का अधिकरण (= आधार) हो उसे) अधिकरण कारक कहते हैं तथा उस में सप्तमी विभक्ति लगती है जैसे, བདུད་རྩི་ལ་བརྟེན། यहाँ पर བདུད་རྩི་ शब्द में सप्तमी विभक्ति लगी है ।

(जिस पर क्रिया का फल पड़े उसे) कर्मकारक (कहते हैं उस में द्वितीय विभक्ति लगती है जैसे, བདུད་རྩིར་བསྒྱུར་ यहाँ पर བདུད་རྩི་ शब्द में द्वितीय विभक्ति लगी है ।)

जिस से कुछ लिया जाय या अलग हो उसे) अपादान कारक (कहते हैं उसमें पंचमी विभक्ति होती है जैसे, བདུད་རྩི་ལས་བླང་། यहाँ पर བདུད་རྩི་ शब्द में पंचमी विभक्ति लगी है।)

(जहाँ पर स्वस्वामिभाव आदि का बोध हो उसे) सम्बन्ध कारक (कहते हैं उसमें षष्ठी विभक्ति लगती है, जैसे, བདུད་རྩིའི་རྒྱ་མཚོ། यहाँ पर བདུད་རྩི་ में षष्ठी विभक्ति लगी है ।)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(जिन विस्मयादि बोधक अव्यय के) पूर्व में (संबोध)-नीय (संज्ञा) रहे, (तो वह) भी (संज्ञा मात्र होने से कर्तृकारक के अन्तर्गत है । जैसे, བདུད་རྩི་མ་ཀྱི་བདག་ལ་འཚེ་མེད་སྐྱོལ།

अब प्रत्ययों का प्रयोग किस तरह करना चाहिये इस का उदाहरण सूत्र देता है कि:-

सू०— གཞན་ཡང་ཚིག་དོན་འོག་མ་ལས།།
བསྡུ་རྒྱུ་ཡོད་དམ་མེད་པ་དང་།།
གོང་མ་ལས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ཏེ།།

अनु०— (विभक्ति प्रत्ययों के अतिरिक्त) अन्य (प्रत्ययों का प्रयोग) भी आगे (के) शब्दों से (जानना चाहिये । वाक्यों में) समास रहे या न रहे (यदि) पूर्व (के शब्दों) से (पीछे के शब्दों को मिलाना हो तो पूर्व की संज्ञाओं के साथ क्रमशः समुच्चय-बोधक अव्यय जोड़ना चाहिये । जैसे, ལྷ་དང་། མི་དང་། ལྷ་མ་ཡིན་དང་། དྲི་ཟར་བཅས་པའི་འཇིག་རྟེན་ཡིད་རང་ངོ་།། तदनुसार (यदि पीछे की संज्ञाओं के साथ पूर्व की संज्ञाओं (= शब्दों) को मिलाना हो तो अन्तिम संज्ञा के साथ समासक प्रत्यय लगता है । जैसे, མི་དང་ལྷ་མ་ཡིན་མ་ཟད་ལྷས་ཀྱང་བདུད་དོ།།)

सू०— རྣམ་གྲངས་དག་ཀྱང་བཀོད་པ་ལས།།
བསྐྱར་བ་ཡོད་དམ་མེད་པ་དང་།།

अनु०— (वाक्यान्त में क्रियापद रहे तो) पर्यायवाची (शब्दों को क्रमशः) अंकित करके (अर्थात् लिख कर यदि) पुनरुक्ति हो तो (पूर्व की संज्ञाओं के बाद संयोजक अथवा विभाजक प्रत्यय लगा कर अन्तिम संज्ञा के साथ अवद्धारण-

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आग्रह प्रत्यय ''जो समासक प्रत्यय ही है'' जोड़ना चाहिये । जैसे, འཆི་མེད་དང་། ནམ་སྲིད་དང་། མིག་མི་འཛུམ་ནི་ལྷའོ།། और यदि पुनरुक्ति) न हो तो (संज्ञाओं को क्रमशः लिख कर अन्तिम संज्ञा के साथ अवद्धारण-आग्रह प्रत्यय जोड़ना चाहिये । जैसे, གསེར་དངུལ་ཟངས་ལྕགས་གཤའ་ཚེའང་སྐྱེར།)

सू०— ཕོ་སྒྲ་དང་ནི་མོ་སྒྲ་དང་།།
མིང་གི་མཐའ་ན་ཡོད་མེད་དང་།།

अनु०— (तद्धित या कृदन्त बनाने के लिये) संज्ञा (या क्रिया) के परे (स्वामित्व सूचक) पुरुष वाचक (པ་ པོ་ जोड़ दिये जाते हैं । जैसे, རྟ་པ། གསེར་པ། རྟག་པ་པ། ཡོད་པ་པོ། བྱེད་པ་པོ། སྒྲུབ་པ་པོ།) तथा (कुछ ऐसे भी हैं जिन के परे པ་ པོ་ མ་ མོ་ रहने पर भी तद्धति कृदन्त या निषेधात्मक शब्द नहीं है । जैसे, རྟག་པ་ དམ་པ། བསྟོད་པ། གཡོག་པོ། མེས་པོ། མཛེས་མ། གསར་མ། ཐྭ་མ། གོང་མ། ལྷ་མོ། སྟོན་མོ།

(क्रिया या भावों के निषेध के लिये निषेधात्मक) स्त्री प्रत्ययों (को शब्दों के आगे जोड़ दिये जाते हैं । जैसे, འཇིགས་མེད། འཆི་མེད། ཡོད་མིན། མེད་མིན། གཟུགས་མེད། སྒྲ་མེད།)[1]

सू०— ཀུན་དུ་གྱུར་པ་རྣམས་ལ་ཡང་།།
དོན་ལ་བསྟེགས་པ་ཡོད་མེད་དང་།།

---

१. སུམ་ཅུ་པ་ में निषेधात्मक प्रत्यत མ་ और མི་ दो बताये गये हैं, जो प्रायः मूल क्रिया तथा सहायक क्रियाओं के पूर्व जुड़ते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनु०— (शब्द) अलंकार में आने वाले (समानालंकार तथा असमानालंकार प्रत्ययों) को भी (यदि) भाव में (अन्तर) न आवे तो (जहाँ उपयुक्त हो जोड़ना चाहिये । जैसे, མཛེས་ཀྱང་མཛེས་ལ་འོད་ཀྱང་འཚེར། ཕྱུག་པོ་ཡིན་ནའང་སེར་སྣས་བཅིངས།)

सू०— བསྟན་བྱ་ལྷག་མ་ཡོད་མེད་དང་།། ཚིག་དོན་རྫོགས་དང་མ་རྫོགས་ཀྱིས།།

अनु०— (वाक्यों के) अधूरेपन को दिखाने के लिये (पूर्व की क्रिया के साथ सशेषक प्रत्यय जोड़ दिया जाता है । जैसे, རྟག་སྟེ་འཇིག་པ་མེད་པའི་ཕྱིར། མགོ་ན་སྟེ་ཤི། མདའ་འཕངས་ཏེ་ཐོག ।)

और (यदि) वाक्यों (की) समाप्ति (दिखाना हो तो प्रतिसमाहरण (=समाप्ति संयोजक अव्यय) जोड़ना चाहिये । जैसे, རྟག་གོ । རྫོགས་སོ།། བསྟན་ཏོ།། འགྲོའོ།། བྱའོ།།)

सू०— དེ་དག་ནང་གསེས་རྣམ་པར་དབྱེ།།

अनु०— (इन नियमों के अनुसार) उन (विभक्ति तथा प्रत्ययों का) आन्तरिक (प्रयोग और) अन्तर अच्छी (तरह जानना चाहिये ।)

सू०— ཅི་ཕྱིར་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་ན།།

अनु०— (उत्तर प्र० नं० ४, पराक्षर) किस (प्रयोग) के लिये युक्त होते हैं कहे तो (सूत्र उत्तर देता है कि:—)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सू०— ཡི་གེའི་ཁོངས་ནས་མིང་དབྱུང་སྟེ།།
མིང་གི་ཁོངས་ནས་ཚིག་ཕྱུང་ནས།།
ཚིག་གིས་དོན་རྣམས་སྟོན་པར་བྱེད།།

अनु०— (संज्ञा जो चाहे एक, दो या दो से अधिक) अक्षर समूहों से निष्पन्न हो (उन में कोई न कोई पराक्षर अवश्य जुड़ा रहेगा । जैसे, བདག དཔལ། ངལ། མིལ། ལྷལ། इत्यादि) । बिना पराक्षर का कोई भी सार्थक शब्द नहीं बनेगा) ।

पद (जो एक दो या दो से अधिक) संज्ञासमूहों (में विभक्ति प्रत्यय और अन्य प्रत्यय जोड़कर) निष्पन्न होते हैं उन के द्वारा (संसार के) समस्त भावों (की) अभिव्यक्ति होती है ।

सू०— མོ་ཡི་ཡི་གེ་མེད་པ་ན།།
ཕོ་ཡིག་བརྗོད་པ་མེད་པར་འགྱུར།།
ཕོ་ཡིག་དེ་དག་རྣམས་ལ་ཡང་།།
འཇུག་པར་བཅས་པ་མེད་ན་ནི།།
མིང་དང་ཚིག་ཀུང་གསལ་མི་ནུས།།
མིང་ཚིག་གསལ་བ་མེད་ན་ནི།།
དོན་རྣམས་བརྗོད་པར་མི་འགྱུར་རོ།།

अनु०— स्त्रीलिङ्ग के वर्ण (=स्वर) न रहे तो पुरुष लिङ्ग (के) वर्णों (=व्यञ्जनों का) उच्चारण नहीं होगा । उन पुरुष (लिङ्ग के) वर्णों में भी पराक्षरों (का) संयोग न हो तो (उन के द्वारा कोई) संज्ञा या पद ही स्पष्ट न होगा । (अर्थात्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

नहीं बनेगा ।) संज्ञा (या) पद (के) स्पष्टन न होने पर (अर्थात् न बनने पर) तो (मनुष्य के) सभी भाव (लिपि के द्वार) व्यक्त नहीं होंगे ।

सू०— དེ་ལྟར་གྱུར་ན་འཇིག་རྟེན་དུ།།
དོན་མཚོན་བརྗོད་པ་ཀུན་ཀྱང་མེད།།
རིག་བྱེད་སྒྲ་བའང་ཡོད་མི་འགྱུར།།
ཉན་ཐོས་རང་རྒྱལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི།།
བསླབ་པ་རྣམས་ཀྱང་མེད་པར་འགྱུར།།

अनु०— ऐसा होने पर संसार में कोई भी सार्थक शब्द नहीं होंगे । वेदोक्तियाँ भी नहीं होंगी[1] । श्रावक, प्रत्येकबुद्ध (तथा) बुद्ध के शिक्षापद भी नहीं होंगे ।

सू०— ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་སེམས་ཅན་རྣམས།།
ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དང་།།
གྲུབ་མཐའ་གཞན་ཡང་ཡོད་ན་ཡང་།།
རང་ཉིད་ཀྱིས་ནི་མི་ཤེས་བཞིན།།
དེ་བཞིན་ཡི་གེའི་འཇུག་ཚུལ་རྣམས།།
སྒྲ་བ་ཀུན་ལ་གནས་གྱུར་ཀྱང་།།

---

१. यहां पर धर्माकर का कहना है कि རིག་བྱེད་སྒྲ་བ་ शब्द से केवल मात्र, ऋक, साम, यजुः तथा अर्थव का ही मतलब नहीं है, अपितु व्याकरण, ज्योतिष, काव्य तथा अन्य कलाओं की भी प्रतीति होती हैं । क्योंकि རིག་བྱེད་ शब्द भोट भाषा में सभी प्रकार के कलाओं की प्रति प्रयोग होता है । इस प्रकार भाषा और व्याकरण इत्यादि एहिक शब्दों को भी नहीं रचे जा सकेंगे ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རང་རྒྱུད་དེ་ཉིད་མི་ཤེས་པས།།
དོན་ལ་སྦྱོར་བ་ག་ལ་ཤེས།།
དེ་ཕྱིར་སྨྲ་བའི་དབང་ཕྱུག་གིས།།
རྗེས་སྨྲས་འདི་ཀུན་རྟོགས་གྱུར་ཅིག།

अनु०— जिस तरह जगत के प्राणियों में (५) स्कन्ध (१२) आयतन तथा (१८) धातु विद्यमान रहते हैं तथा दूसरे सिद्धान्तों (के) भी (जैसे, सांख्यों के २५ तत्त्व तथा महायानियों के अष्ट आलयविज्ञान आदि तत्त्व अनादिकाल से इस शरीर धातु में प्रवाहित होते रहते हैं, फिर भी वे साधारणतया) अपने आप जाने नहीं जाते, ठीक उसी तरह वर्णों के प्रयोग (या) भाषा (आदि) सब के द्वारा (मुख से उच्चारित) होने पर भी (उन का) वास्तविक ज्ञान (बिना किसी वैयाकरण के बताये) अपने आप नहीं होता । (अत:) भावों (=अर्थों) के (यथार्थ) प्रयोग कैसा जानेगा ? इस लिये वागीश्वरों (=विद्वज्जनों) के (द्वारा) कथित (व्याकरण की) इन समस्त (प्रणालियों को) जानना चाहिये ।

བྱཱ་ཀ་ར་ཎའི་རྩ་བ་བརྒྱད་པ་ལས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་བྱཱ་ཀ་ར་ཎ་གཉིས་པའི་སྐབས་ཏེ་དྲུག་པའོ།།

(संस्कृत के) मूल आठ व्याकरणों मे से संभोट व्याकरण, द्वितीय अवकाश का छठा (परिवर्त) ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

བྱིངས་གཟུགས་མ། = धातु रूपावली

(ཀ)

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
पढ़ना	བཀླག་བྱ་	ཀློག་བྱེད་	བཀླགས་ཟིན་	ཀློགས་ཤིག
खोदना	བརྐོ་བྱ་	རྐོ་བྱེད་	བརྐོས་ཟིན་	རྐོས་ཤིག
चोरी करना	བརྐུ་བྱ་	རྐུ་བྱེད་	བརྐུས་ཟིན་	རྐུས་ཤིག
लेपना	བསྐུ་བྱ་	སྐུད་བྱེད་	བསྐུས་ཟིན་	སྐུས་ཤིག
सिकोड़ना	བསྐུམ་བྱ་	སྐུམ་བྱེད་	བསྐུམས་ཟིན་	སྐུམས་ཤིག
भेजना	བསྐུར་བྱ་	སྐུར་བྱེད་	བསྐུརད་ཟིན་	སྐུརད་ཅིག
उसकाना	བསྐུལ་བྱ་	སྐུལ་བྱེད་	བསྐུལད་ཟིན་	སྐུལད་ཅིག
नियुक्त करना	བསྐོ་བྱ་	སྐོ་བྱེད་	བསྐོས་ཟིན་	སྐོས་ཤིག
ओढ़ना	བསྐོན་བྱ་	སྐོན་བྱེད་	བསྐོནད་ཟིན་	སྐོནད་ཅིག
घुमाना	བསྐོར་བྱ་	སྐོར་བྱེད་	བསྐོརད་ཟིན་	སྐོརད་ཅིག
पसारना	བརྐྱང་བྱ་	རྐྱོང་བྱེད་	བརྐྱངས་ཟིན་	རྐྱོངས་ཤིག
रक्षा करना	བསྐྱབ་བྱ་	སྐྱོབ་བྱེད་	བསྐྱབས་ཟིན	སྐྱོབས་ཤིག
आवृत्ति करना	བསྐྱར་བྱ་	སྐྱོར་བྱེད་	བསྐྱརད་ཟིན་	སྐྱོརད་ཅིག
पहुँचाना	བསྐྱལ་བྱ་	སྐྱེལ་བྱེད་	བསྐྱལད་ཟིན་	སྐྱོལད་ཅིག
उधार लेना	བསྐྱི་བྱ་	སྐྱི་བྱེད་	བསྐྱིས་ཟིན་	སྐྱིས་ཤིག
रोकना	བསྐྱིལ་བྱ་	སྐྱིལ་བྱེད་	བསྐྱིལད་ཟིན་	སྐྱིལད་ཅིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
उलटी करना	བསྐྱུག་བྱ་	སྐྱུག་བྱེད་	བསྐྱུགས་ཟིན་	སྐྱུགས་ཤིག
हताना	བསྐྱུང་བྱ་	སྐྱུང་བྱེད་	བསྐྱུངས་ཟིན་	སྐྱུངས་ཤིག
चढ़ाना	བསྐྱོན་བྱ་	སྐྱོན་བྱེད་	བསྐྱོནད་ཟིན་	སྐྱོནད་ཅིག
पैदा करना	བསྐྲུན་བྱ་	སྐྲུན་བྱེད་	བསྐྲུནད་ཟིན་	སྐྲུནད་ཅིག
विवाद करना	བརྒལ་བྱ་	རྒོལ་བྱེད་	བརྒོལད་ཟིན་	རྒོལད་ཅིག
अर्पण करना	བརྒྱག་བྱ་	རྒྱག་བྱེད་	བརྒྱགས་ཟིན་	རྒྱོགས་ཤིག
अलंकृत करना	བརྒྱན་བྱ་	རྒྱན་བྱེད་	བརྒྱན་ཟིན་	བརྒྱན་ཞིག
मारना (पत्थर)	བརྒྱབ་བྱ་	རྒྱོབ་བྱེད་	བརྒྱབས་ཟིན་	རྒྱོབས་ཤིག
पिरोना	བརྒྱུ་བྱ་	རྒྱུ་བྱེད་	བརྒྱུས་ཟིན་	རྒྱུས་ཤིག
दौड़ाना	བརྒྱུག་བྱ་	རྒྱུག་བྱེད་	བརྒྱུགས་ཟིན་	རྒྱུགས་ཤིག
आज्ञा देना	བསྒོ་བྱ་	སྒོ་བྱེད་	བསྒོས་ཟིན་	སྒོས་ཤིག
समाधि लगाना	བསྒོམ་བྱ་	སྒོམ་བྱེད་	བསྒོམས་ཟིན་	སྒོམས་ཤིག
ऐंठना	བསྒྱིང་བྱ་	སྒྱིང་བྱེད་	བསྒྱིངས་ཟིན་	སྒྱིངས་ཤིག
परिवर्तन करना	བསྒྱུར་བྱ་	སྒྱུར་བྱེད་	བསྒྱུརད་ཟིན་	སྒྱུརད་ཅིག
गिराना	བསྒྱེལ་བྱ་	སྒྱེལ་བྱེད་	བསྒྱེལད་ཟིན་	སྒྱེལད་ཅིག
मुक्त करना	བསྒྲལ་བྱ་	སྒྲོལ་བྱེད་	བསྒྲལད་ཟིན་	སྒྲོལད་ཅིག
़स्पर्धा करना	བསྒྲིན་བྱ་	སྒྲིན་བྱེད་	བསྒྲིནད་ཟིན་	སྒྲིནད་ཅིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
ढकना	བསྒྲིབ་བྱ་	སྒྲིབ་བྱེད་	བསྒྲིབས་ཟིན་	སྒྲིབས་ཤིག
बटोरना	བསྒྲིལ་བྱ་	སྒྲིལ་བྱེད་	བསྒྲིལད་ཟིན་	སྒྲིལད་ཅིག
स्पर्धा करना	བསྒྲུན་བྱ་	སྒྲུན་བྱེད་	བསྒྲུནད་ཟིན་	སྒྲུནད་ཅིག
सिद्ध करना	བསྒྲུབ་བྱ་	སྒྲུབ་བྱེད་	བསྒྲུབས་ཟིན་	སྒྲུབས་ཤིག་
फस्ल काटना	བརྔ་བྱ་	རྔ་བྱེད་	བརྔས་ཟིན་	རྔོས་ཤིག
लुभाना	བརྔན་བྱ་	རྔན་བྱེད་	བརྔནད་ཟིན་	རྔོནད་ཅིག
चौंकना	བརྡམ་བྱ་	རྡོམ་བྱེད་	བརྡམས་ཟིན་	རྡོམས་ཤིག
भूनना	བརྔོད་བྱ་	རྔོད་བྱེད་	བརྔོས་ཟིན་	རྔོས་ཤིག
शिकार करना	བརྔོན་བྱ་	རྔོན་བྱེད་	བརྔོནད་ཟིན་	རྔོནད་ཅིག
स्तुति करना	བསྔགས་བྱ་	བསྔགས་བྱེད་	བསྔགས་ཟིན་	བསྔགས་ཤིག
फैलाना	བསྔོ་བྱ་	སྔོ་བྱེད་	བསྔོས་ཟིན་	སྔོས་ཤིག
दोष बताना	བསྔོག་བྱ་	སྔོག་བྱེད་	བསྔོགས་ཟིན་	སྔོགས་ཤིག
धरना	བཅང་བྱ་	འཆང་བྱེད་	བཅངས་ཟིན་	ཆོངས་ཤིག
छिपाना	བཅབ་བྱ་	འཆབ་བྱེད་	བཅབས་ཟིན་	ཆོབས་ཤིག
बनाना	བཅའ་བྱ་	འཆའ་བྱེད་	བཅས་ཟིན་	འཆོས་ཤིག
बांधना	བཅིང་བྱ་	འཆིངས་བྱེད་	བཅིངས་ཟིན་	ཆིངསཤིག
चढ़ना (घोड़ेपर)	བཅིབ་བྱ་	འཆིབས་བྱེད་	བཅིབས་ཟིན་	ཆིབསཤིག
बराबर करना	བསྙམ་བྱ་	སྙོམས་བྱེད་	བསྙམས་ཟིན་	སྙོམས་ཤིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
खिसकाना	བསྐིལ་བྱ་	སྐིལ་བྱེད་	བསྐིལད་ཟིན་	སྐིལད་ཅིག
कम करना	བསྐུང་བྱ་	སྐུང་བྱེད་	བསྐུངས་ཟིན་	སྐུངས་ཞིག
जाना	བསྐིག་བྱ་	སྐིག་བྱེད་	བསྐིགས་ཟིན་	སྐིགས་ཞིག
गदला करना	བསྐོག་བྱ་	སྐོག་བྱེད་	བསྐོགས་ཟིན་	སྐོགས་ཞིག
बीनना	བཏུ་བྱ་	འཐུ་བྱེད་	བཏུས་ཟིན་	ཐུས་ཞིག
बुनना	བཏག་བྱ་	འཐག་བྱེད་	བཏགས་ཟིན་	ཐོགས་ཞིག
पीना	བཏུང་བྱ་	འཐུངས་བྱེད་	བཏུངས་ཟིན་	ཐུངས་ཞིག
तोड़ना (फूल)	བཏོག་བྱ་	འཐོག་བྱེད་	བཏོགས་ཟིན་	ཐོགས་ཞིག
निरीक्षण करना	བརྟག་བྱ་	རྟོག་བྱེད་	བརྟགས་ཟིན་	རྟོགས་ཞིག
देखना	བལྟ་བྱ་	ལྟ་བྱེད་	བལྟས་ཟིན་	ལྟོས་ཞིག
तह लगाना	བལྟབ་བྱ་	ལྟབ་བྱེད་	བལྟབས་ཟིན་	ལྟོབས་ཞིག
पैदा होना	བལྟམ་བྱ་	ལྟམ་བྱེད་	བལྟམས་ཟིན་	ལྟོམས་ཞིག
दिखाना	བསྟན་བྱ་	སྟོན་བྱེད་	བསྟནད་ཟིན་	སྟོནད་ཅིག
चढ़ाना	བསྟབ་བྱ་	སྟོབ་བྱེད་	བསྟབས་ཟིན་	སྟོབས་ཞིག
सेवन करना	བསྟེན་བྱ་	སྟེན་བྱེད་	བསྟེནད་ཟིན་	སྟེནད་ཅིག
सहयोग करना	བསྟོང་བྱ་	སྟོང་བྱེད་	བསྟོངས་ཟིན་	སྟོངས་ཞིག
हांकना	བདའ་བྱ་	འདེད་བྱེད་	བདས་ཟིན་	དེད་ཅིག
पैनाना	བརྡར་བྱ་	རྡར་བྱེད་	བརྡརད་ཟིན་	རྡོརད་ཅིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
मारना (छड़ी)	བརྡུང་བྱ་	རྡུང་བྱེད་	བརྡུངས་ཟིན་	རྡུངས་ཤིག
मारना (छड़ी)	བརྡེག་བྱ་	རྡེག་བྱེད་	བརྡེགས་ཟིན་	རྡེགས་ཤིག
चाटना	བལྡག་བྱ་	ལྡག་བྱེད་	བལྡགས་ཟིན་	ལྡོགས་ཤིག
बांधना	བསྡམ་བྱ་	སྡོམ་བྱེད་	བསྡམས་ཟིན་	སྡོམས་ཤིག
इकट्ठा करना	བསྡུ་བྱ་	སྡུད་བྱེད་	བསྡུས་ཟིན་	སྡུས་ཤིག
जोड़ना	བསྡོམ་བྱ་	སྡོམ་བྱེད་	བསྡོམས་ཟིན་	སྡོམས་ཤིག
सोचना	བརྣག་བྱ་	རྣོག་བྱེད་	བརྣགས་ཟིན་	རྣོགས་ཤིག
धारण करना	བསྣམ་བྱ་	སྣོམ་བྱེད་	བསྣམས་ཟིན་	སྣོམས་ཤིག
भोंकना	བསྣུན་བྱ་	སྣུན་བྱེད་	བསྣུནད་ཟིན་	སྣུནད་ཅིག
सानना	བསྣོ་བྱ་	སྣོ་བྱེད་	བསྣོས་ཟིན་	སྣོས་ཤིག
घुसाना	བཙང་བྱ་	འཚངབྱེད་	བཙངས་ཟིན་	ཚོངས་ཤིག
खोजना	བཙལ་བྱ་	འཚོལ་བྱེད་	བཙལད་ཟིན་	ཚོལད་ཅིག
निचोड़ना	བཙིར་བྱ་	འཚིར་བྱེད་	བཙིརད་ཟིན་	ཚིརད་ཅིག
सीना	བཙེམ་བྱ་	འཚེམ་བྱེད་	བཙེམས་ཟིན་	ཚེམས་ཤིག་
पकाना	བཙོ་བྱ་	འཚོད་བྱེད་	བཙོས་ཟིན་	ཚོས་ཤིག་
बेचना	བཙོང་བྱ་	འཚོང་བྱེད་	བཙོངས་ཟིན་	ཚོངས་ཤིག
विवाद करना	བརྩད་བྱ་	རྩོད་བྱེད་	བརྩད་ཟིན་	རྩོད་ཅིག
गिनना	བརྩི་བྱ་	རྩི་བྱེད་	བརྩིས་ཟིན་	རྩིས་ཤིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
भेजना	བརྫང་བྱ་	རྫོང་བྱེད་	བརྫངས་ཟིན་	རྫོངས་ཤིག
कुचलना	བརྫི་བྱ་	རྫི་བྱེད་	བརྫིས་ཟིན་	རྫིས་ཤིག
गलाना	བཞུ་བྱ་	བཞུ་བྱེད་	བཞུས་ཟིན་	བཞུས་ཤིག
दुहना	བཞོ་བྱ་	འཇོ་བྱེད་	བཞོས་ཟིན་	ཞོས་ཤིག
चढ़ना	བཞོན་བྱ་	ཞོན་བྱེད་	བཞོནད་ཟིན་	ཞོནད་ཅིག
खाना	བཟའ་བྱ་	ཟ་བྱེད་	བཟས་ཟིན་	ཟོ་ཞིག་
जपना	བཟླ་བྱ་	ཟློ་བྱེད་	བཟླས་ཟིན་	ཟློས་ཤིག
नष्ट करना	བརླག་བྱ་	རློགས་བྱེད་	བརླགས་ཟིན་	རློགས་ཤིག
भिगोना	བརླན་བྱ་	རློན་བྱེད་	བརློནད་ཟིན་	རློནད་ཅིག
बताना	བཤད་བྱ་	འཆད་བྱེད་	བཤད་ཟིན་	ཤོད་ཅིག
सजाना	བཤམ་བྱ་	གཤོམ་བྱེད་	བཤམས་ཟིན་	ཤོམས་ཤིག
पतला काटना	བཤུར་བྱ་	བཤུར་བྱེད་	བཤུར་ཟིན	བཤུར་ཤིག
सोचना	བསམ་བྱ་	སེམས་བྱེད་	བསམས་ཟིན་	སོམས་ཤིག
हटाना	བསལ་བྱ་	སེལ་བྱེད་	བསལད་ཟིན་	སོལད་ཅིག
सहना	བསྲན་བྱ་	སྲན་བྱེད་	བསྲནད་ཟིན་	སྲོནད་ཅིག
रक्षा करना	བསྲུང་བྱ་	སྲུང་བྱེད་	བསྲུངས་ཟིན་	སྲུངས་ཤིག
मथना	བསྲུབ་བྱ་	སྲུབ་བྱེད་	བསྲུབས་ཟིན་	སྲུབས་ཤིག
मिलाना	བསྲེ་བྱ་	སྲེ་བྱེད་	བསྲེས་ཟིན་	སྲེས་ཤིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
जलाना	བསྲེག་བྱ་	སྲེག་བྱེད་	བསྲེགས་ཟིན་	སྲེགས་ཤིག
गरम करना	བསྲོ་བྱ་	སྲོ་བྱེད་	བསྲོས་ཟིན་	སྲོས་ཤིག
उठाना	བསླང་བྱ་	སློང་བྱེད་	བསླངས་ཟིན་	སློངས་ཤིག
सीखना	བསླབ་བྱ་	སློབ་བྱེད་	བསླབས་ཟིན་	སློབས་ཤིག
प्रवेश करना	བསླེབ་བྱ་	སླེབ་བྱེད་	བསླེབས་ཟིན་	སླེབས་ཤིག

(ག)

तोड़ना	གཅག་བྱ་	གཅོག་བྱེད་	བཅག་ཟིན	ཆོག་ཅིག
काटना	གཅད་བྱ་	གཅོད་བྱེད་	བཅད་ཟིན་	ཆོད་ཅིག
मरोड़ना	གཅུ་བྱ་	འཆུས་བྱེད་	བཅུས་ཟིན་	བཅུས་ཤིག
देना	གཏང་བྱ་	གཏོང་བྱེད་	བཏང་ཟིན་	ཐོང་ཞིག
नवाना	གཏུད་བྱ་	འདུད་བྱེད་	བཏུད་ཟིན་	ཐུད་ཅིག
बोना	གདབ་བྱ་	འདེབས་བྱེད་	བཏབ་ཟིན་	ཐོབ་ཅིག
चुनना	གདམས་བྱ་	འདེམས་བྱེད་	བདམས་ཟིན་	འདེམས་ཤིག
दबाना	གནན་བྱ་	གནོན་བྱེད་	གནན་ཟིན་	གནོན་ཅིག
सताना	གཅེ་བྱ་	གཅེ་བྱེད་	གཅེས་ཟིན་	གཅེས་ཤིག
चीरना	གཙག་བྱ་	གཙག་བྱེད་	གཙགས་ཟིན་	ཙོགས་ཤིག
चुकाना	གཞལ་བྱ་	འཇལ་བྱེད་	བཅལད་ཟིན་	འཇོལད་ཅིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
चूसना	གཞིབ་བྱ་	འཇིབ་བྱེད་	བཞིབས་ཟིན་	འཇིབས་ཤིག
प्रवेश करना	གཞུག་བྱ་	འཛུག་བྱེད་	བཙུག་ཟིན་	ཚུགས་ཤིག
नष्ट करना	གཞོམ་བྱ་	འཇོམས་བྱེད་	བཅོམ་ཟིན་	ཆོམ་ཞིག
पकड़ना	གཟུང་བྱ་	འཛིན་བྱེད་	བཟུང་ཟིན་	ཟུངས་ཤིག
रोपना	གཟུགས་བྱ་	འཛུགས་བྱེད་	བཙུགས་ཟིན་	ཚུགས་ཤིག
डुलाना	གཡབ་བྱ་	གཡོབ་བྱེད་	གཡོབས་ཟིན་	གཡོབས་ཤིག
ढाकना	གཡོག་བྱ་	གཡོག་བྱེད་	གཡོགས་ཟིན་	གཡོགས་ཤིག
फाड़ना	གཤག་བྱ་	གཤོག་བྱེད་	བཤགས་ཟིན་	གཤོགས་ཤིག
हत्या करना	གསད་བྱ་	གསོད་བྱེད་	བསད་ཟིན་	གསོད་ཅིག
सुनना	གསན་བྱ་	གསན་བྱེད་	གསནད་ཟིན་	གསོནད་ཅིག
पालना	གསོ་བྱ་	གསོ་བྱེད་	གསོས་ཟིན་	གསོས་ཤིག

(ད)

बजाना	དཀྲོལ་བྱ་	དཀྲོལ་བྱེད་	དཀྲོལད་ཟིན་	དཀྲོལད་ཅིག
लादना	དགལ་བྱ་	འགེལ་བྱེད་	བཀལད་ཟིན་	ཁོལད་ཅིག་
सजाना	དགྲམ་བྱ་	འགྲེམས་བྱེད་	བཀྲམ་ཟིན་	ཁྲོམས་ཤིག
खोलना	དགྲོལ་བྱ་	འགྲོལ་བྱེད་	བཀྲོལ་ཟིན་	ཁྲོལ་ཅིག
निन्दा करना	དཔྱ་བྱ་	དཔྱ་བྱེད་	དཔྱས་ཟིན་	དཔྱོས་ཤིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
लटकाना	དཔྱང་བྱ་	དཔྱོང་བྱེད་	དཔྱངས་ཟིན་	དཔྱོངས་ཤིག
उतारना	དབབ་བྱ་	འབེབ་བྱེད་	ཕབ་ཟིན་	ཕོབ་ཅིག
चढ़ाना	དབུལ་བྱ་	འབུལ་བྱེད་	ཕུལད་ཟིན་	ཕུལད་ཅིག
मिटाना	དབྱི་བྱ་	འབྱིད་བྱེད་	ཕྱིས་ཟིན	ཕྱིས་ཤིག
निकालना	དབྱུང་བྱ་	འབྱིན་བྱེད་	ཕྱུང་ཟིན་	ཕྱུང་ཞིག
खोलना	དབྱེ་བྱ་	འབྱེད་བྱེད་	ཕྱེས་ཟིན་	ཕྱེས་ཤིག
खरौंचना	དབྲད་བྱ་	འབྲད་བྱེད་	བྲད་ཟིན་	ཕྲོད་ཅིག
कम करना	དབྲི་བྱ་	འབྲིད་བྱེད་	ཕྲིས་ཟིན་	ཕྲིས་ཤིག
लूटना	དབྲོག་བྱ་	འཕྲོགས་བྱེད་	ཕྲོག་ཟིན་	ཕྲོགས་ཤིག

(२)

झगड़ना	འཁྲུག་བྱ་	འཁྲུག་བྱེད་	འཁྲུགས་ཟིན་	འཁྲུགས་ཤིག
चाहना	འཁྲིན་བྱ་	འཁྲིན་བྱེད་	འཁྲིན་ཟིན་	འཁྲིནད་ཅིག
चलना[1]	འགྲུ་བྱ་	འགྲུ་བྱེད་	འགྲུས་ཟིན་	འགྲུས་ཤིག
बदलना	འགྱུར་བྱ་	འགྱུར་བྱེད་	གྱུརད་ཟིན་	གྱུརད་ཅིག
जाना	འགྲིམ་བྱ་	འགྲིམ་ བྱེད་	འགྲིམས་ཟིན་	འགྲིམས་ཤིག
सिद्ध होना	འགྲུབ་བྱ་	འགྲུབ་བྱེད་	གྲུབ་ཟིན་	གྲུབ་ཅིག

---

१. पठकों के सुभीता के लिए यहां पर अक्रमक क्रियाओं का रूप भी सक्रमक क्रियाओं की भांति बनाया जाता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
टूटना	འཆག་བྱ་	འཆག་བྱེད་	ཆག་ཟིན་	ཆག་ཅིག
कटना	འཆད་བྱ་	འཆད་བྱེད་	ཆད་ཟིན་	ཆད་ཅིག
गलती होना	འཆུག་བྱ་	འཆུག་བྱེད་	འཆུགས་ཟིན་	འཆུགས་ཤིག
पकड़ना	འཛུ་བྱ་	འཛུ་བྱེད་	འཛུས་ཟིན་	འཛུས་ཤིག
जमा होना	འཐུ་བྱ་	འཐུ་བྱེད་	འཐུས་ཟིན་	འཐུས་ཤིག
पाना	འཐོབ་བྱ་	འཐོབ་བྱེད་	ཐོབ་ཟིན་	ཐོབས་ཤིག
मलना	འདུམ་བྱ་	འདུམ་བྱེད་	འདུམས་ཟིན་	འདུམས་ཤིག
नम्र होना	འདུལ་བྱ་	འདུལ་བྱེད་	དུལ་ཟིན་	དུལ་ཞིག
चौंकना	འདྲོག་བྱ་	འདྲོག་བྱེད་	འདྲོགས་ཟིན་	འདྲོགས་ཤིག
उड़ना	འཕུར་བྱ་	འཕུར་བྱེད་	འཕུརད་ཟིན་	འཕུར་ཞིག
बदलना	འཕོ་བྱ་	འཕོ་བྱེད་	འཕོས་ཟིན་	འཕོས་ཤིག
मिलना	འཕྲད་བྱ་	འཕྲད་བྱེད་	ཕྲད་ཟིན་	ཕྲད་ཅིག
जाना	འབྲང་བྱ་	འབྲང་བྱེད་	བྲངས་ཟིན་	བྲོངས་ཤིག
जुड़ना	འབྲེལ་བྱ་	འབྲེལ་བྱེད་	འབྲེལད་ཟིན་	འབྲེལ་ཞིག
बढ़ना	འཚར་བྱ་	འཚར་བྱེད་	འཚར་ཟིན་	འཚར་ཞིག
जलना	འཚིག་བྱ་	འཚིག་བྱེད་	ཚིག་ཟིན་	ཚིག་ཅིག
चूना	འཛག་བྱ་	འཛག་བྱེད་	འཛགས་ཟིན་	འཛགས་ཤིག
समाप्त होना	འཛད་བྱ་	འཛད་བྱེད་	ཟད་ཟིན་	ཟད་ཅིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(མ)

क्रिया	भविष्यत्	वर्त्तमान	भूत	विधि
जानना	མཁྱེན་བྱ་	མཁྱེན་བྱེད་	མཁྱེནད་ཟིན་	མཁྱེནད་ཅིག
कूदना	མཆོང་བྱ་	མཆོང་བྱེད་	མཆོངས་ཟིན་	མཆོངས་ཤིག
पूजा करना	མཆོད་བྱ་	མཆོད་བྱེད་	མཆོད་ཟིན་	མཆོད་ཅིག
दर्शन करना	མཇལ་བྱ་	མཇལ་བྱེད་	མཇལད་ཟིན་	མཇོལད་ཅིག
श्रवण करना	མཉན་བྱ་	མཉན་བྱེད་	མཉན་ཟིན་	མཉན་ཅིག
सूंघना	མནམ་བྱ་	མནམ་བྱེད་	མནམས་ཟིན་	མནོམས་ཤིག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तीसरा अध्याय

བཀའ་མོལ། = वार्त्तालाप

(१)

མ་བུ།

བུ་— ཨ་མ་ལགས་། ངའི་དཔེ་ཁྲུག་ག་པ་ཡོད། ང་(འི་)སློབ་གྲྭར་འགྲོ་རན་སོང་།

ཨ་མ་ —སྔོན་ལ་ཁ་ལག་ཟ་ཞིག དེ་ནས་སློབ་གྲྭར་འགྲོ། ད་ལྟ་ཆུ་ཚོད་དགུ་དང་སྐར་མ་བཅོ་ལྔ་མ་གཏོགས་ཟིན་མི་འདུག འདི་ནས་སློབ་གྲྭ་བར་ཁྱོད་རང་སྐར་མ་བཅོ་ལྔ་ལ་སླེབ་ཐུབ་ཀྱི་རེད།

བུ་— ཨ་མ་ལགས། དེ་རིང་ང་ཚོའི་སློབ་གྲྭར་གཞུང་གི་དཔོན་པོ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཕེབ་ཀྱི་ཡོད་པ་རེད། ཡིན་སང་ང་(ལ་)མགྱོགས་པ་འགྲོ་དགོས་ཡོད། ངའི་སྣད་རས་དང་སྟོད་ཐུང་ག་པ་ཡོད།

ཨ་མ་ —ཁྱོད་རང་གི་དུག་ལོག་ཐམས་ཅད་སྒམ་ཕ་གིའི་ནང་བཙུག་ཡོད། ག་ལེར་ཐོན་ཅིག

བུ་— ལགས་ལགས་སོ།། དེ་རིང་ང་རྒྱལ་རབས་ཀྱི་དཔེ་ཆ་དང་སྦྱོང་དེབ་གཅིག་གཉིས་མ་གཏོགས་དཔེ་ཆ་གཞན་པ་ཚོ་འཁུར་གྱི་མིན། དེ་རིང་སློབ་སྦྱོང་མང་པོ་ཡོང་གི་མ་རེད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཨ་མ་ —དཔོན་པོ་སུ་ཕེབ་ཀྱི་རེད།

བུ་— ཨ་མ་ལགས། སློབ་གྲྭ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞིབ་དཔྱོད་བྱེད་མཁན་དཔོན་པོ་རེད།

(१)

माता पुत्र

पुत्र— माता जी, मेरा बस्ता कहाँ है ? मेरा पाठशाला जाने का वक्त हो गया ।

माता— पहले खाना खा लो, फिर पाठशाला को जाना । अभी तो नौ बजकर पाँच मिनट ही हुये हैं । यहाँ से पाठशाला तक तुम पन्द्रह मिनट में पहुँच सकते हो ।

पुत्र— माता जी, आज हमारी पाठशला में एक बड़े सरकारी अधिकारी पधार रहें हैं । जिससे मुझे शीघ्र जाना है । मेरी धोती और कुरता कहाँ हैं ?

माता— तुम्हारे सारे कपड़े उस बक्स के भीतर रखे हैं । धीरे से निकाल लो ।

पुत्र— जी अच्छा। आज मैं इतिहास की पुस्तक और एक दो अभ्यास-पुस्तिका को छड़कर दूसरी पुस्तकें नहीं ले जाऊँगा । आज पढ़ाई ज़्यादा नहीं होगी ।

माता— कौन अधिकारी पधारेंगे ?

पुत्र— माता जी, सारे स्कूलों का निरीक्षण करने वाले अधिकारी हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१)

སློབ་གྲོགས་གཉིས།

ཀ་— གྲོགས་པོ་ཁྱེད་ཀྱི་མཚན་ག་རེ་རེད།

ཁ་— ལགས། ངའི་མིང་ཆེ་རིང་རེད།

ཀ་— ཁྱེད་ཀྱི་ཕ་ལགས་ཕྱུག་ལས་གང་གནང་གི་ཡོད། འདིར་མ་ཕེབས་གོང་ཁྱེད་རང་གིས་སློབ་གྲྭ་གང་གི་ནང་འཛིན་གྲྭ་གང་ཐོན་པ་ཡིན།

ཁ་— ལགས། ངའི་ཕ་ལགས་ཨེམ་ཆི་ཞིག་རེད། ཞིང་ལས་ཀྱང་ཞི་དྲག་གནང་གི་ཡོད། ང་ཚོའི་གྲོང་གསེབ་ལ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་གུན་དྲི་ལགས་ཀྱིས་བཙུགས་གནང་བའི་སྐད་གཞི་སློབ་གྲྭ་ཞིག་ཡོད། ང་སྔོན་ལ་དེར་འཛུལ་བ་ཡིན། དེ་རྗེས་དི་ལླི་ར་ཡོང་ནས་གཞུང་གི་སློབ་གྲྭ་ཆེན་པོར་འཛུལ་ནས་འཛིན་གྲྭ་བཅུ་པ་ཐོན་ཡིན།

ཀ་— ལགས་ལེགས་སོ།། ཐུགས་རྗེ་ཆེ། ང་ཡང་འཛིན་གྲྭ་བཅུ་པ་ཐོན་པ་ཡིན། དེ་རིང་ནས་བཟུང་སྔ་ང་ཚོ་གཉིས་ངོ་ཤེས་གྲོགས་པོར་གྱུར་སོང་། ཁྱེད་རང་ང་རང་ཚོའི་ཁང་པར་ཡང་ཡང་ཕེབས་རོགས་གནང་། ང་ཚོའི་ཁང་པ་སློབ་གྲྭའི་ཐག་ཉེ་མོར་ཡོད། ངའི་མིང་ལ་ཀུན་དགའ་ཟེར།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཁ་— ལགས་ལེགས་སོ། ང་(འི་)ནི་སློབ་གྲྭའི་སློབ་གཉེར་ཁག་ཞིག་ཏུ་སྡོད་རྩིས་ཡིན། ད་ལྟ་སྡོད་ཤག་རག་མ་སོང་། བྱུས་རྩང་ཟ་ཁང་ཞིག་ལ་བསྡད་ཡོད།

ཀ་— ཨ་ལེ། ལགས་ལེགས་སོ།།

(२)

दो सहपाठी

क— मित्र, आप का नाम क्या है ?

ख— जी, मेरा नाम दीर्घायु है ।

क— आप के पिताजी क्या काम करते हैं ? यहाँ न आने से पूर्व आप ने किस पाठशाला में कौन (सी) कक्षा पास की है ।

ख— जी, मेरे पिताजी एक वैद्य हैं । खेत का काम भी खूब करते हैं । हमारे गांव में महात्मा गाँधीजी द्वारा स्थापित किया गया एक बेसिक स्कूल है । मैं पहले उस में भर्ती हुआ था । उस के बाद दिल्ली में आकर गवर्नमेंट हाई स्कूल में भर्ती होकर दसवीं कक्षा (को) पास किया हूँ ।

क— अच्छा जी, धन्यवाद । मैं भी दसवीं कक्षा (को) पास किया हूँ । आज से लेकर हम दोनों परिचित मित्र हो गए । आप हमारे घर बार बार आयेएगा । हमारा घर स्कूल के निकट में है । मेरा नाम आनन्द है ।

ख— अच्छा जी, मेरा तो स्कूल के किसी छात्रावास में रहने का कार्यक्रम है । अभी जगह नहीं मिली । अतः एक भोजनालय में बैठा हूँ ।

क— ओ, अच्छा जी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(༢)

ལས་བྱེད་པ་གཉིས།

ཀ་— སྐུ་ཞབས་ལགས། སང་ཉིན་གཟའ་ཉི་མ་རེད། སྤྲོ་སྐྱིད་ལ་ག་པར་ཐེབ་རྒྱུ་ཡོད།

ཁ་— ལགས། ད་ལྟ་བརྟན་བརྟན་རང་མེད། ངའི་བཟའ་ཟླས་ད་རུང་ཧྥ་ཞོ་གྲོང་མཐོང་མ་མྱོང་བ་རེད། ཁོ་མོ་གྲོང་དེ་ལྟ་བ་ལ་འགྲོ་གི་ཡིན་ཟེར་ནས་ཨུ་ཚུགས་ཞི་དྲག་རྒྱག་གི་འདུག ཕལ་ཆེར་དེ་ཕྱོགས་འགྲོ་དགོས་བྱེད་ཀྱི་རེད།

ཀ་— ཨ་ལས། ང་ཡང་ཨུག་ར་ཞོ་གྲོང་ད་རུང་མ་མཐོང་བ་ཡིན། ང་ཡང་དེ་ཕྱོགས་འགྲོ་ན།

ཁ་— ངེས་པར་དུ་ཕེབས་རོགས་གནང་། ང་རང་ལྟ་ལན་མང་པོ་ཕྱིན་པ་ཡིན། ལན་ག་ཚོད་ལྟ་ན་ཡང་ཡིད་ཆིམ་པ་ཡོང་གི་མི་འདུག ཞོ་གྲོང་དེ་ཤཱཧ་ཛ་ཧཱ་རྒྱལ་པོས་རང་གི་བཙུན་མོ་མུམ་ཏཱཛ་གྱི་དྲན་གསོར་བརྩིགས་སུ་བཅུག་པ་རེད། དེའི་ནང་རྒྱལ་པོ་དང་བཙུན་མོ་གཉིས་ཀྱི་བང་སོ་ཉེ་འགྲམ་དུ་རྒྱག་ཡོད་པ་རེད།

ཀ་— ཁྱེད་རང་དེའི་སྐོར་ང་ལ་ལོ་རྒྱུས་བསྡུས་བསྡུས་ཤིག་གསུང་རོགས་གནང་དང་།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཁ་— སྔོན་དུས་ཤིག་ན་ཁ་ཆེའི་རྒྱལ་པོ་ཤཱཧ་ཛཧཱཾ་བྱ་བ་ཞིག་ལ་བཙུན་མོ་ཤིན་ཏུ་མཛེས་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བ་ཞིག་ཡོད་པ་རེད། བཙུན་མོ་དེས་གྲོངས་པའི་ཆེ་རྒྱལ་པོ་ལ་ངའི་དྲན་གསོར་བང་སོ་མཛེས་པོ་ཞིག་རྩིག་རོགས་གནང་ཞེས་ཞུས་ཆེམས་[1]བཞག་ནས་གྲོངས་པ་རེད། བཙུན་མོ་དེ་གྲོངས་པའི་རྗེས་རྒྱལ་པོས་ཁོང་གི་དྲན་གསོར་ཆུ་བོ་ཡ་མུ་ནའི་གཡས་ཀྱི་འགྲམ་ལ་བང་སོ་འདི་རྒྱག་ཏུ་བཅུག་པ་རེད། ཕོ་བྲང་དེ་རྩིག་པ་ལ་ལོ་ ༣༣ ཙམ་འགོར་བ་རེད། འགྲོ་སོང་ཡང་སྒོར་བྱེ་བ་༣༠ ཐམ་པ་ཕྱིན་རེད། ཕོ་བྲང་འདི་འཛམ་གླིང་ནང་སྐད་གྲགས་ཡོད་པ་ཞིག་རེད། དེང་སང་འདིའི་སྲུང་སྐྱོབ་རྒྱ་གར་གཞུང་གི་གནའ་དུས་ཨར་ལས་ལས་ཁུངས་ཀྱི་ཕྱོགས་ནས་གནང་གི་ཡོད་པ་རེད།

ག་— ལགས་ལེགས་སོ།། ཐུགས་རྗེ་ཆེ།

(३)

दो कार्यकर्त्ता

क— महाशय जी, कल रविवार है । सैर के लिये किधर जाने का कार्यक्रम है ।

ख— जी, अभी तो निश्चित नहीं है । मेरी पत्नी ने अभी ताजमहल नहीं देख सकी है । वह,''उस महल को देखने जाना है '' कहकर बड़ी तंग करती है । शायद उस ओर जाना पड़ेगा ।

---

१. मरते वक्त की बात ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

क— ओ, मैं भी आगरा महल नहीं देखा हूँ । मैं भी उस ओर चलूँ तो ।

ख— ज़रूर चलिये । मैं तो बहुत बार गया हूँ । जितने बार देखने पर भी मन (में) तृप्ति नहीं आती । उस महल (को) राजा शाहजहाँ ने अपनी रानी मुमताज की यादगार में बनवाया था । उस के भीतर राजा और रानी दोनों की कबर आस-पास बनी हुई है ।

क— आप उस के विषय में मुझे एक संक्षिप्त वृतान्त सुनाइये ।

ख— पूर्वकाल में शाहजहाँ नामक एक मुसलमान राजा की एक अत्यन्त सुन्दरी, मनमोहक रानी थी । उस रानी ने मरते वक्त राजा को, मेरी यादगार के लिये एक सुन्दर समाधि बनवाइयेगा कह कर प्रार्थना कर के मरी थी । उस रानी के मरने के बाद राजा ने उस की स्मृति में यमुना नदी के दाहिने किनारे यह मकबरा बनवाया था । उस महल के तामीर करने में लगभग २२ वर्ष लगे हैं । तीस करोड़ रुपये भी खर्च हुये हैं । यह महल संसार में प्रसिद्ध है । आज कल इस की रक्षा भारत सरकार के पुरातत्व विभाग की ओर से होती है ।

क— बहुत अच्छा । धन्यवाद ।

(༨)

ཇ་ཁང་ཞིག་ཏུ།

དགེ་རྒན— དྲུང་ཡིག་ལགས། ཇ་ཁང་འདི་ནང་གསོལ་དཀར་གང་གང་ གསོལ་ཇ་བཞེས་པ་ལ་ཕེབས་དང་། ཟ་ཁང་འདི་གཙང་མ་ ཞིག་འདུག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དྲུང་ཡིག་ — ལགས། ཕེབ་རོགས་གནང་།

དགེ་རྒན་ — (གཡོག་པོ་ལ་) ལྷ་ཡེ། གསོལ་ཇ་ཡག་པོ་ཞིག་བཟོས་ནས་ གསོལ་དཀར་དོ་ཁྱེར་ཤོག

གཡོག་པོ་ — ལགས་ལགས་སོ།། ཞལ་ཏོག་གང་བཞེས་ཀྱི་ཡིན་པས།

དགེ་རྒན་ — ཁྱོད་རང་ལ་ཁ་ཟས་ག་རེ་ག་རེ་ཡོད།

གཡོག་པོ་ — ལགས། གང་བཞེས་ནའང་ཡོད། སྒོ་ང་ཡང་ཡོད།

དགེ་རྒན་ — འོ་ན་བྱ་དེའི་སྒོ་ང་བཞི་བརྫོས་ནས་སྡེར་མ་གཉིས་ཀྱི་ནང་བཅུག་ ནས་ཁྱེར་ཤོག (དྲུང་ཡིག་ལ་)ཁྱེད་འདི་ཕྱོགས་ནས་ཕེབས་ དང་། སྐྱིའུ་ཁྲུང་ནས་ཁྲིམས་ཀྱི་ལྟད་མོ་ཞི་དྲག་ཡག་པོ་མཐོང་ གི་འདུག

དྲུང་ཡིག་ — ལགས་ལགས་སོ། མ་གཞི་འདི་ནས་ཀྱང་དགའ་རབ་མཐོང་ གི་འདུག (གཡོག་པོ་ལ་) ལྷ་ཡེ། རྒྱ་ཅོག་འདི་ཕྱི་ བདར་རྒྱོབ་ཅིག གསོལ་ཇ་ཚ་པོ་ཚ་པོ་ཁྱེར་ཤོག ཁྱོད་ རང་ལ་འདིར་ཕོགས་ག་ཚོད་རག་གི་འདུག

གཡོག་པོ་ — ལགས། ཟླ་རེར་སྒོར་མོ་སུམ་ཅུ་ཐམ་པ་དང་ལྷོ་གོས་ཀྱང་ འཐོབ་ཀྱི་འདུག མཆམས་མཆམས་ལ་གསོལ་རས་ཀྱང་ སྩོལ་གནང་གི་འདུག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དགེ་རྒན་— རྩིས་རྡུག་ག་ཚོད་བྱུས་སོང་།

གཡོག་པོ་— ལགས། སྣོང་བཞི་ལ་སྣོར་མོ་གཅིག་དང་། གསོལ་ཇ་
གསོལ་དཀར་གཉིས་ལ་ཨ་ན་བཞི་བྱུང་སོང་།

(४)

एक चाय की दूकान में

अध्यापक— लिपिक जी, इस चाय की दूकान में एक एक कप चाय पीने के लिये चलिये । यह एक साफ दूकान है ।

लिपिक— जी, चलिए ।

अध्यापक— (नौकर से) अरे, एक अच्छी चाय बना कर दो कप लेते आओ ।

नौकर— जी, अच्छा । मिठाई क्या खायेंगे ?

अध्यापक— तुम्हारे को (पास) क्या क्या मिठाइयाँ हैं ?

नौकर— जी, जो भी खाये (सब) है । अण्डा भी है ।

अध्यापक— अच्छा तब मुर्गी के चार अण्डे भूना कर दो प्लेटों में डालकर ले आओ । (लिपिक से) आप इस ओर से आइये । खिड़की से बाजार का दृश्य बहुत अच्छा दीखता है ।

लिपिक— जी, अच्छा । यूँ तो यहाँ से भी बहुत अच्छा दीखता है । (नौकर से) अरे, इस मेज़ (को) पोंछ दो । चाय गर्म गर्म ले आओ तुम को यहाँ वेतन कितना मिलता है ?

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

नौकर— जी, मासिक तीस रुपये तथा भोजन वस्त्र भी मिलता है । कभी कभी इनाम भी दे देते हैं ।

अध्यापक— हिसाब कितना हो गया ?

नौकर— जी, चार अण्डों का एक रुपया और दो कप चाय के चार आने हो गए ।

(༥)

ཁྱིམ་མཚེས་གཉིས།

ཀ་— ཕྱག་ཕེབས་གནང་སྐུ་ཞབས་དབང་རྒྱལ་ལགས།

ཁ་— ལགས་ཡིན་ཐུགས་རྗེ་ཆེ། དོན་གྲུབ་ལགས།

ཀ་— ཁྱེད་ཀྱི་སྐུ་གཟུགས་བདེ་པོ་ཡིན་པས། ལམ་དགག་ལ་འོ་བརྒྱལ་པོ་ལྷ་བྱུང་མ་སོང་ངམ། དེང་སང་རྒྱ་གར་ལ་ཚད་པ་ཆེན་པོ་ཡོད་ཀྱི་རེད། ཚོང་ཟོག་ཡག་པོ་བསྡམས་ཡོད་པས།

ཁ་— ལགས་ཡིན། ད་ལྟ་གཟུགས་པོ་ཨ་འུ་ཙི་འདུག རྒྱ་གར་གཞུང་རང་ལ་ལྟ་ཚད་པ་ཆེན་པོ་ཡོད་ཀྱི་རེད། ཀ་སྤྲུག་དང་འབྲས་ལྗོངས་ཁུལ་ལའང་དེང་སང་ཧ་ཅང་ཚད་པ་འདུག ཡིན་ཙང་ང་ན་ནས་ཟླ་བ་གཅིག་ཙམ་སྨན་ཁང་ལ་སྡོད་དགོས་བྱུང་སོང་། ཚོང་ཟོག་མང་པོ་རང་འཁྱེར་རྒྱུ་མ་བྱུང་སྟེ་སོ་སོའི་ཁང་པ་ལ་དགོས་པའི་ཅ་ལག་ཙག་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གེ་རྩིག་གེ་ར་གཉིས་བཅས་ཀ་ལམ་དོ་བོ་ལྔ་བཅུ་ཙམ་ཁྲིར་ཡོད། ད་ལོ་བདལ་སླ་ཡང་ཁེ་ཐག་ཆོད་འདུག

ཀ་— ཨོ་ཡག་པོ་བྱུང་། དེ་རང་ཡིན་གྱི་རེད། ད་ལོ་ང་རང་ཚོའི་ལྷ་སའི་ཁྲོམ་ལའང་དངོས་ཟས་ཞིད་དྲག་ཁེ་བོ་ཕྱིན་བཞག་འདུག འདི་ནས་ཕར་ག་རེ་བསྐྱམས་ཕེབས་པས།

ཁ་— བལ་དོ་ཉིས་བརྒྱ་ཙམ་དང་པགས་པ་ཁ་ཤས་འཁྱེར་ཕྱིན་པ་ཡིན། དེ་མིན་བོད་ནས་རྒྱ་གར་ལ་འཁྱེར་ཕྱིན་ནས་ཚོང་རྒྱག་རྒྱུའི་དངོས་ཟས་ང་ཚོ་བོད་པ་ལ་གཞན་ག་རེ་ཡོད།

ཀ་— དེ་ག་རང་། ང་ཚོ་བོད་པ་ལ་སྐྱིད་པོ་བྱེད་ཡའི་དུས་ཆོད་བྲལ་བ་རེད། གཉིས་པ་ང་ཚོ་ད་དུང་ཤེས་རིག་ཀྱང་ཞི་དྲག་དམན་པ་རེད། ཡིན་ཙང་ཡུལ་གྱི་ཡར་སྐྱིད་བྱེད་ཡ་དཀའ་ལས་ཁག་པོ་རེད།

ཁ་— དེ་ག་རང་། ད་ང་རང་ཚོའི་གཞུང་གི་ཕྱོགས་ནས་ཀྱང་སློབ་གྲྭ་ཁ་ཤས་གཟུགས་ཀྱི་ཡིན་ཞེས་ཟེར་གྱིན་ཡོད་པ་རེད།

ཀ་— ལགས་མི་ཚོ་དེ་ག་རང་ཟེར་གྱི་འདུག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(५)

दो पड़ौसी

क— आइये, महाशय इन्द्रजीत जी ।

ख— जी हूँ, धन्यवाद सिद्धार्थ जी ।

क— आप की तबीयत ठीक है न, मार्ग में कष्ट तो नहीं हुआ ? आज कल भारतवर्ष में बड़ी गर्मी होगी, सौदा अच्छा लाये?

ख— जी हूँ अभी तो शरीर कुछ ठीक है । भारतवर्ष के मध्य में तो बड़ी गर्मी होगी । कालिम्पोंग और सिक्किम क्षेत्र में भी आज कल बड़ी गर्मी है । जिस से मुझे बीमार होकर लगभग एक मास अस्पताल में रहना पड़ा । सौदा ज्यादा तो नहीं लाया फिर भी अपने घर के लिये आवश्यक छोटे मोटे एक दो सामानों के साथ लगभग पच्चास गट्ठर लाया हूँ । इस वर्ष किराया भी खूब सस्ता है ।

क— ओ, अच्छा हुआ । यही बात है । इस वर्ष अपने ल्हासा के बाजार में भी सामान खूब सस्ता हुआ है । यहाँ से उधर को क्या ले गये थे ?

ख— जी, लगभग दो सौ गट्ठर ऊन और चमड़े ले गया था । उस के अतिरिक्त तिब्बत से भारत को ले जाकर व्यापार करने का सामान हम तिब्बतियों के पास दूसरा क्या है ।

क— वही तो । हम तिब्बतियों को मौज करने का मौका नहीं है । दूसरे हम लोग अभी विद्या में भी अत्यन्त पिछड़े हैं । अतः देश की उन्नति करना कठिन है ।

ख— वही तो, अब (तो) अपनी सरकार की ओर से भी कुछ पाठ-शालायें स्थापित होंगी, ऐसा कहा जा रहा है ।

क— जी, लोग ऐसा ही कहते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(༦)

སློབ་གཉེར་བ་གཉིས།

བསྟན་འཛིན་— གྲོགས་པོ་ལགས། དབྱར་གྱི་གུང་སེང་ལ་ཁྱེད་རང་ག་པར་ཕེབ་ཀྱི་ཡིན་པས།

རིན་ཆེན་— ལགས། འདི་ལོ་ང་ཁ་ཆེ་ལུང་པ་ལ་འགྲོ་གི་ཡིན། ལུང་པ་དེ་ཤིན་ཏུ་མཛེས་པོ་ཞིག་ཡོད་པ་རེད། དབྱར་དུས་སུ་ཡང་དེ་ར་གྲང་མོ་ཡོད་པ་རེད། ཡིན་སང་དེ་དུས་ཁ་ཆེའི་ལུང་པ་ལ་སྐྱོ་སེང་གཏང་མཁན་མི་ཚོགས་མང་པོ་འདུས་ཀྱི་ཡོད་པ་རེད། མི་ཁ་ཤས་ཀྱིས་དེ་ལ་མེ་ཏོག་གི་ལུང་པ་ཡང་ཟེར་གྱི་རེད། ཅེ་སྙེ་དབྱར་གྱི་དུས་སུ་ཕྱོགས་བཞིར་རང་བཞིན་གྱིས་མེ་ཏོག་སྣ་ཚོགས་ཤར་ཡོང་གི་ཡོད་པ་རེད། ཁ་ཆེ་ཤ་སྨམ་ལུང་པ་འདིའི་འཐོན་རྫས་ཆེན་པོ་ཞིག་རེད། ཁ་ཆེ་ཤ་སྨམ་མེ་ཏོག་གི་ཟེའུ་འབྲུ་རེད། ཡིན་ཙང་དེའི་མིང་ལ་གུར་གུམ་ཡང་ཟེར་གྱི་རེད། ཀུ་ཤུ་དང་རྒུ་གུན་འབྲུམ་སོགས་ཤིང་ཐོག་ཀྱང་འཕེལ་པོ་རེད། ཁ་ཆེའི་མི་ཚོ་ལག་ཤེས་ཏ་ཅང་མཁས་པ་ཡོད་པ་རེད། ཁ་ཆེའི་ལུང་པ་ལ་བཟོས་པའི་ཤིང་ཀོས་དངོས་རྫས་དང་ཚེམ་དྲུབ་གོས་སྣན་སོགས་དེལ་ལི་དང་། བམ་བེའི་དང་ཀལ་ཀ་ཏ་ལྟ་བུའི་གྲོང་ཁྱེར་ཆེན་པོར་འཚོང་རྒྱུ་ལ་ཕོན་ཆེན་པོ་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཏོང་གི་ཡོད་པ་རེད། དེའི་བྱང་ཁུལ་ལ་ལ་དྭགས་ཟེར་གྱི་རེད། ལ་དྭགས་ཀྱི་ལྟེ་བ་སླེ་རྒྱལ་ས་རྒྱ་མཚོའི་ཁོས་ནས་ཕུཊ་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་ས་མཐོན་པོར་ཆགས་ཡོད་པ་རེད། དེར་དགོན་པ་དང་དགེ་སློང་ཡང་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད། ལ་དྭགས་ལ་ཡང་གྲང་ང་ར་ཆེན་པོ་འབྱུང་གི་ཡོད་པ་རེད། བྱུས་རྩང་དེར་ཕོ་མོ་ཐམས་ཅད་ཕྱུ་པ་མཐུག་པོ་གོན་གྱི་ཡོད་པ་རེད།

(६)

दो विद्यार्थी

शासनधर — मित्र जी, गर्मी की छुट्टी में आप कहाँ जायेंगे ?

रत्न— जी, इस वर्ष मैं कश्मीर जाऊँगा । वह एक अत्यन्त सुन्दर देश है । ग्रीष्म काल में भी वहाँ सर्दी रहती है । इस लिये उस समय कश्मीर में सैर करने वालों (की) बड़ी भीड़ लग जाती है । कुछ लोग उसे पुष्प का देश भी कहते हैं । क्योंकि ग्रीष्म काल में चारों और अपने आप्र विभिन्न फूल खिल आते हैं । केसर इस देश की एक बड़ी उपज है । केसर पुष्प का पराग है । अतः इसका नाम कुमकुम भी कहते हैं । सेब और अंगूर इत्यादि फल भी बहुत हैं । कश्मीरी लोग हस्तकला में अत्यन्त प्रवीण होते हैं । कश्मीर में बने नकाशी–काष्ठ तथा कढ़े हुये वस्त्र–आसन आदि दिल्ली, बम्बई तथा कलकत्ता जैसे महा नगरों में बेचने के लिये बड़ी मात्रा में भेजे जाते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

उस के उत्तरी भाग को लद्दाख कहते हैं । लद्दाख का केन्द्र ल्हे शहर समुद्र तल से बारह हजार फुट की ऊँची भूमि पर स्थित है । वहाँ विहार और भिक्षु भी बहुत हैं । लद्दाख में भी कड़ाके की सर्दी पड़ती है । अतः वहाँ स्त्री पुरुष सभी मोटे चोगा पहनते हैं ।

(༧)

མི་ཏོག་ལྡུམ་ར།

སློབ་མ་— གྲོགས་མོ་ལགས། མི་ཏོག་འདིའི་མཛེས་ཆོས་ལ་གཟིགས་རོགས་གནང་དང་། མི་ཏོག་འདི་ཁྱེད་ཀྱི་འཁྱུར་ཆོས་ནང་བཞིན་དཀར་ལ་དམར་མདངས་ཡོད་པ་ཞིག་འདུག

ལེགས་སྐྱེས་— སློབ་མ་ལགས། ཞལ་ཤོབ་མ་གནང་དང་། མི་ཏོག་དཔེ་ཅན་དང་ང་དཔེ་རུ་གནང་ནས་ཁྱེད་དཔྱིད་ཀྱི་དཔལ་ཡོན་གྱི་དམའ་འབེབས་པ་མ་གནང་དང་། གསོན་དང་ཁུ་དབྱུག་ཀྱང་སྐད་གང་འདྲ་སྙན་པོ་གཏོང་གི་འདུག འདོད་ལྷ་ཡང་རང་གི་དམག་དཔུང་དང་བཅས་འདོད་ལྡན་ལ་གཡུལ་འགྱེད་ཕྱིར་ཨང་གསར་བྱེད་ཀྱིན་འདུག ཁྱེད་སུ་མཉམ་ཆང་ས་རྒྱབ་རྒྱུ་ཡིན།

སློབ་མ་— གྲོགས་མོ་ལེགས་སྐྱེས་ལགས། ང་ལ་འདི་འདྲ་གསུང་རོགས་མ་གནང་། ང་ད་ལྟ་སློབ་གཉེར་མ་རེད། ང་ནི་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སློབ་སྦྱོང་ཞིག་མ་གཏོགས་འདི་འདྲ་དམན་པའི་བསམ་བློ་ཁྱོན་ནས་གཏོང་གི་མེད། ང་རང་བུད་མེད་ཚོ་སློབ་སྦྱོང་མེད་རྐྱེན་གྱིས་སྐྱེས་པ་ཚོའི་གཞི་གཞི་དང་བཙན་གནོན་ལ་སྡོད་དགོས་འབྱུང་བཞིན་ཡོད་པ་རེད། ང་ཚོ་བུད་མེད་ཀྱི་རིགས་ཀྱང་སློབ་སྦྱོང་ལ་ཧུར་ཐག་འབད་ཐག་གནང་ན་སྐྱེས་པ་ཚོའི་རྗེས་ལུས་ཐེབས་ཡ་ཡོད་པ་མ་རེད། ཁྱེད་རང་ཡང་ཧོག་ཙམ་སློབ་སྦྱོང་གནང་ན་ཞི་དྭག་ཡག་པོ་ཡོང་གི་རེད།

ལེགས་སྐྱེས་— མ་གཞི་ཁྱེད་ཀྱི་བཀའ་གནང་རང་རེད་དེ། ང་རང་ཕུ་གུ་གཅིག་གཉིས་ཤིག་ཁྲིད་ནས་སློབ་སྦྱོང་གང་འདྲ་བྱེད་ཐུབ་ཀྱི་རེད༑ ཡིན་ན་ཡང་ང་རའི་བུ་མོ་ཆེ་བ་དེ་སློབ་གྲྭར་མགྱོགས་པ་གཏང་གི་ཡིན།

སྒྲོལ་མ་— ལགས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ། ངེས་པར་དུ་དེ་ག་རང་གནང་རོགས་གནང་།

(७)

पुष्प वाटिका

तारा— सखी जी, इस पुष्प की सुन्दरता को देखिये । यह पुष्प आप के गाल सा, सफेद में एक लाली लिये हुये है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सुजाता— तारा जी, मज़ाक मत कीजिए । पुष्प (को) उपमान तथा मुझे उपमेय में दे कर आप वसन्त के वैभव का तिरस्कार मत कीजिए । सुनो तो, कोयल भी कितनी मीठी आवाज़ दे रही है । काम देव भी अपनी सेना सहित कामी से युद्ध करने के लिये तैयारी कर रहा है । आप किस के साथ शादी करेंगी ?

तारा— सखी सुजाता जी, मुझे इस प्रकार मत कहिये । मैं अभी विद्यार्थी हूँ । मैं तो (अपनी) एक पढ़ाई (को) छोड़कर इस तरह का तुच्छ विचार बिलकुल नहीं करती हूँ । हम महिलाओं (को) शिक्षा (की) कमी के कारण पुरुषों का तिरस्कार और दबाव में रहना पड़ रहा है । हम स्त्री जाति भी पढ़ाई में कोशिश करें तो पुरुषों से पीछे रहने वाली नहीं हैं । आप भी थोड़ा अध्ययन कर लें तो बड़ा अच्छा होगा ।

सुजाता— यूँ तो आप जो कहती हैं, ठीक है । मैं एक दो बच्चों को लेकर किस तरह अध्ययन कर सकूंगी । फिर भी अपनी बड़ी पुत्री को शीघ्र पाठशाला भेजूँगी ।

तारा— जी धन्यवाद, अवश्य वैसा ही कीजिए ।

(༨)

བཟོ་གྲྭ་ཁང་གི་ལས་བྱེད་པ་གཉིས།

ཀུན་དགའ་— གྲོགས་པོ་ཤེས་རབ་རྡོ་རྗེ་ལགས། ཁྱེད་བཟོ་གྲྭ་གང་དུ་ཞུག་ལས་གནང་གི་ཡོད། ཁྱེད་ཀྱི་བཟོ་གྲྭ་ཁང་ལ་ལས་བྱེད་པ་ག་ཚོད་ཡོད་པ་རེད། བཟོ་གྲྭ་ཁང་གི་ཕྱོགས་ནས་བཞུགས་ཁང་ཡང་ཐོབ་ཡོད་ཀྱི་རེད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཤེས་རབ་རྡོ་རྗེ་ —གྲོགས་མཆོག་ལགས། བདག་ང་ར་ལྕགས་ཀྱི་བཟོ་གྲྭ་ཁང་དུ་ལྕགས་ཞུ་མཁན་ལས་བྱེད་པ་ཞིག་ཡིན། ང་ཚོའི་བཟོ་གྲྭར་ལས་བྱེད་པ་སྟོང་ཕྲག་གཉིས་ལས་ལྷག་ཡོད་པ་རེད། བཟོ་གྲྭ་ཁང་གི་ཕྱོགས་ནས་སྤྱོད་ཞག་ཁང་པ་མ་ཟད་ལས་བྱེད་པའི་ཕྲུ་གུ་ཚོ་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་ཡའི་དོན་ལ་སློབ་གྲྭ་དང་པོ་བ་ཞིག་དང་སློབ་གྲྭ་བར་མ་ཞིག་ཀྱང་བཙུགས་ཡོད་པ་རེད། ལས་བྱེད་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱོགས་རིས་མེད་པར་སོ་སོའི་འོས་བབ་དང་བསྟུན་ནས་གསོལ་ཕོགས་སྤྲོར་གྱི་ཡོད་པ་རེད།

ཀུན་དགའ་— བདག་གི་བུ་དང་བུ་མོ་ཚོ་གལ་ཏེ་སློབ་གྲྭ་དེར་གཏོང་ན་འགྲིག་གི་རེད་དམ། བདག་གི་བུ་ཆེ་བ་དེ་ཉིན་དེ་སློབ་སྦྱོང་བྱེད་ཡའི་རྒྱ་ཅང་ཞེ་འདོད་ཡོད་པའི་མི་ཞིག་རེད།

ཤེས་རབ་རྡོ་རྗེ་ — སློབ་གྲྭ་དེ་ནང་སུ་ཡང་འཛུལ་ཆོག་གི་རེད། འོན་ཀྱང་སློབ་གྲྭ་བའི་ཕོགས་ནི་འཕོབ་ཐུབ་ཀྱི་མ་རེད། ང་ཚོའི་ཕྲུ་གུ་ཚོ་ལ་དམིགས་བསལ་གནང་ནས་སློབ་གྲྭ་བའི་ཕོགས་འཕོབ་ཀྱི་ཡོད་པ་རེད།

ཀུན་དགའ་— འཛམ་གླིང་ནང་བཟོ་རིག་ལ་མཁས་ཤོས་སུ་རེད།

ཤེས་རབ་རྡོ་རྗེ་ —ཨམ་རི་ཀ་དང་ཨུ་རུ་སུ་གཉིས་རེད། ལུང་པ་དེ་ཆོར་བྱ་བ་མང་པོ་འཕྲུལ་འཁོར་གྱིས་བྱེད་ཀྱི་ཡོད་པ་རེད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(८)

कारखाने के दो कर्मचारी

आनन्द— मित्र प्रज्ञावज्र जी, आप किस कारखाने में काम करते हैं ? आप के कारखाने में कितने कर्मचारी हैं ? कारखाने की ओर से निवासगृह भी मिला होगा ?

प्रज्ञावज्र— मित्रवर जी, मैं इस्पात के कारखाने में लौह गलाने वाला एक कर्मचारी हूँ । हमारे कारखाने में दो सहस्र से अधिक कर्मचारी हैं । कारखाने की ओर से निवासगृह के अतिरिक्त कर्मचारियों के बच्चों (को) पढ़ने के लिये एक प्राइमरी स्कूल और एक मिडिल स्कूल भी स्थापित किये हुए हैं । सभी कर्मचारियों को बिना पक्षपात के अपनी अपनी योग्यता के अनुसार वेतन मिलता है ।

आनन्द— मेरे पुत्र और पुत्रियों (को) यदि उस पाठशाला में भेजूँ तो क्या (यह) ठीक होगा ? मेरा ज्येष्ठ पुत्र हिन्दी पढ़ने का एक बड़ा शौकीन आदमी है ।

प्रज्ञावज्र— उस पाठशाला में कोई भी भर्ती हो सकता है, परन्तु छात्रवृत्ति नहीं मिल सकती । हम लोगों के बच्चों को विशेष रूप से छात्रवृत्ति मिलती है ।

आनन्द— संसार में शिल्पकला में सब से प्रवीण कौन है ?

प्रज्ञावज्र— अमेरिका और रूस दो हैं । उन देशों में बहुत (से) काम मशीनों के द्वारा किये जाते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(༨)

དམག་མི་དང་དམག་དཔོན།

དམག་དཔོན་— ཁྱོད་དམག་མིར་འཛུལ་ནས་ལོ་ག་ཚོད་ཕྱིན་སོང་། ཁྱོད་ཀྱི་ལོ་ག་ཚོད་རེད།

དམག་མི་— བདག་དམག་མིར་འཛུལ་ནས་ལོ་འཁོར་བཅུ་ཞིག་ཕྱིན་སོང་། བདག་གི་ལོ་སུམ་ཅུ་སོ་ལྔ་ཡིན།

དམག་དཔོན་— ཁྱོད་དམག་སྦྱོང་ཡག་པོ་ཤེས་ཀྱི་ཡོད་པས། ཁྱོད་ཚོའི་དམག་ཁག་གི་མདའ་དཔོན་གྱི་མཚན་ལ་ག་རེ་ཟེར་གྱི་རེད།

དམག་མི་— ལགས། བདག་དམག་སྦྱོང་ཡག་པོ་ཤེས་ཀྱི་ཡོད། དམག་ཆེན་གཉིས་པའི་སྐབས་དམག་ལའང་ཕྱིན་པ་ཡིན། བདགས་མ་འདི་ཚོ་དེ་སྐབས་ཐོབ་པ་རེད། ང་ཚོའི་མདའ་དཔོན་པན་ཏྲབ་པ་ཞིག་རེད། ཁོང་དཔའ་ངར་དང་སྤོབས་པ་མངའ་བའི་མདའ་དཔོན་ཞིག་ཡོད། ང་ཚོའི་དམག་ཁག་གི་མི་ཐམས་ཅད་ཁོང་གི་ཆེ་བ་བརྗོད་ཀྱི་རེད། ཁོང་གི་མཚན་ལ་རལ་གྲི་སེང་གེ་ཉུ་གི་རེད།

དམག་དཔོན་— ཁྱོད་ཚོའི་འཛིན་ཆར་དམག་ཆས་དང་དམག་རྒྱུགས་སྐྱིལ་མཁན་མི་སྔོང་ཁ་ཤས་གཏོང་རྒྱུ་ཡིན།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དམག་མི་— ལགས་ལགས་སོ།།

དམག་དཔོན་— མི་མདའ་དང་། མདེལ་སྒམ་དང་། ལག་བོམ་དང་། མི་མདའ་སྒྲག་སྒྲག་བཅས་དོ་པོ་ཁྲི་ཞིག་བདང་ཚར་བ་ཡིན། དགྲ་ཡ་ལ་བག་ཟོན་བྱེད་དགོས། ཁྱོད་ཚོའི་མདའ་དཔོན་ལ་དེ་རིང་དགོང་དག་བདག་གི་ཚུར་དམག་སྒར་ལ་ཕེབས་རོག་ཞུ་དགོས།

དམག་མི་— ལགས་ལགས་སོ།།

(९)

सिपाही और सेनापति

सेनापति— तुम्हें सेना में भर्ती हुये कितने वर्ष हो गए ? तुम्हारी अवस्था क्या है ?

सिपाही— मुझे सेना में भर्ती हुये लगभद दस वर्ष हो गये । मेरी अवस्था पैंतीस वर्ष है ।

सेनापति— तुम कवायद अच्छी जानते हो ? तुम्हारे पलटन के कर्नल का नाम क्या है ?

सिपाही— जी, मैं कवायद अच्छी जानता हूँ । दूसरे महायुद्ध के समय युद्ध में भी गया हूँ । ये पदक उस समय मिले हैं । हम लोगों का कर्नल एक पंजाबी हैं । आप एक वीर और साहसी कर्नल हैं । हमारे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पलटन में आप की सब लोग बड़ाई करते हैं । आप का नाम शमशेर सिंह कहते हैं ।

सेनापति— तुम लोगों के मोर्चे पर युद्ध सामग्री और रसद ले जाने वाले कुछ सहस्त्र आदमियों (को) भेजना है ।

सिपाही— जी अच्छा ।

सेनापति— बन्दूक, गोलियों (के) बक्स, हाथबम और मशीनगनों के साथ दस हज़ार बोझ भेज चुका हूँ । दुशमन से सावधान रहना चाहिये । तुम्हारे कर्नल को आज संध्या मेरे पास किले में आने को कहना (चाहिये) ।

सिपाही— जी अच्छा ।

(༡༠)

བོད་ —༡

ཀ་— བོད་ཀྱི་ལྟེ་བ་གང་རེད། རྒྱ་མཚོའི་ངོས་ནས་ཤུགས་ག་ཚོད་ཀྱི་མཐོ་སར་ཆགས་ཡོད་པ་རེད། ཁྲིད་རང་ཚོའི་རྒྱལ་པོའི་མཚན་ལ་ག་རེ་ཞུ་གྱི་རེད།

ཁ་— བོད་ཅེས་བྱ་བའི་ས་ནི་ཕྱོགས་བཞིར་གངས་རི་མཐོན་པོས་བསྐོར་ཡོད་པ་རེད། དེའི་རྐྱེན་གྱིས་དགུན་དུས་སུ་བོད་ལ་གྲང་ངད་ཆེན་པོ་ཡོང་གི་ཡོད་པ་རེད། བོད་ལ་དབུས་དང་གཙང་ཞིང་ཆེན་གཉིས་ཡོད་པ་རེད། དབུས་ཀྱི་ལྟེ་བ་ལ་ལྷ་ས་དང་།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཙང་གི་ལྟེ་བ་ལ་གཞིས་ཀ་རྩེ་ཟེར་གྱི་ཡོད་པ་རེད། གྲོང་ཁྱེར་དེ་གཉིས་རྒྱ་མཚོའི་ངོས་ནས་ཕུཊ་སྟོང་ཕྲག་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་མཐོ་སར་ཆགས་ཡོད་པ་རེད། དེའི་ཕྱིར་བོད་ལ་ཤིང་ནགས་ཞེད་དྲག་དཀོན་པོ་རེད། ཕྱོགས་བཞིར་རི་རྒྱུད་མཐོན་པོ་མཐོན་པོ་ཡོད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ཆར་པ་ཡང་མང་པོ་མི་འབབ། ལོ་ཐོག་ནི་ནས་དང་། གྲོ་དང་། སྲན་མ་དང་། ཞོག་ཀོག་དང་ལུག་མགོ་པད་ཚལ་མ་གཏོགས་འབྲས་སོགས་དེར་མི་སྐྱེའོ།།

བོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་[illegible]གོང་ས་ཏཱ་ལའི་བླ་མ་མཆོག་རེད། དབུས་ཞིང་ཆེན་ལ་གདན་ས་ཆེན་པོ་བཞི་ཡོད་པ་རེད། དེ་དག་གི་དབུ་བླ་[illegible]གོང་ས་ཏཱ་ལའི་བླ་མ་མཆོག་དང་། གཙང་ལ་གདན་ས་བཀྲ་ཤིས་ལྷུན་པོའི་དབུ་བླ་[illegible]གོང་ས་པཎ་ཆེན་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གནང་གི་ཡོད་པ་རེད།

(१०)

भोट–१

क— तिब्बत का केन्द्र कौन है ? समुद्र की सतह से कितने फुट की ऊँची भूमि पर बसा हुआ है ? आप लोगों के राजा का नाम क्या है ?

ख— भोट नामक स्थान तो चारों ओर से हिमाच्छादित ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है । इस वजह से हेमन्त काल में तिब्बत में बड़ी सर्दी पड़ती है । तिब्बत में वुस् और चङ (ये) दो महाप्रान्त हैं । वुस् के केन्द्र को ल्हासा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

और चङ के केन्द्र को जिसकाचे कहते हैं । वे दोनों नगर समुद्र की सतह से बारह हज़ार फुट की ऊँची भूमि पर स्थित है । इस लिये तिब्बत में जंगलों का अत्यन्त अभाव है । चारों ओर से ऊँची ऊँची पर्वत श्रेणियाँ होने के कारण बारिश भी ज़्यादा नहीं बरसती । फसल तो जो, गेहूँ, मटर, आलु और पातगोभी को छोड़कर धान इत्यादि वहाँ पैदा नहीं होते । तिब्बत का राजा महामहिम दलाई लामा जी हैं । वुस् प्रान्त में चार महा विहार हैं । जिन के प्रधान माननीय दलाई लामा जी और चङ में टशी ल्हुन्पो महाविहार के प्रधान परम पुनीत पण्छेन रिन्पोछे जी हैं ।

(༡༡)

བོད་ — ༣

ཀ་— ཁྲིད་རང་ཚོའི་བོད་ལ་ཆོས་ལུགས་གང་གི་མི་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད། རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་སྐད་ཡིག་ག་རེ་རེད།

ཁ་— ང་ཚོའི་བོད་ལ་བརྒྱ་ཆ་དགུ་བཅུ་གོ་བདུན་སངས་རྒྱས་པ་དང་ལྷག་མ་བོན་ཆོས་པ་ཡོད་པ་རེད། བོན་གྱི་ཆོས་ནི་སྔ་དུས་ནས་ཡོད་པ་ཞིག་རེད། མཁས་པ་ཁ་ཤས་ཀྱི་ཟེར་དོན་ལ་བོད་ཀྱི་མིང་ཡང་བོན་ཚིག་གི་ཟུར་ཆགས་རེད། བོད་ལ་ཁ་ཆེ་དང་ཧིན་དུ་ཡང་རེ་གཉིས་ཡོང་། དེ་ཚོ་ནི་རྒྱ་གར་དང་བལ་ཡུལ་ནས་འོངས་པ་ཤ་སྟག་རེད། སྐུ་མདུན་རྣམ་གཉིས་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྤྱི་བ་མ་གཏོགས་སྲིད་ཇུས་ཀྱི་ཕྱག་ལས་མང་པོ་མི་མཛད། རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་སྐོར་ཕྱག་ལས་གནང་མཁན་ཁོང་གི་བཀའ་ཤག་ཡོད་པ་རེད། བཀའ་ཤག་དེ་ལ་བོད་ཀྱི་དོན་དག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཐམས་ཅད་གནང་ཡའི་དབང་ཆ་ཡོད་པ་རེད། ཕྱི་རྒྱལ་ལ་བལྟས་ན་བོད་སྲིད་ལུགས་ལ་ཏ་ཅང་ཧྲེས་ལུས་ཐེབས་པ་ཞིག་རེད། མི་དམངས་ཀྱི་ཕན་པའི་ཆེད་དུ་སློབ་ཁང་དང་སློབ་གྲྭ་ཡང་མང་པོ་མི་ཡོང་། དེར་ཆོས་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་སྐོར་སློབ་གཉེར་གནང་མཁན་ལ་ཏ་ཅང་སྐབས་བདེ་པོ་ཡོད་པ་རེད། བོད་གང་པོ་ལ་སྐད་གཅིག་རང་མ་གཏོགས་མེད་རུང་སློབ་གྲྭ་དང་ལས་ཁུངས་ལ་བོད་པ་རང་གི་སྐད་དང་བོད་ཡིག་རང་ཡོད་པ་རེད། དགོན་པ་དང་དགེ་སློང་མང་པོ་ཡོད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ཕྱི་རྒྱལ་བས་བོད་ལ་བླ་མའི་ཡུལ་དང་བོད་པ་ལ་བླ་མ་ཞེས་མིང་བཏགས་ཡོད་པ་རེད།

(११)

भोट-२

क— आप के तिब्बत में किस धर्म के मानने वाला लोग ज्यादा होते हैं ? राष्ट्र की भाषा (और) लिपि क्या है ?

ख— हमारे तिब्बत में सत्तानवे प्रतिशत बौद्ध और बाकी बोन धर्मावलम्बी होते हैं । बोन का धर्म तो तिब्बत में प्राचीनकाल से रहा हुआ एक है । कुछ विद्वानों का कहना है कि भोट का नाम भी बोन शब्द का अपभ्रंश है । तिब्बत में मुसलमान और हिन्दू भी एक दो होते हैं परन्तु वे एकमात्र भारत और नेपाल से आये हुये हैं । महामहिम दोनों तो धार्मिक कार्य को छोड़कर राजनीति के कार्य अधिक नहीं करते । राष्ट्र के विषय में कार्य करने वाले उन का मंत्रीपरिषद होता है । उस मंत्रीपरिषद को

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तिब्बत की सारी समस्याओं को (हल) करने का अधिकार होता है । बाहरी राष्ट्रों को देखा जाय तो तिब्बत कूटनीति में एक अत्यन्त पिछड़ा हुआ है । जनता के कल्याण के लिये दवाखाने और स्कूल भी ज्यादा नहीं होते । वहाँ पर धर्मशास्त्रों के विषय में अध्ययन करने वालों को बड़ी सुविधा होती है । तिब्बत भर में एक ही भाषा होने के नाते स्कूल और कार्यालयों में तिब्बती, अपनी भाषा और अपनी लिपि ही रहती है । विहार और भिक्षु ज्यादा होने के कारण विदेशियों ने तिब्बत का (नाम) लामा का देश और तिब्बतियों का (नाम) लामा रख दिये हैं ।

(༡༢)

བོད་— ༣

ཀ་— བོད་ལ་ཞིང་ཆེན་འདི་གཉིས་མ་གཏོགས་ཡོད་པ་མ་རེད་པས། བོད་ཀྱི་གྲོང་གསེབ་པ་ཚོའི་འཚོ་བ་གང་འདྲ་ཡོད་པ་རེད། བག་མ་གཏོང་ལེན་གྱི་ཁྲིམས་སྲོལ་གང་འདྲ་ཡོད་པ་རེད།

ཁ་— སྤྱིར་བོད་ལ་བོད་དང་བོད་ཆེན་པོ་གཉིས་ཡོད། དབུས་དང་གཙང་ལ་སོགས་པ་ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ས་ཁག་ལ་བོད་དང་། ཁམས་དང་ཨ་མདོ་སོགས་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ས་ཁག་ལ་བོད་ཆེན་པོ་ཟེར་གྱི་རེད། བོད་ཀྱི་ས་མཚམས་ཤར་ལ་རྒྱ་ནག་དང་ནུབ་ལ་རྒྱ་གར་གྱི་ས་དང་ཐུག་ཡོད་པ་རེད། བོད་ལ་ཞིང་ཆེན་བཅུ་གསུམ་ཡོད་པ་རེད། དེའི་ཕྱིར་དེ་ལ་ཁྲི་སྐོར་བཅུ་གསུམ་གྱི་རྒྱལ་ཁབ་ཅེས་མི་བཏགས་པ་རེད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གྲོང་གསེབ་པ་ཚོ་ལ་ཡང་འཚོ་བའི་དོན་དུ་ལུང་པ་གཞན་གྱི་གྲོང་གསེབ་པ་ལྟར་སྔ་དྲོ་ནས་དགོང་དག་བར་ཞིང་ལས་ལ་དཀའ་ལས་རྒྱག་དགོས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་རེད། བོད་ལ་ས་ཞིང་ལྟ་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད་དེ་ཚུ་ཀ་དཀོན་སྐབས་ཀྱིས་ཏ་ལས་ཡའི་འགྲོན་སྐྱེད་ཡོད་པ་མ་རེད། ངལ་རྩོལ་ལག་ཐག་གཙོད་གཅིག་མ་བྱུས་ན་ལྟོ་ཆས་ལས་སླ་པོར་འཐོབ་ཐུབ་ཀྱི་ཡོད་པ་མ་རེད། བག་མ་གཏོང་ལེན་གྱི་ལུགས་སྲོལ་ཡང་གང་འཚམས་ཤིག་ཡོད་པ་རེད་དེ། མི་ཚོ་ཕལ་ཆེར་སོ་སོའི་འདོད་མོས་ཀྱི་བུ་མོ་མཉམ་ཆང་ས་རྒྱག་གི་ཡོད་པ་རེད།

(१२)

भोट-३

क— क्या तिब्बत में ये दो ही प्रान्त हैं ? तिब्बत के ग्रामीणों की जीविका कैसी है ? शादी-व्याह के रीति-रिवाज कैसे हैं ?

ख— साधारणतः तिब्बत में भोट और महाभोट (नाम के) दो (भूभाग) हैं । वुस् और चङ इत्यादि पश्चिम ओर के भूखण्ड को भोट, खमस् और अदो इत्यादि पूर्व ओर के भूखण्ड को महाभोट कहते हैं । तिब्बत की सीमा पूर्व में चीन और पश्चिम में भारतवर्ष की भूमि से लगी हुई है । तिब्बत में तेरह महाप्रान्त हैं । अतः उस को ''त्रयोदशप्रांतीय राष्ट्रः'' नाम पड़ा है ।

ग्रामीणों को भी जीविका के लिये दूसरे देशों के ग्रामीणों की भांति सुबह से शाम तक कृषि कार्य में परिश्रम करना पड़ता है । तिब्बत

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

में कृषि (की) भूमि तो बहुत है परन्तु नहर का अभाव होने के कारण कोई विशेष पैदावार नहीं होती । अच्छी तरह परिश्रम न करें तो भोजन भी सहुलियत से प्राप्त नहीं हो सकती है । शादी-व्याह की रीति-रिवाज बहुत कुछ हैं, परन्तु लोग प्राय: अपने पसन्द के लड़की के साथ शादी कर लेते हैं ।

(༡༣)

གྲོང་ཁྱེར་དང་གྲོང་གསེབ།

གྲོང་ཁྱེར་བས་— སྐུ་ཞབས་ཆོས་གྲགས་ལགས། ཕྱག་ཕེབས་གནང་། ཉི་མ་མང་པོའི་རྗེས་ལ་ཁྱེད་ཁྲོམ་ལ་ཕེབས་པ་གནང་སོང་། ད་ཉི་མ་ཁ་ཤས་འདིར་ངའི་རྩར་བཞུགས་གདན་འཛུགས་རོགས་གནང་།

གྲོང་གསེབ་པས།— ལགས་ཡིན། ཐུགས་རྗེ་ཆེ། ང་ལ་དོག་ཙམ་ཉོ་ཚ་རྒྱབ་ཡ་ཡོད་པས་ཡོང་དགོས་བྱུང་། ང་ཞི་དྲག་ཐྲིལ་བར་ཡོད། དེ་རིང་དགོང་དག་རང་གྲོང་གསེབ་ལ་ལོག་འགྲོ་རྒྱུ་ཡིན། གཅིག་ནི་གྲོང་ཁྱེར་གྱི་ཐྲིལ་འཚབ་ནང་སེམས་པ་ཡང་སྐྱིད་པོ་མི་འདུག

གྲོང་ཁྱེར་བས་— ཨ་ལས། འདི་འདྲ་མ་གསུང་། ཁྱེད་རང་ཚོའི་གྲོང་གསེབ་ལ་འདི་འདྲ་ལྟད་མོ་རྨི་ལམ་ན་ཡང་འཐོབ་ཀྱི་ཡོད་པ་མ་རེད། ཁྱེད་རང་ཚོའི་གྲོང་གསེབ་ལ་གློག་ནི་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཡོད་པ་མ་རེད། རླངས་འཁོར་དང་ཀང་སྣ་རི་སོགས་
ཞོན་པ་ཡང་ཡོད་པ་མ་རེད། གློག་བརྙན་དང་གློག་
འཕྲིན་གྱི་གཏམ་ནི་འཆད་དགོས་མ་རེད།

གྲོང་གསེབ་པས་— མ་གཞི་ཁྱེད་ཀྱི་བཀའ་གནང་རང་རེད་དེ། གྲོང་
གསེབ་ཀྱི་ཁ་ཁྱུ་སེམས་པོ་དང་གྲོང་གསེབ་ཀྱི་སྐྱིད་པོ་ཁྱེད་
གྲོང་ཁྱེར་བ་ཚོ་ལ་སྒོར་མོ་འབུམ་ཞིག་སྤྲོད་ན་ཡང་འཐོབ་
ཐུབ་ཀྱི་མ་རེད། གློག་མེད་ན་ང་ཚོ་མུན་ནག་ནང་དུ་
ནི་སྡོད་ཀྱི་མ་རེད། ངའི་ཚིག་འཆལ་འདི་ལ་དགོངས་
པ་མ་ཚོམས་རོགས་གནང་།

གྲོང་ཁྱེར་བས་— འདི་འདྲ་སྐད་ཆ་ཡོད་པ་མ་རེད། འོ་ན་ཁྱེད་ཀྱི་གྲོང་
གསེབ་ལག་པོ་ཡིན་ན་ཁྱེད་ཕེབ་རོགས་གནང་། འོན་
ཀྱང་སྐབས་མཚམས་ལ་ཕྱུག་བྲིས་འབྲི་རོགས་གནང་།

གྲོང་གསེབ་པས་— ངེས་པར་དུ་འབྲི་གྱི་ཡིན། ཁྱེད་བཞུགས་གདན་
འཛགས་དགོས།

(१३)

नगर तथा गाँव

नगरवासी— महाशय धर्म कीर्ति जी, पधारिये, बहुत दिनों के बाद आप बाजार में आये । अब कुछ दिन यहाँ मेरे पास रहियेगा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ग्रामीण— जी, धन्यवाद । मुझे थोड़ा सा सौदा खरीदना था, जिस से आना हुआ । मैं बहुत जल्दी में हूँ । आज शाम को ही गाँव को वापस चला जाना है । एक तो नगर के चहल-पहल में मन भी प्रसन्न नहीं रहता (=मन नहीं लगता) ।

नगरवासी— अरे, ऐसा मत कहिए । आप लोगों के गाँव में ऐसा तमाशा स्वप्न में भी नहीं मिलता है । आप लोगों के गाँव में बिजली (भी) तो नहीं है । मोटर और साइकल आदि सवारी भी नहीं है । सिनेमा और रेडियो की बात ही क्या कहें ।

ग्रामीण— यूँ तो आप जो फरमाते हैं बिल्कुल ठीक है, किन्तु गाँव की शांति और गाँव का सुख आप नगर वासियों को एक लाख रुपये देने पर भी नहीं मिल सकता है । बिजली नहीं तो हम लोग अन्धेरे में तो नहीं रहते हैं । मेरी इस बकवास से गुस्सा न होइयेगा ।

नगरवासी— ऐसी बात नहीं है । आप का गाँव अच्छा है तो तब आप जाइये । परन्तु बीच बीच में पत्र लिखियेगा ।

ग्रामीण— ज़रूर लिखूँगा । आप बैठिये ।

(༡༨)

ལག་ཁྲིར་ལས་ཁུངས་སུ།

དཔོན་པོ་— ཁྱེད་ག་ནས་ཕེབས་པ་ཡིན།

གནས་བསྐོར་པ་— ལགས། ང་བོད་ནས་ཡོང་བ་ཡིན། རྒྱ་གར་གྱི་གནས་བསྐོར་ལ་འགྲོ་རྒྱུ་ཡིན། དེ་ཕྱིར་ང་ཁྱེད་ཚར་ལག་ཁྲིར་ཞིག་ལ་ཡོང་བ་ཡིན།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དཔོན་པོ་— གནས་གང་གང་གི་གནས་བསྐོར་བྱེད་ཀྱི་ཡིན།

གནས་བསྐོར་པ་— འདི་ནས་ཕྱོག་མ་རྡོ་རྗེ་གདན་ལ་འགྲོ་རྒྱུ་ཡིན། དེ་ནས་ལྷ་ནྡྲ་སྒོ་དང་རྡྭ་མཆོག་གྲོང་མཐའ་ནས་ལུམ་བི་ཚལ་ལ་འགྲོ་རྩིས་ཡིན། ལམ་བི་ཚལ་དུ་ཟླ་བ་གཅིག་ཙམ་བསྡད་ནས་མཉན་ཡོད་མཐའ་ཕྱིར་འགྲོ་འདོད་ཡོད། གལ་ཏེ་གནས་བསྐོར་བ་འདྲ་ཨ་ཧན་དྲ་དང་ཨེ་ལོ་རའི་བྲག་ཕུག་མཐའ་ཕྱིར་འགྲོ་མཁན་རོགས་པ་བྱུང་ན་དེ་ཕྱོགས་ཀུང་འགྲོ་གི་ཡིན། བྱས་རུང་ཟླ་བ་གསུམ་གྱི་ལག་ཁྲིར་གནང་རོགས་གནང་།

དཔོན་པོ་— ཁྱེད་ཀྱི་འཚོ་བ་དང་ཆོས་ལུགས་གང་རེད། ཁྱེད་ཀྱི་ཞུ་ཡིག་ལ་ཁྱེད་རང་ཚོའི་རྫོང་དཔོན་གྱི་ཕྱག་རྟགས་བརྒྱབས་ཡོད་པས། ཁྱེད་ཀྱི་པར་གསུམ་ཡང་དགོས་ཀྱི་རེད།

གནས་བསྐོར་པ་— ལགས། དེ་གང་པོ་དག་དག་ཡིན། ངའི་འཚོ་བ་སོ་ནམ་དང་ཆོས་ལུགས་སངས་རྒྱས་པ་ཡིན།

དཔོན་པོ་— འདི་སློམས་ཤིག ཟླ་བ་གསུམ་དང་ཉི་མ་བཅུ་ཐམ་པ་རྒྱ་གར་ལ་སྡོད་ཆོག་པའི་ལག་ཁྲིར་ཡིན།

གནས་བསྐོར་བ་— ལགས། ཞི་དྲག་ཐུགས་རྗེ་ཆེ།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१४)

पासपोर्ट कार्यालय में

अधिकारी— आप कहाँ से आये हैं ?

तीर्थयात्री— जी, मैं तिब्बत से आया हूँ । भारतवर्ष की तीर्थयात्रा के लिये जाना है । अतः मैं आप के पास अनुमति-पत्र के लिये आया हूँ ।

अधिकारी— किन किन स्थानों की तीर्थयात्रा करनी है ?

तीर्थयात्री— जी, यहाँ से पहले वज्रासन (=बुद्धगया) को जाना है । उस के बाद वाराणसी और कुशीनगर का दर्शन करके लुम्बिनी को जाने (का) कार्यक्रम है । लुम्बिनी में एक मास ठहरकर श्रावस्ती जाने (की) इच्छा है । यदि कोई तीर्थयात्री अजन्ता और एलौरा की गुफा के दर्शनार्थ जाने वाला साथी मिल गया तो उस ओर भी जाऊँगा । अतः तीन मास का अनुमति-पत्र दीजियेगा ।

अधिकारी— आप का व्यवसाय और धर्म क्या है ? आप के प्रार्थना पत्र पर आप लोगों के जिलाधीश का हस्ताक्षर हुआ है ? आप के तीन चित्र भी होना चाहिए ।

तीर्थयात्री— जी, वह सब ठीक है । मेरा व्यवसाय कृषि तथा धर्म बौद्ध है ।

अधिकारी— यह लीजिए । तीन मास दस दिन भारत में रह सकने का अनुमति पत्र है ।

तीर्थयात्री— जी, बहुत धन्यवाद ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(༧༥)

ཨེམ་ཆི་དང་ནད་པ།

ནད་པ་— ཨེམ་ཆི་ལགས། བདག་གི་རྩ་ཞིག་གཟིགས་རོགས་གནང་དང་། ཉི་མ་གསུམ་ནས་མགོ་ན་གྱི་འདུག མཚམ་མཚམས་ལ་སྐྱུག་པ་ཡང་ཤོར་གྱི་འདུག ཁ་ལག་ཟ་སྙིང་ཁྲོན་ནས་མི་འདུག ཁ་སང་གྲོད་ཁོག་ཡང་ཏ་ཙང་ན་བྱུང་།

ཨེམ་ཆི་— ཞལ་ལག་གང་བཞེས་ནས་བསྟུན་སོང་། མཁྲིས་པ་ཡིན་གྱི་རེད། ཕྱུག་གཡོན་པ་ཚུར་གནང་དང་། ཨ་ལས། མཁྲིས་པའི་སྐྱོན་རེད། ད་ག་ཙམ་གྲོད་ཁོག་ཤལ་ན་ཡག་པོ་ཡོང་གི་རེད། ནད་ཆེན་པོ་རང་མི་འདུག སྨན་ཤོག་ཆག་གཅིག་དང་མཉམ་ཁྲིད་ཀྱི་ནད་ཕན་འགྲོ་གི་རེད། སྨན་འདི་ཚུ་ཐྲོན་འཛམ་མཉམ་བཞེས་རོགས་གནང་། གལ་ཏེ་ཤོག་ཆག་འདི་ཡིས་མ་ཕན་ན་བདག་ལ་བོད་མཁན་ཞིག་ཐོངས་ཤིག བདག་ལམ་སང་ཡོད་གི་ཡིན།

ནད་པ་— ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཨེམ་ཆི་ལགས། ཁྱེད་ལ་ཞི་དྲག་སྐུ་ངལ་བྱུང་སོང་། གལ་ཏེ་བདག་གི་ནད་མ་དྲག་ན་ཡང་སྐྱུར་འོ་བརྒྱལ་གནང་རོགས་གནང་།

ཨེམ་ཆི་— གང་ཡང་བྱེད་ཀྱི་མ་རེད། བདག་ངེས་པར་དུ་ཡོང་གི་ཡིན།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१५)

वैद्य और रोगी

रोगी— वैद्य जी, मेरी नाड़ी देखिये तो, तीन दिन से सिर दर्द कर रहा है । बीच बीच में उलटी भी होती है । भोजन करने की इच्छा बिल्कुल नहीं (होती) कल पेट (में) भी खूब दर्द हुआ (= किया) ।

वैद्य— खाना क्या खाकर बीमार हुये । पित्त होगा । बाँया हाथ इधर लाइये तो । ओ, पित्त का बिकार है । थोड़ा सा पेट दस्त हो जाय तो अच्छा होगा । रोग ज़्यादा ही नहीं है । दवा की एक ही पुड़िया के साथ आप का रोग ठीक हो जायेगा । यह दवा हलके गरम पानी के साथ खाइयेगा । यदि इस पुड़िया से ठीक न हुआ तो मुझे कोई बुलाने वाला भेज दो । मैं एक दम आ जाऊँगा ।

रोगी— धन्यवाद वैद्य जी, आप को बहुत कष्ट हो गया । यदि मेरा रोग ठीक न हुआ तो पुनः कष्ट कीजियेगा ।

वैद्य— कोई बात नहीं । मैं ज़रूर आऊँगा ।

(༡༦)

གྲོས་གླེང་།

ཀ་— ཇོ་བོ་ཉི་དབང་མགོན་པོའི་མཚན་ཁྱེད་ཀྱིས་གསན་ཡོད་ཀྱི་རེད། ཁོང་དུས་རབས་ཉི་ཤུ་པ་འདིའི་སྨན་ངག་མཁན་ཆེན་པོ་ཞིག་རེད། ཁོང་འཛམ་གླིང་ནང་སྐད་གྲགས་ཡོད་པའི་སྨན་ངག་མཁན་ཞིག་རེད། ཁོང་གིས་བརྩམས་གནང་བའི་‘སླུ་ཐབ་སྦྱོར་མ་’ ཞེས་བྱ་བའི་ཕྱག་དཔེ་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཕལ་ཆེར་འཛམ་གླིང་གང་པོའི་སྐད་ཡིག་ཏུ་བསྒྱུར་ཡོད་པ་རེད།
བོད་སྐད་ལའང་བསྒྱུར་ཐུབ་ན་ཏ་ཙང་ཡག་པོ་ཡོང་གི་རེད།

ཁ་— བོད་ལ་ཡོད་སྐབས་ཁོང་གི་མཚན་བདག་གིས་ཐོས་མ་བྱུང་། རྒྱ་གར་ལ་ཡོངས་ནས་ཁོང་གི་བཀའ་རྩོམ་དབྱིན་སྐད་དུ་བསྒྱུར་ཡོད་པ་ཁ་ཤས་བཀློགས་པ་ཡིན། 'ཀླུ་ཐལ་སྦྱར་མའི་' ཕྱག་དཔེ་ཡང་བཀློགས་པ་ཡིན་ཏ་ཙང་སྙན་པོ་འདུག ང་ཚོའི་བོད་ལ་འཕགས་ཡུལ་གྱི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་དང་། འཕགས་པ་ལྷ་དང་། འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་དང་། དབྱིག་གཉེན་དང་། ཕྱོགས་གླང་དང་ཆོས་གྲགས་སོགས་གཞན་ཡང་ཡོན་ཏན་འོད་དང་ཤཱཀྱ་འོད་ཀྱི་མཚན་ཡོངས་གྲགས་རེད། རྒྱ་གར་གྱི་པཎྜི་ཏ་པདྨ་འབྱུང་གནས་ཀྱིས་བོད་ལ་བཀའ་དྲིན་ཆེན་པོ་མཛད་པ་རེད།

ཀ་— 'དགའ་བྱེད་རྟོགས་བརྗོད་' དང་དཔལ་ནག་པོའི་ 'སྙན་ཚིག' བོད་སྐད་ཐོག་བསྒྱུར་ཡོད་པ་མ་རེད་པས།

ཁ་— མཚམས་མཚམས་ཀྱི་ཤློ་ཀ་འགའ་ཞིག་མ་གཏོགས་ཡོངས་རྫོགས་བསྒྱུར་ཡོད་པ་མ་རེད། སློབ་དཔོན་དབྱུག་པ་ཅན་གྱི་སྙན་ངག་མེ་ལོང་མ་ཞེས་བྱ་བའི་དཔེ་ཆ་བོད་སྐད་ཐོག་ལ་ཡོད་པ་རེད། བོད་ཀྱི་རིག་གཞུང་ལ་སློབ་སྦྱོང་གནང་མཁན་ཚོ་ལ་ཕྱག་དཔེ་དེ་ངེས་པར་དུ་གཟིགས་དགོས་ཡ་འདྲ་ཡོད་པ་རེད།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१६)

चर्चा

क— रवीन्द्रनाथ ठाकुर का नाम आप ने सुना होगा । आप इस बीसवीं शताब्दी के एक महा कवि हैं । आप संसार में प्रसिद्ध एक कवि हैं । आप के द्वारा लिखी गई 'गीतांजलि'नामक पुस्तक प्राय: संसार की सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है । भोट भाषा में भी अनुवाद कर सकें तो बड़ा अच्छा होगा ।

ख— तिब्बत में रहते समय आप का नाम मैं ने नहीं सुना था । भारत वर्ष में आकर अंग्रेज़ी में अनुदित आप की कुछ रचनाओं को पढ़ा हूँ । गीतांजलि की पुस्तक भी पढ़ा हूँ, अत्यन्त मधुर है । हमारे तिब्बत में आर्यावर्त के महापण्डित आचार्य नागार्जुन, आर्यदेव, आर्यासंग, बसुबन्धु, दिंगनाग तथा धर्मकीर्ति इत्यादि और भी गुणप्रभ और शाक्यप्रभ के नाम प्रसिद्ध हैं । भारतीय पण्डितपद्मसम्भव ने भोट पर बड़ी कृपा की है ।

क— क्या 'रामायण'और श्रीकृष्ण की 'गीता'का भोट भाषा में अनुवाद नहीं हुआ ?

ख— बीच बीच के कुछ श्लोकों को छोड़कर सम्पूर्ण अनुवाद नहीं है । आचार्य दण्डी का काव्यादर्श नामक पुस्तक भोट भाषा में है । तिब्बती साहित्य में अध्ययन करने वालों को यह पुस्तक अवश्य देखना (=पढ़ना) पड़ता है ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(༡༨)

ཡུལ་གཞན་དུ།

ཀ་— གྲོགས་པོ་ལགས་ཕྱག་ཕེབས་གནང་། ག་ནས་ཕེབས་པ། ཁྱེད་ལུང་པ་ག་ནས་ཡིན། རིགས་གང་ལགས།

ཁ་— ལགས། ངའི་ལུང་པ་གསལ་ལྡན་རེད། ང་ཚོའི་རྫོང་ལ་ལྷཱ་ནཱ་ཆ་སྣི་ཟེར་གྱི་རེད། མི་ཆོས་གསལ་ལྡན་ལ་ཡང་ལྷཱ་ནཱ་ཆ་སྣི་ཟེར། ཅི་སྐེ་བར་ཆ་དང་ཨས་སྣི་ཆུ་བོ་གཉིས་ཀྱི་བར་ན་གནས་པའི་ས་ཁུལ་ལ་ཤཱ་ར་ཆ་སི་ཟེར་གྱི་རེད། གསལ་ལྡན་གྲོང་ཁྱེར་ཆུ་བོ་དེ་དག་གཉིས་ཀྱི་དབར་ན་ཆགས་ཡོད་པ་རེད། ང་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ཡིན། མ་གཞི་ང་ཚོའི་པོ་ལགས་རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་པ་ཞིག་རེད། བདག་གི་པཱུ་ལགས་གསལ་ལྡན་ལ་ཕེབས་ནས་གཞིས་ཆགས་པ་རེད། ད་ལྟ་ང་ཚོའི་ཁང་པ་དང་ཚོང་ཁང་གསལ་ལྡན་ན་ཡོད། ངའི་ཨ་མ་ལགས་ཧ་ཅང་ཆོས་སེམས་ཅན་ཞིག་ཡོད། ཡིན་རུང་ཉི་མ་རྟག་པར་ཆུ་མོ་གང་གཱ་ནང་སྐུ་ཁྲུས་གནང་བ་ལ་ཕེབ་ཀྱི་ཡོད།

ཀ་— ཆུ་མོ་གང་གཱ་ནང་ཁྲུས་རྒྱབ་ན་སྡིག་པ་དག་གི་རེད་པས།

ཁ་— ལགས། སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ནི་དེ་ལྟར་མ་གསུངས། འོན་ཀྱང་རིག་བྱེད་དང་སྔོན་རབས་ནང་གང་གཱའི་བསྟོད་བསྔགས་ཞེ་དྲག་བརྗོད་ཡོད་པ་རེད། གང་གཱ་ནང་ལན་ཅིག་ཁྲུས་རྒྱབ་ན་སྡིག་པ

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དག་ནས་ཐར་པ་ཐོབ་པོ་ཅེས་གསུངས་ཡོད་པ་རེད།   ཡིན་རུང་ལུང་པ་ཐག་རིང་གི་མི་ཚོ་ཤི་ནས་དེའི་རུས་གོང་ཡང་གང་གཱར་སྐྱེལ་གྱི་ཡོད་པ་རེད།

(१७)

परदेश में

क— मित्र जी, आइये । कहाँ से आये ? आप किस प्रदेश से (के) हैं । किस जाति (के) हैं ?

ख— जी, मेरा देश काशी है । हमारे मण्डल को वाराणसी कहते हैं । लोग काशी को भी वाराणसी कहते हैं । क्योंकि वरुणा और अस्सी दो नदियों के बीच के क्षेत्र को वाराणसी कहते हैं । काशी नगरी इन दो नदियों के बीच में बसी हुई है । मैं ब्राह्मण जाति का हूँ । यूँ तो हमारे दादा जी दक्षिण भारतीय हैं । मेरे पिता जी काशी में आकर बस गये हैं । अभी हम लोगों का घर और दूकान काशी में है । मेरी माता जी एक बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति (की) हैं अतः प्रतिदिन गंगा नदी में स्नान करने जाती हैं ।

क— क्या गंगा नदी में स्नान करने से पाप नष्ट होता है ?

ख— जी, बुद्ध भगवान् ने तो ऐसा नहीं कहा । परन्तु वेद और पुराणों में गंगा की बड़ी स्तुति गाई गई है । "गंगा में एक बार स्नान करने से पाप नष्ट होकर मुक्ति मिलती है" ऐसा कहा गया है । अतः सूदूर देश के लोगों के मरने पर उनकी हड्डियां भी गंगा में पहुँचा दी जाती हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(༧༨)

སྲི་ཐབ་ཏུ།

སྒྲིག་བྱེད་པ་— མ་ཆེན་ལགས། ཞལ་ལག་བསྒྲུབས་སོང་ངས། ད་ཆུ་ཚོད་བཅུ་གཅིག་དང་སྐར་མ་ཉི་ཤུ་ཐམ་པ་ཟིན་སོང་། སྐུ་ཞབས་ཚོ་ཕེབ་ཀྱིན་འདུག

མ་ཆེན་— སྔོ་ཚོད་གཅིག་མ་གཏོགས་གཞན་གང་ཡོ་ཨང་བསར་ཡོད། ཐབ་གཡོག་པ་ལ་གསོལ་ཇ་ཅག་དང་ཞབས་ཀྱག་ཚོ་དབྱི་རུ་བཞུག་རོགས་གནང་དང་།

སྒྲིག་བྱེད་པ་— ལྷ་ཡེ། བཀྲ་ཤིས། གསོལ་ཇ་ཅག་དང་ཞབས་ཀྱག་ཚོ་ཕྱི་བདར་རྒྱུབ་ཅིག སྐུ་ཞབས་ཚོ་ཞལ་ལག་བཞེས་བ་ལ་ཕེབ་ཀྱིན་འདུག། སྡེར་མ་ཆེ་ཆུང་གཉིས་གཉིས་དང་ཤེལ་ཕོར་རེ་བྲིམས་ཤིག གྲི་དང་། ཤ་འཛིན་དང་། བཞེས་ཐུར་ཡང་ཁྱེར་ཤོག

ཐབ་གཡོག་པ་— ལགས་ལགས་སོ།། དེ་ཐམས་ཅད་དག་དག་ཡོད། སྐུ་ཞབས་ཚོ་ཞལ་ལག་མཉམ་ཆབ་གྲང་མོ་ཞི་དྲག་བཞེས་ཀྱི་འདུག དེ་རིང་གངས་རྫོགས་ཡོད། བྱུས་རྩང་གངས་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཤིག་ཚོ་དགོས་འདུག   བདག་[1]ལ་ཕྱུག་དངུལ་ཞིག་གནང་
རོགས་གནང་དང་།   བདག་གངས་ཚོ་བ་ལ་འགྲོ་གི་ཡིན།

སྒྲིག་བྱེད་པ་— མགྱོགས་པ་རྒྱུགས་ཤིག   དེ་གང་པོ་སྔུ་སང་སང་ནས་གྲ་
སྒྲིག་བྱེད་དགོས་རེད།   ཀི་ལོ་གང་ཞོ་ཡང་ཚོས་ནས་ཁྱེར་
ཤོག   དངུལ་ད་ལྟ་རང་སྤྲོད་མི་དགོས།   ཟླ་བའི་མཇུག་
ཏུ་འཛལ་ན་འགྲིག་གི་རེད།

(१८)

मेस में

मैनेजर— पाचक जी, क्या भोजन तैयार है ? अब ग्यारह बजकर बीस मिनट हो गए । महाशय लोग आ रहे हैं ।

पाचक— केवल सब्जी को छोड़कर बाकी सब तैयार है । बेरा से मेज़ और कुरसियों को पोंछवाइये तो ।

मैनेजर— अरे मंगल । मेज़ कुरसियों को पोंछो । महाशय लोग भोजन करने के लिये आ रहे हैं । छोटे बड़े दो दो प्लेट और एक एक गिलास सजाओ । छुरी, कांटा तथा चम्मच भी ले आओ ।

बेरा— जी अच्छा । वे सब बिल्कुल ठीक है । महाशय लोग भोजन के साथ ठण्डा जल खूब पीते हैं । आज बरफ समाप्त हो गया । अतः बरफ खरीदने की आवश्यकता है । मुझे एक रुपया दीजिये, मैं बरफ खरीदने जाऊँगा ।

---

१. ल्हसा वाले བདག་ की जगह प्रायः ང་ का प्रयोग करते हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

मैनेजर— शीघ्र दौड़ो । ये सब पहले से ही व्यवस्था करनी चाहिये । किलो भर दही भी खरीदकर लेते आओ । रुपया अभी देने की आवश्यकता नहीं । मास के अन्त में चुका सकते हैं ।

(༡༨)

གངས་རི།

ཚོགས་བདག

ཚོགས་བདག— གྲོགས་པོ། འདི་ལོ་དབྱར་གྱི་གུང་སེང་ལ་ཁྱོད་ག་པར་ཆིབས་བསྒྱུར་ནང་གི་ཡིན་པས།

ལྷ་སྤྲིན་— ལགས། བམ་བེའི་འགྲོ་རྩིས་ཡིན། ངའི་ཨ་ཞང་ལགས་དེར་བཞུགས་ཀྱི་ཡོད་པ་རེད། ཁོང་གིས་བདག་དེར་བོས་པ་གནང་བ་རེད། ཁྱོད་རང་ག་པ་ཕེབས་ཀྱི་ཡིན་པས།

ཚོགས་བདག་— ང་ཚོ་ནི་རྒྱ་གར་གྱི་སྟོད་ནམ་གྲང་ས་ཞིག་ལ་འགྲོ་གི་ཡིན། ལོ་སྔོན་མ་ང་ཚོ་ནཻ་ནི་ཁིཏ་ལ་ཕྱིན་པ་ཡིན། ཁྱོད་ཀྱིས་གངས་རི་མཐོང་མྱོང་ངམ།

ལྷ་སྤྲིན་— མ་མཐོང་། འོན་ཀྱང་ལྟ་འདོད་ཡོད།

ཚོགས་བདག་— ངེས་པར་དུ་གཟིགས་དགོས་རེད། རི་དེ་འཛམ་གླིང་ནང་མཐོ་ཤོས་ཤིག་རེད། བྱས་རྩང་དེ་ལ་རིའི་རྒྱལ་པོ་ཡང་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཟེར་གྱི་ཡོད་པ་རེད། དེར་གངས་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད། དེའི་ཕྱིར་གངས་རི་ཟེར་གྱི་ཡོད་པ་རེད། དེ་རྒྱ་གར་གྱི་བྱང་ཕྱོགས་ལ་དགྲ་དགག་པ་ནང་བཞིན་ཤར་ནས་ནུབ་བར་ཁྱབ་ཡོད་པ་རེད། གངས་རིར་རི་མཐོན་པོ་མང་པོ་ཡོད་པ་རེད། དེའི་ནང་ནས་གོ་རི་ཤཀྱར་རི་མཐོ་ཤོས་ཤིག་རེད། དེའི་སྟེང་ལ་གྲོང་ཁྱེར་དང་། ནགས་དང་། འབྲས་བུ་སྣ་ཚོགས་དང་། ཟས་ཆས་དང་མི་རིགས་མང་པོ་གནས་ཀྱི་ཡོད་པ་རེད།

དེ་ཙམ་མ་ཟད་དེའི་སྟེང་ལ་གནས་ཁྱད་པར་ཅན་མང་པོ་དང་། དྲང་སྲོང་གི་དབེན་གནས་དང་། གནའ་དུས་ཀྱི་རྩ་ཆེ་བའི་དགོན་སྡེ་སོགས་ཡོད་པ་རེད། ལེགས་སྦྱར་གྱི་གླེགས་བམ་རྣམས་སུ་གངས་རིའི་སྐོར་མང་པོ་གསུངས་ཡོད་པ་རེད། སྙན་ངག་མཁན་ཆེན་པོ་ནག་མོའི་ཁོལ་གྱིས་རང་གི་སྙན་ངག་ཆེན་པོ "གཞོན་ནུ་འབྱུང" གི་སརྒ་དང་པོ་ནང་གངས་རིའི་བསྟོད་བསྔགས་ཞེ་དྲག་སྙན་པོ་གསུངས་ཡོད་པ་རེད།

ལྷ་སྦྱིན — ལགས་ལེགས་སོ། ལོ་རྗེས་མ་བདག་ཀྱང་རིའི་རྒྱལ་པོ་ལྷ་གནས་གངས་རི་མཇལ་འཆི་ཐབས་བྱེད་ཀྱི་ཡིན།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१९)

हिमालय

गणेश— मित्र, इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में तुम कहाँ जाओगे ?

देवदत्त— जी, बम्बई जाने का कार्यक्रम है । मेरे मामा जी वहाँ रहते हैं, उन्होंने मुझे वहाँ पर बुलाया है । तुम कहाँ जाओगे ?

गणेश— हम लोग तो उत्तर भारत के किसी ठण्डे स्थान में जायेंगे । विगत वर्ष हम लोग रानीखेत गये थे । तुम ने हिमालय देखा है ?

देवदत्त— नहीं देखा, किन्तु देखना चाहता हूँ ।

गणेश— अवश्य देखना चाहिये । यह संसार में सब से ऊँचा पवर्त है । इसलिये इसे पवर्त राज भी कहते हैं । यहाँ हिम की अधिकता है अतः हिमालय कहते हैं । यह भारतवर्ष की उत्तर दिशा में प्रहरी की तरह पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है । हिमालय में अनेक ऊँचे ऊँचे पर्वत हैं जिन में से गौरीशङ्कर सब से ऊँचा पर्वत है । इस के ऊपर अनेक नगर, वन, विविध फल, खाद्यावस्तुयें तथा अनेक मनुष्य जातियाँ रहती हैं ।

इसके अतिरिक्त इस पर अनेक तीर्थस्थान, मुनियों के तपोवन एवं प्रचीन ऐतिहासिक मन्दिर आदि हैं । संस्कृत ग्रन्थों में हिमालय के विषय में बहुत वर्णन है । महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य 'कुमार सम्भव' के प्रथम सर्ग में हिमालय का अत्यन्त मनोहर वर्णन किया है ।

देवदत्त— अच्छा जी, अगले वर्ष मैं भी नगाधिराज देवतात्मा हिमालय के दर्शन करने का प्रयास करूँगा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(༣༠)

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་གནྜ་ཀི།

བོད་པ་— ཇོ་ལགས། ཀུན་གཞན་ཕོ་མོ་འདི་ཚོ་ག་པར་འགྲོ་གིན་ཡོད་པ་རེད།

རྒྱ་གར་བ་— གྲོགས་པོ། ཁྱེད་ལ་ཐུགས་རྒྱུས་མེད་པས། དེ་རིང་དབྱིན་ཟླ་བཅུ་པའི་ཚེས་གཉིས་རེད། དེ་རིང་ང་ཚོའི་རྒྱལ་ཡབ་ཀྱི་འཁྲུངས་ཞག་རེད། མི་འདི་ཚོ་ཁོང་གི་སྐུར་ཁང་ལ་མེ་ཏོག་འབུལ་བ་ལ་འགྲོ་གིན་ཡོད་པ་རེད།

བོད་པ་— ཇོ་ལགས། སྐྱེས་བུ་ཆེན་པོ་འདིའི་སྐོར་ལ་ད་དུང་ཏོག་ཙམ་གསུང་རོགས་གནང་དང་། བདག་ཀྱང་ཁྱེད་མཉམ་མེ་ཏོག་འབུལ་བ་ལ་འགྲོ་གི་ཡིན།

རྒྱ་གར་བ་— ཐུགས་རྗེ་ཆེ། ཞབས་རོགས་གནང་། ཁོང་གི་མཚན་དངོས་མ་མོ་ཏན་དྜས་དང་ཁོང་གི་ཡབ་ལགས་ཀྱི་མཚན་ལ་ཀ་ཤྲ་གནྜ་ཀི་ཞུ་གི་ཡོད་པ་རེད། ཁོང་གུཛ་རྜཏ་ཞེས་བྱ་བའི་ལུང་པར་པོ་བནྡར་བྱ་བའི་གྲོང་གསེབ་ཏུ་ཕྱི་ལོ་༡༨༧༩ དབྱིན་ཟླ་བཅུ་པའི་ཚེས་ ༢ ལ་སྐུ་འཁྲུངས་པ་རེད། ཁོང་གི་ཡུམ་ཏ་ཅང་ཆོས་སེམས་ཅན་བུད་མེད་ཞིག་ཡོད་པ་རེད། སྐུ་ཡོན་ཆེན་པོ་སྦྱོང་བ་ལ་ཁོང་དབྱིན་ཇི་ལུང་པར་ཕེབས་པ་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རེད། དེ་ནས་སླར་ཕེབས་ཆེ་རྒྱ་གར་རང་དབང་རང་བཙན་

ལེན་རྒྱུའི་ཕྱུག་ལས་ཁོང་རང་གི་ཕྱག་ལ་བསྣམས་པ་རེད།

ཁོང་གིས་—

གཞན་དབང་འོག་ཏུ་འཚོ་བ་ལས།

རང་དབང་གི་སྐྱིད་འཆི་བ་དགའ། ཞེས་གསུངས་

པ་རེད། མཇུག་ཏུ་དབྱིན་ཇིའི་གཞུང་གིས་རྒྱ་གར་རྒྱ་གར་

པའི་ལག་ལ་གཏད་ནས་ལོག་ཕྱིན་པ་རེད།

ཡང་ཁོང་གིས་གསུངས་དོན་ལ་—

སྡིག་པ་དག་ལ་གཟེམ་པར་བྱ། །

སྡིག་པ་ཅན་ལ་དེ་ལྟ་མིན། །

དེའི་འབྲས་བུར་རྒྱ་གར་རང་དབང་རང་བཙན་ལེན་པ་ལ་ཁྲག་གི་

ཐིགས་པ་གཅིག་ཀྱང་མ་ཟག་པ་རེད།

(२०)

महात्मा गान्धी

तिब्बती— भाई साहब, ये सब बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष कहाँ चले जा रहे हैं ?

भारतीय— मित्र ! तुम जानते नहीं । आज २ अक्टूबर है । आज हमारे राष्ट्रपिता का जन्म दिन है । ये लोग उनकी समाधि पर फूल चढ़ाने जा रहे हैं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तिब्बती— भाई साहब, इन महा पुरुष के बारे में और कुछ बताइये मैं भी आप के साथ फूल चढ़ाने चलूँगा ।

भारतीय— धन्यवाद, चलिये । उनका असली नाम मोहन दास, उनके पिता जी का नाम कबा गान्धी कहा जाता है । आप का जन्म गुजरात प्रदेश में पोरबन्दर नामक गाँव में २ अक्टूबर ई० १८६९ में हुआ था । उनकी माता एक बड़ी धार्मिक स्त्री थी । उच्च शिक्षा के लिये वे इंग्लैण्ड गए । वहाँ से लौटने पर इन्होंने भारतवर्ष को आजाद कराने का काम अपने हाथ में लिया ।

इन्होंने कहा कि:—

"गुलामी में जीने की अपेक्षा
आज़ादी के लिये मरना अच्छा है ।"

अन्त में अंग्रेज़ सरकार भारत को भारतीयों के हाथ सौंप कर वापस चली गई ।

इन का यह भी कहना था कि:—

"पाप से घृणा करो, पापी से नहीं ।"

इस का फल यह हुआ कि भारत को स्वतंत्र करने में खून की एक बूँद भी नहीं गिरी ।

•

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चौथा अध्याय

རྩ་མདོ། = मूलसूत्र

༄༅། །ལུང་སྟོན་པ་རྩ་བ་སུམ་ཅུ་པ།

རྒྱ་གར་སྐད་དུ། བྱཱ་ཀ་ར་ཎ་མཱུ་ལ་ཏྲི་ཤཏ་ནཱམ། བོད་སྐད་དུ། ལུང་སྟོན་པ་རྩ་བ་སུམ་ཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བ། ངག་གི་དབང་ཕྱུག་འཇམ་པའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །གང་ལ་ཡོན་ཏན་མཆོག་མངའ་བའི།། དཀོན་མཆོག་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །གང་གིས་སྒྲ་ཡངས་ཀུན་གསུངས་པའི། ·།འཇམ་པའི་དབྱངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །གང་གིས་མིང་གཞི་སྟོན་གསུངས་པ། །ཏག་ཞི་བ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །སྲིབ་སྦྱོར་ལེགས་མཛད་མཁས་རྣམས་དང་། །སླ་མ་ལ་ཡང་ཕྱག་འཚལ་ནས། །བསླབ་པ་ཀུན་གྱི་གཞི་འཛིན་ཅིང་། །རིག་བྱེད་སླ་བ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུ། །མིང་ཚིག་བརྗོད་པ་ཀུན་གྱི་གཞི། །ཡི་གེའི་སྦྱོར་བ་བཤད་པར་བྱ། །

ཨི་གི་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་གཉིས། །ཨཱ་ལི་གསལ་བྱེད་ཨི་སོགས་བཞི།། ཀཱ་ལི་སུམ་ཅུ་ཐམ་པའོ། །དེ་ལ་རྗེས་འཇུག་བཅུ་ཡིན་ཏེ། །དེ་ལས་ལྔ་ནི་སྟོན་དུའང་འཇུག །མི་འཇུག་པ་ནི་ཉི་ཤུའོ། །ཀཱ་ལི་ཕྱེད་དང་བརྒྱད་སྡེ་ནི།། བཞི་བཞི་དག་ཏུ་ཕྱེ་བ་ལས། །དང་པོ་གསུམ་པ་བཞི་བ་ལ། །མས་གཉིས་ལྷག་པའི་གསུམ་པ་དང་། །བདུན་པ་ལ་ནི་ཤ་མ་གཏོགས། །རྗེས་འཇུག

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཡི་གེ་བཅུ་རུ་འདོད། །རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་ཉིད་ལས། །དང་པོ་གསུམ་པ་ལྔ་པ་དྲུག །བདུན་པ་རྣམས་ནི་སྔོན་དུའང་འཇུག །མིང་གཞི་གཉིས་སམ་གསུམ་སྦྲེལ་ལམ། །དེ་ལ་དབྱངས་ཀྱི་བཞི་ལྡན་ཡང་། །གང་དུའང་འཇུག་མིན་སྦྱར་བའང་མིན། །རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ནི། །མིང་གང་གི་ནི་མཐར་སྦྱར་བ། །དེ་ལ་ཨཱ་ལི་བཞི་པ་སྦྱར། །སླར་བསྡུ་བར་ནི་ཤེས་པར་བྱ། །རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་རྣམས་ལས། །གང་མིང་མཐའ་ན་བཅུ་པ་གནས། །དེ་ལ་ཨཱ་ལི་གཉིས་པ་སྦྱར། །གང་མིང་མཐའ་ནས་བརྒྱད་པ་གནས། །དེ་ལ་གཉིས་པ་ཨུ་ཡང་སྦྱར། །གང་མིང་མཐའ་ན་གསུམ་པ་གནས། །དེ་ལ་ཨཱ་ལི་གཉིས་པ་སྦྱར། །བཞི་པ་དགུ་པ་དངོས་ཀྱང་སྔེ།།
ལས་དང་ཆེད་དང་རྟེན་གནས་དང་། །དེ་ཉིད་ཚེ་སྐབས་ལ་སྒྲ་ཡིན།།
རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ནི། །ཨི་དང་མཐུན་ལུགས་འདི་ཞེས་བྱ། །དང་པོ་གཉིས་ལ་དང་པོ་མཐུན། །གསུམ་ལྔ་བཅུ་ལ་ཀྱ་དང་སྦྱར། །བདུན་པ་ཉིད་ལ་བདུན་པ་སྔེ། །ལྷག་མ་རྣམས་ལ་གྱ་དང་སྦྱར། །དེ་དག་ཨི་སྦྱར་འབྲེལ་བའི་ས། །དེ་ཉིད་ལ་ནི་བཅུ་པ་སྦྱར། །བྱེད་པ་པོ་རུ་ཤེས་པར་བྱ།།
ཨཱ་ལི་ཕྱིས་ནས་གཉིས་པ་སྦྱར། །ཚིག་རྒྱན་གཉིས་དང་སྡུད་པར་འགྱུར།།
ལ་དོན་སུ་ལ་ཨུ་ཕྱིས་ནས། །དེ་ལ་གསུམ་པའི་དང་པོ་སྦྱར། །དེ་ལ་ཨཱ་ལི་གསུམ་པ་སྦྱར། །དེ་ནི་ལྷག་དང་བཅས་པའོ། །རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ལ། །དྲུག་པ་སྦྱར་ན་འབྱེད་སྡུད་ཡིན། །རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ཡི།།
བཞི་པ་དགུ་པ་ལ་བཅུ་པ། །སྦྱར་བ་འབྱུང་ཁུངས་ས་ཡིན་ཏེ། །དགར་དང་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

སྒྲུད་པའང་དེ་བཞིན་ཡིན། །གང་མིང་བརྗོད་པའི་དང་པོ་རུ། །ཀྱི་སྦྱར་ན་
ནི་བོད་པ་ཡིན། །གང་མིང་མཐའ་དང་མཐུན་པ་ཡི། །བཞི་པ་ལ་ནི་ཨེ་
སྦྱར་བ། །དགར་དང་བརྟན་པའི་ཚིག་ཏུ་འགྱུར། །མིང་གང་རུང་བའི་བར་
མཚམས་སུ། །གསུམ་པ་ལ་ནི་གཉིས་པ་སྦྱར། །དེ་ནི་སྒྲུད་དང་འབྱེད་པ་
དང་། རྒྱ་མཚན་ཚེ་སྐབས་གདམས་ངག་ལྡོའོ། །གང་མིང་གི་ནི་ཡ་མཐའ་
རུ། །གསུམ་པ་ལ་ནི་ཨེ་སྦྱར་བ། །ཐ་སྙད་དབང་དུ་གསུམ་ཡིན་ཏེ།།
དངོས་པོའི་དབང་དུ་བཞི་རུ་འགྱུར། །དུས་ཀྱི་དབང་དུ་གཉིས་ཡིན་ནོ།།
གང་མིང་བརྗོད་པའི་དང་པོ་རུ། །དང་པོ་ལ་ནི་གཉིས་པ་སྦྱར། །སྤྱི་ལ་ཁྱབ་
པ་ཉིད་དུ་འགྱུར། །གང་མིང་གི་ནི་མ་མཐའ་ན། །པུ་ལིང་ག་ཡི་སྒྲ་
མེད་པ། །དེ་ལ་པུ་ལིང་ག་སྦྱར་ན། །བདག་པོའི་སར་ནི་ཤེས་པར་བྱ།།
གང་མིང་བརྗོད་པའི་ཡ་མཐའ་ན། སྟྲཱི་ལིང་ག་ཡི་སྒྲ་མེད་པ། །དེ་ལ་སྟྲཱི་
ལིང་ག་སྦྱར་ན། །དགག་པའི་གནས་སུ་ཤེས་པར་བྱ། །ཚིགས་སུ་
བཅད་པའི་མཚམས་སྦྱོར་རྣམས། །ཅུང་ཟད་བསྡུས་པ་ཡོད་ན་ཡང་།།
དེ་ནི་དེ་བཞིན་སྦྱར་བར་བྱ། །སྔོན་འཇུག་ཡོད་དམ་མེད་ཀྱང་རུང་། །མིང་
གཞིའི་ཡི་གེ་གང་ཡིན་ལ། །གཉིས་འབྲེལ་ཡོད་དམ་གསུམ་འབྲེལ་ཡོད།།
ཨཱ་ལི་བཞི་ལས་གང་ལྡན་ཡང་། །རྗེས་འཇུག་བཅུ་པོ་མ་ཞུགས་ན། །མིང་
གཞན་སྦྱོར་བ་ཡོད་མི་སྲིད། །རྗེས་འཇུག་བཅུ་ཡི་དོན་ཤེས་ན། །འགྲོ་དང་
ལྡོག་དང་བཤད་རྣམས་ཀྱི། །མཚམས་སྦྱོར་སྒྲ་ལ་ཐོགས་མེད་ཅིང་།།
འབྲེལ་བ་སླ་བའི་མཆོག་ཏུ་འགྱུར། །གཞན་ཡང་རྗེས་འཇུག་ཤེས་པ་ཡིས།།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

དོན་གྱི་སྦྱོར་བ་མ་མཐོང་ཡང་། །དོན་དང་མཐུན་པའི་སྦྱོར་བ་ཞེས།།
རྗེས་འཇུག་སྦྱོར་བ་མཁས་པ་ནི། །ལུང་གི་དོན་དང་སྦྱོར་བ་དང་། །བླ་
མའི་མན་ངག་གསུམ་སྦྲར་ནས། །དོན་གྱི་ཐོག་ཏུ་དབབ་པར་བྱ། །བསླབ་
ལ་བརྩོན་པའི་གང་ཟག་གིས། །དང་པོ་ང་རོ་རྣམས་ལ་སྦྱང་། །སྔོན་འཇུག་
མིང་གཞི་རྗེས་འཇུག་གསུམ། །ཀློག་གི་ཆེད་དུ་བསླབ་པ་ཡིན། །རྗེས་
འཇུག་བཞི་ཡི་སྦྱོར་བ་ནི། །མཚན་བསམ་བསྟན་པའི་དོན་དུ་སྦྲར། །ཡན་
ལག་དེ་དག་མཐུ་ཡིས་ནི། །འབྲས་བུའི་ཆེད་དུ་དོན་ལ་དབབ། །བསླབ་
པའི་རིམ་པ་འདི་ཡིས་ནི། །གང་ཞིག་འབད་པ་ཆུང་ངུས་ཀྱང་། །ཤེས་
རབ་སྨྲ་རུ་གྲོལ་བར་འགྱུར། །དེ་ཕྱིར་དང་པོར་འདི་ཉིད་བསླབ། །དེ་
ནས་རྒྱས་པའང་མཚན་བྱས་ཏེ། །བསླབ་པ་གང་ལ་དད་པ་ཡི། །གཞུང་
ཉིད་བླ་མ་དག་ལས་མཉན། །སློབ་དཔོན་དེ་ཉིད་དུ་འཛིན་ཅིང་། །ལི་ལོ་
གཡེང་བ་རྣམ་པར་སྤངས། །ཟོ་བཟང་དད་པ་ལ་བརྟེན་པ། །སྐྱེས་བུ
དེས་ནི་སྨྲ་རྟོགས་ཏེ། །དེ་ལ་དུས་སུ་འདོམས་པར་བྱ། །ཅིག་ཤོས་
དེ་ལས་ལྡོག་པའོ།།

བྷཱུ་ཀ་ར་ཙའི་རྩ་བ་བརྒྱད་པ་ལས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་བྷཱུ་ཀ་ར་ཙ་དང་
པོའི་སྐབས་ཏེ་ལྔ་པའོ།། །།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རྟགས་ཀྱི་འཇུག་པ།

ཕོ་ཡི་ཡི་གེ་འབའ་ཞིག་ལ། །སྡེ་པ་ཕྱེད་དང་བརྒྱད་གནས་པའང་།།
སྡེ་ཚན་ལྔ་རུ་དབྱེ་བྱས་ནས། །ཕོ་དང་མ་ནིང་མོ་དང་ནི། །ཤིན་ཏུ་མོ་
དང་བཞི་བཞི་རུ། །སྡེ་པ་བཞི་པ་ཡན་ཆད་དབྱེ། །ལྷག་མ་བཅུ་བཞི་གནས་
པ་ལ། །ཙ་སོགས་གསུམ་ནི་ཅ་སོགས་སྦྱར། །ཞ་ནི་བ་དང་སྦྱར་བར་བྱ།།
ལྷག་མ་དྲུག་ནི་མོ་རུ་སྦྱར། །ར་ལ་ཧ་ནི་མོ་གཤམ་སྟེ། །ཨ་ནི་མཚན་མེད་
ཅེས་ཀྱང་བྱ། །མོ་ཡི་ཡི་གེའི་ནང་ནས་ནི། །འཇུག་པའི་ཡི་གེ་བཅུ་དབྱུང་
བྱ། །འཇུག་པ་བཅུ་ཡི་ནང་ནས་ནི། །སྔོན་འཇུག་ཡི་གེ་ལྔ་དབྱུང་བྱ།།
སྔོན་འཇུག་ཡི་གེ་ལྔ་པོ་ལ། །ཕོ་དང་མ་ནིང་མོ་དང་ནི། །ཤིན་ཏུ་མོ་དང་
བཞི་རུ་དབྱེ། །དེ་དག་རེ་རེའང་བཞི་བྱེད་དེ། །གང་ལ་འཇུག་བྱེད་གང་
གིས་བྱེད། །ཇི་ལྟར་འཇུག་བྱེད་ཅི་ཕྱིར་བྱེད། །གང་ལ་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་
ན། །ཕོ་ནི་ཕོ་དང་མོ་ལ་འཇུག །མོ་ནི་མོ་དང་མ་ནིང་ལ། །མ་
ནིང་ཡང་ནི་ཕོ་མོ་ལའོ། །ཤིན་ཏུ་མོ་ནི་མ་ནིང་དང་། །མོ་དང་ཤིན་ཏུ་མོ་
ཉིད་ལའོ། །མི་འཇུག་པ་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། །ཕོ་ནི་མ་ནིང་ལ་མི་འཇུག །མོ་
ཡང་ཕོ་ལ་འཇུག་པ་མིན། མ་ནིང་རང་ལ་རང་མི་འཇུག །རང་གི་སྡེ་དང་
འཕྲད་པ་ན། ཕོ་ཡང་མོ་ལ་འཇུག་མི་འགྱུར། །མ་ནིང་མོ་ཡང་དེ་བཞིན་
ནོ། །ཇི་ལྟར་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་ན། །ཕོ་ནི་དྲག་པོའི་ཚུལ་གྱིས་ཏེ། །མ་
ནིང་རན་པར་འཇུག་པ་ཡིན། །མོ་ནི་ཞན་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཏེ། ཤིན་ཏུ་མོ་
ནི་མཉམ་པས་སོ། །ཅི་ཕྱིར་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་ན། །ཕོ་ནི་འདས་དང་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

གཞན་བསྒྲུབ་ཕྱིར། །མ་ནིང་གཉིས་ཀ་ད་ལྟར་ཆེད། །མོ་ནི་བདག་ད་མ་འོངས་ཕྱིར།། ཤིན་ཏུ་མོ་ནི་མཉམ་ཕྱིར་རོ། །རྗེས་འཇུག་ཡི་གེ་བཅུ་པོ་ལ། །ཕོ་མོ་མ་ནིང་གསུམ་དུ་དབྱེ། །ཕོ་ལ་སྐྱེས་བུ་རབ་འབྲིང་གསུམ།། མོ་ལ་མོ་དང་ཤིན་ཏུ་མོ། །མ་ནིང་འགྱུར་དང་མཚན་གཉིས་དང་།། མཚན་མེད་དག་དང་གསུམ་དུ་འདོད། །དེ་ཡང་བྱེད་པ་བཞི་བྱེད་དེ།། གང་ལ་འཇུག་བྱེད་གང་གིས་བྱེད། །ཇི་ལྟར་འཇུག་བྱེད་ཅི་ཕྱིར་བྱེད། །གང་ལ་ཡི་གེ་ཐམས་ཅད་ལ། གང་གིས་བཅུ་པོ་དེ་དག་གིས། །ཇི་ལྟར་རྣམ་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ། །སྒྲ་ཡི་འཇུག་ཚུལ་དོན་གྱི་ཚུལ། །ཕོ་གསུམ་མོ་གཉིས་མ་ནིང་གསུམ། །དྲག་ཞན་བར་མ་གསུམ་དུ་འཇུག །དྲག་པ་གསུམ་ཉིད་ནང་ཕྲད་དམ། །གལ་ཏེ་ཞན་པ་ནང་ཕྲད་ན། །དེ་ལའང་ནང་གི་ཆ་ཤས་ཀྱིས། །དེ་ཡང་དྲག་ཞན་གཉིས་སུ་དབྱེ། །མ་ནིང་གསུམ་དུ་གང་གདོགས་པ། །དྲག་དང་ཕྲད་ན་དྲག་པར་འགྱུར། །ཞན་དང་ཕྲད་ན་ཞན་པར་འགྱུར། །གཉིས་ཀ་དག་དང་ཕྲད་གྱུར་ན། །དེ་ནི་གཉིས་ཀ་ཅན་དུ་འགྱུར། །གཉིས་ཀ་དག་དང་མ་ཕྲད་ན། །གང་དུ་ཡང་ནི་མི་འགྱུར་རོ། །དེས་ན་འགྱུར་དང་མཚན་གཉིས་དང་། །མཚན་མེད་དག་དང་གསུམ་དུ་འདོད། །དེ་ནི་སྒྲ་ཡི་འཇུག་ཚུལ་ལོ། །དོན་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཡིན་ཏེ། །ཕྱི་མ་གང་ལྟར་འགྱུར་བ་དང་། །ཕྱི་མ་གང་ལྟར་འགྱུར་པའོ། །སྔ་མ་སྔོན་འཇུག་ལྟ་བཞིན་སྦྱར། །ཕྱི་མ་དག་གིས་འདྲེན་ཚུལ་ནི། །ཕོ་ཡིས་ཕོ་ཡི་མིང་མཐའ་དྲང་། །མོ་ཡིས་མོ་ཡིས་མིང་མཐའ་དྲང་། །མ་ནིང་གིས་ནི་མ་ནིང་ངོ་། །མིང་མཐའ་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་ནི། །དེ་ཉིད་རང་གི་སྒྲ་མཐུན་པའི། །ཆོས་དངོས་ལས་དང་བྱེད་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

པ་དང་། །སྲིན་དང་འཕྲུ་ཁྲུངས་འཕྲིལ་བ་དང་། །གནས་དང་བོད་པའི་སྐྲ་
ཡང་དྲང་། །གཞན་ཡང་སྐར་བསྡུ་ལྷག་བཅས་དང་། །འཕྲིད་སྡུད་
བསྣན་དང་བདག་པོ་དང་། །དགག་སྒྲུབ་རྒྱུན་དང་དུས་ལའང་འཇུག །དེ་
དག་ལྔ་ཤུགས་འདྲེན་པས་འབྱུང་། །དེ་དག་ནང་གསེས་གང་འཇུག་པ།།
མཐར་སྦྱར་འོག་མའི་མིང་དོན་ལས། །སྤྱི་འཇུག་ཡོད་དམ་བྱེད་པ་ཡོད།།
དེ་བཞིན་ཆེད་བྱེད་རྟེན་བྱེད་དང་། །ལས་བྱ་སླད་བྱ་བསྒྲུབ་པར་བྱ། །སྔོན་
དུ་འོས་པ་གནས་པའམ། །གཞན་ཡང་ཚིག་དོན་འོག་མ་ལས། །བསྡུ་
རྒྱུ་ཡོད་དམ་མེད་པ་དག །གོང་མ་ལས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ཏེ། །རྣམ་
གྲངས་དག་ཀྱང་བཀོད་པ་ལས། །བསྒྱུར་བ་ཡོད་དམ་མེད་པ་དང་། །ཕོ་སྒྲ་
དང་ནི་མོ་སྒྲ་དང་། །མིང་གི་མཐའ་ན་ཡོད་མེད་དང་། །རྒྱུན་དུ་གྱུར་
པ་རྣམས་ལ་ཡང་། །དོན་ལ་བསྟིགས་པ་ཡོད་མེད་དང་། །བསྣན་བྱ་
ལྷག་མ་ཡོད་མེད་དང་། །ཚིག་དོན་རྫོགས་དང་མ་རྫོགས་ཀྱིས། །དེ་
དག་ནང་གསེས་རྣམས་པར་དབྱེ། །ཅི་ཕྱིར་འཇུག་པར་བྱེད་ཅེ་ན། །ཡི་
གེའི་ཁོངས་ནས་མིང་དབྱུང་སྟེ། །མིང་གི་ཁོངས་ནས་ཚིག་ཕྱུང་ནས།།
ཚིག་གིས་དོན་རྣམས་སྟོན་པར་བྱེད། །མོ་ཡི་ཡི་གེ་མེད་པ་ན། །ཕོ་ཡིག་
བརྗོད་པ་མེད་པ་འགྱུར། །ཕོ་ཡིག་དེ་དག་རྣམས་ལ་ཡང་། །འཇུག་
པར་བཅས་པ་མེད་ན་ནི། །མིང་དང་ཚིག་ཀྱང་གསལ་མི་ནུས། །མིང་
ཚིག་གསལ་བ་མེད་ན་ནི། དོན་རྣམས་བརྗོད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་
ལྟར་གྱུར་ན་འཇིག་རྟེན་དུ། །དོན་མཆོན་བརྗོད་པ་ཀུན་ཀྱང་མེད། །རིག་
བྱེད་སྨྲ་བའང་ཡོད་མི་འགྱུར། །ཉན་ཐོས་རང་རྒྱལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི།།
བསྒྲུབ་པ་རྣམས་ཀྱང་མེད་པར་འགྱུར། །ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་སེམས་ཅན་

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

རྣམས། །ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་དང་། །གྲུབ་མཐའ་གཞན་ཡང་ཡོད་ན་ཡང་། །རང་ཉིད་ཀྱིས་ནི་མི་ཤེས་བཞིན། །དེ་བཞིན་ཡི་གེའི་འཇུག་ཚུལ་རྣམས། །སླ་བ་ཀུན་ལ་གནས་གྱུར་ཀྱང་། །རང་ཚུལ་དེ་ཉིད་མི་ཤེས་པས། །དོན་ལ་སྦྱོར་བ་གག་ལ་ཤེས། །དེ་ཕྱིར་སླ་བའི་དབང་ཕྱུག་གི །རྗེས་སློབ་འདི་ཀུན་རྟོགས་གྱུར་ཅིག །

བྷཱུ་ཀ་ར་ཆའི་རྩ་བ་བརྒྱད་པ་ལས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་བྷཱུ་ཀ་ར་ཆ་གཉིས་པའི་སྐབས་ཏེ་དྲུག་པའོ།། །།

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ཐུ་མིའི་མཁྱེན་པ་རིན་ཆེན་འབྱུང་བའི་གནས། |

ས་བདག་སྐྱོང་བཙན་སྣམ་པོའི་ལེགས་བྱས་ཀྱིས། |

ཡོངས་སྤྲུབས་སུམ་རྟགས་ཉི་ཟླ་འོད་འཁྱིལ་བ། |

སྲིད་པའི་བགོ་སྐལ་ལྷ་ལམ་དབྱིངས་སུ་ཤར། |

བརྡ་དང་ཐ་སྙད་རིག་གཞུང་ཁྲི་འཕང་མཆོག |

འཛིག་འདོད་སུམ་རྟགས་སྟེགས་བུར་མ་བརྟེན་སུ། |

གང་ཞིག་མཁས་པའི་རི་བོར་བགྲོད་བ་ལ། |

བརྩོན་འགྲུས་འཁར་གྱུག་བརྟེན་པ་ཛེ་བཞིན་ནོ། |

གངས་ཅན་ཐ་སྙད་རིག་གཞུང་ནོར་གླིང་དུ། |

འགྲོ་འདོད་འཕགས་ཡུལ་བློ་གསར་དོན་མཐུན་ཚོགས། |

ཐུ་མིའི་གཙུག་ལག་རྒྱ་མཚོའི་ཕ་མཐའ་རུ། |

འདྲེན་པའི་གྲུ་ཤན་གླིགས་བམ་འདི་ཡིས་བྱ། |

སི་ཏུའི་གཞུང་དང་དེ་བཞིན་སླ་མའི་གསུང་། |

གཞིར་བཅས་རང་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཚིག་ཚོགས་ཙམ། |

ཕུང་པོར་བསྒྲིགས་པའི་བཀྲ་ཤིས་འཕྲེང་བ་འདི། |

གསར་བུ་མཁས་སློར་འཇུག་པའི་སྐྱེས་སུ་ཕུལ། |

འདི་ལས་བྱུང་བའི་དགེ་བ་ཅི་བསགས་པ། |

བདེ་བ་ཤེགས་བསྟན་པ་ཕྱོགས་བཅུར་རྒྱས་གྱུར་ཅིག |

མ་གྱུར་འགྲོ་བ་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ། |

སླ་བའི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོར་གྱུར་ཅིག་གུ། |

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES

1. *Tibbatī Pāṭhamālā* by Tulku Dhondup. Revised edition 1996.
2. *Abhisamayālaṅkāravṛttiḥ Sphuṭārtha* of Ācārya Haribhadra: Reprint 1993, Rs. 225 Hb, Rs.175 Pb.
3. *Vajracchedikā Prajñāpāramitāsūtra* with *commentary* of Ācārya Asaṅga. Revised edition.
4. *The Biography of Eighty four Saints* of Ācārya Abhayadattaśrī. Revised edition.
5. *Vimalakīrtinirdeśasūtra:* Price: Rs.200 Hb.
6. *Nyāyapraveśa* of Ācārya Diṅnāga with Ācārya Haribhadrasūri's *Commentary* , Rs.100 Pb.
7. *Bodhipathapradīpaḥ* of Ācārya Dīpaṅkarśrījñāna. Revised edition. Rs. 80 Hb, Rs.55 Pb.
8. *Śūnyatāsaptatiḥ* of Ācārya Nāgārjuna with *Auto-commentary.* Revised edition, Rs.65 Pb.
9. *Bhāvanākrama* of Ācārya Kamalaśīla. Revised edition.
10. *Vimalaprabhāṭīkā* of Kalki Śripuṇḍarīka on Śrilaghukāla-cakratantra by Śri Mañjuśrīyaśa *Vol.* Rs.70 Hb, Rs.60 Pb.
11. *Ten Suttas from Dīgha Nikāya:* A Reprint of English translation of the Pali text published by Burma Pitaka Association. Rs.25 Hb, Rs.20 Pb. (subsidised price).
12. *Sanskṛta ke Bauddha Vaiyākaraṇa* (in Hindi) by Dr. Janaki Prasad Dwivedi. Rs.115 Hb., Rs.90 Pb.
13. *Kalāpa Vyākaraṇam* of Ācārya Śarvavarma: (in Skt.) edited by Dr. Janaki Prasad Dwivedi. Rs.90 Hb, Rs.75 Pb.
14. *Dharmasaṅgrahaḥ* of Ācārya Nāgārjuna: edited Sanskrit text and Tibetan translation. Rs.55 Hb, Rs.45 Pb.
15. *Muktālatāvadānam* of Kṣemendra: edited Sanskrit and Tibetan texts with Hindi and English translations. Rs.60 Hb, Rs.45 Pb.
16. *Sautrāntikadarśanam:* (in Sanskrit) by Prof. Ram Shankar Tripathi. Rs.225 Hb, Rs.180 Pb.
17. *Chandoratnākara* of Kalikālasarvajña Ratnākaraśāntipāda with *Auto-commentary.* Rs.80 Hb, Rs.60 Pb.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

18. *Dharmadharmatāvibhaṅga* of Ārya Maitreyanātha with the *Commentary* by Ācārya Vasubandhu. Rs.75 Hb, Rs.55 Pb.

19. *The Dhammapada Verses and Stories:* A Reprint of English translation and Romanized Pali (original) verses published by Burma Pitaka Association. Rs.50 Hb. (Subsidised price)

20. *Ratnāvalī* of Ācārya Nāgārjuna with the *Commentary* by Ajitmitra *Vol. I* (Tibetan Version), Rs.125 Hb, Rs.90 Pb.

21. *Bodhicittavivaraṇa* of Ācārya Nāgārjuna and *Bodhicitta-bhāvanā* of Ācārya Kamalaśīla. Rs.125 Hb, Rs.100 Pb.

22. *Atīśaviracitā Ekādaśagranthāḥ:* (11 treases of Atīśa), Rs.175 Hb, Rs.125 Pb.

23. *Uṇādivṛttiḥ of Durgasiṁha:* critically edited Sanskrit text with commentary and Hindi translation, Rs.185 Hb, Rs.135 Pb.

24. *Dharmasaṁgrahaḥ* of Ācārya Nāgārjuna (Skt. text with Tibetan version and English translation), Rs.140 Hb, Rs.90 Pb.

25. *Tarkasopānam of Ācārya Vidyākaraśānti:* Sanskrit text with Tibetan translation. Rs.75 Hb, Rs.55 Pb.

26. Prajñāpāramitāvajracchedikāsūtram with Commentary of Ācārya Kamalaśīla. Rs. 160 Hb, Rs. 110 Pb.

27. *Āryamañjuśrīnāmasaṁgīti* with Amṛtakaṇikā and udyota (in Sanskrit) Rs. 130 Hb, Rs.80 Pb.

28. *Aśvaghoṣa's Buddhcarita (The Life of Buddha)* translated into English by Dr. Irma Schotsman. Rs. 250 Hb, Rs.200 Pb.

29. *Nyāya Bindu of Dharmakīrti.* (in Hindi) Rs.85 Hb, Rs. 55 Pb.

30. *Apohasiddhi by Ratnakīrti:* (in Hindi). Rs. 35 Pb.

31. *Nītiśatakaṁ* of Ācārya Bhartṛhariḥ.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

TIBET BOOKSTORE
Kathmandu
RS-700.-

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection